॥ ॐ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विश्व पञ्चाङ्गम् संवत् २०२५

" पं॰ प्रेमदत्त शास्त्री "

जहाँगीराबाद

(बुलन्दशहर)

उ॰ प्र॰

109

मुहूर्त बिटौरा

सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र
तक प्रथम ६ श्रेष्ठ।
२ में मुर्दा जले। ४ में सर्पभय।
४ में मित्र भोजन। ८ में रोग।
४ में शुभ।

मूल नक्षत्र–

अश्वनी मघा मूल के प्रथम
चरण में पिता को। दूसरे में
माता को तीसरे में धन को।
चौथा शुभ है।
रेवती श्लेषा ज्येष्ठा में चौथा
पिता को। तीसरा माता को।
दूसरा धनु को। प्रथम शुभ है।

अल्प ३ अल्प
फल ४ राजा
पुष्प ५ मंत्री
पत्र १४ परिवार
शाखा ६ माता
त्वचा ११ भ्राता
स्तंभ ६ धन
मूल ८ मूल

५।७।९।१२।१६।२६। अंश
पर पृथिवी सोती है।

*

ग्रहों का स्नान

यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति
भास्कर:। सा तिथि सकला ज्ञेया
दानाध्ययन कर्मसु।

ग्रहों का दान समय–

चन्द्र गुरु संध्या को
शनि का दोपहर (अर्धरात्रि)
मंगल दो घड़ी दिन चढ़े।
राहू केतु आधी रात।
सूर्य शुक्र सूर्य उदय पर।

पाया–

आर्द्रा से १२ नक्षत्र चाँदी के पाये।
ज्येष्ठा से ६ नक्षत्र ताँबे के पाये।
रेवति से ३ सोने के पाये।
शेष लोहे के पाये।

शब्दो मेषे वृषे सिंहे मकरे च तथा तुले।
अर्ध शब्दो घटे कन्या। शेषे शब्द विवर्जयेत्।
सिंह कन्या धने मीने कर्कटे च तथा तुले
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषौ भूमौ च जायते।

राहू ३ केतु ९ उच्च
राहू ९ केतु ३ नीच

जौ

१– पितृ दोष गायत्री जाप।
२– देवी दोष [illegible] रहे।
३– महामाया।
४– शाकुनी देवी की पूजा करो।
५– जल का प्रेत
६– ग्रहों का दोष
७– संतान का दोष, [illegible]
८– देवता का दोष
९– अंग रोग
१०– चण्डी दोष
११– प्रेत दोष
१२– योगिनी दोष

परिहार–

द्वादशाब्दे परे कन्या–
षोडशाब्दे परे वरे।
व्ययवेदाष्टमे जीवे–
सूर्ये चैव न दोष भाक्॥

"पं० प्रेमदत्त शास्त्री"

॥ श्री विश्वनाथो विजयते ॥

नमो नमस्तेऽखिलमन्त्रदेवताद्रव्यायसर्वक्रतवे क्रियात्मने । वैराग्यभक्त्यात्मजयानुभावितं ज्ञानाय विद्यागुरवे नमो नमः ॥ वाराणसीपरिसरे सविधे द्युनद्याः प्राच्यप्रतीच्यश्रुतिमद्विबुधव्रजस्य । ज्योतिर्विदार्यविबुधैर्विकीर्णे विद्यासुधर्मादिफलैः सुपूर्णे । सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये …

एकस्त्वमात्मा पुरुषः पुराणस्सत्यः स्वयं ज्योतिरनन्त आद्यः । नित्योऽक्षरोऽजस्रसुखो निरञ्जनः पूर्णोऽद्वयो मुक्त उपाधितोऽमृतः ॥ श्रीभारतीयसुहृतस्य सुपाठधाम्नो धर्मान्मुखं विजयते तिथिपत्रमेतत् ॥ श्रीविश्वविद्यालयकल्पवृक्षे ज्योतिर्विधेत्रा सततं सुधीभिः ॥ सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः …

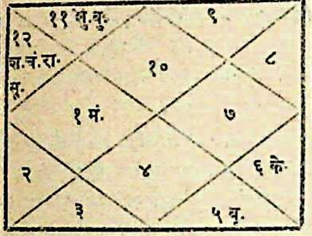
सूचीपत्रम् –

ज्योतिष विषयाः

पूजाविधिकथादि विषयाः

कथाविषयाः

वर्षलग्नम् ९।२४।१८



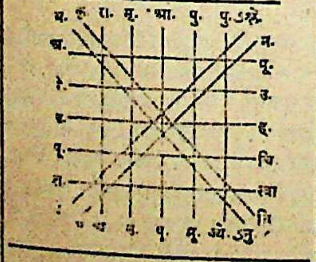
राजा शुक्रः

विक्रमसंवत्

२०२५

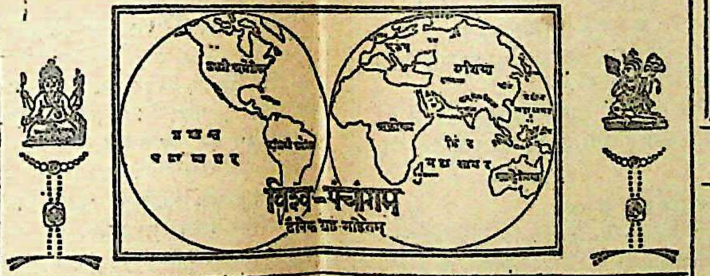
वर्षारम्भे दुर्मति संवत्सरः
संकल्पादिकृते वर्षपर्यन्तं योजनीयः ।

निवाहे पञ्चशलाका ।



विश्वपञ्चाङ्गम्

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशितम्



शास्त्रोक्त स्नानदाने-ज्यावतकालाविघ्नकम् ।

आविर्भाव—
वि.सं.१९१८ पौषकृष्ण ८
(२५-१२-१८६१)

अखण्ड भारत के अमर नेता और महत्तम विभूति भरद्वाज वसिष्ठ, विश्वामित्रआदि महर्षियों की पवित्र स्मृति को जनता में जागरूक करने वाले, आर्यजाति के महाप्राण वर्तमान युग के मर्यादा-पुरुष श्रद्धेय—



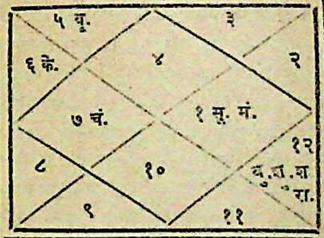
पञ्चाङ्गं सत्कथोपेतं
भूयाद्धर्माभिवृद्धये ॥

तिरोभाव—
वि.सं. २००३ मार्ग कृ. ४
(१२-११-१९४६)

महामना भारत भूषण पण्डित श्री मदनमोहन मालवीय जी अपने भौतिक शरीर के बाद भी अपनी जिन असंख्य असाधारण कृतियों से आज भी जीवित हैं, उन्हीं में एक यह "विश्वपञ्चाङ्ग" भी है ।

प्र. संपादक

जगल्लग्नम् ३।१।७



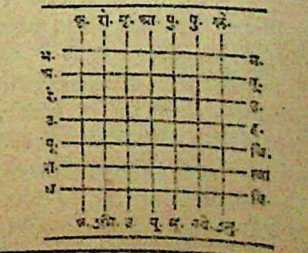
मन्त्री शनिः

शालिवाहन शकः

१८९०

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ रवौ ४८।३४ इष्टतः
दुन्दुभिः नाम संवत्सरः प्रवेक्ष्यति

अन्येषु सप्तशलाका ।



समयशुद्धिः

शुक्ल १ … पूर्वमत्याव… धनुष्यर्कः । … दारम्य … शनी उत्त…

स्वर्गीय पं० मदनमोहनमालवीयजीकृत हिन्दूधर्मोपदेशः

हिताय … ग्रामे … अनुाय … स्त्रीणां … अभयं … कर्मणां … स्मांत … पंडित … उनमें …

आद्यसम्पादकौ—स्वर्गीयौ पण्डित मदनमोहन मालवीयः, पण्डित रामयत्न ओझाश्च

प्रधानसम्पादकः—ज्योतिषदिवाकर-पण्डित राजमोहन उपाध्यायः ज्योतिषशास्त्राचार्य, एम० ए०, पीएच० डी०, ज्योतिषविभागाध्यक्षः ।

सम्पादकः—पं० शारदाप्रसाद मिश्र ज्यो० शास्त्राचार्य । अ. सि. सहायकः—पं० सत्यनारायण त्रिपाठी ज्यो. ग. शास्त्राचार्य । सहायकः—पं० बबन चतुर्वेदी ज्यो. शा. ।

मुद्रक आर० के० घेरी
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस, वाराणसी ।

सं० २०२६ का विश्वपञ्चाङ्ग, २०२५ के आश्विन तक प्रकाशित हो जायेगा । मिलने का पता:—(१) पञ्चाङ्ग कार्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी—५ । मूल्य १.१२ एक रुपया, बारह नये पैसे ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भूमिका

जयति विबुधवन्द्या भारती भारतीया जयति विबुधवन्द्यो जानकीशोऽवधेशः।
जयति जगति विष्वक् काशिकाविश्वनाथो जयति जयति काशी विश्वविद्यालयोऽयम् ॥

आजकल पञ्चाङ्ग के विषय में बहुत से मतमतान्तर भारतवर्ष में चल रहे हैं। भारत धर्मप्राण देश है। यहाँ के पञ्चाङ्ग केवल आकाशीय चमत्कार देखने के लिए नहीं बनते किन्तु धार्मिक मर्यादा में कोई बाधा न हो और धर्मकृत्य जिन ऋषियों के वचनाधार पर माने जाते हैं, उन्हीं के स्वीकृत मार्ग द्वारा किये जायें, इसके लिये बनाये जाते हैं। भारतवर्षीय जो सिद्धान्त आजकल प्रचलित हैं उनसे जो ग्रह बनते हैं वे अपने यथार्थ स्थान में नहीं दीख पड़ते, यह विषय उन महर्षियों को भी ज्ञात था, जिन्होंने उन सिद्धान्तों को बनाया था। इसी कारण सूर्यसिद्धान्त में लिखा है—

नक्षत्रग्रहयोगेषु ग्रहास्तोदयसाधने। शृङ्गोन्नतौ तु चन्द्रस्य दृक्कर्मादावदिं स्मृतम् ॥

अर्थात् ग्रहों के योग में, नक्षत्र ग्रहों के योग में, ग्रहणसाधन में उदयास्तसाधन में, चन्द्रमा के शृङ्गोन्नति साधन में जिन संस्कारों के द्वारा ग्रह देख पड़ें उन संस्कारों को करके इन कार्यों को करना चाहिए, परन्तु इतना हो जाने पर भी जो ग्रह दृष्टिगोचर नहीं होता उसीको बताने के लिए लिखा है—

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथादृक्तुल्यतां ग्रहाः। प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥

अर्थात् "जिस ग्रह के द्वारा अदृष्ट जनित फल की प्राप्ति हो तथा संसार में ठीक ठीक फल परिणाम देखा जाय उस ग्रह का नाम वास्तवदृश्य है। उसी ग्रह का साधन करता हूँ।"

पुनः—"भावाभावाय लोकानां कल्पनेयं प्रदर्शिता। सुदूरगा प्रयान्त्येते दूरमन्योन्यमाश्रिताः ॥"

इसी कारण बिना बीजादि संस्कार किये ही ग्रहों से तिथ्यादि साधन, ऋषियों ने तथा भास्करादि आचार्यों ने लिखा है।

इस देश में प्रायः तीन सिद्धान्तों का प्रचार देखा जाता है। दक्षिण में आर्यसिद्धान्त का, राजपूताना, बम्बई में ब्रह्मसिद्धान्त का और बङ्गाल से पञ्जाब तक सूर्यसिद्धान्त वा सूर्यसिद्धान्तानुसार करणग्रन्थ का। इनमें आर्यसिद्धान्त प्रायः सूर्यसिद्धान्त के तुल्य ही है। ब्रह्मसिद्धान्त के विषय में वाराहमिहिर ने लिखा है—

पौलिशकृतोऽस्फुटोसौ तस्यासन्नस्तु रोमकः प्रोक्तः। स्पष्टतरः सावित्रः परिशेषौ दूरविभ्रष्टौ ॥

अर्थात् ब्रह्मसिद्धान्त और वशिष्ठसिद्धान्त किसी योग्य नहीं हैं। कमलाकर ने भी लिखा है—

अदृष्टफलसिध्यर्थं यथार्काद्युक्तितः कुरु। गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा ॥

ज्योतिर्विदाभरणकार ने भी लिखा है—

स्थूलं सदा ब्राह्ममतं निरुक्तमादित्यसिद्धान्तभवं च सूक्ष्मम्। इति।

आजकल ग्रीनविच से जो जहाजी पञ्चाङ्ग (Nautical Almanace) निकलता है, उसको देखकर कितने विद्वानों की सम्मति उसी प्रकार बने ग्रहों से पञ्चाङ्ग बनाने की है और कितने बनाते भी हैं। परन्तु इन पञ्चाङ्गों में बहुत मतभेद रहता है। कारण यह है कि कोई २७ अंश, कोई २३ अंश, कोई १९ अंश, कई प्रकार के अयनांश की कल्पना करते हैं। जब तक इन अयनांशों का निश्चय केवल दृश्यगणनावश न हो जाय तब तक उन पञ्चाङ्गों की धार्मिक साधकता का विचार कैसे किया जाय। क्योंकि उन पञ्चाङ्गों के ग्रह न दृश्य ही रहे न आर्षग्रन्थ के अनुकूल ही हुए।

पञ्चाङ्ग प्रायः आलस्यवश मकरन्दानुसार वा ग्रहलाघवानुसार बनते हैं। ये अशुद्ध होते हैं। मकरन्दकार ने लिखा है।

वक्रादिकं स्थूलमिदं मयोक्तं सुखार्थमेवेति न तथ्यार्थम्।
अस्तोदयौ स्पष्टतरौ प्रसाध्यौ सिद्धान्तरीत्या कुसुतादिकानाम् ॥
यद्वात्र शुक्राङ्गिरसौ प्रसाध्यौ विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ॥

यदि मकरन्द और ग्रहलाघव के ही अनुसार सूर्य चन्द्रमा बनाकर तिथ्यादि का मान निकाला जाय, तो वे तिथ्यादि के बनाने के प्रकार से आये तिथ्यादि मान के बराबर नहीं मिलते। इन बातों को जानकर भी जो मकरन्दीय और ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्ग का आदर करते हैं वे सर्वथा भूल करते हैं।

यदि वास्तविक विचार किया जाय तो सौर मत ही दृश्य मत कहा जा सकता है। क्योंकि यदि सौर मतानुसार कोई ग्रह अश्विनी में रहेगा तो वह अश्विनी में ही देखा जायगा उस समय दृश्यगणनानुसार प्रायः वही ग्रह कृत्तिका में रहेगा और उसी की अश्विनी में कल्पना करनी होगी।

स्वर्गीय पूज्यपाद श्रीमान् माननीय मालवीय जी महाराज के आदेशानुसार पूर्व बातों को ध्यान में रखकर उसी रीति से और कई विद्वानों की सहायता से यह पञ्चाङ्ग बनाया गया है। किन्तु ऋषियों के आदेशानुसार दृश्यपदार्थ दृश्यगणनानुसार ही दिये गये हैं।

काशी तथा अन्यत्र के प्रसिद्ध विद्वानों की एक समिति ने ऊपर लिखी रीति से बनाये गये पञ्चाङ्ग को ही धर्मकृत्योपयोगी स्वीकार किया था। आशा है इसी पञ्चाङ्ग से धर्मानुरागी जनमात्र को लाभ पहुँचेगा।

समर्थन करनेवाले विद्वानों में कुछ लोगों के नाम।

म०म०पं० प्रथमनाथ तर्कभूषण जी (प्रिंसिपल का० हि० वि० प्रा० वि०), म०म० ज्योतिषाचार्य्य श्री पं० मुरलीधर झा, जी, म०म० श्री पं०अयोध्यानाथ जी, म०म०पं० जयदेवमिश्र जी, म०म० पं० पञ्चानन तर्करत्न जी, म० म० प्रभुदत्त जी, ज्योतिषाचार्य्य श्री पं० रामयत्न ओझाजी, म०म० पं० रामकृष्ण जी, पं० चन्द्रधर शास्त्री जी, पं० राधाप्रसाद शास्त्री जी, म० म० पं० चिन्नस्वामी जी, पं० वामदेव मिश्र जी, पं० कालीप्रसाद मिश्र जी, पं० अम्बिकाप्रसाद जी, पं० विश्वनाथजी, पं० रामकृष्ण जी, पं० राजनारायण पाण्डेय जी, पं० महादेवप्रसाद पाण्डेय जी, पं० जियालाल जी (देहली) ज्यौतिषचार्य पं० पद्माकर द्विवेदी जी, ज्यौ० आ० पं० बलदेव पाठक जी, ज्यौ० आ० पं० रिसालदत्त मिश्र जी, ज्यौ० आ० पं० श्री रामव्यास ज्योतिषी जी, ज्यौ० आ० पं० विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डय जी, ज्यौ० आ० पं० रघुनाथ जी, पं० राजाराम जी, पं० राजवैद्य दतराना, साहित्याध्यापक पं०रामकुबेर मालवीय जी, धर्मशास्त्राध्यापक पं०वसिष्ठदत्त मिश्र जी, पं०देवनन्दन द्विवेदी जी, पं०श्यामसुन्दर द्विवेदी जी, ज्यौ० आ० पं० बलराम पाण्डेय, पं० शङ्कर लाल गौड़ (शंभुकवि) आदि।

बहुत से महानुभावों ने विश्वपञ्चाङ्ग की सर्वोपयोगिता के लिए कृपा पूर्वक अपनी सहानुभूति प्रकट की है, जिनमें कुछ के नाम दिये गये हैं——

श्रीमान् ५ महाराजाधिराज नैपाल	श्रीमान् ५ महाराजा रीवाँ
श्रीमान् ५ महाराजा मैसूर	श्रीमान् ५ महाराजा भोर स्टेट
श्रीमान् ५ महाराजा ग्वालियर	श्रीमान् ५ महाराजा साहब आवागढ़
श्रीमान् ५ महाराजा बहादुर बड़ौदा	श्रीमान् राजगुरु महोदय नैपाल
श्रीमान् ५ महाराजा बहादुर गिद्धौर	श्रीमान् ५ महाराजा साहब टेहरी, गढ़वाल स्टेट
श्रीमान् ५ महाराजा जोधपुर	श्रीमान् ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ती जी सु. पटना
श्रीमान् ५ राजाबहादुर अमावाँ	श्रीमान् मन्त्री ब्राह्मण महासभा भभुआ (आरा)
श्रीमान् होम मेम्बर कौंसिल आफ स्टेट जयपुर	श्रीमान् ज्यो. आ. पं० हरिनन्दन मिश्रजी कानपुर
श्रीमती ५ राजमाता साहिबा मझौली	ज्योतिर्विद् पं० बलदेवजी चतुर्वेदी जौनपुर

राजपण्डित—बुलाकीराम जी भरतपुर

इस पञ्चाङ्ग में प्रतिपक्ष में क्रम से दिनमान, तिथि, वार, तिथिसम्बन्धी घटी, पल, घंटा, मिनट, नक्षत्र, नक्षत्रसम्बन्धी घटी, पल, घण्टा, मिनट, योग, योगसम्बन्धी घटी, पल, घंटा, मिनट, इत्यादि, दोनों करण, अँग्रेजी, फारसी, बंगला, फसली, राष्ट्रीय, तिथि, चन्द्रसंचार, सूर्योदय घंटा, मिनट, सूर्यास्त घंटा, मिनट, रविक्रान्ति के पश्चात् कृष्णपक्ष में चन्द्रोदय और शुक्लपक्ष में चन्द्रास्त का घंटा, मिनट दिया गया है। इसके बाद भद्रा, संक्रान्ति इत्यादि बहुत सी वस्तुएँ दी गई हैं। इसमें तिथ्यादि के घंटे का मान आधीरात से चौबीस घंटा मान कर जैसे रेलवे में व्यवहार किया जाता है, उसे सूर्य घड़ी के अनुसार दिया गया है। सूर्योदय घंटा आधीरात से और सूर्यास्त घंटा मध्याह्न से दिया गया है रविक्रांति मध्यम (Local) समय के अनुसार ५ बजकर ३२ मिनट पर की है। चन्द्रास्त, चन्द्रोदय घंटा मध्यरात्रि से ही दिया गया है।

पञ्चाङ्ग देखने की रीति—जैसे चैत्रशुक्ल प्रतिपद् शुक्रवार को दिनमान ३० घड़ी ३१ पल प्रतिपद ५६ घड़ी ५२ पल, रा. ४ घण्टा ३९ मिनट तक है। उत्तरभाद्रपद नक्षत्र २ घड़ी ५ पल, ६ घं. ४४ मि. यानी प्रातः ६ बजकर ४४ मिनट तक है। ब्रह्मयोग ९ घड़ी २१ पल, ९ घण्टा ३८ मि. यानी प्रातः ९ बजकर ३८ मिनट तक, किंस्तुघ्न करण २५ घड़ी १३ पल अर्थात् दिन में १५ बजकर ५९ मिनट तक, बव करण ५६ घड़ी ५२ पल अर्थात् रा. ४ बजकर ३९ मिनट तक है। वैतु योग और अंग्रेजी २१ मार्च, फारसी २९, बंगला १६, फसली १५ एवं राष्ट्रीय ता० ९ है (पञ्जाब में बङ्गला ता. संक्रान्ति के दिन से—काशी में संक्रान्ति के दूसरे दिन से और बङ्गदेश में पुण्यकाल के दिन से चलता है)। सूर्योदय गत मध्यरात्रि के बाद ५ बजकर ५४ मिनट पर और सूर्यास्त मध्याह्नोत्तर ६ बजकर ६ मिनट पर होगा। रवि की उत्तरा क्रान्ति ३ अंश १९ कला है। द्वितीया शनिवार की सन्ध्या को १९।३४ पर चन्द्र का दर्शन है। तिथि, नक्षत्र, योग, के घंटा मिनट के पहले 'प्रा' से प्रातः, 'म' से मध्याह्न, 'सा' से सायं और 'रा' से रात्रि और 'दि' से दिन का बोध कराया गया है। इसी प्रकार पञ्चाङ्ग को देखना चाहिए। पञ्चाङ्ग में जो तिथ्यादि का मान दण्डात्मक वा होरात्मक दिया गया है वह सावयव बनाकर "अर्धाल्पे त्याज्यमर्धाधिके ग्राह्यम्" इस रीति से लिखा गया है। अतः इस पर से बनाने में दो एक पल का अन्तर मान पड़ेगा। उसको अशुद्ध नहीं समझना चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन के स्पष्टग्रह मिश्रमानकाल के दिये गये हैं। प्रतिदिन की लग्नसारिणी दी गई है जिसमें मध्यरात्रि से ही सदैव मेषादि लग्नों के नाम के सामने उनका प्रवेश घण्टा, मिनट लिखा गया है। जैसे लग्नसारिणी में चैत्रशुक्ल प्रतिपद् शुक्रवार के दिन मेष लग्न के सामने मे० प्र० ६।३९ लिखा है। इसका अर्थ है कि प्रातःकाल ६ बजकर ३९ मिनट पर मेष लग्न का आरम्भ होगा और वृ० प्र० ८।१७ यानी वृष के प्रवेश ८ बजकर १७ मिनट तक मेषलग्न रहेगा। पश्चात् वृष लग्न का आरम्भ हो जायगा। इसी तरह सम्पूर्ण लग्नसारिणी है। इसके बाद कितने कार्यों का मुहूर्त, ग्रहों का दृश्ययोग इत्यादि बहुत सी बातें दी गई हैं। पञ्चाङ्ग के आरम्भ में प्रसिद्ध नगरों का अक्षांश और देशान्तर दिया गया है। चरसारिणी भी दी गई है—जिसमें इसी पञ्चाङ्ग के द्वारा अन्यत्र का भी तिथ्यादि मान बन जाय। अक्षांश पर से पलभा लाने की सारिणी भी दी गई है। प्रतिदिन का रेलवेघड़ी और सूर्यघड़ी का अन्तर दिया गया है। जिससे काशी में रेलघड़ी से सूर्यघड़ी का मान निकालना बड़ा सुगम है। तथा अन्यत्र के लिए भी युक्ति दी गई है। और ऐसी बहुत सी बातें दी गई हैं जो देखने से ही जान पड़ेंगी।

काशी बहुत दिनों से विद्या का केन्द्र है। बहुत से लोग काशी के ही पञ्चाङ्ग को लेकर बर्मा, सिंगापुर और फिजीद्वीप तक चले जाते हैं। परन्तु जो तिथ्यादि का मान काशी में होगा वह काशी से पूर्व या पश्चिम के देशों में कथमपि नहीं होगा। विश्वपञ्चाङ्ग द्वारा काशी से अन्यत्र तिथ्यादि मान निकालने की रीति—काशी में जो तिथ्यादि का घण्टादि मान हो उसमें इष्ट देश का काशी से जो घण्टा मिनट सेकण्ड देशान्तर हो उतना पूर्व के देशों में जोड़ देने से तथा पश्चिम के देशों में घटा देने से उस देश का घण्टादि मान हो जायगा।

जैसे—चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार को इस पञ्चाङ्ग द्वारा कलकत्ते में तिथ्यादि का मान क्या होगा यह जानने की रीति—उस दिन रवि की उत्तरा क्रान्ति ३ अंश १९ कला लिखी है। कलकत्ते का अक्षांश २२।३० है। काशी देशान्तर २२ मिनट अर्थात् ५५ पल है। चरसारिणी से अक्षांश [illegible] पर मिनटादि ५।३० निकला। इसको ६ घण्टे में जोड़ देने से घण्टादि ६।०।३० सूर्यास्त हुआ। इसको १२ में घटा देने से सूर्योदय घण्टादि ५।५९।३० हुआ। काशी में जो तिथ्यादि सम्बन्धि घंटा मिनट लिखा है पूर्व होने के कारण कलकत्ते का २२।० देशान्तर जोड़ देने से तिथ्यादि का मान [illegible] निकला।

	४।३९		२।१९		९।२१
प्रतिपदा	०।२२	उत्तरभाद्रपद	०।२२	ब्रह्म	०।२२
	५।१		२।४१		९।४३

इस घण्टादि काल पर से सूर्योदय घण्टा द्वारा घट्यादि मान जानना भी बहुत सुगम है। पहले दी हुई रीति से जो सूर्योदय का मान होरात्मक निकलेगा उसको पाँच से गुण देने से घट्यादि दिनमान होगा। काशी के दिनमान के साथ अन्तर [illegible] करने से चरान्तर होगा। यह चरान्तर उत्तराक्रान्ति होने पर काशी से अधिक अक्षांश में [illegible] होता है। दक्षिण क्रान्ति में इसके विपरीत होता है। [illegible] देशान्तर का संस्कार धन या ऋण जो हो उसको करके [illegible]। तिथ्यादि के मान में [illegible] का संस्कार कर देने से भी इष्टदेश सम्बन्धि तिथ्यादि का मान घट्यादि हो जायगा और मिश्रमान में [illegible] का संस्कार करने से इष्टदेश का मिश्रमान बन जायगा।

[illegible] घण्टा मिनट की जगह गुणन × का चिन्ह दिया गया है, और [illegible] ( ) चिह्न के भीतर दिया गया है। सूर्य और चन्द्रमा का [illegible] होता है। शुक्लपक्ष प्रतिपद् के उत्तरार्ध से बवादि ७ करण एक मास में ८ आवृत्ति में होते हैं। [illegible] के उत्तरार्ध से शुक्ल प्रतिपद के पूर्वार्ध तक [illegible] करण होते हैं। सूर्य, चन्द्रमा का अन्तर जब १२ अंश होता है तब एक तिथि होती है। [illegible] तब अश्विन्यादि एक नक्षत्र होता है। सूर्य और चन्द्रमा का [illegible] होता है, तब एक योग विष्कुम्भादि होता है। पञ्चाङ्ग में मिश्रमानकालिक [illegible] कि यदि तिथ्यादि के मान में कहीं किसी को सन्देह हो तो पूर्व रीति से [illegible] जाय। मनुष्य सर्वज्ञ नहीं है, अतः भ्रम या त्रुटि होना असंभव नहीं है, और पञ्चाङ्ग इस प्रकार की वस्तु है जिसमें तिथ्यादि का मान शुद्ध होते हुए भी भ्रम हो सकता है, [illegible] इस पञ्चाङ्ग के शुद्ध होने के लिए विशेष ध्यान रखा गया है। सज्जनों से प्रार्थना है कि [illegible] इस पञ्चाङ्ग को देखें और लाभ उठावें। जो त्रुटि इसमें रह गई हो, या यदि कोई आवश्यक बात छूट गई हो, तो कृपापूर्वक उसकी सूचना दें और दोष को क्षमा करें।

इस पञ्चाङ्ग में धार्मिक कथा आदि का संग्रह स्वर्गीय श्रीमान् पूज्यपाद मालवीय जी महाराज ने स्वयं किया था। स्थानाभाव के कारण वह अत्यन्त संक्षिप्त था। अब उसमें कुछ और कथाओं की वृद्धि कर दी गई है। दृश्यग्रह पृथक् दे दिये गये हैं। जिसमें इष्ट अयनांश घटाकर लोग इष्ट निरयनग्रह प्राप्त कर सकते हैं। आशा है इससे धार्मिक जनता पूरा लाभ उठा सकेगी। —प्र. सम्पाद

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भूमिका

जयति विबुधवन्द्या भारती भारतीया जयति विबुधवन्द्यो जानकीशोऽवधेशः ।
जयति जयति विश्वक् काशिकाविश्वनाथो जयति जयति काशी विश्वविद्यालयोऽयम् ॥

आजकल पञ्चाङ्ग के विषय में बहुत से मतमतान्तर भारतवर्ष में चल रहे हैं । भारत धर्मप्राण देश है । यहाँ के पञ्चाङ्ग केवल आकाशीय चमत्कार देखने के लिए नहीं बनते किन्तु धार्मिक मर्यादा में कोई बाधा न हो और धर्मकृत्य जिन ऋषियों के वचनाधार पर माने जाते हैं, उन्हीं के स्वीकृत मार्ग द्वारा किये जायें, इसके लिये बनाये जाते हैं । भारतवर्षीय जो सिद्धान्त आजकल प्रचलित हैं उनसे जो ग्रह बनते हैं वे अपने यथार्थ स्थान में नहीं दीख पड़ते, यह विषय उन महर्षियों को भी ज्ञात था, जिन्होंने उन सिद्धान्तों को बनाया था । इसी कारण सूर्यसिद्धान्त में लिखा है—

नक्षत्रग्रहयोगेषु ग्रहास्तोदयसाधने । शृङ्गोन्नतौ तु चन्द्रस्य दृक्कर्मादाविदं स्मृतम् ॥

अर्थात् ग्रहों के योग में, नक्षत्र ग्रहों के योग में, ग्रहणसाधन में उदयास्तसाधन में, चन्द्रमा के शृङ्गोन्नति साधन में जिन संस्कारों के द्वारा ग्रह देख पड़ें उन संस्कारों को करके इन कार्यों को करना चाहिए, परन्तु इतना हो जाने पर भी जो ग्रह दृष्टिगोचर नहीं होता उसीको बताने के लिए लिखा है—

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथादृक्तुल्यतां ग्रहाः । प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥

अर्थात् "जिस ग्रह के द्वारा अदृष्ट जनित फल की प्राप्ति हो तथा संसार में ठीक ठीक फल परिणाम देखा जाय उस ग्रह का नाम वास्तवदृश्य है । उसी ग्रह का साधन करता हूँ ।"

पुनः—"भावाभावाय लोकानां कल्पनेयं प्रदर्शिता । सुदूरगा प्रयान्त्येते दूरमन्योन्यमाश्रिताः ॥"

इसी कारण बिना बीजादि संस्कार किये ही ग्रहों से तिथ्यादि साधन, ऋषियों ने तथा भास्करादि आचार्यों ने लिखा है ।

इस देश में प्रायः तीन सिद्धान्तों का प्रचार देखा जाता है । दक्षिण में आर्यसिद्धान्त का, राजपूताना, बम्बई में ब्रह्मसिद्धान्त का और बङ्गाल से पञ्जाब तक सूर्यसिद्धान्त वा सूर्यसिद्धान्तानुसार करणग्रन्थ का । इनमें आर्यसिद्धान्त प्रायःसूर्यसिद्धान्त के तुल्य ही है । ब्रह्मसिद्धान्त के विषय में वाराहमिहिर ने लिखा है—

पौलिशकृतोऽस्फुटोसौ तस्यासन्नस्तु रोमकः प्रोक्तः । स्पष्टतरः सावित्रः परिशेषौ दूरविभ्रष्टौ ॥

अर्थात् ब्रह्मसिद्धान्त और वसिष्ठसिद्धान्त किसी योग्य नहीं हैं । कमलाकर ने भी लिखा है—

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तितः कुरु । गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा ॥

ज्योतिर्विदाभरणकार ने भी लिखा है—

स्थूलं सदा ब्राह्ममतं निरुक्तमादित्यसिद्धान्तभवं च सूक्ष्मम् । इति ।

आजकल ग्रीनविच से जो जहाजी पञ्चाङ्ग (Nautical Almanace) निकलता है, उसको देखकर कितने विद्वानों की सम्मति उसी प्रकार बने ग्रहों से पञ्चाङ्ग बनाने की है और कितने बनाते भी हैं । परन्तु इन पञ्चाङ्गों में बहुत मतभेद रहता है । कारण यह है कि कोई २७ अंश, कोई २३ अंश, कोई १९ अंश, कई प्रकार के अयनांश की कल्पना करते हैं । जब तक इन अयनांशों का निश्चय केवल दृश्यगणनाश्रय न हो जाय तब तक उन पञ्चाङ्गों की धार्मिक साधकता का विचार कैसे किया जाय । क्योंकि उन पञ्चाङ्गों के ग्रह न दृश्य ही रहे न आर्षग्रन्थ के अनुकूल ही हुए ।

पञ्चाङ्ग प्रायः आलस्यवश मकरन्दानुसार वा ग्रहलाघवानुसार बनते हैं । ये अशुद्ध होते हैं । मकरन्दकार ने लिखा है ।

वक्रादिकं स्थूलमिदं मयोक्तं तुलार्थमेवेति न तद्यथार्थम् ।
अस्तोदयौ स्पष्टतरौ प्रसाध्यौ सिद्धान्तरीत्या कुमुतादिकानाम् ॥
यद्वात्र शुक्राङ्गिरसौ प्रसाध्यौ विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ॥

यदि मकरन्द और ग्रहलाघव के ही अनुसार सूर्य चन्द्रमा बनाकर तिथ्यादि का मान निकाला जाय, तो वे तिथ्यादि के बनाने के प्रकार से आये तिथ्यादि मान के बराबर नहीं मिलते । इन बातों को जानकर भी जो मकरन्दीय और ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्ग का आदर करते हैं वे सर्वथा भूल करते हैं ।

यदि वास्तविक विचार किया जाय तो सौर मत ही दृश्य मत कहा जा सकता है । क्योंकि यदि सौर मतानुसार कोई ग्रह अश्विनी में रहेगा तो वह अश्विनी में ही देखा जायगा उस समय दृश्य-गणनानुसार प्रायः वही ग्रह कृत्तिका में रहेगा और उसी को अश्विनी में कल्पना करनी होगी ।

स्वर्गीय पूज्यपाद श्रीमान् माननीय मालवीय जी महाराज के आदेशानुसार पूर्व बातों को ध्यान में रखकर उसी रीति से और कई विद्वानों की सहायता से यह पञ्चाङ्ग बनाया गया है । किन्तु ऋषियों के आदेशानुसार दृश्यपदार्थ दृश्यगणनानुसार ही दिये गये हैं ।

काशी तथा अन्यत्र के प्रसिद्ध विद्वानों की एक समिति ने ऊपर लिखी रीति से बनाये गये पञ्चाङ्ग को ही धर्मकृत्योपयोगी स्वीकार किया था । आशा है इसी पञ्चाङ्ग से धर्मानुरागी जन-मात्र को लाभ पहुँचेगा ।

समर्थन करनेवाले विद्वानों में कुछ लोगों के नाम ।

म०म०पं० प्रथमनाथ तर्कभूषण जी (प्रिंसिपल का० हि० वि० प्रा० वि०), म०म० ज्योतिषाचार्य श्री पं० मुरलीधर झा, जी, म०म० श्री पं०अयोध्यानाथ जी, म०म०पं० जयदेवमिश्र जी, म०म० पं० पञ्चानन तर्करत्न जी, म० म० प्रभुदत्त जी, ज्योतिषाचार्य श्री पं० रामयत्न ओझाजी, म०म० पं० रामकृष्ण जी, पं० चन्द्रधर शास्त्री जी, पं० राधाप्रसाद शास्त्री जी, म० म० पं० चिन्नस्वामी जी, पं० वामदेव मिश्र जी, पं० कालीप्रसाद मिश्र जी, पं० अम्बिकाप्रसाद जी, पं० विश्वनाथजी, पं० रामकृष्ण जी, पं० राजनारायण पाण्डेय जी, पं० महादेवप्रसाद पाण्डेय जी, पं० जियालाल जी (देहली) ज्यौतिषचार्य पं० पद्माकर द्विवेदी जी, ज्यौ० आ० पं० बलदेव पाठक जी, ज्यौ० आ० पं० रिसालदत्त मिश्र जी, ज्यौ० आ० पं० श्री रामव्यास ज्योतिषी जी, ज्यौ० आ० पं० विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डय जी, ज्यौ० आ० पं० रघुनाथ जी, पं० राजाराम जी, पं० राजवैद्य दत्तराना, साहित्याध्यापक पं०रामकुबेर मालवीय जी, धर्मशास्त्राध्यापक पं०वसिष्ठदत्त मिश्र जी, पं०देवनन्दन द्विवेदी जी, पं०श्यामसुन्दर द्विवेदी जी, ज्यौ० आ० पं० बलराम पाण्डेय, पं० शङ्कर लाल गौड़ (शम्भुकवि) आदि ।

बहुत से महानुभावों ने विश्वपञ्चाङ्ग की सर्वोपयोगिता के लिए कृपा पूर्वक अपनी सहानुभूति प्रकट की है, जिनमें कुछ के नाम दिये गये हैं—

श्रीमान् ५ महाराजाधिराज नैपाल	श्रीमान् ५ महाराजा रीवाँ
श्रीमान् ५ महाराजा मैसूर	श्रीमान् ५ महाराजा भोर स्टेट
श्रीमान् ५ महाराजा ग्वालियर	श्रीमान् ५ महाराजा साहब आवागढ़
श्रीमान् ५ महाराजा बहादुर बड़ौदा	श्रीमान् राजगुरु महोदय नेपाल
श्रीमान् ५ महाराजा बहादुर गिद्धौर	श्रीमान् ५ महाराजा साहब टेहरी, गढ़वाल स्टेट
श्रीमान् ५ महाराजा जोधपुर	श्रीमान् ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ती जी सु. पटना
श्रीमान् ५ राजाबहादुर अमावाँ	श्रीमान् मन्त्री ब्राह्मण महासभा भभुआ (आरा)
श्रीमान् होम मेम्बर कौंसिल आफ स्टेट जयपुर	श्रीमान् ज्यो. आ. पं० हरिनन्दन मिश्रजी कानपुर
श्रीमती ५ राजमाता साहिबा मझौली	ज्योतिर्विद् पं० बलदेवजी चतुर्वेदी जौनपुर

राजपण्डित—बुलाकीराम जी भरतपुर

इस पञ्चाङ्ग में प्रतिपक्ष में क्रम से दिनमान, तिथि, वार, तिथिसम्बन्धी घटी, पल, घंटा, मिनट, नक्षत्र, नक्षत्रसम्बन्धी घटी, पल, घण्टा, मिनट, योग, योगसम्बन्धी घटी, पल, घंटा, मिनट, इत्यादि, दोनों करण, अँग्रेजी, फारसी, बंगला, फसली, राष्ट्रीय, तिथि, चन्द्रसंचार, सूर्योदय घंटा, मिनट, सूर्यास्त घंटा, मिनट, रविक्रान्ति के पश्चात् कृष्णपक्ष में चन्द्रोदय और शुक्लपक्ष में चन्द्रास्त का घंटा, मिनट दिया गया है । इसके बाद भद्रा, संक्रान्ति इत्यादि बहुत सी वस्तुएँ दी गई हैं । इसमें तिथ्यादि के घंटे का मान आँधीरात से चौबीस घंटा मान कर जैसे रेलवे में व्यवहार किया जाता है, उसे सूर्य घड़ी के अनुसार दिया गया है । सूर्योदय घंटा आधीरात से और सूर्यास्त घंटा मध्याह्न से दिया गया है रविक्रांति मध्यम (Local) समय के अनुसार ५ बजकर ३२ मिनट पर की है । चन्द्रास्त, चन्द्रोदय घंटा मध्यरात्रि से ही दिया गया है ।

पञ्चाङ्ग देखने की रीति—जैसे चैत्रशुक्ल प्रतिपद् शुक्रवार को दिनमान ३० घड़ी ३१ पल प्रतिपद ५६ घड़ी ५२ पल, रा. ४ घण्टा ३९ मिनट तक है । उत्तरभाद्रपद नक्षत्र २ घड़ी ५ पल, ६ घं. ४४ मि. यानी प्रातः ६ बजकर ४४ मिनट तक है । ब्रह्मयोग ९ घड़ी २१ पल, ९ घण्टा ३८ मि. यानी प्रातः ९ बजकर ३८ मिनट तक, किंस्तुघ्न करण २५ घड़ी १३ पल अर्थात् दिन में १५ बजकर ५९ मिनट तक, बव करण ५६ घड़ी ५२ पल अर्थात् रा. ४ बजकर ३९ मिनट तक है । केतु योग और अंग्रेजी २९ मार्च, फारसी २९, बंगला १६, फसली १५ एवं राष्ट्रीय ता० ९ है (पञ्जाब में बङ्गला ता. संक्रान्ति के दिन से—काशी में संक्रान्ति के दूसरे दिन से और बङ्गदेश में पुण्यकाल के दिन से चलता है) । सूर्योदय गत मध्यरात्रि के बाद ५ बजकर ५४ मिनट पर और सूर्यास्त मध्याह्नोत्तर ६ बजकर ६ मिनट पर होगा । रवि की उत्तरा क्रान्ति ३ अंश १९ कला है । द्वितीया शनिवार की सन्ध्या को १९।३४ पर चन्द्र का दर्शन है । तिथि, नक्षत्र, योग, के घंटा मिनट के पहले 'प्रा' से प्रातः, 'म' से मध्याह्न, 'सा' से सायं और 'रा' से रात्रि और 'दि' से दिन का बोध कराया गया है । इसी प्रकार पञ्चाङ्ग को देखना चाहिए । पञ्चाङ्ग में जो तिथ्यादि का मान दण्डात्मक वा होरात्मक दिया गया है वह सावयव बनाकर "अर्धाल्पे त्याज्यमर्धाधिकं ग्राह्यम्" इस रीति से लिखा गया है । अतः इस पर से बनाने में दो एक पल का अन्तर मालूम पड़ेगा । उसको अशुद्ध नहीं समझना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन के स्पष्टग्रह मिश्रमानकाल के दिये गये हैं । प्रतिदिन की लग्नसारिणी दी गई है जिसमें मध्यरात्रि से ही नदैव मेषादि लग्नों के नाम के सामने उनका प्रवेश घण्टा, मिनट लिखा गया है । जैसे लग्नसारिणी में चैत्रशुक्ल प्रतिपद् शुक्रवार के दिन मेष लग्न के सामने मे० प्र० ६।३९ लिखा है । इसका अर्थ है कि प्रातःकाल ६ बजकर ३९ मिनट पर मेष लग्न का आरम्भ होगा और वृ० प्र० ८।१७ यानी वृष के प्रवेश ८ बजकर १७ मिनट तक मेषलग्न रहेगा । पश्चात् वृष लग्न का आरम्भ हो जायगा । इसी तरह सम्पूर्ण लग्नसारिणी है । इसके बाद कितने कार्यों का मुहूर्त, ग्रहों का दृश्ययोग इत्यादि बहुत सी बातें दी गई हैं । पञ्चाङ्ग के आरम्भ में प्रसिद्ध नगरों का अक्षांश और देशान्तर दिया गया है । चरसारिणी भी दी गई है—जिसमें इसी पञ्चाङ्ग के द्वारा अन्यत्र का भी तिथ्यादि मान बन जाय । अक्षांश पर से पलभा लाने की सारिणी भी दी गई है । प्रतिदिन का रेलवेघड़ी और सूर्यघड़ी का अन्तर दिया गया है । जिससे काशी में रेलघड़ी से सूर्यघड़ी का मान निकालना बड़ा सुगम है । तथा अन्यत्र के लिए भी युक्ति दी गई है । और ऐसी बहुत सी बातें दी गई हैं जो देखने से ही जान पड़ेंगी ।

काशी बहुत दिनों से विद्या का केन्द्र है । बहुत से लोग काशी के ही पञ्चाङ्ग को लेकर बर्मा, सिंगापुर और फिजीद्वीप तक चले जाते हैं । परन्तु जो तिथ्यादि का मान काशी में होगा वह काशी से पूर्व या पश्चिम के देशों में कथमपि नहीं होगा । विश्वपञ्चाङ्ग द्वारा काशी से अन्यत्र तिथ्यादि मान निकालने की रीति—काशी में जो तिथ्यादि का घण्टादि मान हो उसमें इष्ट देश का काशी से जो घण्टा मिनट सेकण्ड देशान्तर हो उतना पूर्व के देशों में जोड़ देने से तथा पश्चिम के देशों में घटा देने से उस देश का घण्टादि मान हो जायगा ।

जैसे—चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार को [illegible] कलकत्ते में तिथ्यादि का मान क्या होगा यह जानने की रीति—उस दिन रवि की उत्तरा क्रान्ति [illegible] लिखी है । कलकत्ते का अक्षांश २२।३० है । काशी देशान्तर २२ मिनट, [illegible] । चरसारिणी से अक्षांश [illegible] मिनटादि ५।३० निकला । इसको ६ घण्टे में जोड़ देने से घण्टादि [illegible] हुआ । इसको १२ में घटा देने से सूर्योदय घण्टादि [illegible] हुआ । काशी में जो तिथ्यादि सम्बन्धि घण्टा मिनट लिखा है पूर्व होने के कारण कलकत्ते का [illegible] देशान्तर जोड़ देने से तिथ्यादि का मान [illegible] निकला ।

	[illegible]		[illegible]		[illegible]
प्रतिपदा	[illegible]	उत्तरभाद्रपद	[illegible]	ब्रह्म	[illegible]
	[illegible]		[illegible]		[illegible]

इस घण्टादि काल पर से सूर्योदय घण्टा द्वारा घट्यादि मान जानना भी बहुत सुगम है । पहले दी हुई रीति से जो सूर्योदय का मान [illegible] उसको पाँच से गुणा देने से घट्यादि दिनमान होगा । [illegible] देशान्तर होगा । यह देशान्तर उत्तराक्रान्ति होने पर [illegible] होता है । दक्षिण क्रान्ति में इसके विपरीत होता है । [illegible] संस्कार धन या ऋण जो हो उसको फलघटी कहते हैं । [illegible] इष्टदेश सम्बन्धि तिथ्यादि का मान [illegible] संस्कार करने से इष्टदेश का मिश्रमान बन जायगा ।

[illegible] तिथ्यादि का मान [illegible] घण्टा मिनट की जगह गुणन × का चिन्ह दिया गया है [illegible] कोष्ठक ( ) चिह्न के भीतर दिया गया है । सूर्य और चन्द्रमा का [illegible] होता है । शुक्लपक्ष प्रतिपद् के उत्तरार्ध से बवादि ७ करण [illegible] कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध से शुक्ल प्रतिपद के पूर्वार्ध तक [illegible] । सूर्य, चन्द्रमा का अन्तर जब १२ अंश होता है तब एक तिथि होती है । [illegible] १३ अंश २० कला [illegible] तब अश्विन्यादि एक नक्षत्र होता है । सूर्य और चन्द्रमा का [illegible] १३ अंश २० कला होता है, तब एक योग विष्कुम्भादि होता है । पञ्चाङ्ग में मिश्रमान-कालिक सूर्य और चन्द्रमा [illegible] दिये गये हैं कि यदि तिथ्यादि के मान में कहीं किसी को सन्देह हो तो [illegible] कर लिया जाय । मनुष्य सर्वज्ञ नहीं है, अतः भ्रम या त्रुटि होना असंभव नहीं है, और पञ्चाङ्ग इस प्रकार की वस्तु है जिसमें तिथ्यादि का मान शुद्ध होते हुए भी भ्रम हो सकता है, किन्तु जहाँ तक हो सकता है इस पञ्चाङ्ग के शुद्ध होने के लिए विशेष ध्यान रखा गया है । सज्जनों से प्रार्थना है कि कृपापूर्वक इस पञ्चाङ्ग को देखें और लाभ उठावें । जो त्रुटि इसमें रह गई हो, या यदि कोई [illegible] बात छूट गई हो, तो कृपापूर्वक उसकी सूचना दें और दोष को क्षमा करें ।

इस पञ्चाङ्ग में धार्मिक कथा आदि का संग्रह स्वर्गीय श्रीमान् पूज्यपाद मालवीय जी महाराज ने स्वयं किया था । स्थानाभाव के कारण वह अत्यन्त संक्षिप्त था । अब इसमें कुछ और [illegible] की वृद्धि कर दी गई है । पृथक् पृथक् दे दिये गये हैं । जिससे इष्ट [illegible] निर्णय [illegible] कर सकते हैं । आशा है इससे धार्मिक जनता पूरा लाभ उठा सकेगी । —[illegible]

ज्यौतिपमहिमा—

वेदाङ्गमाद्यं वेदानां क्रियाणां च प्रसाधनम् । ज्योतिर्ज्ञानं द्विजेन्द्राणामतो वेद्यं विदुर्बुधाः ॥
ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् । ज्योतिर्ज्ञानं च यो वेत्ति स याति परमां गतिम् ॥
चन्द्रनक्षत्रताराणां ग्रहाणां भास्करस्य— च । ज्योतिषामपियज्जोतिज्योंतिषामपि पावनम् ॥
तद्भावभाविनं युक्तं तं देवा ब्राह्मणं विदुः । तस्मात्पूर्वमधीयीत ज्योतिर्ज्ञानं द्विजोत्तमः ॥
धर्मसूत्रं ततः पश्चाद्यज्ञकर्मविधिक्रियाम् । यज्ञाश्चायुष्यहोमाश्च चूडोपनयनानि च ॥
साम्राज्यं पौर्णमास्यं च पितृदैवततर्पणम् । सर्वारम्भाश्च जगतो लोके च विविधाः क्रिया ॥
न ज्योतिषं विना तासां प्रवृत्तिरुपलभ्यते । आप्यायनं च वेदानां यज्ञाः प्रोक्ता क्रियाश्रयाः ॥
यज्ञार्थमपि च प्रोक्ताः स्वयं वेदाः स्वयंभुवा । न च ते सम्प्रवर्तन्ते कालज्ञानात्कथंचन ॥
यज्ञक्रिया अहोरात्रं क्रियाश्चान्या जगद्धिताः । तस्मात्पुण्यं समं वेदैर्यज्ञचक्षुः सनातनम् ॥
स्वर्ग्यमव्ययमव्यग्रैर्ब्राह्मणैः शंसितव्रतैः । ततः कालप्रसिद्ध्यर्थं राशयः पूर्वमीरिताः ॥
अहोरात्रविभागाश्च तिथीनां च क्रियाविधिः । सोमसूर्यविलग्नानामृक्षाणां चापि निश्चयः ॥
आदानयोगभोगाश्च विसर्गश्चार्कसोमयोः । दिनर्तुपक्षमासानां चन्द्रार्काणां विनिश्चयः ॥
कर्मोपभोगमानानां लेख्यः प्रश्नविधिस्तथा । एवमाद्याः समस्ताश्च क्रिया ज्योतिषसंश्रिताः ॥
भास्करः—तस्माद्द्विजैरध्ययनीयमेतत्पुण्यं रहस्यं परमं च तत्त्वम् ।
यो ज्यौतिषं वेत्ति नरः स सम्यग् धर्मार्थकामान् लभते यशश्च ॥

कालमहिमा—

अनादिरेष भगवान्कालोऽनन्तोऽजरोऽमरः । सर्वगत्वात् स्वतन्त्रत्वात् सर्वात्मत्वान्महेश्वरः ॥

विष्णुधर्मोत्तरे—

अनादिनिधनत्वेन स महान्परमेश्वरः । निमेषादपि सूक्ष्मत्वात् सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरोह्यति ॥
तस्य सूक्ष्मातिसूक्ष्मस्य तथापि महतो द्विजाः । मानसंख्या बुधैर्ज्ञेया ग्रहगत्यनुसारतः ॥
भगवद्वचनम्—कालः कलयतामहम् । ब्रह्मणो बहवो रुद्रा ह्यन्ये नारायणादयः ॥
एको हि भगवानीशः कालः कविरिति स्मृतः । अनादिनिधनःकालो रुद्रः संकर्षणः स्मृतः ॥
कलनात् सर्वभूतानां स कालः परिकीर्तितः । श्रूयतां स्वर्ग्यमायुष्यं धर्म्यं पुण्यं यशस्करम् ॥
ज्ञानविज्ञानसम्पन्नं द्विजानां पावनं परम् । कालज्ञानमिदं पुण्यमाद्यं हि ज्ञानमुत्तमम् ॥
सिसृक्षुणा पुरा वेदानेतत्सृष्टं स्वयम्भुवा । कालः सृजति भूतानि कालः संहरति जगत् ॥
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥

संवत्सरावली—

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत् पादपङ्कजस्मरणम् । वासरमणिरिव तमसां राशि नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥ तिथिवारञ्च नक्षत्रं योगं करणमेव च । पञ्चाङ्गस्यफलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ॥२॥ अस्मिन्नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद्ध्वजारोपणम् । स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैःसाकं सुपूज्योत्सवैः॥ देवानां गुरुपोषिताञ्च विभवालङ्कारवस्त्रादिभिः । सम्पूज्यो गणकः फलञ्च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥३॥ पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥४॥ मरीचिलवणहिंगु-जीरकेण च संयुतम् । अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये ॥५॥ राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतोमन्त्रिश्रवा-[illegible] धान्येशात्कमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात् । धर्मवृद्धिरतिस्थिरा रसपते दीर्घायुराप्ति-[illegible] । [illegible] यतः शुभकरी राजावली श्रूयताम् ॥६॥ अथास्मिन्वत्सरे वर्तमानकल्पारम्भतः ससन्धयः षड्मनवो व्यतीताः, वर्तमानो वैवस्वतमनुस्तस्य प्रवृत्तेस्सप्तविंशतिमितानि महायुगानिव्यतीतानि अष्टाविंशतितमे युगे, त्रयो युगचरणाः गताः चतुर्थे चरणेकलौ कलेरारम्भतो नन्दगष्टयुत्तरपञ्चसहस्र-मितानि वर्षाणि व्यतीतानि तथा कल्पादितः १९७२९४९०६९ वत्सराव्यतीताः—सृष्ट्यादितश्च १९५५८ ८५०६९ विक्रमराज्यकालात्संवत्सरा गताः २०२५ शकारम्भतश्च १८९० व्यतीताब्दाः एवं चैत्रशुक्ल १५ शनौ निशीथे सौरमानेनाहर्गणः ७१४४०४१४८१२८ युगादेश्चाहर्गणः १८५१४९५ अहर्गणोत्था मध्यमग्रहाः– सू. ११।२८।२३।१३ चं. ६।१०।७।३ मं. ०।१९।१५।३५ बु. शी. उ. ११।१६।२३।५१ बृ. ४।१२।२७।४४ शु. शी. उः १०।२६।२।२४ श. ११।२२।४२।४१ रा. ११।२८।५३।६ चं. उ. १।४।५४।६ रविमन्दफलं २।८। ९।२९ स्पष्टरविः ०।०।३१।२३ मध्यमचन्द्रः ६।१०।७।३ चन्द्रफलम् २।७।३४।३६ स्फुटचन्द्रः ६।७।५९।२८ भौमस्यप्रथमशीघ्रफलार्धं ४।५।५५।१९ फलार्ध-संस्कृतः ०।१५।९।४० मन्दकेन्द्रम् २।५।६।५३ फलार्धं ५।१४।४९।५ तत्संस्कृतश्च ०।२०।२४।२९ द्वितीयमन्दकेन्द्रम् २।१०।२१।४३ मन्दफलम् १०।५३।२।४९ मन्दस्पष्टः १।०।८।३८ द्वि. शी. के. १।१।४५।२५ शीघ्रफलम् १२।२४।२२।४६ स्पष्टभौमः ०।१७।४४।१५ एवमेव फलचतुष्टय संस्कृत स्प. बु. ११।२२।४७।४८ स्प. बृ. ४।६।५९।१२ स्प. शु. ११।१५।५३।२६ स्प. श. ११।१६।५३।२४।

गुरुमानेन चन्द्रवर्षादौ दुर्मतिनाम संवत्सरः ततश्च मार्गशीर्षकृष्ण ५ रवौ४८।३४ इष्टतः दुन्दुभिः नाम संवत्सरः प्रवेक्ष्यति ।

वर्षेऽस्मिन् राजा शुक्रः । मन्त्री शनिः । मेघेशो शुक्रः । पूर्वधान्येशो भौमः । रसेशो गुरुः । पश्चिमधान्येशो रविः ।

संवत्सरादिफलम्

दुर्मति संवत्सरफलम्—मेदिनीपति गणोऽति दुर्मतिः सततं निहत शत्रु सन्ततिः ।
दुर्मतौ तदपि सर्वदेहिनः पुत्रपौत्रधनमित्र शोभिनः ॥
राजा शुक्रफलम्—वसुमती जलपूर्णजलाशया धनयुता जनता रहितामया ।
फलकणोपचयोऽखिल धेनवः सुपयशोनृपतिर्यदि भार्गवः ॥
मन्त्री शनिफलम्—नैव धान्यफलपुष्पसञ्चयः स्यादवर्षण वशाज्जगत्क्षयः ।
वह्निभीः प्रचुरतस्करोदयः सूर्यजेऽत्र सचिवे महाभयः ॥
पूर्वधान्येश भौमफलम्—जलकणादिकमल्पसञ्चयं ज्वलनतस्करजं प्रचुरं भयम् ।
जगद सं गदवृद्धियुतं सदा क्षितिसुतोऽग्रिमधान्यपतिर्यदा ॥
पश्चिमधान्येश रविफलम्—
ज्वरेण सहितो जनो न बहुयावनालादिकं कुलं क्षिति भूतां मिथोरणविधायिनी बोदकं ।
कुलित्थ चणकादिकोपचितिरीति भीतिः सदा भवेद्दिवसनायकश्चरम धान्यनायोयदा ॥
रसेश गुरुफलम्—कुंकुमाद्यपचितिर्बहूदकं स्यात्तथा रसफलेक्षुकादिकम् ।
चन्द्रचन्दन सुवर्ण सम्भृतिश्चेद् भवेद्रसपतिर्बृहस्पतिः ॥
मेघेश शुक्रफलम्—द्विजकुलमनिशं मुदं प्रयाति त्रिदशपति प्रबलं बलं ददाति ।
अगणितकणसंयुता धरित्री जलपतिर्यदि पूर्वदेव मन्त्रीः ॥

अस्मिन्वर्षे वर्षाढकं १०० समुद्रे ५० पर्वते २५ भूमौ २५ वर्षाढकम् । परञ्च त्रिविनाका-नुसारेण रोहिणीमं पर्वते पतति । तत्फलं मध्यमम् । मास परत्वेन आढक-प्रमाणम्—आषाढे ५ श्रावणे ७ भाद्रे ८ आश्विने ३ कार्त्तिके २ । नक्षत्र परत्वेन—आर्द्रायां ३, पुनर्वसौ ४, पुष्ये ४ श्लेषायां ५ मघायां ४ पू. फा. भे. २ उ. फा. भे. २ हस्ते १ ।

अथराज्यादिषु विशेषः—पाञ्चालसौराष्ट्रदेशेषु राजफलम् । गुर्जरयावनयोः सस्येश फलम् । कोकण मालवयोः रसेश फलम् । विन्ध्याद्रिदक्षिणे चार्द्राफलम् ।

विंशोपकाः—जलवृष्टिः ५ धान्यम् ७ तृणम् १५ शीतः ११ उष्णः ५ वायुः १३ वृद्धिः १५ विनाशः १५ विग्रहः ११ क्षुत् १ तृष्णा ३ निद्रा ९ आलस्यम् ३ उद्यमः १३ शान्तिः ३ क्रोधः ३ दम्भः ३ भेदः १ मैत्री १३ र. नि. ७ फ. नि. ११ उत्साहः ९ शलभाः ३ शुकः ९ मूषकः ३ अतिवृष्टिः ११ अनावृष्टिः ११ स्वचक्रः १५ परचक्रः ९ नाणकम् ३ रत्नम् ३ वस्त्रम् ११ घृतम् ७ तैलम् १७ दुकूलम् १७ ऊर्णाः ११ क्षौम्यम् ३ कार्पासः १५ वल्कलः १९ सुवर्णम् १५ ताम्रः ३ वंगः १९ रौप्यम् १७ लोहम् ११ सर्पः १९ पारदः ९ कांस्यम् १३ पित्तलः १७ उ. प्र. ३ सौ. प्र. ९ पा. प्र. ५ पुण्य प्र. १३ व्याधिः ३ भैषजम् १३ उग्रताः १३ आचारः ५ अनाचारः ९ मरणम् ११ जन्मः १३ देशोपद्रवः १७ देशस्वास्थ्यम् ७ चौरभयम् १९ चौरभयनाशः ३ अग्निभयम् ११ अग्निभयनाशः ११ विषभयम् ३ विषभयनाशः ५ सेवकत्व १९ स्वामित्व ११ निजधन १५ परधन १५ द्यूतः ११ पुंश्चलीकर्म ३ जारण ९ जारणनाशः १३ मारण १५ मारणनाशः १५ स्तम्भन १३ स्तम्भननाशः ९ मोहन ३ मोहननाशः १३ उच्चाटन ५ उच्चाटननाशः १३ वशीकरणः ३ वशीकरणनाशः ९ वातप्रकृतिः १५ पित्तप्रकृतिः ३ कफप्रकृतिः ७ द्वंदज ११ सन्निपात १५ यश १९ अपयश ५ गर्व ७ गोत्रप्रपञ्च ९ गोत्रप्रपञ्चनाशः ११ भूतबाधाः १३ भूतबाधानाशः १५ ग्रहदोष १७ ग्रहदोषनाशः १९ अण्डज ५ पिण्डज ५ स्वेदज ५ उद्भिज ५ पुण्य १ पाप १९ सर्वनिष्पत्तिः ९ ।

वर्षापनविधिः

अथायुष्यादिविवृद्धये प्रत्यब्दे चन्द्रमानेन जन्मतिथावेव वर्षापनं कार्यम् । तत्र जन्मर्क्षयोगवती तिथि-र्यत्रैवोपलभ्यते सैव ग्राह्या-दिनद्वये नक्षत्रयोगसत्वेत्वौदयिकी द्विमुहूर्त्ताधिकाग्राह्या-द्विमुहूर्त्तान्यूनत्वे पूर्वा, जन्म-मासाधिमाससत्वे शुद्धमासे वर्षापनविधिः । तत्र यजमानः मौनपूर्वकं कृतनित्यक्रियः पूर्वाभिमुखमुपविश्य कुशा-सनादिकं गृहीत्वा ओम अद्येत्यादि"'सकलाऽरिष्टनिवृत्तये श्रीविष्णुप्रीतये आयुरारोग्याऽभिवृद्ध्यै वर्षापनकर्म-करिष्ये "इति संकल्प्य-तिलोद्वर्त्तनपूर्वकं तिलोदकेन स्नात्वा-विघ्नेशपूजनपूर्वकं पञ्चाङ्गं कृत्वा जन्मनक्षत्राधिपं पितरं प्रजापतिं भानुं मार्कण्डेयं परशुरामं बलिं हनुमन्तं विभीषणं कृपं प्रह्लादं षष्ठी प्रभृति देवान् नाममन्त्रै गंधाक्षतपुष्पधूपादिना पूजनं विधाय षष्ठ्यै दधिभक्तनैवेद्यं निवेद्य पूजनान्ते प्रार्थयेत्" ओं मार्कण्डेयाय मुनय नमस्तेमहदायुषे । चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथामुने "रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रियायुक्तश्च सर्वदा" ॥ मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन । आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव । चिरंजीवी यथात्वं तु मुनीनां प्रवरोद्विज । कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम् ॥ नराणामायुरारोग्यैश्वर्यदं[illegible] । सौम्यमूर्त्ते नमस्तुभ्यं भृगुवंशवराय च । महातपे मुनिश्रेष्ठ सप्तकल्पान्तजीवन । मार्कण्डेय नमस्तुभ्यं [illegible] प्रयच्छ मे ॥ मार्कण्डेय महाभाग प्रार्थये त्वां कृताञ्जलिः । चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्येऽहं तथामुने । इत्या-दिना मार्कण्डेयं संप्रार्थयेत्—अथ षष्ठीप्रार्थना—जयदेवि जगन्मातर्जगदानन्दकारिणी । प्रसीद मम [illegible] नमस्ते षष्ठिदेवते । त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च । ब्रह्मविष्णुशिवैस्साकं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे—इत्यादिना षष्ठीं संप्रार्थ्य—अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजी-विनः । सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ प्रीयन्ता देवताः सर्वाः पूजां गृह्णन्तु ता मम । प्रयच्छन्त्वायुरारोग्यं यशस्सौख्यं च सम्पदः । मन्त्रहीनं भक्तिहीनं क्रियाहीनं महामुने । यदर्चितं मया देवाः परिपूर्णं तदस्तु मे । इत्यादिना देवान् संप्रार्थ्य—तत्स्तिलगुडमिश्रित पयः पिबेत् ।

तन्मन्त्र—सतिलं गुडसमिश्रमञ्जल्यर्धमितं पयः । मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये ॥ इत्या-दिना पिबेत् । [illegible] पूजितदेवानां नामग्रहणेन [illegible] तिलहोमः [illegible] ब्राह्मणभोज-नम्—तद्दिने विशेषनियमाः—[illegible] । [illegible] वर्षवृद्धौ विवर्जयेत् ॥

नृतेऽक्ष्णि संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा ॥ [illegible] न स्नायात्कृष्ण वारिणा ॥ इति संक्षेपतो वर्षापनविधिः ॥

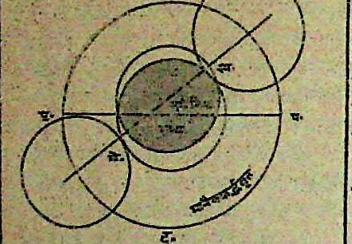
अथारिष्टशान्त्यर्थं महामृत्युञ्जयजपविधिः

[illegible] संकल्पः— [illegible] ॥ [illegible] इति षडङ्गन्यासः ।

[illegible] पुष्टिवर्धनं मुखे । उर्वारुकं गण्डयोः । [illegible] अमृतात पादयोः ॥ इति पदन्यासः ॥

[illegible]

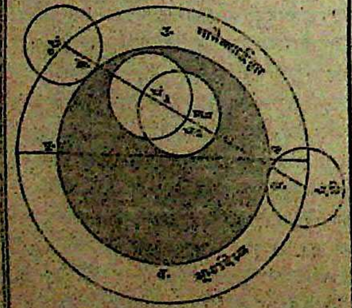
४ श्री संवत् २०२५ आश्विनकृष्ण अमावस्या रविवार दिनाङ्क २२ सितम्बर १९६८ को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र कन्या राशि पर काशी में ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण होगा।



ग्रहण फलम् ।	
मेष	सौख्यम्
वृष	चिन्ता
मिथुन	व्यथा:
कर्क	श्री:
सिंह	क्षति:
कन्या	घात:
तुला	हानि:
वृश्चिक	लाभ:
धनु	सुखम्
मकर	माननाश:
कुंभ	मृत्यु:
मीन	स्त्रीपीड़ा

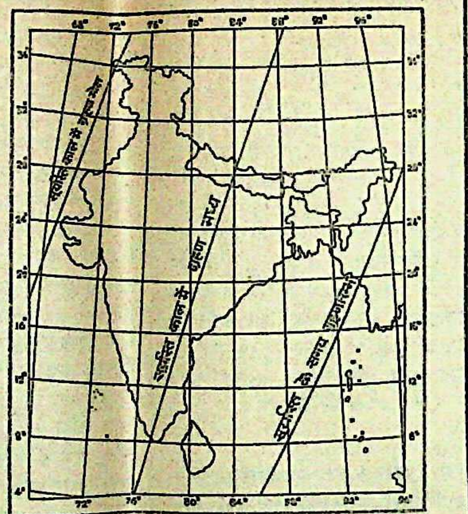
	स्टैण्डर्ड घटिकात:	काश्यांसूर्य घटिकात:	सूर्यास्त १७।५४।३६
स्पर्श:	१६।५२।३०	१७।१।४१	सूर्यबिम्बाङ्गुलादि: १२।०
मध्य:	१७।५१।२१	१८।२।३२	ग्रासमानमङ्गुलादि: ९।७
मोक्ष:	१८।५३।३२	१९।२।४३	

श्री संवत् २०२५ आश्विनशुक्ल पूर्णिमा रविवार दिनाङ्क ६ अक्टूबर १९६८ को रेवती नक्षत्र मीनराशि पर काशी में सायंकाल ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण होगा।



ग्रहण फलम् ।	
मेष	हानि:
वृष	लाभ:
मिथुन	सुखम्
कर्क	माननाश:
सिंह	मृत्यु:
कन्या	स्त्रीपीड़ा
तुला	सौख्यम्
वृश्चिक	चिन्ता
धनु	व्यथा:
मकर	श्री:
कुम्भ	क्षति:
मीन	घात:

	स्टैण्डर्ड घटिकात:	काश्यांसूर्य घटिकात:	कान्तिमोक्षारम्भ १८।१८
स्पर्श:	१५।२४।३७	१५।३४।२८	चन्द्रबिम्बाङ्गुलम् १२।०
मध्य:	१७।१२।१	१७।२५।४८	ग्रासमानमङ्गुलादि: १४।५
मोक्ष:	१८।५९।१३	१९।१३।०	चन्द्रोदय: १७।३६



विंशोत्तरीयाऽऽयव्ययचक्रम् ।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	यो.
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८	८७
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११	१२३

अष्टोत्तरीयाऽऽयव्ययचक्रम् ।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	यो.
आय	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	९९
व्यय	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४	१२६

उभय लाभव्यय चक्राद्विशेषविचार:—लाभव्ययौ समौ-कृत्वा-एकहीनं तु कारयेत् । अष्टभिस्तुहरेद्भागंशेषाङ्कैफल मादिशेत् ॥ लाभं १ सौख्यं २ तथा क्लेशं ३ रोगं ४ लोकपवादनम् । ५ सम्मानं ६ विजयं ७ हानि: ८ कथितं पूर्वसूरिभि: । अन्यदपि-उभय लाभाङ्कैक्यं लाभ: व्ययैक्यञ्चव्ययमितिविचार्यं यत्र विभागे अङ्काधिक्यं तत्फलमप्यधिकंज्ञेयम् ।

ग्रहणे सूतकविनिर्णय:—चन्द्रग्रहणे स्पर्शकालात्पूर्वं प्रहरत्रयं सूतकम्, वृद्धगौतम:-सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम् । चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना । किन्तु पुत्रवता गृहिणी उपवासं न कर्तव्य:, यथोक्तं पुरुषार्थचिन्तामणौ, आदित्येऽह्नि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्र सूर्ययो: । पारणं चोपवासं च न कुर्यात् पुत्रवान् गृही । 'एतेन बालवृद्धातुर पुत्रवद्गृहस्थेतराणां (विधवायति वैष्णवादि विरक्तानां) कृते उपवास: ।

चन्द्रग्रहण में स्पर्शकाल से ३ प्रहर अर्थात् ९ घण्टा पहले से ही सूतक लग जाता है। सूतक में बालक, वृद्ध एवं रोगी को छोड़कर अन्य सभी को स्नान, दान जपादि कार्य करना चाहिए। तथा भोजनादि नहीं करना चाहिए। साथ ही गर्भिणी स्त्री ग्रहण को न [illegible]

संक्षिप्त विवाहादि मुहूर्त्ता: ।
(विशेष विवरणं पत्रे द्रष्टव्यम्)

वैशाखकृष्णपक्ष:

ति. ५ बुधे-मूले रे. ६ ल. ८ वा ९ ने. दा.।
ति. ६ गुरौ-मूले रे. ६ दिवा ल. चि. ।
ति. ७ शुक्रे-उ.पा. भे रे. ८ ल. ८वा ९ने.दा.।
ति. ८ शनौ-उ. पा. भे. रे. ८ दि. ल. चि.।

वैशाखशुक्लपक्ष:

ति. २ चन्द्रे-रोहिण्यां रे. १० ल. १० ने.दा.।
ति. ३ भौमे-रोहिण्यां रे. ९ ल. गोधूलि वा ल. ९ ने. दा. ।
ति. ४ बुधे-मृगे रे. ९ विष्टे: पूर्वं ल. चि. ।
ति. ८ चन्द्रे-मघा भे रे. ७ ल. गो वा ल. ९ ने. दा. ।
ति. ९ भौमे-मघा भे रे. ७ दिवा ल. चि. ।
ति. १२ गुरौ-हस्ते रे. ९ल. गो. वा ९ ने. दा. ।

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:

ति. १ चन्द्रे-मैत्रे रे. ७ गो. वा ल. ९ ने.दा. ।
ति. २ भौमे-मूले रे. ९ लग्नं चिन्त्यम् ।
ति. ३ बुधे-मूले विष्टे: परं मृत्युवाण: ।
ति. ४ गुरौ-उ.पा.भे.रे. ७ ल. ९ ने. दा. ।
अत: परं शुक्रवार्धक्यादि दोषाद्विवाहादि शुभकर्म मुहूर्त्ताभाव: ।

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:

ति. १३ चन्द्रे-स्वात्यां विष्टे: परं रे. ९ ल. चि. ।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:

ति. २ शुक्रे-मूले रे. ८ल. गो.वा ल. ४ने.दा.।
ति. ३ शनौ-मूले स्वल्पकाल: ।
ति. ५ रवौ-उ.पा. भे. रे. ८ ल: गो. वा ल. ४ ने. दा.।
ति. १५ बुधे-रोहिण्यां मृत्युत: पूर्वं ल. गो.।

पौषकृष्णपक्ष:

ति. १ गुरौ-रोहिण्यां मृत्युवाण: मृगे मृत्युत: परं ल. चि.।
ति. २ शुक्रे-मृगे रे. ६ दि. ल. चि.।
ति. ६ बुधे-मघा भे रे. ७ विष्टे:पूर्वं दि. ल. चि.।

माघकृष्णपक्ष:

ति. १२ बुधे-मूल भे. रे. ८ ल. चि.।
ति. १३ गुरौ-मूल भे. रे. ८ ल गो.।

माघशुक्लपक्ष:

ति. १० चन्द्रे-रोहिण्यां रे. ८ ल. चि.।
ति. १० भौमे-रोहिण्यामावश्यके ल. गो.।
ति. ११ बुधे-मृगे रे. ८ दिवा. ल. चि.।

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

ति. १ चन्द्रे-मघा भे. रे. ८ ल. चि.।
ति. २ भौमे-मघा भे. दिवा. ल. चि.।
ति. ६ शनौ-स्वात्यां रे. ८ ल. चि.।
ति. १० गुरौ-मूलभे रे. ८ ल. गोधूलि: ।
ति. ११ गुरौ-मूलभे स्वल्पकाल: ।

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

ति. ८ चन्द्रे-रोहिण्यां वैधृते:परं रे. ७ ल. चि.।
ति. ९ भौमे-रोहिण्यां दि. ल. चि., मृगे रे. ५ लग्न ७ ने. दा.।
ति. १० बुधे-मृगे दिवा. ल. चिन्त्यम् ।
ति. १३ रवौ-मघाभे रे. ७ ल. ७ ने. दा.।
ति. १४ चन्द्रे-विष्टे:पूर्वं मघाभे दिवा. ल. चि.।

चैत्रकृष्णपक्ष:

ति. ३ शुक्रे-स्वात्यां लग्नं चिन्त्यम् ।
ति. ४ शनौ-स्वात्यामावश्यके ल. चि. ।
ति. ८ भौमे-मूले व्यतिपातात्पूर्वं रे. ८ल.चि.।
ति. १० गुरौ-उ. पा. भे लग्नं चिन्त्यम् ।
अत: परं मीनार्क दोष सत्त्वात् विवाहादि मुहूर्त्ताभाव: ।

उपनयनमुहूर्त्ता:

वै. शु. ५ बुधे-रोहिण्यामुपनयने ल.३ने.दा.।
वै. शु. १० चन्द्रे-श्लेषायामुपनयने ल. ३ ने. दा.।
वै. शु. ५ गुरौ-आर्द्रायामुपनयने ल. ३ ने. दा.।
वै. शु. ११ बुधे-पूर्वायामुपनयने ल. ३ ने. दा.।
मा. शु. ५ बुधे-पू. भा. भे उपनयने रोगवाण:।
मा. शु. ११ बुधे-मृगे विष्टे: परं वैधृते: पूर्वं ल. चि.।
फा. शु. ३ बुधे-उ. भा. भे उपनयने ल. चि.।
फा. शु. ५ शुक्रे-अश्विनी भे उपनयने रोगवाण: ।
फा. श. १० बुधे-मृगे आर्द्रायां च उपनयने ल. चि. ।
फा. शु. ११ गुरौ-आर्द्रायामुपनयने ल. चि. ।
चै. कृ. २ गुरौ-हस्ते उपनयने ल. चि. ।

गृहारम्भप्रवेशयोर्मुहूर्त्ता: ।

वै. शु. ११ बुधे-उ. फा. भे गृहारम्भप्रवेशयो-श्चक्रशुद्धि: सत्वेऽपि शनिवेध: ।
श्रा. कृ. १० शनौ-रोहिण्यां गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि:
श्रा. कृ. १२ चन्द्रे-मृगे गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि: ।
श्रा. शु. ६ बुधे-हस्ते गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि, चित्रायां भूशयनदोष: ।
फा. शु. १० बुधे-मृगे गृहारम्भप्रवेशयोश्चक्रशुद्धि: ।

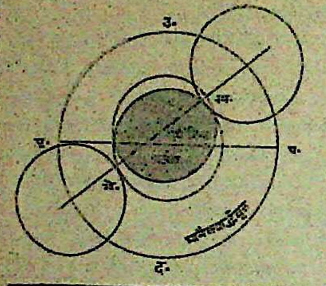
सन् १९६८-६९ का काशी में रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का प्रतिदिन मिनटादि अन्तर

ता.	मार्च	एप्रिल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित०	अक्टू०	नवम्बर	दिस०	जन. १९६९	फर०	मार्च
१		२ १	४ १८	४ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२		१ ४३	५ १	४ १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३		१ २५	५ ८	४ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४		१ ७	५ १४	३ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५		० ५०	५ १९	३ ४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६		० ३३	५ २४	३ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७		० १५	५ २९	३ १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८		+० १	५ ३३	३ ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९		० १८	५ ३६	२ ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०		० ३५	५ ३९	२ ४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११		० ५१	५ ४१	२ ३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२		१ ७	५ ४३	२ २१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३		१ २२	५ ४४	२ ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४		१ ३८	५ ४४	१ ५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५		१ ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६		२ ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७		२ २२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	[illegible]	× ×	[illegible]	× ×	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सूचना—१ सितम्बर सन् १९४२ ई० से १५ अक्टूबर सन् १९४५ ई० तक १ घंटा स्टैण्डर्ड टाइम बढ़ा हुआ था, इसलिए उनके समयों के [illegible] समय में १ घंटा घटाकर पूर्व सूचनानुसार सूर्य घड़ी बनानी चाहिये।

[illegible]

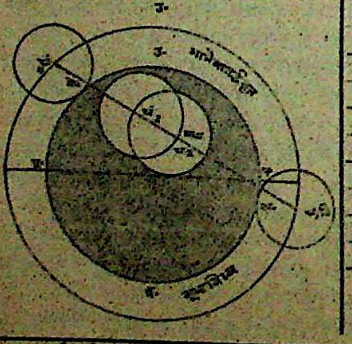
श्री संवत् २०२५ आश्विनकृष्ण अमावस्या रविवार दिनाङ्क २२ सितम्बर १९६८ को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र कन्या राशि पर काशी में ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण होगा।



ग्रहण फलम्।	
मेष	सौख्यम्
वृष	चिन्ता
मिथुन	व्यथा:
कर्क	श्री:
सिंह	क्षति:
कन्या	घात:
तुला	हानि:
वृश्चिक	लाभ:
धनु	सुखम्
मकर	माननाश:
कुंभ	मृत्यु:
मीन	स्त्रीपीड़ा

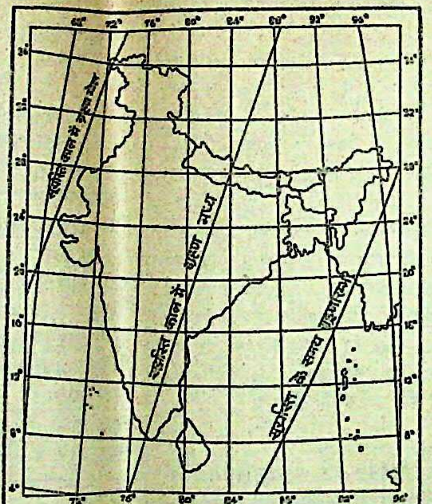
	स्टैण्डर्ड घटिकात:	काश्यांसूर्य घटिकात:	सुर्यास्त १७।५४।३६
स्पर्श:	१६।५२।३०	१७।२।४१	सूर्यबिम्बाङ्गुलादि: १२।०
मध्य:	१७।५।१।२१	१८।२।३२	ग्रासमानमङ्गुलादि: ९।७
मोक्ष:	१८।५३।३२	१९।२।४३	

श्री संवत् २०२५ आश्विनशुक्ल पूर्णिमा रविवार दिनाङ्क ६ अक्टूबर १९६८ को रेवती नक्षत्र मीनराशि पर काशी में सायंकाल ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण होगा।



ग्रहण फलम्।	
मेष	हानि:
वृष	लाभ:
मिथुन	सुखम्
कर्क	माननाश:
सिंह	मृत्यु:
कन्या	स्त्रीपीड़ा
तुला	सौख्यम्
वृश्चिक	चिन्ता
धनु	व्यथा:
मकर	श्री:
कुम्भ	क्षति:
मीन	घात:

	स्टैण्डर्ड घटिकात:	काश्यांसूर्य घटिकात:	कान्तिमालिकाग्रस्त १६।१८
स्पर्श:	१५।२४।३७	१५।३८।२८	चन्द्रबिम्बाङ्गुलम् १२।०
मध्य:	१७।१।२१	१७।२५।४८	ग्रासमानमङ्गुलादि: १४।५
मोक्ष:	१८।५३।१३	१९।१।३।०	चन्द्रोदय: १७।३६



विंशोत्तरीयाऽऽयव्ययचक्रम्।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	यो.
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८	८७
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११	१२३

अष्टोत्तरीयाऽऽयव्ययचक्रम।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	यो.
आय	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	९९
व्यय	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४	१२६

उभय लाभव्यय चक्राद्विशेषविचार:—लाभव्ययौ समौ-कृत्वा-एकहीनं तु कारयेत्। अष्टभिस्तुहरेद्भागंशेषाङ्केफल मादिशेत्॥ लाभं १ सौख्यं २ तथा क्लेशं ३ रोगं ४ लोकपवादनम्। ५ सम्मानं ६ विजयं ७ हानि: ८ कथितं पूर्वसूरिभि:। अन्यदपि-उभय लाभाङ्कैक्यं लाभ: व्ययैक्यन्व्ययमितिविचार्यं यत्र विभागे अङ्काधिक्यंतत्तत्फलमप्यविज्ञेयम्।

ग्रहणे सूतकाविनिर्णय:—चन्द्रग्रहणे स्पर्शकालात्पूर्वं प्रहरत्रयं सूतकम्, वृद्धगौतम:—सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्। चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना। किन्तु पुत्रवता गृहिणी उपवासो न कर्तव्य:, यथोक्तं पुरुषार्थचिन्तामणौ, आदित्येऽहनि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्र सूर्ययो:। पारणं चोपवासं च न कुर्यात् पुत्रवान् गृही। एतेन बालवृद्धातुर पुत्रवद्गृहस्थेतराणां (विधवायति वर्णवादि विरक्तानां) कृते उपवास:।

चन्द्रग्रहण में स्पर्शकाल से ३ प्रहर अर्थात् ९ घण्टा पहले से ही सूतक लग जाता है। सूतक में बालक, वृद्ध एवं रोगी को छोड़कर अन्य सभी को स्नान, दान जपादि कार्य करना चाहिए। तथा भोजनादि नहीं करना चाहिए। साथ ही गर्भिणी स्त्री ग्रहण को न [illegible]

संक्षिप्त विवाहादि मुहूर्त्ता:।
(विशेष विवरणं पक्षे द्रष्टव्यम्)

वैशाखकृष्णपक्ष:
ति. ५ बुधे–मूले रे. ६ ल. ८ वा ९ ने. दा.।
ति. ६ गुरौ–मूले रे. ६ दिवा ल. चि.।
ति. ७ शुक्रे–उ.पा. भे रे. ८ ल. ८वा ९ने.दा.।
ति. ८ शनौ–उ. पा. भे. रे. ८ दि. ल. चि.।

वैशाखशुक्लपक्ष:
ति. २ चन्द्रे–रोहिण्यां रे. १० ल. १० ने.दा.।
ति. ३ भौमे–रोहिण्यां रे. ९ ल. गोधूलि वा ल. ९ ने. दा.।
ति. ४ बुधे–मृगे रे. ९ विष्टे: पूर्व ल. चि.।
ति. ८ चन्द्रे–मघा भे रे. ७ ल. गो वा ल. ९ ने. दा.।
ति. ९ भौमे–मघा भे रे. ७ दिवा ल. चि.।
ति. १२ गुरौ–हस्ते रे. ९ल. गो. वा ९ ने. दा.।

ज्येष्ठकृष्णपक्ष:
ति. १ चन्द्रे–मैत्रे रे. ७ गो. वा ल. ९ ने.दा.।
ति. २ भौमे–मूले रे. ९ लग्न चिन्त्यम्।
ति. ३ बुधे–मूले विष्टे: परं मृत्युवाण:।
ति. ४ गुरौ–उ.पा.भे.रे. ७ ल. ९ ने. दा.।
अत: परं शुक्रवार्धक्यादि दोषाद्विवाहादि शुभकर्म मुहूर्ताभाव:।

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष:
ति. १३ चन्द्रे–स्वात्यां विष्टे: परं रे. ९ ल. चि.।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष:
ति. २ शुक्रे–मूले रे. ८ल. गो.वा ल. ४ने.दा.।
ति. ३ शनौ–मूले स्वल्पकाल:।
ति. ५ रवौ–उ.षा. भे. रे. ८ ल. गो. वा ल. ४ ने. दा.।
ति. १५ बुधे–रोहिण्यां मृत्युत: पूर्व ल. गो.।

पौषकृष्णपक्ष:
ति. १ गुरौ–रोहिण्यां मृत्युवाण: मृगे मृत्युत: परं ल. चि.।
ति. २ शुक्रे–मृगे रे. ६ दि. ल. चि.।
ति. ६ बुधे–मघा भे रे. ७ विष्टे:पूर्वं दि. ल. चि.।

माघकृष्णपक्ष:
ति. १२ बुधे–मूल भे. रे. ८ ल. चि.।
ति. १३ गुरौ–मूल भे. रे. ८ ल गो.।

माघशुक्लपक्ष:
ति. १० चन्द्रे–रोहिण्यां रे. ८ ल. चि.।
ति. १० भौमे–रोहिण्यामावश्यके ल. गो.।
ति. ११ बुधे–मृगे रे. ८ दिवा. ल. चि.।

फाल्गुनकृष्णपक्ष:
ति. १ चन्द्रे–मघा भे. रे. ८ ल. चि.।
ति. २ भौमे–मघा भे. दिवा. ल. चि.।
ति. ६ शनौ–स्वात्यां रे. ८ ल. चि.।
ति. १० गुरौ–मूले रे. ८ ल. गोधूलि:।
ति. ११ गुरौ–मूले स्वल्पकाल:।

फाल्गुनशुक्लपक्ष:
ति. ८ चन्द्रे–रोहिण्यां वैधृते:परं रे. ७ ल. चि.।
ति. ९ भौमे–रोहिण्यां दि. ल. चि., मृगे रे. ५ लग्न ७ ने. दा.।
ति. १० बुधे–मृगे दिवा. ल. चिन्त्यम्।
ति. १३ रवौ–मघाभे रे. ७ ल. ७ ने. दा.।
ति. १४ चन्द्रे विष्टे:पूर्वं मघाभे दिवा. ल. चि.।

चैत्रकृष्णपक्ष:
ति. ३ शुक्रे–स्वात्यां लग्नं चिन्त्यम्।
ति. ४ शनौ–स्वात्यामावश्यके ल. चि.।
ति. ८ भौमे–मूले व्यतिपातात्पूर्वं रे. ८ ल.चि.।
ति. १० गुरौ–उ. पा. भे लग्नं चिन्त्यम्।
अत: परं मीनार्क दोष सत्वात् विवाहादि मुहूर्त्ताभाव:।

उपनयनमुहूर्त्ता:
चै. शु. ५ बुधे–रोहिण्यामुपनयने ल.३ने.दा.।
चै. शु. १० चन्द्रे–श्लेषायामुपनयने ल. ३ ने. दा.।
वै. शु. ५ गुरौ–आर्द्रायामुपनयने ल. ३ ने. दा.।
वै. शु. ११ बुधे–पूर्वायामुपनयने ल. ३ ने. दा.।
मा. शु. ५ बुधे–पू. भा. भे उपनयने रोगवाण:।
मा. शु. ११ बुधे–मृगे विष्टे: परं वैधृते: पूर्वं ल. चि.।
फा. शु. ३ बुधे–उ. भा. भे उपनयने ल. चि.।
फा. शु. ५ शुक्रे–अश्विनी भे उपनयने रोगवाण:।
फा. शु. १० बुधे–मृगे आर्द्रायां च उपनयने ल. चि.।
फा. शु. ११ गुरौ–आर्द्रायामुपनयने ल. चि.।
चै. कृ. २ गुरौ–हस्ते उपनयने ल. चि.।

गृहारम्भप्रवेशयोर्मुहूर्त्ता:।
वै. शु. ११ बुधे–उ. फा. भे गृहारम्भप्रवेशयोश्चक्रशुद्धि: सत्वेऽपि शनिवेध:।
श्रा. कृ. १० शनौ–रोहिण्यां गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि:
श्रा. कृ. १२ चन्द्रे–मृगे गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि:।
श्रा. शु. ६ बुधे–हस्ते गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि:, चित्रायां भूपञ्चदोष:।
फा. शु. १० बुधे–मृगे गृहारम्भप्रवेशयोश्चक्रशुद्धि:।

सन् १९६८–६९ का काशी में रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का प्रतिदिन मिनटादि अन्तर

ता.	मार्च	एप्रिल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित०	अक्टू०	नवम्बर	दिस०	जन. १९६९	फर०	मार्च
१		२ १	४ ५४	४ २०	[illegible]	[illegible]	२ ५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० ३१
२		१ ४३	५ १	४ १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० २०
३		१ २५	५ ८	४ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ १०	१० ७
४		१ ७	५ १४	३ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९ ५५
५		० ५०	५ २१	३ ४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६		० ३३	५ २४	३ ३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७		० १५	५ २९	३ १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८		० १	५ ३३	३ ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९		० १८	५ ३६	२ ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ ४५
१०		० ३५	५ ३९	२ ४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ ३०
११		० ५१	५ ४१	२ ३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२		१ ७	५ ४३	२ २१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३		१ २२	५ ४४	२ ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४		१ ३८	५ ४४	१ ५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५		१ ५३	५ ४४	१ ४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६		२ ७	५ ४४	१ ३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७		२ २१	५ ४२	१ १८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८		२ ३५	५ ४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९		२ ४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ५७	[illegible]
२०		३ २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ५१	[illegible]
२१		३ १५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ४५	[illegible]
२२		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ३८	[illegible]
२३		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ३०	[illegible]
२४		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ २२	[illegible]
२५		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ १३	[illegible]
२६		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ३	[illegible]
२७		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० ५३	[illegible]
२८		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० ४२	[illegible]
२९		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	×	[illegible]
३०		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	×	[illegible]
३१		×	[illegible]	×	[illegible]	[illegible]	×	[illegible]	×	[illegible]	[illegible]	×	[illegible]

सूचना—१ सितम्बर सन् १९[illegible] से १४ अक्टूबर सन् १९[illegible] ई० तक १ घंटा स्टैण्डर्ड टाइम बढ़ा हुआ था, इसलिए इतने समयों के [illegible] समय में १ घंटा घटाकर पूर्व सूचनानुसार सूर्य घड़ी बनानी चाहिये।

[illegible]रजोदर्शने उत्तमपततिम्यादीनां बोधकचक्रम् ।

[illegible]	वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गास्ये ज्येष्ठे श्रावणाश्विने एषु सितपक्षे चोत्तमम् ॥ अत्र श्वेतवस्त्रं श्रेष्ठम् ॥ नान्यद्वस्त्रम् ॥
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ एतासुतिथिषुसत् ॥ परन्तु तत्र कृष्णपक्षस्य दशमी यावन्मध्यं तदुपरि-कुल टात्वं स्यात् ।
वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे प्रशस्तम् ॥
शुभ-नक्षत्राणि	अ.मृ.श.ध.रे.चि.अनु.ह.अश्वि. पुष्य उत्तरा. ३ रोहि.स्वा. एतद्भेषु शुभम् ॥ मू.पुन,म.वि.कृ.एषु मध्यमं परेष्वसत् ॥ दिवा दुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठं न रात्रौ ॥
शुभ-लग्नानि	२।३।४।६।७।९।१२ एतद् भस्याङ्गेषु सद्भि-र्दृष्टेषुसदुत्तमम् ॥ तत्रविवाहवद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या ।

[illegible]रजोदर्शनेनिषिद्धसमयः ।

[illegible]द्वादशीषष्ठीरिक्तादावथ सङ्क्रमे ॥ भद्रा निद्रा व्यति-[illegible] ग्रहणे रवि वैधृतौ ॥१॥ परजातगृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवा-[illegible] ॥ [illegible]दर्शनेनेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत् ॥२॥ [illegible] विरूपं यान्ति रजोदर्शनसम्भवाः ॥३॥

[illegible]ऋतुमत्या स्नानस्यमुहूर्त्तं विचारः ।

ह. स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. उत्तरा ३ रो. ज्ये. एषु भेषु ॥ [illegible] वारे [illegible] स्नायादृतुमती नारी ।

[illegible]शुद्धिः ॥ यतुंस्पृश्याच्चतुर्थेऽन्हिदैवेपित्र्येचपञ्चमे । इति ।

[illegible] ॥	गर्भसंस्कारे विशेषमाह ॥
[illegible]स्पष्टोत्तरार्धं [illegible] बुद्ध्यात् । स्वर्णतो [illegible] च, विस्तरास्तुनिबन्धे ।	स्त्रीणांविषोर्वल्पुत्रन्तिविवा-हगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसु-भर्तुरेव इति ।

[illegible] मासपिताः	अथजातकर्मानन्तरकृत्यम् ॥
(see table below)	जन्मलग्नं निरीक्ष्य तत्रस्थग्रह दोषपरिहाराय ग्रहदानं जपा-दिकंकृत्वाजातकस्यमूलोत्पन्न स्यपुत्रमालोक्य स्नायादिति ॥

१	२	३	४	५	६	मासाः
[illegible]	बृ.	सू.	चं.	मं.		पतयः
७	८		९	१०		मासाः
[illegible]	[illegible]	चं.	सू.			पतयः

अथगर्भाधानमुहूर्त्तस्य विचारः ।

तत्रत्रिविधगंडान्त ॥ जन्मर्क्षंदधतारास्त्र ॥ मू.भ. अश्वि. रे. ॥ ग्रहणदिनं ॥ व्यतिपातवैधृतिश्राद्धदिनम् ॥ दिवापरिघार्द्धंउ-त्पातहतभम् जन्मराशितः षष्ठाष्टमं पापग्रहस्यभवनम् ॥ भद्रा पर्वदिनं ६।३०।१५।१४।८।९।१४ तिथिषुसंध्यायाम् ॥ सू. मं. श. वासराणि ॥ रजोदर्शनदिनाच्चतुर्थरात्रि यावत् न शुभाः ॥ उत्तरा ३ मृ.ह.अनु.रो.श्र.स्वा.श.ध. एषुभेषुलग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभः ॥ लग्नात् ३।६।११ पापैस्त्वोत्तमः ॥ सू. मं. गु. दृष्टलग्नेविषमराशिनवांशकेचन्द्रेशुभम् ॥ युग्मराशावोत्तमं गर्भाधानं । चि.पुन. पुष्य. श. अश्विनी एतद्भेषु मध्यमं स्यादिति ॥

पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्त्तस्य बोधकचक्रम् ।

तत्र गर्भतः तृतीयेमासिपुंसवनकर्मविधेयम् ॥ सीमन्तोन्नयनं षष्ठेऽष्टमेमासि ॥ मासाधिपतौसबलेसतिसीमन्तोन्नयनंप्रशस्तं ॥ तत्रशुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषो न विचारणीयः कालानुरोधात् ॥

सद्वाराः	सू.मं.बृ.एषांवारे मतान्तरेण चेन्दुशुक्राणां वारे तारा शुद्धौसत्यां पुंसवनसीमंतसंस्कारौ भवतः ।
सद्भानि	मृ. पुष्य. मू. श्र. पुन. ह. रे. उ. ३ रो. एतद्भेषु जन्मभंविना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रशस्तम् ॥
सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सिते । तिथि १० यावत्कृष्णेचोत्तमः परंतु पूर्वाह्ण एव कार्यः ॥
साङ्गलग्न शुद्धिः	संस्कारद्वयं पुम्भस्यांगेपुम्भांशेश्रेष्ठः तत्रलग्नाद् १।४।५।७।९।१० एषुशुभाः ॥ ३।६।११ एषुपापैश्चो-त्तमः ॥ चन्द्र १।६।८।१२ वर्जितेश्रेष्ठः ॥५।८।१ एषुपापएकोऽप्यसत् ॥

सूतिकापथ्यम् ।

अन्नप्राशनोक्तभे तिथौचदुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम् ॥

अथसूतिकाक्वाथमुहूर्त्तज्ञानम् ॥

भैषज्यादितवारनक्षत्रदुर्योगवर्जिते सूतिकायाः क्वाथग्रहणं प्रशस्तम् ॥

स्तनपानमुहूर्त्तस्य विचारः ।

अश्वि. रो. पु. पुष्य. उफा. ह. चि. अनु. मू. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. एषुभेषुशुभवासरे शुभतिथौस्थिराङ्गे स्तनपा-नंप्रशस्तंस्यादिति ।

जातकर्ममुहूर्त्तस्य विचारः ।

श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत् । एतच्च-रात्रावपि कर्त्तव्यम् ॥ श्राद्धादिकेस्नातव्यम् ॥ तत्कालेऽति-क्रान्ते सूतकान्तेऽपिकर्तव्यम् ॥

अथ सूतिकास्नानमुहूर्त्तस्य विचारः ।

रे. उत्तरा ३ रो. मृ. ह. स्वा. अश्वि. अनु. एषुभेषु ॥ १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। एततिथौ ॥ रवीज्यकुज-वासरे सूतिकास्नानं प्रशस्तं आ. पुन. पु. श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. बुध. शनि. वासरौ ४।६।८।९।१२।१४ एष्वसत् अन्यभतिथिवारेषु मध्यम् ॥ पञ्चाङ्गशुद्धलग्ने शुभग्रहयुते दोषवर्जिते श्रेष्ठोऽयमिति ॥

अथ दोलारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः ॥

अथ जन्माहात् १०।१२।१६।१८।३२ एषु दिवसेषु शुभवासरे मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. उत्तरा ३ रो. एषुभेषु रिक्तामारहिततिथौकरांगे शुभयुतलग्ने लग्नात् १।४।५।७।९।१०।११ शुभैः ॥ ३।६।११ पापैश्चोत्तमः ॥

दोलारोहणे दोला चक्रम्	
रविभाच्चान्द्रः	
५ न.	नैरुज्यम्
५ न.	मरणम्
५ न.	कृशता
५ न.	व्याधिः
५ न.	सौख्यम्

अथ जलपूजनमुहूर्त्तस्य विचारः ।

तत्र सूतिकायाः मासपूर्तौ सत्यां शुक्रेज्ययोरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तथा-धिकमासे जलं न पूजयेत् ॥ श्र. पु. पुन. मृ. ह. मू. अनु. एषु. भेषु. विरिक्ते तिथौ चं. बु. बृ. एषां वारे शुभम् ।

अथ भूम्युपवेशनमुहूर्त्तं विचारः ।

तत्रादौ पृथ्वींवराहञ्चाभिपूज्यभौमबले पञ्चमेमासि-कार्य्यः ॥ उत्तरा ३ रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. एषु भेषु ॥ रिक्तामारहिततिथौस्थिरभस्यांगे शुभवासरे च ॥ बालकस्यकटिस्थलेकटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् ॥ तत्रमन्त्रः ॥ रक्षैनंवसुधेदेवि सदासर्वगतं शुभम् ॥ आयु प्रमाणं-सकलं निक्षिपस्वहरिप्रियेइति । अथाग्रेवबालाग्रे-इमानिस्थापयेत् वस्त्रं । शस्त्रं ॥ पुस्तकं ॥ लेखनीं ॥ स्वर्णं ॥ रौप्यम् एषुयद्-बालोगृह्णाति तैराजीवनं तस्य वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत् ॥

अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तज्ञानम् ॥

जन्मतश्चतुर्थमासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्निवा सत् ॥

अथ नामकरणमुहूर्त्तस्य विचारः ॥

सूतकान्ते नामकर्म कर्तव्यं स्वकुलोचितम् ॥ व्यासः ॥ नामधेयं दशम्यां तु केचि-दिच्छन्ति सूरयः ॥ द्वादश्यामाहुरन्ये तु मासे पूर्णे तथा परे ॥ अष्टादशेऽह्नि तथा वदन्त्येके मनीषिणः । सारसंग्रहे । एकादशेऽह्नि विप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे ॥ वैश्यानां षोडशेनाम मासान्ते शूद्रजन्मनः ॥ बृहस्पतिः । द्वादशेदिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे ॥ षोडशे विंशती चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात् ॥

भानि	श. मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा. ३ रो. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्रव. ध. एषुभेषु शुभः ॥
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एषां वारे नामकर्म हितम् ॥
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३ एततिथौ भद्रादिरहिते सत्युत्तमम् ॥
शु. ल.	२।५।८।११ एतद्भस्यांगेऽष्टमशुद्धौ शुभलग्ने शुभांशे चोत्तमम् ॥
लग्नशुद्धिः	लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः ॥ लग्नात् ८।१२ खं न शुभाः ॥ पितृपुत्रयोः चन्द्रताराबले दिवापूर्वाह्णे एवकर्तव्यम् ॥ मध्याह्ने मध्यम तदग्रे नसत् ॥

व्यतीपातसंक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाहश्राद्धाहपक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णाकुलीकिस्तुघ्नविष्टि-करणादीन्वर्जयित्वोक्ततिथिषु नामकर्म हितम् ॥ अथविहितकालातिक्रमे सति गुरुशुक्रयो-रस्तादिदोषरहितेऽपि सौम्यायने कार्यम् ॥ नान्यदिति ॥

अथ चैत्रादि १२ मासानामत्र नामानि ॥

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मार्ग	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकुंठः	जनार्दनः	उपेन्द्रः	यज्ञपुरुषः	वासुदेवः	त्रिविक्रमः	योगीशः	पुंडरीकांक्षः	कृष्णः	अनन्तः	अच्युतः	चक्रधारी	नामानि

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफल बोधकचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयंनाशः	क. भ्रातृनाशः	भगिनीनाशः	मातृनाशः	ज्ये. भ्रातृनाशः	सुभोगः	तातसुखं	पुष्टता	लक्ष्मीः	सौख्यं	सौख्यं	धनागमः	फलानि

अथ जन्मसदन्तबालकस्यपित्रादिहा ॥ तदर्थं शांतिः विधेया इति ॥

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम् ॥

तत्रबालानांषष्ठमासादारभ्यसमासेषु । कन्यकानां पञ्चमासादारभ्यविषममासेषुकार्यम् ।

सद्भानि	रो. उत्तरा ३ मृ रे.चि.अनु.ह.पुष्य. अश्वि. पुनर्व. स्वा. श्र.ध.श. एषुभेषु शुभः ॥
तिथयः	२।३।५।७।१०।१३।१५ एषुसत् ॥ । अन्येष्वसत् । । वाराः । चं. बु. बृ. शु. ।

एषांवारेश्रेष्ठः नान्येऽह्नि ॥ सदंगानि २।३।४।५।६।७।९।१०।११ एषुजन्मांगभयोः मृत्युभस्यांगतदंशकञ्चवर्जित्वाप्रशस्तानि ॥ नान्यलग्नम् ॥

अस्यांगेषु द्विनाथाह	लग्नात् १।३।४।५।७।९। एषुशुभैः ३।६।११ एषु पापैः १० शुद्धः ॥ ४।६।८।१२। रहितेचन्द्रे चोत्तमः ॥

अथ खट्वारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः ॥

जन्माहात् १०।१२।१६।३२ एषुदिवसेषु मृदु. ध्रुव. क्षिप्रएषुभेषु ॥ शुभाहे ॥ रिक्तामारहिततिथौ प्राक्शीर्षंबालंन्यसेत् ॥

अथकर्णवेधस्यमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम् ॥

तत्रजन्माहात् १२।१६ दिने ॥ ततश्च ६।७।८ [illegible] विषमवर्षेकर्णवेधःशुभः ॥ चैत्रपौषजन्ममासहरि[illegible] अमासमवर्षंजन्मतारा एतान् हित्वाप्रशस्तः कर्णवेधः ।

सत्तिथयः	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ [illegible] सिते । कृष्णे च. ति. १० यावच्छुभः ॥
वाराः	चं. बु. बृ. श. एषांवारेभद्रादि[illegible]
सद्भानि	पुन. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. मृ. चि. [illegible] एतद्भेषुचन्द्रबलेसतिप्रशस्तः ॥
शु. ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतल्लग्नेषु [illegible]
लग्न-शुद्धिश्च.	लग्नाष्टमभवनेसंशुद्धे । लग्नात् १।३।४ [illegible] ११ एषुशुभैः तथा ३।६।११ एषुपापैस्तथा लग्नस्थगुरौ कर्णवेधः शुभावहः ॥

अथ चौलमुहूर्त्तस्य बोधकार्थमिदंचक्रम् ॥

तत्रजन्मत.वर्षत्रयादिषमवर्षे ॥ [illegible] मनुनाप्रथमवर्षेऽपिकुर्वन्तंचोक्तम् ॥ स्वकुलाचार[illegible]

सद्भानि	ज्ये. मृ. रे. चि. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. [illegible] श्र. ध. श. एषुनक्षत्रानुकूलेषु[illegible]
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एतद्वारेभद्रादिदोषरहि[illegible]
सत्तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३ एततिथ्योक्तं [illegible]
शु. ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतल्लग्ना [illegible]

अत्रजन्मांगभयोर्मृत्युभस्यलग्नांशयोर्निषेध[illegible]

लग्न-शुद्धिः	लग्नात् १।२।४।५।७।९।१० शुभैः [illegible] दशैतद्गृहोपगतैस्तथा ३।८।१२ [illegible] वर्जिताष्टमभवने [illegible] कृष्णपक्षेऽनिष्टमिति ॥

अथ शिरोस्नानमूलस्नानस्य मुहूर्त्त[illegible]

उत्तरा ३ रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. अश्वि. पुष्य [illegible] ध. पुनर्व. अभि. एषुभेषु ॥ सू. चं. बु. बृ. शु. [illegible] ६।१०।११।१२ भस्यांगेषूत्तमः ॥ [illegible] ९।१० एषुशुभैः ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः ॥ [illegible] समयेअन्नप्राशनाख्ये वा कार्यमिति ॥

अथक्षौरस्यशान्तिमुहूर्त्तस्यापिविचारः ॥

ह. अश्वि. पुष्य. अभि. रे. उत्तरा. ३ रो. स्वा. [illegible] अनु. म. एषुभेषु ॥ शुभांशवारे ॥ [illegible] देवश्रौतस्मार्तादिदोषरहिते ॥ [illegible] १० रवौ १ जीवे ८।१ पापरहितेचोत्तम ॥

[illegible] कर्णवेधनादिमुहूर्त्तविचारः ॥

[illegible]	१।२।३।५।६।११।१२।१३।१५ [illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३ रो. पुन. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] श्रेष्ठम् ॥

[illegible]

[illegible] सत् ॥

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] कृष्णपक्षेचोत्तमः ॥
[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible] रवौ [illegible] ५ मासेषु [illegible] ॥

[illegible]	अश्वि रो. मृ. आ. पु. पु. [illegible] पूर्वाफा. उफा. ह. चि. स्वा. अनु. मू. पूषा. उषा. श्र. ध. श. पूभा. उभा. रे. [illegible] ॥
[illegible]	२।३।५।७।१०।११।१२ [illegible] २।३।५ कृष्णे[illegible] ॥
[illegible]	सू. च. बु. बृ. शु. एषु [illegible] ॥
[illegible]	[illegible] ॥ [illegible] लग्नात् ३।८ न शुभाः ॥ [illegible] लग्नात् १२ [illegible] लग्नात् १।५।८ पापाः न शुभाः ॥६।८।१२ [illegible] ३।६।११ पापास्तथा [illegible] ॥

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
नक्षत्राणि	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ.भा.	रे.
अक्ष.	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.इ. उ.ए.	ओ.वा. वी.वु.	वे. वो. का.की.	कु.घ. ङ.छ.	के. को. हा. ही.	हु.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	म. मी. मू.मे.	मो. टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू. रे. रो.ता.	ती. तू. ते.तो.	न. नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.	ये. यो. भ. भी.	भू.ध. फ.ढ.	भे. भो. ज. जी.	खी.खू. खे.खो.	ग. गी. गु. गे.	गो. सा. सी. सू.	से. सो. द.दी.	दू. थ. झ. ञ.	दे.दो. च. ची.
रा.	मे.	मे.	मे.१ वृ.३	वृ.	वृ.२ मि.२	मि.	मि.३ क.१	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.१ क.३	क.	क.२ तु.२	तु.	तु.३ वृ.१	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.१ म.३	म.	म.२ कुं.२	कुं.	कुं.३ मी.१	मी.	मी.
वर्ण.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	च.	च.	च.	च.	च.२ न.२	न.	न.३ ज.१	ज.	ज.	व.	व.	व.१ न.३	न.	न.	न.	न.३ की.१	की.	की.	न.	।।न. ३।।च.	च.	१।।च. २।।ज.	ज.२ न.२	न.	न.३ ज.१	ज.	ज.
योनि.	अश्व.	गज.	छाग.	सर्प.	सर्प.	श्वान	मार्जार.	छाग.	मार्जार.	मूषक.	मूषक.	गौ.	महिष.	व्याघ्र.	महिष.	व्याघ्र.	मृग.	मृग.	श्वान.	मर्कट.	नकुल.	मर्कट.	सिंह	अश्व.	सिंह.	गौ.	गज.
राशीश.	मं.	मं.	मं.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु.	बु.३ चं.१	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.१ बु.३	बु.	बु.२ शु.२	शु.	शु.३ मं.१	मं.	मं.	बृ.	बृ.	बृ.१ श.३	श.	श.	श.	श.३ बृ.१	बृ.	बृ.
गण.	दे.	म.	रा.	म.	दे.	म.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.	दे.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.
नाडी	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

१ विवाहे वर्णगुणाः । वरः

कन्या	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः । वरः

कन्या	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

६ गणगुणाः । वरः

कन्या	दे.	म.	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ नाडी गुणाः । वरः ।

कन्या	आ.	म.	अं.
आदिः	०	८	८
मध्य ।	८	०	८
अन्त्य ।	८	८	०

७ भकूटगुणाः ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सि.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

३ तारागुणाः ।

कन्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः । वरः

कन्या	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	।।	।।
मङ्गल	५	४	५	।।	५	३	।।
बुध	४	१	।।	५	।।	५	४
गुरु	५	४	५	।।	५	।।	३
शुक्र	०	।।	३	५	।।	५	५
शनि	०	।।	।।	४	३	५	५

४ योनिगुणाः । वरः

कन्या	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	१
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	३
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रमिदम् ।

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गल	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	चं.मं. बृ.	सूर्यः बुधः	सू. चं. बृह	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं. मं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः
समाः	बुधः	मं..बृ शु.श.	शुक्रः शनिः	मं.बृ. शनि.	शनिः	मङ्गल बृह.	बृह.
शत्रवः	शुक्रः शनिः	०	बुधः	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्यः चं.मं.

अथमेलापकेविशेषस्त्वादाह ।

अज्ञातजन्मनां नृणां नामभं परिकल्पयेत् ॥ तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ॥१॥ जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ॥ व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेदिति ॥२॥

अथाद्यनुजिभचक्रमिदम्।

रेवती, अश्विनी भरणी, कृत्तिका रोहिणी, मृगशिरा	आर्द्रा.पुनर्व.पुष्य.आश्ले. मघा. पूफा. उफा. हस्त चित्रा. स्वा. विशा. अनु.	ज्ये.म.पू.षा.उ.षा. श्रवण.धनिष्ठा.शत. पू.भा. उ.भा.
पूर्व भागे ६	मध्यम भागे १२	पर भागे ९
पतिश्रेष्ठः	द्वयोः सुमतिः	कन्या श्रेष्ठा

अथ गुणानामंक्येनग्राह्याग्राह्यविचारः ।

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा । श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ॥ सत्कूटे इति ज्ञेयं दुष्टकूटेऽधकथ्यते । निन्द्य-गुणैर्विंशतिभिर्गव्यंवाणाधिकैःस्मृतम् — तत्रैः पंचभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणैः— इति ॥ आवश्यके—द्रव्यकैतालसुवर्णमर्त्यगुणे गोयु-ग्ममर्थाङ्के रौप्यं कांस्यमथै [illegible] स्वर्गादि दत्त्वोद्वहेत् ।

जातकतत्त्वोक्तसूत्रात् कन्यायाः वैधव्यविषाख्यादियोगज्ञानम् ।

लग्नाच्चन्द्रादन्यतमतः पापाः सप्तमेऽष्टमे वा विधवा ॥१॥ भौमे राहौ सप्तमेऽष्टमे व्यये वा विधवा ॥२॥ द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्त्ता ॥३॥ लग्नेन्दु पापान्तरौ शुभैरदृष्टौ कुलक्षयघ्नी ॥४॥ द्यूनेऽङ्गे पापे [illegible] सप्तमाब्दे विधवा ॥५॥ षष्ठेऽष्टमे चन्द्रेऽष्टमाब्दे रण्डा ॥६॥ सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्टे [illegible] रण्डा ॥७॥ षष्ठाष्टमेशौ षष्ठगतौ व्यये पापास्तेनापि विधवा ॥८॥ अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा ॥९॥ कुजे-ऽष्टमे कुलटा मन्देऽष्टमे पतिरोगवती ॥१०॥ सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति ॥११॥ [illegible] राहौ [illegible] ॥१२॥ लग्नतुर्याष्टमान्त्य संस्थाःपापास्तदा पतित्यक्ता परासक्ता च भवति ॥१३॥ सप्तमेशोऽष्टमे [illegible] निधनाधिपः । पापाश्रययुता बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥१॥ सप्ताष्टमगतौ [illegible] वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः॥२॥ मन्दाश्लेषा द्वितीयायां जाता विषाख्या॥१५॥ [illegible] विषाख्या ॥१६॥ कुजविशाखासप्तम्यां जाता विषाख्या ॥१७॥ पापेऽङ्गे [illegible] विषाख्या ॥१८॥ पुत्रेऽर्के मन्देऽङ्गे भौमेऽङ्गे विषाख्या ॥१९॥ विषाख्या वैधव्ययोग[illegible] यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च । द्यूनस्थितोऽन्यलग्न[illegible] वैधव्यं [illegible] ॥ भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत् । उद्वाहः शुभदः प्रोक्त[illegible] ।

अथ ग्रहमेलापकः ॥

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः । कन्याभर्त्तृविनाशाय भर्त्ता पत्नीविनाशकृत् । [illegible] विचार्यम् । एवं कन्याजन्मकुण्डल्यां लग्नचन्द्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेषु [illegible] निष्टः । सप्तमेऽशोऽष्टषष्ठरिःफेषु यतोऽनिष्टः । अथैषां वरकुण्डल्यां परिहारः—[illegible] वा हिबुकेऽपवा ॥ अष्टमेऽप्यदोषे [illegible] भौमदोषविनाशकृत् । [illegible] तेष्वेव भवनेष्वत्र भौमदोषविनाशकृत् । एवं यत्र पापग्रहः कन्यायाः [illegible] वा वरस्यापि कुण्डल्यां दृष्ट्वा शुभदो भाव्यः, नान्यथा । [illegible] शुभस्थानस्थिताश्चिरा सौभाग्यपदवितिरोधाय इति ॥

अथैवं [illegible] निवृत्यमुहूर्तमाह ।

पुत्रोद्वाहे च विवाहे [illegible] ॥१॥ [illegible] ॥२॥ [illegible] ॥३॥ [illegible] ॥३॥

[illegible]

[illegible]	चन्द्रः	गुरुः	फलाः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	सूर्यादयः
[illegible]	एकवर्षशुद्धिः [illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible] मुहूर्तविचारः ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] पुष्य, कर्क, मेष, मकर, तुला, [illegible]

गणनागुणैक्यबोधकचक्रम्

कन्यर्क्षाणि

[illegible] ॥

वरस्य नक्षत्राणि

	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म.	पू.फा	उ.फा १	उ.फा ३	ह.	चि. २	चि. २	स्वा.	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये.	मू.	पू.षा. ॥	पू.षा. ३॥	उ.षा १	उ.षा ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श.	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा	रे.
अ.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२०॥	२६	१७॥	११	९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भ.	३४	२८	२९	१९	२२॥	१३॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१९	२८	२१॥	१९	६	१४॥	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृ. १	२७॥	२७॥	२८	१६॥	९	१५॥	१९	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२६॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१३॥	१७॥	१९॥	११॥
कृ. ३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	९॥	१४	११	१०	२३॥	२९॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रो.	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२६	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	११॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृ. २	२३॥	१३॥	१८॥	२७॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	१९	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१०	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१	२४॥	२४॥	१३	१९	२७	२९॥	२६॥	१७	२७
मृ. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१९॥	११	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१९॥	२४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
~~श्ले.~~ आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पु. ३	२०	२६	२२	१९॥	२३॥	२४॥	३३॥	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२७	२७॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१९॥	२७॥	२८
पु. १	२२॥	२८	२३॥	२०	२४	२५	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१६॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१९	२६	१०॥	८	२१	२०॥	२१॥	२८॥	२५	२७	२१	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥
पु.	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
आश्ले.	२६	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०॥	२६	२५॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
म.	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	२३॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१७॥	१८॥	१२
पू. फा.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	८॥	११॥	२५॥	१९॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ. फा. १	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०॥	१९॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	१२॥	१८॥	१२॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ. फा. ३	१२	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२९	२७
ह.	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२३॥	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१९	२६॥	१७॥	१९॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	८॥	१४॥	११	२७	२७
चि. २	१३	६	१९	२५॥	२०	१२	११	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	९॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चि. २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५	४	१३
स्वा.	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२५	२०॥	२०	१३
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१९	१७॥	१९॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३२॥	२६॥	२६	२२	१६॥	१३॥	५
वि. १	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१४॥	१४॥	१९	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१७॥	१६॥	९॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	९॥
अनु.	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	६	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥	१७॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२५	२५	१८	११	१०॥	२१	२१
मू.	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१९	९॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२५	२१॥	११	१७॥	२५॥	२७
पू. षा. ॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	११	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	२३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	२१॥	२२॥	२३॥	२२॥
पू. षा. ३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१९॥	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२३॥	२९॥	२२॥	२३॥	३२॥
उ. षा. १	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	९॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१९	१२	११॥	२५॥	१९॥	२५॥	२३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२२॥
उ. षा. ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८॥	१३	६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१३	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	२२॥	२२॥
श्र. १॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२४॥	२४	२१॥	२१॥	२७	२५	१५	५॥	१९॥	२०	२४	२५	११	२६	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२२॥	२१॥	२०॥	२२॥
श्र. २॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२३	१६	२५	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०॥	१८	२२	२३॥	२३॥	२४॥
ध. २	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	८॥	१७॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	५॥	१२॥	१६	१७॥	१६॥	२४॥	२६	३०	२८	१४	२८	२१	९	९॥	१६॥	२५॥	२८	२१	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	२५॥	२२॥
ध. २	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥	२१	१८	१९	२२	२५॥	२८	१२	२६	२९॥	१७॥	१६॥	१३॥	१८॥	२१	२१	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१७॥
श.	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	८॥	२६	२६	१९	२६	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१९	९	१३॥	१६॥
पू. भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१६॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥	२८	२१	२१॥	२७॥	१२	१५॥	२१॥	२०॥	२९॥	२७॥	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१९	१८	१८	२३	२०॥
पू. भा. १	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	१७	१६॥	२५॥	१८	१८	२५॥	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१३॥	१२॥	१६॥	१४	२१	२७	११॥	१५	२१	३१॥	३०॥	२८॥	२९॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	२५	२०॥
उ. भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	९॥	५	१९॥	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२॥	२१॥	२९॥	२८॥	२३॥	१४॥	६	१६	२१॥	२३	२८	३४
रे.	२५	२४॥	११॥	१५॥	१७	२६	२५॥	२४	२५॥	२४॥	२७	१३	१२	२२	२२	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१९	२०	२३॥	२२॥	१४	१६	१८	२८॥	२३	२८

[illegible] वधूप्रवेश-द्विरागमनव्यवस्था ॥

नूतनपरिणीतायाः वध्वा [illegible]
म्यन्तरं च यः प्रथमो प्रवेशः स [illegible]
तत्र केवलवधूप्रवेशमुहूर्तस्यैव विचारः [illegible]
निर्गमादादितो न प्रवेशो [illegible]
यात्रावधूप्रवेशमुहूर्तद्वयविचारः स एव [illegible]
प्रथमवर्षे केवलं वधूप्रवेशमुहूर्तो [illegible]
प्रवेशः स एव द्विरागमन [illegible]
प्रयोजनाभावः केवलं वधूप्रवेशमुहूर्त [illegible]
विषममासे वृश्चिककुम्भमेषस्थे [illegible]
मेषवृश्चिककुम्भस्थे रवौ एव कार्यः । [illegible]
त्रैमासिकोराहुर्गृहते उभयत्र [illegible]
इत्यतः देशभेदा [illegible]
वलोकनेनैव स्फुटम् । [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] वर्षाभ्यन्तरे कार्यमिति ॥

स च [illegible]	
तिथयः	[illegible]
वाराः	[illegible]
नक्षत्राणि	[illegible]
शुभलग्नानि	[illegible]
लग्नशुद्धिः	[illegible]

अथ विशेष [illegible] ॥ [illegible] श्रेष्ठः ।

[illegible] ॥

अथ [illegible] ॥

[illegible] ॥१॥ [illegible] ॥२॥ अथ १२ [illegible]
[illegible] च [illegible] ।
[illegible] च । [illegible] ।

॥ अक्षांशदेशान्तरसारिणी ॥

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयतः पूर्वस्थ नगरनामानि	अक्षांशाः	काशी वि. तो देशान्तरघटी घ. प. वि.	होराद्य घं. मि. से.	काशी हिन्दू विश्वविद्यालयतः पश्चिमस्थ नगरनामानि	अक्षांशाः	काशी वि. तो देशान्तर घटी घ. प. वि.	होराद्य घं. मि. से.
अनाम ...	१७।०	३।५०।०	१।२२।०	कोटा ...	२५।२५	१।११।५०	०।२८।४४
अलीगंज (हबुआ) ...	२६।१२	०।१४।०	०।५।३६	कोचीन ...	९।५८	१।८।१०	०।२७।१६
आरा ...	२५।३०	०।१७।१०	०।६।५२	कोल्हापुर ...	१६।४५	१।२८।०	०।३५।१२
अमरपुर (बर्मा) ...	२१।५५	२।११।१०	०।५२।२८	कोलम्बो ...	६।५६	०।३०।३०	०।१२।१२
अमावाँ राज्य ...	२५।९	०।२८।२०	०।११।२०	खैरपुर ...	२७।२५	०।२।५०	०।१।८
आजमगढ़ ...	२६।०	०।२।३०	०।१।०	गढ़वाल ...	३०।०	०।४३।४०	०।१७।२८
आसाम ...	२६।३०	१।४०।०	०।४०।०	ग्वालियर ...	२६।१५	०।४९।२०	०।१९।४४
उदेपुर (सरगुजा) ...	२२।३१	०।०।५०	०।०।२०	गोदावरी ...	१६।३०	०।७।३०	०।३।०
उड़ीसा ...	२१।०	०।२९।४०	०।११।५२	गोलकुण्डा ...	१७।३३	०।५।२०	०।२।८
कटक ...	२०।३०	०।३०।०	०।१२।०	चम्बा ...	३२।३४	१।६।०	०।२६।२४
कलकत्ता ...	२२।३०	०।५५।०	०।२२।०	चतुरपुर (छतरपुर) ...	२४।५२	०।३४।३०	०।१३।४८
कुमिल्ला ...	२३।१२	१।२३।०	०।३३।१२	चिनाब ...	३१।०	२।५।०	०।५०।०
कूचबिहार ...	२६।२०	१।४।५९	०।२५।५६	चित्तौड़ ...	२४।५०	१।२५।२०	०।३४।८
कुदरा (जहानाबाद) ...	२५।५।६	०।६।१०	०।२।२८	चित्रकूट ...	२५।१२	०।२२।०	०।८।२४
गया ...	२५।४५	०।२०।०	०।८।०	चुनारगढ़ ...	२५।१०	०।२।०	०।०।४८
गाजीपुर ...	२५।३५	०।४।०	०।१।३६	जफराबाद ...	२०।४०	१।८।४०	०।२७।२८
ग्वालपाड़ा ...	२६।९	१।१६।१०	०।३०।२८	जसलमेर ...	२६।४६	१।५९।०	०।४७।३६
गिद्धौर ...	२४।५१	०।३३।०	०।१३।१२	जयपुर ...	२६।५०	१।१३।४०	०।२९।२८
गोरखपुर ...	२६।५०	०।२।२०	०।०।५६	जयपुर (झांसी) ...	१८।५७	०।३।४०	०।१।२८
छपरा ...	२५।४५	०।१७।०	०।६।४८	जबलपुर ...	२३।१४	०।३०।२०	०।१२।८
जगन्नाथपुरी ...	१९।४५	०।३०।०	०।१२।०	जलालपुर ...	३२।४०	१।३७।५०	०।३९।८
जापान ...	४०।०	८।४०।०	३।२८।०	जलन्धर ...	३१।१८	१।२०।०	०।३२।०
जावा ...	७।३०द	४।३०।०	१।४८।०	जीन्द ...	२९।१९	१।६।०	०।२६।२४
टेकारी ...	२४।५८	०।१७।३०	०।७।०	जम्मू ...	३२।४४	१।२१।५०	०।३२।४४
दार्जिलिंग ...	२७।५	०।५२।४०	०।२१।४	जामनगर ...	२२।२७	२।१०।०	०।५२।०
डुमरांव ...	२५।३२	०।१२।०	०।४।४८	जूनागढ़ ...	२१।३०	२।४।०	०।४९।३६
डुमरिया (स्टेटचंपारन) ...	२७।८	०।१५।६	०।६।२	जोधपुर ...	२६।२०	१।३९।२०	०।३९।४४
ढाका ...	२३।४०	१।१५।१८	०।३०।७	जौनपुर ...	२५।४२	०।३।०	०।१।१२
दरभंगा ...	२६।६	०।३०।०	०।१२।०	झलरापाटन ...	२४।३२	१।८।०	०।२७।१२
दिनाजपुर ...	२५।४०	०।५७।३०	०।२३।०	झांसी ...	२५।३०	०।४५।२०	०।१८।८
धवलागिरि ...	२९।०	०।२०।०	०।८।०	टोंक ...	२६।११	१।१२।३०	०।२९।०
नसीराबाद ...	२४।४०	१।२२।५०	०।३३।८	तंजोर ...	१०।४८	०।३१।०	०।१२।२४
नदिया ...	२३।२४	०।५९।२०	०।२३।४४	त्रिचनापली ...	१०।५०	०।४३।१०	०।१७।१६
नाटोर ...	२४।२७	१।०।०	०।२४।०	त्रिवेन्द्रम् ...	८।२९	१।११।०	०।२४।२८
नेपाल ...	२७।०	०।९।४०	०।३।५२	दिलावर ...	२८।४२	१।५५।२०	०।४६।८
पंचगछिया ...	२५।५५	०।३५।४०	०।१४।१६	देहरादून ...	३०।२०	०।४९।१०	०।१९।४०
पटना ...	२५।३२	०।२३।०	०।९।१२	द्वारका ...	२२।१४	२।२०।०	०।५६।०
पटना (उड़ीसा) ...	२०।२४	०।२।१०	०।०।५२	देवास ...	२२।५८	१।९।०	०।२७।३६
पलासी ...	२५।३२	०।४९।४०	०।१९।५२	देहली ...	२८।३०	०।५७।३०	०।२३।०
पुनिया ...	२५।४६	०।४५।०	०।१८।०	द्राव ...	३५।३५	२।३३।२०	१।०।३२
फीजी (टापू) ...	१६।०द	१६।१०।१	६।२८।०	धारा ...	२२।३४	१।१६।३०	०।३०।३६
वाराणसी (रामनगरकिला) ...	२५।१६	०।०।०	०।०।०	धवलपुर ...	२६।४२	०।५१।३०	०।२०।३६
वाराणसी (ज्ञानवापी) ...	२५।१८	०।०।०	०।०।०	नारनोल ...	२८।५	१।८।४०	०।२७।२८
बनारस (विश्वविद्यालय) ...	२५।१५	०।०।०	०।०।०	नाथद्वार ...	२४।५२	१।३०।०	०।३६।०
वर्दवान ...	२३।१७	०।४८।०	०।१९।१२	नर्मदा ...	२१।५०	१।४०।२०	०।४०।८
बलिया ...	२५।३६	०।१२।०	०।४।४८	नाभा ...	३०।२३	१।८।०	०।२७।१२
बक्सर ...	२५।३०	०।११।०	०।४।२४	नागौर ...	२७।१५	१।३३।४०	०।३७।२८
बगहा ...	२६।४२	०।१४।५०	०।५।५६	नागपुर (सी. पी.) ...	२१।५०	०।३९।१०	०।१५।४०
बालेश्वर ...	२१।३०	०।३९।४०	०।१५।५२	नागपुर ...	२०।०	०।२०।२०	०।८।८
बिहार ...	२५।१५	०।२५।०	०।१०।०	नासिक ...	१९।५८	१।२२।०	०।३६।४८
बेतिया ...	२६।२८	०।१५।१०	०।६।४	नीमच ...	२४।२७	१।२२।२०	०।३२।३२
बैद्यनाथ ...	२४।३०	०।३७।१०	०।१४।५२	नैनीताल ...	२९।२३	०।३५।०	०।१४।०
वैजनाथपुर (स्टट) ...	२४।४६	०।२४।१०	०।९।४०	पटियाला ...	३०।२०	१।५।०	०।२६।०
भभुआ ...	२५।५	०।५।५०	०।२।२०	पण्ढरपुर ...	१७।४०	१।१६।१०	०।३०।२८
भागलपुर ...	२५।१५	०।४०।०	०।१६।०	पंचनद ...	२९।०	२।२।०	०।४८।४८
भूटान ...	२७।०	१।२०।०	०।३२।०	प्रतापगढ़ (राजपूता.) ...	२४।२	१।२२।२०	०।३२।५६
मकसूदाबाद ...	२४।११	०।५३।०	०।२१।१२	प्रयाग ...	२५।२२	०।११।४०	०।४।४०
मानेचौक ...	२६।७	०।२७।३०	०।११।०	पालनपुर ...	२४।१२	१।४२।५०	०।४२।८
मालदह ...	२५।२	०।५१।२०	०।२०।२२	पानीपत ...	२९।१०	१।१९।३०	०।३१।४८
मुंगेर ...	२५।२३	०।२५।०	०।१०।०	पीलीभीत ...	२८।४०	०।३२।०	०।१२।४८
मुजफ्फरपुर ...	२६।१२	०।२५।०	०।१०।०	पूना ...	१८।३०	१।३०।२०	०।३६।८
मोतिहारी ...	२६।४०	०।१६।४०	०।६।४०	पोरबन्दर ...	२१।५०	२।१३।३०	०।५३।२४
मेदिनीपुर ...	२२।२९	०।४४।०	०।१७।३६	पेशावर ...	३४।२	१।५५।०	०।४६।०
रंगून ...	१६।५५	२।१४।०	०।५३।३६	पुष्कर ...	२६।२८	१।२५।०	०।३४।०
रंगपुर ...	२५।४७	१।५।०	०।२६।०	पाण्डीचेरी ...	११।५५	०।३२।१०	०।१२।५२
रांची ...	२३।१२	०।२३।४५	०।९।३०	फर्रुखाबाद ...	२७।३०	०।३७।०	०।१४।४८
रानीगंज ...	२३।४१	०।४१।०	०।१६।२४	फरीदकोट ...	३०।४०	१।२२।३०	०।३३।०
राजमहल ...	२५।२	०।४८।३०	०।१९।२४	फतेहपुर ...	२६।०	०।२२।५०	०।९।८
लखीसराय ...	२५।१०	०।३६।१०	०।१४।२८	फिरोजाबाद ...	२७।१०	०।४६।०	०।१८।२४
लासा (तिब्बत) ...	२९।३५	१।२९।४०	०।३५।५२	फिरोजपुर ...	३०।५६	१।२४।०	०।३३।३६
लोहरदग्गा ...	२३।२७	०।१७।३०	०।७।६	फैजाबाद ...	२६।९	०।९।०	०।३।३६
विजयानगर ...	१८।७	०।५।०	०।२।०	बरेली ...	२८।२२	०।३५।४०	०।१४।१६
सहसराम ...	२५।०	०।१५।०	०।६।०	बड़ौदा ...	२२।१०	१।३५।०	०।३८।०
सुमात्रा ...	०।०	२।५०।०	१।८।०	बम्बई ...	१८।५५	१।४१।४०	०।४०।४०
सेहवा ...	२५।२८	०।१७।३०	०।७।०	बलरामपुर ...	२७।२७	०।८।०	०।३।१२
सिंगापुर ...	२।०	३।२०।०	१।२०।०	बहराइच ...	२७।३४	०।१५।०	०।६।०
सिलचर (कछार) ...	२५।११	१।४४।४०	०।४१।५२	बरोच (भरोच) ...	२१।४५	१।४०।०	०।४०।०
काशी हिन्दू विश्वविद्यालयतः पश्चिमस्थ नगरनामानि				बंगलोर ...	१२।५८	०।५३।३०	०।२१।२४
				बांदा ...	२५।१८	०।२७।३०	०।११।०
				बिलासपुर (सी. पी.) ...	२२।२	०।८।०	०।३।१२
अयोध्या ...	२६।४८	०।७।३०	०।३।०	बीकानेर ...	२८।२	१।३५।०	०।३८।०
अजमेर ...	२६।२५	१।२२।०	०।३३।१२	बिलासपुर (शिमला) ...	३१।१०	१।३।२०	०।२५।२०
अटक ...	[illegible]	[illegible]	०।४२।५२	बुरहानपुर ...	२१।२०	०।४७।०	०।१८।४८
अंजार ...	[illegible]	[illegible]	०।५०।५६	बुन्दी ...	२५।२५	१।१२।५०	०।२९।८
अनूप शहर ...	२८।२१	०।४६।४०	०।१८।४०	[illegible] ...	२३।२०	१।२६।०	०।३४।२४
अमरावती ...	२०।५६	०।५२।१०	०।२०।५२	भरतपुर ...	२७।१३	०।५५।०	०।२२।०
अमेठी ...	२६।७	०।९।३०	०।३।४८	भावनगर ...	२१।४६	१।४८।०	०।४३।१२
अमृतसर ...	३१।३७	[illegible]	[illegible]	[illegible] ...	२३।१८	०।५५।०	०।२२।०
[illegible] ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ...	३०।२७	०।५०।०	०।२०।०
अलवर ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मद्रास ...	१३।४	०।२८।०	०।११।१२
अल्मोड़ा ...	२९।३५	[illegible]	[illegible]	मदुरा ...	९।५०	०।५०।०	०।२०।०
अलीगढ़ ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ...	२१।४०	०।५९।०	०।२३।३६
अहमदाबाद ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मंगलोर ...	१२।५२	१।२०।०	०।३२।०
अहमदनगर ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ...	२७।३२	०।५०।०	०।२०।०
आगरा ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मानिकपुर ...	२५।५०	०।११।५०	०।४।४४
आबू ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ...	२२।३०	०।५५।२०	०।२२।८
इन्दौर ...	२२।४५	१।१०।०	०।२८।०	मिर्जापुर ...	२५।९	०।४।२०	०।१।४०
इटावा ...	२६।५२	०।४०।३०	०।१६।१२	मुल्तान ...	३०।१२	१।५५।०	०।४६।०
उदयपुर ...	२४।३६	१।३४।२०	[illegible]	मेरठ ...	२८।५९	[illegible]	[illegible]
उज्जैन ...	२३।११	१।९।०	०।२७।३६	मैसूर ...	१२।१८	[illegible]	०।५५।१२
उटकमण्ड ...	११।२५	१।३१।२०	[illegible]	[illegible] ...	२३।२२	१।१७।०	०।३३।२०
कच्छ (माण्डवी) ...	२२।५०	२।१८।०	०।५५।१२	[illegible] ...	१७।८	[illegible]	[illegible]
कपूरथला ...	३१।२२	१।१६।०	०।३०।२४	राजकोट ...	२२।१२	[illegible]	०।४६।०
[illegible] ...	६।३७	०।२९।३०	०।११।४८	रामेश्वर ...	९।१८	०।३०।३०	०।१२।०
कर्नाल ...	२९।४१	१।०।४०	०।२४।१६	रामपुर ...	२८।४५	०।३२।०	०।१३।१२
कराची ...	२४।५२	२।३८।४०	१।१।२८	रायबरेली ...	[illegible]	०।१६।२०	०।६।३२
काल्पी ...	२६।८	०।३२।०	०।१२।४८	रोहतक ...	२८।५५	१।५।२०	०।२६।८
कांकरोली ...	२५।०	०।४०।०	०।१६।०	रावलपिंडी ...	३३।३६	१।४०।०	०।४०।०
[illegible] ...	१२।०	१।१०।०	[illegible]	रीवां ...	२४।३१	०।१७।३०	०।७।०
काश्मीर ...	३४।०	[illegible]	[illegible]	[illegible] ...	[illegible]	०।२२।३०	०।९।०
[illegible] ...	[illegible]	०।५२।०	[illegible]	लखनऊ ...	२६।५५	०।२०।०	०।८।०
कानपुर ...	[illegible]	०।२७।३०	[illegible]	[illegible] ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
किशनगढ़ (राजपू०) ...	[illegible]	१।२४।४०	[illegible]	लाहौर ...	३१।३४	[illegible]	[illegible]
[illegible] ...	३०।०	१।१।०		लुधियाना ...	३०।५५	[illegible]	[illegible]

नगरनामानि	अक्षांशाः	देशान्तर घटी	होराद्य	नगरनामानि	अक्षांशाः	देशान्तर घटी	होराद्य	नगरनामानि	अक्षांशाः	देशान्तर घटी	होराद्य	नगरनामानि	अक्षांशाः	देशान्तर घटी	होराद्य	नगरनामानि	अक्षांशाः	देशान्तर घटी	होराद्य
वटेश्वर ...	२६।४८	०।४६।०	०।१८।२४	विकारपुर ...	२७।५७	२।२५।०	०।५८।०	सतारा ...	१७।५२	१।३०।०	०।३६।०	सिरोज ...	२४।६	०।५३।०	०।२३।१२	हर्दा ...	२२।२१	०।५८।०	[illegible]
वजीराबाद ...	३२।२८	१।३०।२०	०।३६।८	शिमला ...	३१।६	२।५८।१०	०।२३।१६	सपादू ...	३०।५८	१।०।०	०।२४।०	सिहोरा ...	२३।१२	१।०।०	०।२२।०	हरिद्वार ...	२३।५८	०।४८।०	[illegible]
बरवा ...	२०।४५	०।४५।१०	०।१८।४	श्रीरंगपट्टन ...	१२।२६	१।३।०	०।२५।१२	सागर ...	२३।५०	०।४३।०	०।१०।१२	सूरत ...	२१।१२	१।४१।०	०।४०।२४	हैदराबाद दक्षिण ...	१७।२५	०।४५।३०	[illegible]
शाहजहांपुर ...	२७।५२	०।३०।४०	०।१२।४६	सहारनपुर ...	२९।५८	०।५६।१०	०।२२।२८	सोलापुर ...	२७।३०	०।२५।१०	०।१९।४०	सौलापुर ...	१७।४०	१।११।०	०।२८।२४	हैदराबाद ...	२५।२५	२।२२।३०	[illegible]

अक्षांशतः पलभाज्ञानम्—गतांशाग्रिमांशसम्बन्धिपलभयोरन्तरमिष्टकलागुणितं षष्टिभक्तं लब्धं यथास्थाने गतांशसम्बन्धि पलभायां युतं इष्टपलभा भवति। यथा अक्षांशाः ३५।२५ पञ्चत्रिंशदंशसम्बन्धि पलभा ८।२४।७ षट्त्रिंशदंशसम्बन्धि पलभा ८।४३।५ अनयोरन्तरं १८।५८ इष्टकलानानतः २५ गुणितं ४७४।१० षष्टिभक्तं व्यस्तगुलात्मकं लब्धं ७।५४।१० गतांशसम्बन्धिपलभायां ८।२४।७ युतं इष्टपलभा ८।३२।१।

अक्षांशाः	पलभा ज्ञानायसारणी
१	०।१२।३४
२	०।२५।९
३	०।३७।४४
४	०।५०।२१
५	१।३।०
६	१।१५।४४
७	१।२८।३३
८	१।४१।२०
९	१।५४।०
१०	२।६।५४
११	२।१९।५५
१२	२।३३।०
१३	२।४६।१२
१४	२।५९।२८
१५	३।१२।५४
१६	३।२६।२४
१७	३।४०।५
१८	३।५३।५६
१९	४।७।५५
२०	४।२२।१
२१	४।३६।२२
२२	४।५०।५२
२३	५।५।३८
२४	५।२०।३१
२५	५।३५।४२
२६	५।५१।७
२७	६।६।५०
२८	६।२२।४८
२९	६।३९।४
३०	६।५५।४१
३१	७।१२।३६
३२	७।२९।५२
३३	७।४७।३१
३४	८।५।३८
३५	८।२४।७
३६	८।४३।५
३७	९।२।३५
३८	९।२२।३०
३९	९।४३।१
४०	१०।४।१
४१	१०।२५।५०
४२	१०।४८।१८
४३	११।११।२४
४४	११।३५।२४
४५	१२।०।०
४६	१२।२५।३७
४७	१२।५२।१५
४८	१३।१९।१८
४९	१३।४८।१८
५०	१४।१८।३
५१	१४।४९।१८
५२	१५।२१।२५
५३	१५।५५।१३

अत्र चरसारण्यां लिखिताङ्का मिनट सेकेण्डरूपा अक्षांश दैनिकक्रान्त्यंशवशतः फलमानीय सर्वदैव षड्होरायां युतं तदुत्तरक्रान्तौ सूर्यास्तसमयो मध्याह्नानात् तदेव होरात्मकं दिनार्द्धं च दक्षिणक्रान्तौ तदेव सूर्योदयं द्वादशहोरात्यो विशोध्यं तदा दिनार्द्धसूर्यास्तहोरा च। दिनार्द्धं होरात्मकं पञ्चगुणं दिनमानं घट्यादिकं भवति। यथा अक्षांशाः ३२।० क्रान्त्यंशाः उत्तराः १८।० चरम् ४६।५२ होरापट्कयुतं दिनार्द्धं वा सूर्यास्तघंटा ६।४६।५२ दिनमानम् ३३।५४।२० रात्रिमानम् २६।५।४० होरादिकं दिनार्द्धं द्वादशमध्ये शोध्यं सूर्योदयघंटा ५।१३।८ एवं सर्वत्र। दक्षिणक्रान्तौ विपरीतम्।

चरसारिणी

क्रान्त्यंशाः

अक्षांशाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०।४	०।८	०।१३	०।१७	०।२१	०।२५	०।३०	०।३४	०।३८	०।४२	०।४६	०।५१	०।५५	१।०	१।४	१।९	१।१३	१।१८	१।२२	१।२७	१।३२	१।३७	१।४२	१।४७
२	०।८	०।१७	०।२५	०।३४	०।४२	०।५०	०।५९	१।८	१।१६	१।२४	१।३३	१।४२	१।५१	२।०	२।८	२।१७	२।२६	२।३६	२।४५	२।५५	३।४	३।१४	३।२४	३।३४
३	०।१३	०।२५	०।३८	०।५०	१।३	१।१६	१।२८	१।४१	१।५४	२।७	२।२०	२।३३	२।४६	३।०	३।१३	३।२६	३।४०	३।५४	४।८	४।२२	४।३७	४।५१	५।६	५।२०
४	०।१७	०।३४	०।५०	१।७	१।२४	१।४१	१।५८	२।१५	२।३२	२।५०	३।७	३।२४	३।४२	४।०	४।१८	४।३६	४।५४	५।१२	५।३१	५।५०	६।९	६।२८	६।४८	७।८
५	०।२१	०।४२	१।३	१।२४	१।४५	२।६	२।२८	२।४९	३।१०	३।३२	३।५४	४।१६	४।३८	५।०	५।२२	५।४४	६।७	६।३०	६।५४	७।१८	७।४२	८।६	८।३१	८।५६
६	०।२५	०।५०	१।१६	१।४१	२।६	२।३२	२।५८	३।२३	३।४९	४।१४	४।४१	५।७	५।३४	६।०	६।२७	६।५४	७।२२	७।४९	८।१८	८।४६	९।१५	९।४४	१०।१४	१०।४४
७	०।२९	०।५७	१।२८	१।५८	२।२८	२।५८	३।२७	३।५७	४।२७	४।५८	५।२८	५।५९	६।३०	७।१	७।३२	८।४	८।३६	९।९	९।४२	१०।१५	१०।४८	११।२१	११।५३	१२।२६
८	०।३४	१।८	१।४१	२।१५	२।४९	३।२३	३।५७	४।३२	५।६	५।४१	६।१६	६।५१	७।२६	८।२	८।३८	९।१४	९।५१	१०।२८	११।६	११।४४	१२।२२	१३।१	१३।४१	१४।२१
९	०।३८	१।१६	१।५४	२।३२	३।१०	३।४९	४।२७	५।६	५।४५	६।२४	७।३	७।४३	८।२३	९।३	९।४४	१०।२४	११।६	११।४८	१२।३०	१३।१३	१३।५६	१४।४०	१५।२५	१६।१०
१०	०।४२	१।२४	२।७	२।५०	३।३१	४।१४	४।५८	५।४१	६।२४	७।८	७।५१	८।३६	९।२०	१०।५	१०।५०	११।३६	१२।२२	१२।८	१३।५५	१४।४३	१५।३२	१६।२०	१७।१०	१८।०
११	०।४६	१।३३	२।२०	३।७	३।५४	४।४१	५।२८	६।१६	७।३	७।५१	८।४०	९।२८	१०।१७	११।७	११।५६	१२।४७	१३।३८	१४।२९	१५।२१	१६।१४	१७।७	१८।१	१८।५६	१९।५२
१२	०।५१	१।४२	२।३३	३।२४	४।१६	५।७	५।५९	६।५१	७।४३	८।३६	९।२८	१०।२१	११।१५	१२।९	१३।४	१३।५८	१४।५४	१५।५०	१६।४६	१७।४५	१८।४३	१९।४२	२०।४२	२१।४३
१३	०।५५	१।५१	२।४६	३।४२	४।३८	५।३४	६।३०	७।२७	८।२३	९।२०	१०।१७	११।१५	१२।१३	१३।१२	१४।११	१५।११	१६।१२	१७।१४	१८।१७	१९।२०	२०।२४	२१।३०	२२।३७	२३।४६
१४	१।०	२।०	३।०	४।०	५।०	६।०	७।१	८।२	९।३	१०।५	११।७	१२।९	१३।१२	१४।१५	१५।१९	१६।२३	१७।२९	१८।३५	१९।४१	२०।४७	२१।५७	२३।८	२४।१८	२५।३०
१५	१।४	२।८	३।१३	४।१८	५।२२	६।२७	७।३२	८।३८	९।४४	१०।५०	११।५६	१३।४	१४।११	१५।१९	१६।२८	१७।३८	१८।४७	१९।५८	२१।१०	२२।२२	२३।३६	२४।५२	२६।७	२७।२४
१६	१।९	२।१८	३।२६	४।३६	५।४५	६।५४	८।४	९।१४	१०।२५	११।३६	१२।४७	१३।५९	१५।११	१६।२४	१७।३८	१८।५२	२०।७	२१।२३	२२।४०	२३।५८	२५।१६	२६।३७	२७।५८	२९।२०
१७	१।१३	२।२७	३।४०	४।५४	६।८	७।२२	८।३६	९।५१	११।६	१२।२२	१३।३८	१४।५४	१६।१२	१७।३१	१८।४८	२०।७	२१।२७	२२।४८	२४।११	२५।३४	२६।५७	२८।२३	२९।५०	३१।१९
१८	१।१८	२।३६	३।५४	५।१२	६।३१	७।५०	९।९	१०।२८	११।४८	१३।८	१४।३०	१५।५०	१७।१२	१८।३५	१९।५९	२१।२३	२२।४८	२४।१४	२५।४२	२७।८	२८।३७	३०।१०	३१।४२	३३।२०
१९	१।२३	२।५४	४।८	५।३१	६।५४	८।१८	९।४२	११।६	१२।३०	१३।५५	१५।२१	१६।४६	१८।१४	१९।४१	२१।१०	२२।३९	२४।९	२५।४१	२७।१४	२८।४८	३०।२४	३१।५८	३३।३७	३५।१६
२०	१।२७	२।५५	४।२२	५।५०	७।१८	८।४६	१०।१५	११।४४	१३।१३	१४।४३	१६।१४	१७।४५	१९।१८	२०।५०	२२।२२	२३।५५	२५।३०	२७।८	२८।४७	३०।२७	३२।८	३३।५०	३५।३३	३७।१८
२१	१।३२	३।४	४।३७	६।९	७।४२	९।१५	१०।४८	१२।२२	१३।५६	१५।३२	१७।७	१८।४३	२०।२०	२१।५८	२३।३६	२५।१६	२६।५६	२८।३७	३०।१९	३२।२	३३।५०	३५।४१	३७।३०	३९।२२
२२	१।३७	३।१४	४।५१	६।२८	८।६	९।४४	११।२३	१३।१	१४।४०	१६।२०	१८।१	१९।४२	२१।२४	२३।८	२४।५२	२६।३७	२८।२३	३०।१०	३१।५८	३३।५०	३५।४१	३७।३५	३९।३०	४१।२७
२३	१।४२	३।२४	५।६	६।४८	८।३१	१०।१४	११।५७	१३।४१	१५।२५	१७।१०	१८।५६	२०।४२	२२।३०	२४।१८	२६।७	२७।५८	२९।४९	३१।४२	३३।३७	३५।३३	३७।३०	३९।२७	४१।३५	४३।३५
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

अक्षांशतः पलभाज्ञानम्—गतांशाग्रिमांशसम्बन्धिपलभयोरन्तरमिष्टकलागुणितं षष्टिभक्तं लब्धं यथास्थाने गतांशसम्बन्धिपलभायां युतं इष्टपलभा भवति। यथा अक्षांशाः ३५।२५ पञ्चत्रिंशदंशसम्बन्धि पलभा ८।२४।७ षट्त्रिंशदंशसम्बन्धि पलभा ८।४३।५ अनयोरन्तरं १८।५८ इष्टकलामानतः २५ गुणितं ४७४।१० षष्टिभक्तं त्र्यङ्कगुणात्मकं लब्धं ७।५४।१० गतांशसम्बन्धिपलभायां ८।२४।७ युतं इष्टपलभा ८।३२।१।

अक्षांशतः	पलभा शानायसारणी
१	०।१२।३४
२	०।२५।९
३	०।३७।४४
४	०।५०।२१
५	१।३।०
६	१।१५।४४
७	१।२८।२३
८	१।४१।१०
९	१।५४।०
१०	२।६।५४
११	२।१९।५५
१२	२।३३।०
१३	२।४६।१२
१४	२।५९।२८
१५	३।१२।५४
१६	३।२६।२४
१७	३।४०।५
१८	३।५३।५६
१९	४।७।५५
२०	४।२२।१
२१	४।३६।२२
२२	४।५०।५२
२३	५।५।३८
२४	५।२०।३१
२५	५।३५।४२
२६	५।५१।७
२७	६।६।५०
२८	६।२२।४८
२९	६।३९।४
३०	६।५५।४१
३१	७।१२।३६
३२	७।२९।५३
३३	७।४७।३१
३४	८।५।३८
३५	८।२४।७
३६	८।४३।५
३७	९।२।३५
३८	९।२२।३०
३९	९।४३।१
४०	१०।४।९
४१	१०।२५।५०
४२	१०।४८।१८
४३	११।११।२४
४४	११।३५।२४
४५	१२।०।०
४६	१२।२५।३७
४७	१२।५२।१५
४८	१३।१९।३८
४९	१३।४८।१८
५०	१४।१८।३
५१	१४।४९।१८
५२	१५।२१।३२
५३	१५।५५।१३
५४	[illegible]

अथ चरसारण्यां लिखिताङ्का मिनट सेकेन्डरूपा अक्षांश दैनिकक्रान्त्यंशवशतः पलभातोय सर्वदैव षड्होरायां युतं तदुत्तरक्रान्तौ सूर्यास्तसमयो मध्याह्नात् तदेव होरात्मकं दिनार्द्धं च दक्षिणक्रान्तौ तदेव सूर्योदयं द्वादशहोरात्म्यो विशोध्यं तदा दिनार्द्धसूर्यास्तहोरा च। दिनार्द्धं होरात्मकं पञ्चघ्नं दिनमानं घट्यादिकं भवति। यथा अक्षांशाः ३२।० क्रान्त्यंशाः उत्तराः १८।० चरम् ४६।५२ होरापद्धत्युतं दिनार्द्धं वा सूर्यास्तघंटा ६।४६।५२ दिनमानम् ३३।५४।२० रात्रिमानम् २६।५।४० होरादिकं दिनार्द्धं द्वादशमध्ये शोध्यं सूर्योदयघंटा ५।१३।८ एवं सर्वत्र। दक्षिणक्रान्तौ विपरीतम्।

चरसारिणी

क्रान्त्यंशाः

अक्षांशाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०।४	०।८	०।१३	०।१७	०।२१	०।२५	०।३०	०।३४	०।३८	०।४२	०।४६	०।५१	०।५५	१।०	१।४	१।९	१।१३	१।१८	१।२२	१।२७	१।३२	१।३७	१।४२	१।४७
२	०।८	०।१७	०।२५	०।३४	०।४२	०।५०	०।५९	१।८	१।१६	१।२४	१।३३	१।४२	१।५१	२।०	२।८	२।१७	२।२६	२।३६	२।४५	२।५५	३।४	३।१४	३।२४	३।३४
३	०।१३	०।२५	०।३८	०।५०	१।३	१।१६	१।२८	१।४१	१।५४	२।७	२।२०	२।३३	२।४६	३।०	३।१३	३।२६	३।४०	३।५४	४।८	४।२२	४।३७	४।५१	५।६	५।२०
४	०।१७	०।३४	०।५०	१।७	१।२४	१।४१	१।५८	२।१५	२।३२	२।५०	३।७	३।२४	३।४२	४।०	४।१८	४।३६	४।५४	५।१२	५।३१	५।५०	६।९	६।२८	६।४८	७।८
५	०।२१	०।४२	१।३	१।२४	१।४५	२।६	२।२८	२।४९	३।१०	३।३२	३।५४	४।१६	४।३८	५।०	५।२२	५।४४	६।७	६।३०	६।५४	७।१८	७।४२	८।६	८।३१	८।५६
६	०।२५	०।५०	१।१६	१।४१	२।६	२।३२	२।५८	३।२३	३।४९	४।१४	४।४१	५।७	५।३४	६।०	६।२७	६।५४	७।२२	७।४९	८।१८	८।४६	९।१५	९।४४	१०।१४	१०।४४
७	०।२९	०।५७	१।२८	१।५८	२।२८	२।५८	३।२७	३।५७	४।२७	४।५८	५।२८	५।५९	६।३०	७।१	७।३२	८।४	८।३६	९।९	९।४२	१०।१५	१०।४८	११।२१	११।५३	१२।२६
८	०।३४	१।८	१।४१	२।१५	२।४९	३।२३	३।५७	४।३२	५।६	५।४१	६।१६	६।५१	७।२६	८।२	८।३८	९।१४	९।५१	१०।२८	११।६	११।४४	१२।२२	१३।१	१३।४१	१४।२१
९	०।३८	१।१६	१।५४	२।३२	३।१०	३।४९	४।२७	५।६	५।४५	६।२४	७।३	७।४३	८।२३	९।३	९।४४	१०।२४	११।६	११।४८	१२।३०	१३।१३	१३।५६	१४।४०	१५।२५	१६।१०
१०	०।४२	१।२४	२।७	२।५०	३।३१	४।१४	४।५८	५।४१	६।२४	७।८	७।५१	८।३६	९।२०	१०।५	१०।५०	११।३६	१२।२२	१३।८	१३।५५	१४।४३	१५।३२	१६।२०	१७।१०	१८।०
११	०।४६	१।३३	२।२०	३।७	३।५४	४।४१	५।२८	६।१६	७।३	७।५१	८।४०	९।२८	१०।१७	११।७	११।५६	१२।४७	१३।३८	१४।२९	१५।२१	१६।१४	१७।७	१८।१	१८।५६	१९।५२
१२	०।५१	१।४२	२।३३	३।२४	४।१६	५।७	५।५९	६।५१	७।४३	८।३६	९।२८	१०।२१	११।१५	१२।९	१३।४	१३।५८	१४।५४	१५।५०	१६।४६	१७।४५	१८।४३	१९।४२	२०।४२	२१।४३
१३	०।५५	१।५१	२।४६	३।४२	४।३८	५।३४	६।३०	७।२७	८।२३	९।२०	१०।१७	११।१५	१२।१३	१३।१२	१४।११	१५।११	१६।१२	१७।१४	१८।१७	१९।२०	२०।२४	२१।३०	२२।३७	२३।४६
१४	१।०	२।०	३।०	४।०	५।०	६।०	७।१	८।२	९।३	१०।५	११।७	१२।९	१३।१२	१४।१५	१५।१९	१६।२३	१७।२९	१८।३५	१९।४१	२०।४७	२१।५७	२३।८	२४।१८	२५।३०
१५	१।४	२।८	३।१३	४।१८	५।२२	६।२७	७।३२	८।३८	९।४४	१०।५०	११।५६	१३।४	१४।११	१५।१९	१६।२८	१७।३८	१८।४७	१९।५८	२१।१०	२२।२२	२३।३६	२४।५२	२६।७	२७।२४
१६	१।९	२।१८	३।२६	४।३६	५।४५	६।५४	८।४	९।१४	१०।२५	११।३६	१२।४७	१३।५९	१५।११	१६।२४	१७।३८	१८।५२	२०।७	२१।२३	२२।४०	२३।५८	२५।१६	२६।३७	२७।५८	२९।२०
१७	१।१३	२।२७	३।४०	४।५४	६।८	७।२२	८।३६	९।५१	११।६	१२।२२	१३।३८	१४।५४	१६।१२	१७।२९	१८।४८	२०।७	२१।२७	२२।४८	२४।११	२५।३४	२६।५७	२८।२२	२९।५०	३१।१९
१८	१।१८	२।३६	३।५४	५।१२	६।३१	७।५०	९।९	१०।२८	११।४८	१३।८	१४।३०	१५।५०	१७।१२	१८।३५	१९।५९	२१।२३	२२।४८	२४।१४	२५।४२	२७।८	२८।३७	३०।१०	३१।४२	३३।२०
१९	१।२३	२।४६	४।८	५।३१	६।५४	८।१८	९।४२	११।६	१२।३०	१३।५५	१५।२१	१६।४६	१८।१४	१९।४१	२१।१०	२२।३९	२४।९	२५।४१	२७।१४	२८।४८	३०।२४	३१।५८	३३।३७	३५।१६
२०	१।२७	२।५५	४।२२	५।५०	७।१८	८।४६	१०।१५	११।४४	१३।१३	१४।४३	१६।१४	१७।४५	१९।१८	२०।५०	२२।२४	२३।५५	२५।३०	२७।८	२८।४७	३०।२७	३२।८	३३।५०	३५।३३	३७।१८
२१	१।३२	३।४	४।३७	६।९	७।४२	९।१५	१०।४८	१२।२२	१३।५६	१५।३२	१७।७	१८।४३	२०।२०	२१।५८	२३।३६	२५।१६	२६।५६	२८।३७	३०।१९	३२।२	३३।५०	३५।४१	३७।३०	३९।२२
२२	१।३७	३।१४	४।५१	६।२८	८।६	९।४४	११।२३	१३।१	१४।४०	१६।२०	१८।१	१९।४२	२१।२४	२३।८	२४।५२	२६।३७	२८।२३	३०।१०	३१।५८	३३।५०	३५।४१	३७।३५	३९।३०	४१।२७
२३	१।४२	३।२४	५।६	६।४८	८।३१	१०।१४	११।५७	१३।४१	१५।२५	१७।१०	१८।५६	२०।४२	२२।३०	२४।१८	२६।७	२७।५८	२९।४९	३१।४२	३३।३७	३५।३२	३७।३०	३९।२७	४१।३४	४३।३५
२४	१।४७	३।३४	५।२१	७।८	८।५६	१०।४४	१२।३३	१४।२१	१६।१०	१८।०	१९।५२	२१।४३	२३।३६	२५।३०	२७।२४	२९।२०	३१।१९	३३।२०	३५।२१	३७।२३	३९।२५	४१।२९	४३।३४	४५।४०
२५	१।५२	३।४४	५।३६	७।२८	९।२१	११।१४	१३।८	१४।२	१६।५६	१८।५२	२०।४८	२२।४५	२४।४३	२६।४२	२८।४३	३०।४४	३२।४७	३४।५१	३६।५८	३९।५	४१।१५	४३।२६	४५।४०	४७।५३
२६	१।५७	३।५४	५।५२	७।४९	९।४७	११।४५	१३।४३	१५।४३	१७।४३	१९।४४	२१।४६	२३।४८	२५।५२	२७।५६	३०।२	३२।९	३४।१८	३६।२८	३८।४०	४०।५४	४३।१०	४५।२८	४७।४८	५०।१०
२७	२।२	४।५	६।७	८।१०	१०।१३	१२।१७	१४।२१	१६।२६	१८।३१	२०।३७	२२।४४	२४।५२	२७।१	२९।१२	३१।२३	३३।३६	३५।५०	३८।७	४०।२५	४२।४५	४५।७	४७।३२	४९।५८	५२।२७
२८	२।७	४।१५	६।२३	८।३१	१०।४०	१२।४९	१४।५८	१७।८	१९।१९	२१।३१	२३।४४	२५।५७	२८।१२	३०।२८	३२।४६	३५।४	३७।२५	३९।४९	४२।१२	४४।३६	४७।२	४९।३०	५२।४	५४।३८
२९	२।१२	४।२६	६।४०	८।५३	११।७	१३।२२	१५।३६	१७।५२	२०।९	२२।२६	२४।४४	२७।४	२९।२४	३१।४६	३४।१०	३६।३५	३९।१	४१।३०	४४।०	४६।३२	४९।८	५१।४६	५४।२६	५७।९
३०	२।१८	४।३७	६।५६	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१६	१८।३७	२०।५९	२३।२२	२५।४६	२८।१२	३०।३८	३३।५	३५।३४	३८।७	४०।४०	४३।१५	४५।५२	४८।३१	५१।१३	५३।५८	५६।४६	५९।३५
३१	२।२४	४।४८	७।१३	९।३८	१२।३	१४।२९	१६।५६	१९।२२	२१।५०	२४।२०	२६।५०	२९।२१	३१।५४	३४।२८	३७।४	३९।४१	४२।२०	४५।२	४७।४६	५०।३२	५३।२०	५६।१२	५९।६	६२।२
३२	२।३०	५।०	७।३०	१०।१	१२।३२	१५।४	१७।३६	२०।९	२२।४३	२५।१८	२७।५४	३०।३२	३३।११	३५।५२	३८।३३	४१।१७	४४।३	४६।५२	४९।४२	५२।३५	५५।३१	५८।३०	६१।३३	६४।३७
३३	२।३६	५।१२	७।४८	१०।२४	१३।१	१५।३९	१८।१८	२०।५७	२३।३८	२६।१८	२९।०	३१।४४	३४।३०	३७।१६	४०।५	४२।५६	४५।४९	४८।४४	५१।४१	५४।४१	५७।४४	६०।४९	६३।५४	६७।४
३४	२।४२	५।२४	८।६	१०।४९	१३।३२	१६।१२	१९।०	२१।४६	२४।३१	२७।१९	३०।८	३३।५८	३५।५०	३८।४४	४१।३९	४४।३६	४७।३६	५०।३८	५३।४३	५६।५१	६०।१	६३।१५	६६।३३	६९।५४
३५	२।४८	५।३६	८।२४	११।१४	१४।३	१६।५३	१९।४४	२२।३५	२५।२८	२८।२२	३१।१७	३४।१३	३७।११	४०।१३	४३।१५	४६।२०	४९।२७	५२।३६	५५।४७	५९।०	६२।२२	६५।४४	६९।१०	७२।४०
३६	२।५४	५।४९	८।४४	११।३९	१४।३४	१७।३१	२०।२८	२३।२५	२६।२५	२९।२७	३२।२८	३५।३२	३८।३८	४१।४४	४४।५४	४८।६	५१।२०	५४।३७	५७।५७	६१।२०	६४।४६	६८।१७	७१।५१	७५।३०
३७	३।१	६।२	९।३	१२।५	१५।७	१८।१०	२१।१४	२४।१९	२७।२५	३०।३२	३३।४१	३६।५१	४०।४	४३।१९	४६।३६	४९।५५	५३।१७	५६।४१	६०।९	६३।४०	६७।१५	७०।५४	७४।३७	७८।२५
३८	३।८	६।१५	९।२३	१२।३३	१५।४३	१८।५०	२२।१	२५।१३	२८।२६	३१।४०	३४।५५	३८।[illegible]	४१।[illegible]	४४।[illegible]	४८।[illegible]	५१।[illegible]	५५।[illegible]	५८।[illegible]	६२।[illegible]	६६।[illegible]	६९।[illegible]	७३।[illegible]	७७।[illegible]	८१।[illegible]
३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ [illegible]

सं०	मासाः १२	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
१	यव	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	चना	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	गोधूम	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	तिल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	सुपारी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	लौंग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	जीरा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	अजवाइन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	कर्पूर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	चांदी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शाकः बाणाब्धिभूपोतः १६४९ शालिवाहनभूपतेः। अनेन मुक्तो द्रव्यादिकवेषादौ प्रतिमासके ॥१॥ दत्तेन: ३ हृते शेषे फलं चन्द्रेण मध्यमम्। तेनैव रसवृद्धिश्च [illegible] ॥२॥ इति॥

परिघराहुचक्रम् ।

आश्वि.	पुष्य.	आश्ले.	विशा.	अनु.	धनि.	शत.	धर्मभानि
भरणी.	पुनर्व.	मघा.	स्वाती.	ज्येष्ठा.	श्रवण	पू.भा.	अर्थभानि
कृत्तिका	आर्द्रा.	पू. फा.	चित्रा.	मूल.	अभि.	उ.भा.	कामभानि
रोहिणी	मृग.	उ. फा.	हस्त.	पू.षा.	उ.षा.	रेवती.	मोक्षभानि

अथ परिघराहुचक्राद्यात्रायां शुभाऽशुभज्ञानम् ।

सूर्ये धर्मगते चन्द्रो धने मोक्षे शुभप्रदः ॥ सूर्ये धनगते धर्ममोक्षमार्गे शुभः शशी । कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थे संस्थश्चन्द्रो जयप्रदः ॥ मोक्षेऽर्के धर्मगश्चन्द्रः शुभोऽन्यत्र न शोभनः ॥ २ ॥ इति ॥

सविदिक्शूलज्ञानाय चक्रम् ।

पूर्व.	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा.
चं.श.	चं. बृ.	बृ.	सू.शु.	सू. शु	भौम	मं. बु.	बु. श.	वा.

अथ नक्षत्रशूलचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	दिशः
ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ. फा.	भानि.

अथ प्रतिदिग्यात्रायां वाहनानि

पू.	द.	प.	उ.	दि.
गज	रथ	अश्व.	पाल.	वा.

अथ समयशूलचक्रम्

पूर्वस्यां	प्रातःकाले
दक्षिणे.	मध्याह्नकाले
पश्चिमे	संध्यायाम्
उत्तरस्यां	अर्धरात्रौ

अथात्र यात्रासमयविचारः ।

तत्र सर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः तथा जन्मेशे जन्मदशेशेऽस्तं गतेऽपि न गन्तव्यं ॥ प्रथमा तीर्थयात्रा गुरुशुक्रयोरस्तकाले वर्ज्या ॥ सिंहस्थो गुरुर्नीचगोपि वर्ज्यः ॥

अथ चन्द्रवास चक्रम् ।

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु.	मकर	कुम्भ	मीन

अथ चन्द्रफलम् ।

सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः । पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यांति पूर्णे चन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥

अथाश्वविलग्नानि ।

पू.	द.	प.	उ.	दिशः
१, ५।९	२, १०।६	३।७, ११	४, ८।१२	शुभ
२।६, १०	३।७, ११	४।८, १२	१।५, ९	मध्य
४, ८।१२	१, ५।९	२।६, १०	३।७, ११	भयम्
३।७, ११	४।८, १२	१।५, ९	२।६, १०	महाभयम्

योगिनीज्ञानाय चक्रम् ।

एवं प्रतिपदमारभ्य पू. उ. अ. नै. द. प. वा. ई. क्रमेण योगिन्याः—भ्रमणम् ।

सा योगिनी सम्मुखवामगा चेदशुभा दक्षिणे पृष्ठे च शुभा यत्र चन्द्रार्कपरीत्येन फलमस्या इति केषांचिन्मतं तत्र रमणीयं पृथक्श्लोकोपादानात् ।

अथ यात्रायां शुभाऽशुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रम् ॥

अश्वि.	पुन.	अनु.	मृ.	पुष्य.	रे.	ह.	श्र.	ध.	एषु शुभा	एषु कर्तव्या यात्रा
रो.	उ. ३	पू. ३	ज्ये.	मू.	श		एषु भेषु मध्या			
भ.	कृ.	आ.	आश्ले.	मं.	चि.	स्वा.	वि.	एतद्भेषु निद्या		
अ.	ह.	अनु.	पुन.	एषु सर्वदा शुभा अश्वि		पुष्य	अनु.			ह.
पू. ३	कृ.	म.	भ.	स्वा.	ज्ये.	वि.	आश्ले.	चि.	एष्वावश्यकेयात्रायां	
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	उत्तरार्धं	त्याज्यघट्यः	

अथ स्त्रीपुरुषयोः घातचन्द्रज्ञानाय चक्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	२	स्त्रीणां चं.घा
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	पु. च. घा.

अथ यात्रायां दिनमानस्याष्टमांशेन रात्रौ रात्रिमानस्याष्टमांशेन च वेलाफलमिदम् ॥

घ.	सू. दि.	सू. रा.	चं. दि.	चं. रा.	मं. दि.	मं. रा.	बु. दि.	बु. रा.	बृ. दि.	बृ. रा.	शु. दि.	शु. रा.	श. दि.	श. रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

अथाकुलगणचक्रमिदम् ।

तन्नक्षत्राणि	स्वा. भ. अश्ले. म. रे. अनु. ह. पुन. उ. रो.
तद्वाराः	सू.चं.बृ.श. तिथयः १।३।५।७।९।११।१३।१५

एषु प्रोक्ततिथिवारर्क्षे समरे यायिजयः स्यात्

अथकुलाकुलगणचक्रम् ॥

तन्नक्षत्राणि	मू. आर्द्रा. अभि. श.
तद्वाराः	बुध	तिथयः	२	६	१०

एषु तिथिवारभे युद्धारंभे द्वयोर्भूमीशयोः संधिः स्यात् ॥

अथकुलगणचक्रम्

मिश्रसंज्ञानि | पू.फा.उ.षा.पू.भा.अश्वि.पुष्य.म.मू.ह.कृ.वि.ज्ये.चि.

तत्तिथयः ४।८।१२।१४ [illegible]

एषु प्रोक्ततिथिवारर्क्षे युद्धारम्भे स्थायी- जयः स्यादिति ॥

अथ राहुक्रान्तभाङ्गानां जीवपक्षादि संज्ञा ४ बोधकचक्रमिदम् ॥

मृतप सं०	कर्तरी सं०	जीवप सं०
श.	पूर्वभाद्रपद ।	उ. भा.
ध.	अत्रत्यादाहरणम्	रेवती.
श्र.	कल्प्यते राहुश्चेदजचर-	अश्वि.
अभि.	णभे स्थितस्तदा तस्यक-	भ.
उ.षा.	र्तरी संज्ञा ॥ अहिर्बुध्न्य-	कृ.
पू.षा.	भतः भगभान्तं जीवपक्ष-	रो.
मू.	संज्ञा अर्यमभस्यात्र प्र-	मृ.
ज्ये.	स्तासंज्ञा हस्ततो वरुणा-	आर्द्रा.
अनु.	भान्ता १३ मृतपक्ष-	पुनर्वसु.
वि.	संज्ञा ॥ एवं सर्वत्र	पुष्य.
स्वा.	संचारात् ज्ञेयम् ।	आश्ले.
चित्रा.	ग्रस्तनाम	म.
हस्त.	उत्तराफाल्गु.	पू.फा.

यात्रायामशुभशकुनानि ॥

वंध्यास्त्री | चर्म | तुष | अस्थि | सर्प | लवण | निर्धूमाग्नि | इन्धन | नपुंसक | पिण्डा | तैल | उन्मत्त | वसा | औषध | शत्रु | जटावान् | संन्यासी | तृण | व्याधिमान् | नग्न | तैलाभ्यंग | अंगभंग | जातिभ्रष्ट | क्षुधार्त | रुधिर | स्त्रीपुष्प | सरट | छिक्का | स्वगृहदाह | मार्जारयुद्ध | रक्तवस्त्र | गुड़ | तक्र | पंक | विधवा | कुब्जा | कुटुम्बकलिः | वस्त्रादिस्खलनं | महिषयुद्ध | कृष्णधान्य | तूर्व | वमनं | दक्षिणे गर्दभशब्दः | अत्यन्तकोपी | गर्भवती | मुण्डी | आर्द्राम्बर | दुष्टवाणी | अन्ध | बधिर | रजस्वलाम्बर | कुमारहीना | अतिरोगी | गोधादर्शन | जाहकदर्शन | शूकरदर्शन | शशकदर्शन | मर्कट शब्द | [illegible]शब्द एते प्रयाणसमये दृष्टाः सन्तः न शुभा नद्युत्तारभयप्रवेश युद्धेनष्टार्थसंवीक्षणे अशुभशकुनाः शोभनाः | नृपदर्शनवेलायां यात्रादिता शोभना

यात्रायां शुभशकुनानि ॥

ब्राह्मण२ | अश्व | गज | फल | अन्न | दुग्ध | दधि | धेनु | सर्षप | कमल | विमलवस्त्र | वेश्या | वाद्य | मयूर | नकुल | सिंहासन | शस्त्र | मांस | दीप्ताग्नि | मत्स्य | आदर्श | सवृतस्त्री | सच्छत्र | मधु | नीलकण्ठ | रजनीदिना | बद्धपशु १ | चम्पकादिपुष्प | कन्या | कार्यसिद्धिवाक्य | मृत्तिका | सजलपूर्णघट | घृत | इक्षुदण्ड | रत्नमाणिक्यादि | शिरोवेष्ठन | श्वेतवृषभ | मदिरा | कज्जल | धौताम्बर | गोरोचन | भरद्वाज | पताका | मेष | रजक | वेदशब्द | मंगलवस्तु | गीतगानादि | भारद्वाजपक्षी | दीपिका | अंकुशहस्तिबालक | पश्चादजलघट | मंगलशब्द | दूर्वा | प्रयाणसमये दृष्टाः सत्फलदा भवन्ति | कोकिला | पोतकी | पल्ली | शूकरी रला | भैरवी | छुछुन्दरी | भृङ्गाली | कपोत | खञ्जन | तित्तिर | हंसादयः वामे सत्फलदाः

अथ रोगार्तस्येष्टकालवशाद्वाधाज्ञानम् ॥

तिथिवारश्च नक्षत्रं लग्नं याम्यंच संयुतम् । वसुभिस्तु हरेद्भागं शेषे बाधां नियोजयेत् ॥ हय ७ ग्नौ ३ देवबाधा स्यात् पितरो वेदवन्हिनः २।८ पट्चतुर्ये ६।४ भूतबाधा ग्रहाणामेकपंचके १।५ ॥ भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥ राम-बाण रसाष्टौ च नन्दद्वाश्च (३।४।५।६।८।९।११) जीवति । एकः १ पक्षौ २ युगः ४ सप्तदशा ७।१० कौ १२ नात्र जीवति ॥ अन्यदपि राजमार्तण्डे ॥ वारक्षंच तिथिर्दिशा परिमितं संयोज्य नागैर्भजेल्लब्धांकेन [illegible] नाग ८ भवने २ दोषं [illegible] ॥ [illegible] ७ रामभिर्वे ३ सुरस्य विहितं वर्क्षे ६ क्ष ५ वेदे ४ तथा प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे च बाणाधिके । लब्धाङ्कं नि ३ गुणस्तथावसुयुतं वेदैः पुनस्ततः । [illegible] यथा [illegible] ॥ याम्य [illegible] राजकुलजं स्याच्छत्रुजं पंक्तिजम् । शून्ये व्योमभवं तथास्य विविधोपायैश्च शान्तिं वदेत् ॥ कौल्यं होमद्विजार्चनैः शुभकरं वाक्यं चतुष्कोणके ॥ होमे [illegible] वा । [illegible] तीर्थपदे तथाप्यरिकृते भक्तिक्रियादानतो गायत्रीजपतो हि [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] दशवर्षान्तरं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते । गोक्षीरे रजनीक्वाथं पिबेत्सर्वविषापहम् ।

नक्षत्राणां स्वामिशुभाशुभादिविशेषसंज्ञा

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभ	जातयः	संज्ञा	मुखम्.	घ. ऊ. ने.	दोहदम्
अश्विनी	अश्विनीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यम.	नाशकः	चाण्डालः	उ. क्रू.	अधः	२४	साक्षतमाष
कृत्तिका	अग्निः	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि. सा.	अधः	३०	मापः
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	४०	[illegible]
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदु मै.	तिर्यक्	४१	[illegible]
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती. दा.	ऊर्ध्वम्	२१	दुग्धम्
पुनर्वसु	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	च. च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्
पुष्य	गुरुः	शुभम्	क्षत्रियः	ल. क्षि.	ऊर्ध्वम्	२०	[illegible]
आश्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	ती. दा.	अधः	३२	पायसम्
मघा	पितरः	शोकद.	शूद्रः	उग्र क्रूरः	अधः	३०	चाषमांसम्
पू. फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	उग्र क्रूरः	अधः	२०	मृगमांसम्
उ. फा.	अर्यमा	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	१८	शशकमांसम्
हस्त	रविः	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	२१	षाठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	मृ. मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगुः
स्वाती	वायु	शुभम्	क्रूरजाति	च. च.	अधः	१४	अपूपाः
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभम्	चाण्डालः	मि. सा.	अधः	१४	नानाफलम्
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	[illegible]
ज्येष्ठा	इन्द्रः	शुभम्	कृषकः	ती. दा.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्
मूल	राक्षसः	क्षय	क्रूरजातिः	ती. दा.	अधः	५६	[illegible]
पू. षा.	जलम्	हानिः	ब्राह्मणः	उ. क्रू.	अधः	२४	[illegible]
उ. षा.	विश्वेदेवाः	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	१०	[illegible]
श्रवण	विष्णुः	वृद्धिः	चाण्डाल.	च. च.	ऊर्ध्वम्	१०	कृसरान्नम्
धनिष्ठा	वसुः	शुभम्	कृषकः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१०	[illegible]
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१८	यवपिष्टम्
पू. भा.	अजैक.	अशुभम्	ब्राह्मणः	उ. क्रू.	ऊर्ध्वम्	१६	मत्स्यान्नम्
उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	२४	[illegible]
रेवती	पूषा.	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	दध्योदनम्

नक्षत्रस्य पापकालव कष्टावलोकनचक्रम्

दिन सं.	दानानि	[illegible]	[illegible]
दिन ९	भोजनदानम्	[illegible]	[illegible]
दिन ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन ९	स्वर्णदानम्	[illegible]	[illegible]
दिन ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मासः १	तिलदानम्	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन १५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन २६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्थिरः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मास. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन १२	[illegible]	[illegible]	विष्णोरराट. मन्त्रः
दिन १५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृतिः	[illegible]	[illegible]	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः
दिन ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स्थिरः	वृषदानम्	[illegible]	पूषन्तवव्रतेति मन्त्रः

नष्टवस्तुज्ञानाय सुलोचनादि संज्ञा

लोचन	दिशा	नाश-प्राप्ति	ना.	स्वरूपाणि ।
मन्द	द	यत्नलाभ	३	अश्वमुखम्
मध्य	प	दूरेण	३	योनिरूपम्
सुलोचन	उ	अलाभः	६	क्षुरकाकृतिः
अन्ध	पू	शीघ्रला.	५	शकटम्
मन्द	द	यत्नला.	२	मृगास्यम्
मध्य	प	दूरेण	१	मणिसदृशम्
सुलोचन	उ	अलाभः	४	गृहाकारम्
अन्ध	पू	शीघ्रला.	३	बाणाकृतिः
मन्द	द	यत्नलाभ	५	चक्राकारम्
मध्य	प	दूरेण	५	गृहसदृशम्
सुलोचन	उ	अलाभः	२	मंचकाकृतिः
अन्ध	पू	शीघ्रला.	२	शय्याकारम्
मन्द	द	यत्नला.	५	हस्ताकारम्
मध्य	प	दूरेण	१	मौक्तिकम्
सुलोचन	उ	अलाभः	१	प्रवालाकारम्
अन्ध	पू	शीघ्रला.	४	तोरणसमम्
मन्द	द	यत्नला.	४	बलिसदृशम्
मध्य	प	दूरेण	४	कुण्डलाकृतिः
सुलोचन	उ	अलाभः	३	सिंहपुच्छवत्
अन्ध	पू	शीघ्रला.	११	गजदन्तसमम्
मन्द	द	य. ला.	२	मंचकसदृशम्
सुलोचन	उ	अ. ला.	३	विमानसदृशम्
अन्ध	पू	शी. ला.	४	मृदङ्गाकृतिः
मन्द	द	य. ला.	१००	वर्तुलम्
मध्य	प	दूरेण	२	मंचकाकारम्
सुलोचन	उ	अलाभः	२	यमलसदृशम्
अन्ध	पू	शी. ला.	२२	मर्दलाकारम्

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	समय	घं.मि.	न.	घ.प.	समय	घं.मि.	यो.	घ.प.	समय	घं.मि.	क.	घ.प.	घं.मि.	क.	घ.प.	घं.मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचार: रा.	घ.प.	घं.मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र.क्रा. उ.	चन्द्रास्त घं.मि.
३० ३१	१	शु.	५६ ५२	रा.	४ ३९	उ.	२ ५	प्रा.	६ ४४	ब्र.	९ २१	प्रा.	९ ३८	किं.	२५ १३	१५ ५९	ब.	५६ ५२	४ ३९	केतु	२९	२९	१६	१५	९				५ ५४	६ ६	३ १९	× ×
३० ३५	२	श.	६० ०	स.	× ×	रे.	६ ५५	प्रा.	८ ३९	ऐं.	९ २६	प्रा.	९ ३९	बा.	२९ ०	१७ २१	कौ.	६० ०	× ×	धाता	३०	२०	१७	१६	१०	मे.	६ ५५	८ ३९	५ ५३	६ ७	३ ४२	१९ ३४
३० ३९	२	सू.	१ ८	प्रा.	६ १९	अ.	१२ ४०	दि.	१० ५६	वै.	१० १५	दि.	९ ५८	कौ.	१ ८	६ १९	तै.	३३ ३६	१९ १९	आनन्द	३१	१	१८	१७	११				५ ५२	६ ८	४ ६	२० २५
३० ४२	३	चं.	६ ३	प्रा.	८ १७	भ.	१९ ०	दि	१३ २८	वि.	११ ३२	दि.	१० २८	ग.	६ ३	८ १७	व.	३८ ४१	२१ २०	चर	१	२	१९	१८	१२	वृ.	३५ ४१	२० ८	५ ५२	६ ८	४ २८	२१ २०
३० ४६	४	मं.	११ १९	दि.	१० २३	कृ.	२५ ४२	दि.	१६ ८	प्री.	१३ २	दि.	११ ४	वि.	११ १९	१० २३	व.	४४ ३	२३ २८	गद	२	३	२०	१९	१३				५ ५१	६ ९	४ ५२	२२ १५
३० ४९	५	बु.	१६ ४७	दि.	१२ ३३	रो.	३२ ६	सा.	१८ ४१	आ.	१४ २७	दि.	११ ३७	बा.	१६ ४७	१२ ३३	कौ.	४९ ६	१ २८	शुभ	३	४	२१	२०	१४				५ ५०	६ १०	५ १५	२३ १०
३० ५३	६	बृ.	२१ २४	दि.	१४ २३	मृ.	३७ ५१	रा.	२० ५८	सौ.	१५ २८	दि.	१२ १	तै.	२१ २४	१४ ३०	ग.	५३ १७	३ ८	मृत्यु	४	५	२२	२१	१५	मि.	४ ५८	७ ५०	५ ४९	६ ११	५ ३८	० ५
३० ५७	७	शु.	२५ १०	दि.	१५ ५३	आ.	४२ ४३	रा.	२२ ५४	शो.	१५ ५३	दि.	१२ १०	व.	२५ १०	१५ ५३	वि.	५६ २८	४ २४	पद्म	५	६	२३	२२	१६				५ ४९	६ ११	६ ०	० ५६
३१ ०	८	श.	२७ ४७	दि.	१६ ५५	पु.	४६ २७	रा.	० २३	अ.	१५ २५	दि.	११ ५८	व.	२७ ४७	१६ ५५	बा.	५८ २३	५ ९	छत्र	६	७	२४	२३	१७	क.	३० २१	१८ ०	५ ४८	६ १२	६ २४	१ ४५
३१ ४	९	सू.	२९ ०	सा.	१७ २३	पु.	४८ ५९	रा.	१ ५३	सु.	१४ ६	दि.	११ २६	कौ.	२९ ०	१७ २३	तै.	५९ ८	५ २६	श्रीवत्स	७	८	२५	२४	१८				५ ४७	६ १३	६ ४६	२ २९
३१ ८	१०	चं.	२९ १५	सा.	१७ २९	श्ले.	५० १७	रा.	१ ५३	वृ.	११ ४४	दि.	१० २८	ग.	२९ १५	१७ २१	व.	५८ ४१	५ १५	सौम्य	८	९	२६	२५	१९	सिं.	५० १७	१ ५३	५ ४६	६ १४	७ ९	३ ९
३१ ११	११	मं.	२८ ८	सा.	१७ १	म.	५० २४	रा.	१ ५५	शू.	८ २५	प्रा.	९ ८	वि.	२८ ८	१७ १	व.	५६ ५८	४ ३३	का. द.	९	१०	२७	२६	२०				५ ४६	६ १४	७ ३१	३ ४७
३१ १५	१२	बु.	२५ ४८	सा.	१६ ४	पू.	४९ २४	रा.	१ ३१	गं.	४ १० / ५४ ५२	प्रा.	७ २५ / २१ ४७	वा.	२५ ४८	१६ ४	कौ.	५४ ७	३ २४	सुस्थिर	१०	११	२८	२७	२१				५ ४५	६ १५	७ ५२	४ २२
३१ १८	१३	बृ.	२२ २६	दि.	१४ ४३	उ.	४७ २६	रा.	० ४३	ध्रु.	५३ ९	रा.	३ ०	तै.	२२ २६	१४ ४३	ग.	५० १८	१ ५२	मातंग	११	१२	२९	२८	२२	क.	३ ५४	७ १८	५ ४४	६ १६	८ १६	४ ५८
३१ २२	१४	शु.	१८ १०	दि.	१३ ०	ह.	४४ ४०	रा.	२३ ३६	व्या.	४६ ३७	रा.	० २२	व.	१८ १०	१३ ०	वि.	४५ २८	२३ ५५	अमृत	१२	१३	३०	२९	२३				५ ४४	६ १६	८ ३७	× ×
३१ २६	१५	श.	१२ ४७	दि.	१० ५०	चि.	४१ १६	रा.	२२ १३	ह.	३९ ३४	रा.	२१ ३२	वि.	१२ ४७	१० ५०	बा.	४० २	२१ ४४	काण	१३	१४	३१	३०	२४	तु.	१२ ५८	१० ५४	५ ४३	६ १७	८ ५९	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० चैत्रशुक्लपक्षः (मार्च ता० २९···३१, एप्रिल ता० १···१३ सन् १९६८) सौम्यायनं, याम्यगोलः, वसन्तर्तुः। पक्षेऽस्मिन् मीनार्कदोषः।

नववत्सरारम्भः। पञ्चाङ्गफलश्रवणम्। वर्षपतिपूजनम्। सूर्योदये दुर्मतिनाम संवत्सरस्तेन वर्षान्त यावत् संकल्पादौ संयोजनीयः। कल्पादिः [illegible] । अद्य [illegible] मु० । रात्रिशेषे द्वितीयायामुत्तर*

चन्द्रदर्शनम्, मु.३० फलं समम्। अद्य रेवत्यां पश्चिमदिग्गमने लग्नंचिन्त्यम्। अश्विन्यां वैधृतिदोषोऽवगेयः। रेवत्यामर्कः ४०।२८। [illegible]

मत्स्यजयन्ती। मुहर्रम १ हिजरी सन् १३८८। अद्य वैधृतेः परमश्विन्यां प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्तोऽवधेयः। पू. भा. ४ च. मीने च शुक्रः [illegible]

भ. २८।४१ (रा. २१।२०) उ.। मन्वादिः। श्रीरामदोलोत्सवः। सौभाग्यसुन्दरीव्रतम्। गणगौरीजन्म। मङ्गलगौरीजन्म। वैनायकी [illegible] । पू. भा. ४ च. मीने च बुधः १६।५४।

*द्वितीया [illegible] । अश्वि. [illegible] कुजः [illegible] । पू. भा. [illegible] शुक्रः १५।५४।

भ. ११।१९ (दि. १०।२३) या.। अद्य रोहिण्यां प्रसूतिकास्नानसुभगेतररक्तवस्त्रादिधारण मु.।

श्रीपञ्चमी ५। मतान्तरात् कल्पादिः। श्रीरामराज्यमहोत्सवः। मतान्तरान्मत्स्यजयन्ती। पञ्चम्यामृगे [illegible] मु.। भगे च [illegible] हितावहम्। †

स्कन्ददमनकोत्सवः। अद्य सप्तम्यां मृगे प्रसूतिकास्नाननववस्त्रधारणभैषज्यसेवनपश्चिमदिग्गमनादि विचिंत्य मु.। †[illegible] ३. मा. मे. बुध. १०।१४। §

भ. २५।१० (दि. १५।५३) उ. ५६।२८ (रा. ४।२४) या.। उ. भा. २ च. बुधः १।४७। ‡[illegible]

अशोक ८। अशोककलिकाप्राशनम्। दुर्गा ८। भवान्युत्पत्तिः। (भवानी अन्नपूर्णापरिक्रमा) ब्रह्मपुत्रस्नानम्। नवम्यां [illegible] । उ. भा. २ च. शुक्रः २१।५८।

श्रीरामनवमी ९ व्रतम् सर्वेषाम्। बुधास्तं प्राच्याम् १५।३८। अद्य दशम्यां पुष्ये च सूतिकापथ्योपदानसुभगेतरनवव[illegible] । [illegible]

भ. ५८।४१ (प्रा. ५।१५) उ.। अद्य व्रतबन्धे ल. ३ ने. दा.। एकादश्यां सार्गे यायिजयप्रयोगः। उ. भा. ४ च. बुधः [illegible] । §उ. भा. [illegible] शुक्रः [illegible]

भ. २८।८ (सा. १७।१) या.। कामदा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। विष्णुदोलोत्सवः। द्वादशीमघायोगे स्वाभिकार्योऽसंमवः। [illegible] । उ. भा. [illegible] शुक्रः [illegible]

प्रदोषः। विष्णुदमनकोत्सवः। अनङ्गत्रयोदशीव्रतम्। अद्य घ. ११ यावदुपनयने रोगः ततःपरं लग्नं चिन्त्यम्। पूर्वाशं [illegible] । रेवत्यां बुधः [illegible]

श्रीशिवनृसिंहयोर्दमनकोत्सवस्सायम्, दमनकदलेनानयोः पूजनम्। अद्य त्रयोदश्यामृतुमतीस्नानपुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नान [illegible] । उ. भा. ४ च. शुक्रः [illegible]

भ. १८।१० (दि. १३।१०) उ. ४५।२८ (रा. २३।५५) या.। व्रताय चैत्रीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा। अद्य रिक्तायां [illegible] । रेवत्यां शनिः [illegible]

स्नानदानादौ चैत्रीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा। वैशाखस्नानदानयमनियमाद्यारम्भः। अश्विन्योर्मेषेचार्कः १४।४५ (दि० ११।३०) [illegible] आरम्भस्तत्र [illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.
१ शु.	६ ३९	८ १७	१० १३	१२ २६	१४ ४४	१६ ५८	१९ ११	२१ २७	२३ ४४	१ ५०	३ ३६	५ ८
२ श.	६ ३६	८ १४	१० १०	१२ २३	१४ ४१	१६ ५५	१९ ८	२१ २४	२३ ४१	१ ४७	३ ३३	५ ५
२ सू.	६ ३२	८ १०	१० ६	१२ १९	१४ ३७	१६ ५१	१९ ४	२१ २०	२३ ३७	१ ४३	३ २९	५ १
३ चं.	६ २८	८ ६	१० २	१२ १५	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०	२१ १६	२३ ३३	१ ३९	३ २५	४ ५७
४ मं.	६ २४	८ २	९ ५८	१२ ११	१४ २९	१६ ४३	१८ ५६	२१ १२	२३ २९	१ ३५	३ २१	४ ५३
५ बु.	६ २१	७ ५९	९ ५५	१२ ८	१४ २६	१६ ४०	१८ ५३	२१ ९	२३ २६	१ ३२	३ १८	४ ५०
६ बृ.	६ १७	७ ५५	९ ५१	१२ ४	१४ २२	१६ ३६	१८ ४९	२१ ५	२३ २२	१ २८	३ १४	४ ४६
७ शु.	६ १३	७ ५१	९ ४७	१२ ०	१४ १८	१६ ३२	१८ ४५	२१ १	२३ १८	१ २४	३ १०	४ ४२
८ श.	६ ९	७ ४७	९ ४३	११ ५६	१४ १४	१६ २८	१८ ४१	२० ५७	२३ १४	१ २०	३ ६	४ ३८
९ सू.	६ ६	७ ४४	९ ४०	११ ५३	१४ ११	१६ २५	१८ ३८	२० ५४	२३ ११	१ १७	३ ३	४ ३५
१० चं.	६ २	७ ४०	९ ३६	११ ४९	१४ ७	१६ २१	१८ ३४	२० ५०	२३ ७	१ १३	२ ५९	४ ३१
११ मं.	५ ५८	७ ३६	९ ३२	११ ४५	१४ ३	१६ १७	१८ ३०	२० ४६	२३ ३	१ ९	२ ५५	४ २७
१२ बु.	५ ५५	७ ३३	९ २९	११ ४२	१४ ०	१६ १४	१८ २७	२० ४३	२३ ०	१ ६	२ ५२	४ २४
१३ बृ.	५ ५१	७ २९	९ २५	११ ३८	१३ ५६	१६ १०	१८ २३	२० ३९	२२ ५६	१ २	२ ४८	४ २०
१४ शु.	५ ४७	७ २५	९ २१	११ ३४	१३ ५२	१६ ६	१८ १९	२० ३५	२२ ५२	० ५८	२ ४४	४ १६
१५ श.	५ ४४	७ २२	९ १८	११ ३१	१३ ४९	१६ ३	१८ १६	२० ३२	२२ ४९	० ५५	२ ४१	४ १३

मिथिलानिकटे ध्रुवप्रोतवृत्तेऽस्थानम्। तत्र सर्वत्र रेलवे घटिकातो युतिरवगन्तव्या॥
ति. १ शुक्रे—शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. १६।३३ शनिर्दक्षिणे। ति. २ शनौ—कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. ३।४६ कुजोदक्षिणे। ति. ११ कुजे—गुरुचन्द्रयुतिः रे.घं. १०।३९ गुरुर्दक्षिणे।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४६ १२	११ १५ ४६ २७	११ २५ ४६ ३५	० ६ ४५ ०	१० २५ ३९ २९	४ ८ ५ ७	१० २७ १७ ३३	११ १४ ५६ १६	११ २९ ४० ४७	५ २९ ४० ४७
४६ १५	११ १६ ४५ ४२	० ८ ० १७	० ७ २९ १५	१० २७ २२ २६	४ ७ ५९ ३३	१० २८ ३२ ०	११ १५ ४ ५	११ २९ ३७ ३६	५ २९ ३७ ३६
४६ १७	११ १७ ४४ ५५	० २० ६ २८	० ८ १३ २८	१० २९ ६ २८	४ ७ ५४ १०	१० २९ ४६ २५	११ १५ ११ ५३	११ २९ ३४ २५	५ २९ ३४ २५
४६ २०	११ १८ ४४ ६	१ २ ८ २५	० ८ ५७ ३८	११ ० ५१ ३१	४ ७ ४८ ५५	११ १ ० ५२	११ १५ १९ ४२	११ २९ ३१ १५	५ २९ ३१ १५
४६ २३	११ १९ ४३ १५	१ १४ ९ ५१	० ९ ४१ ४५	११ २ ३७ ३१	४ ७ ४३ ५०	११ २ १५ १८	११ १५ २७ ३०	११ २९ २८ ४	५ २९ २८ ४
४६ २५	११ २० ४२ २१	१ २६ १४ ४३	० १० २५ ५०	११ ४ २४ २२	४ ७ ३८ ५५	११ ३ २९ ४४	११ १५ ३५ २०	११ २९ २४ ५३	५ २९ २४ ५३
४६ २८	११ २१ ४१ २५	२ ८ २६ २१	० ११ ९ ५२	११ ६ १२ ३	४ ७ ३४ ९	११ ४ ४४ ९	११ १५ ४३ ९	११ २९ २१ ४२	५ २९ २१ ४२
४६ ३०	११ २२ ४० २८	२ २० ४७ ४१	० ११ ५३ ५२	११ ८ ० २९	४ ७ २९ ३३	११ ५ ५८ ३३	११ १५ ५० ५८	११ २९ १८ ३२	५ २९ १८ ३२
४६ ३३	११ २३ ३९ २८	३ ३ २१ १२	० १२ ३७ ५०	११ ९ ४९ ३४	४ ७ २५ ७	११ ७ १२ ५७	११ १५ ५८ ४५	११ २९ १५ २१	५ २९ १५ २१
४६ ३५	११ २४ ३८ २५	३ १६ ८ ४२	० १३ २१ ४४	११ ११ ३९ १८	४ ७ २० ५३	११ ८ २७ २१	११ १६ ६ ३३	११ २९ १२ १०	५ २९ १२ १०
४६ ३८	११ २५ ३७ २१	३ २९ ११ २१	० १४ ५ ३५	११ १३ २९ ३६	४ ७ १६ ४८	११ ९ ४१ ४३	११ १६ १४ २१	११ २९ ८ ५९	५ २९ ८ ५९
४६ ४०	११ २६ ३६ १४	४ १२ २९ ३६	० १४ ४९ २४	११ १५ २० २५	४ ७ १२ ५५	११ १० ५६ ४	११ १६ २२ १०	११ २९ ५ ४९	५ २९ ५ ४९
४६ ४३	११ २७ ३५ ४	४ २६ ३ १	० १५ ३३ १०	११ १७ ११ ४१	४ ७ ९ १३	११ १२ १० २५	११ १६ ३० ०	११ २९ २ ३८	५ २९ २ ३८
४६ ४५	११ २८ ३३ ५२	५ ९ ५० २७	० १६ १६ ५४	११ १९ ३ २२	४ ७ ५ ४२	११ १३ २४ ४६	११ १६ ३७ ४९	११ २८ ५९ २७	५ २८ ५९ २७
४६ ४८	११ २९ ३२ २८	५ २३ ५० ५	० १७ ० ३६	११ २० ५५ २६	४ ७ २ २१	११ १४ ३९ ६	११ १६ ४५ ३७	११ २८ ५६ १६	५ २८ ५६ १६
४६ ५०	० ० ३१ २३	६ ७ ५९ २८	० १७ ४४ १५	११ २२ ४७ ४८	४ ६ ५९ १२	११ १५ ५३ २६	११ १६ ५३ २४	११ २८ ५३ ६	५ २८ ५३ ६

सज्जनानां बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम॥ भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्। तर्जनं यमदूतानां रामरामेतिगर्जनम्॥ [illegible]

ति. ४ कुजे



ति. ११ कुजे



रोपयित्वा पूजयेत्॥ देशकालौ संकीर्त्य—मम [illegible] यामि—इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य अनेन पूजनेन [illegible] विशेषतः। सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा [illegible] । मरीचिकायां [illegible] मन्त्रः—त्वमशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो [illegible] प्रतिष्ठाप्य पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्। [illegible] विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥१॥ [illegible] मूलमन्त्रेण १०८ पायसाहुतीर्हुत्वा पूजां [illegible] प्रार्थयेत्—श्रीरामेति जनार्दनेति जगतां नाथेति नारायणेत्यानन्देति दयापरेति [illegible] मां नाथ नित्यं कुरु॥ तथास्य प्रशंसा—[illegible] ॥ [illegible] । तत्र प्रवेशनमात्मकारणं [illegible] ॥ [illegible]

श्रीमन्नृपविक्रम [illegible] गताब्दाः ५०६९, ईसवीय सन् १९६८–६९, फसली सन् [illegible] हिजरी सन् १३८७–८८, बङ्गला सन् १३७४–७५, मेषार्कात् कल्पादितो [illegible] । [illegible]

 रात्रेस्तु पश्चिमो यामो मुहूर्तो ब्राह्म उच्यते । मनुः—ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थावनुचिन्तयेत् । कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्वार्थं (परमात्मानं) मेव च ॥ शौनकः—प्रातराचमनं कृत्वा शौचं कृत्वा यथार्थवित् । दन्तशौचं ततः कृत्वा प्रातःस्नानं समाचरेत् ॥ उषस्युषसि यत्स्नानं संध्यायामुदितेऽपि वा । प्राजापत्येन तत्तुल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा.	घ. प.	घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. उ.	चन्द्रोदय घं. मि.
३१ २९	१	सु.	७ १७	प्रा.	८ ३७	स्वा	३७ २५	रा.	२० ४०	व.	३२ ७	सा.	१८ ३३	कौ.	७ १७	८ ३७	तै.	३४ २१	१९ २७	लुम्ब	१४	१५	१	१	२५				५ ४२	६ १८	९ २१	१९ ५१
३१ ३३	२	चं.	५३ ५८	प्रा.	२१ ५४	वि.	३३ १६	रा.	१९ ०	सि.	२४ २५	दि.	१५ २८	ग.	१ २६	६ १६	व.	३८ २४	१७ ५९	मित्र	१५	१६	२	२	२६	वृ.	१९ १८	१३ २५	५ ४२	६ १८	९ ४२	२१ २
३१ ३६	४	मं.	४९ २५	रा.	१ २७	अनु	२९ ५	सा.	१७ १९	व्य.	१६ ४३	दि.	१२ २२	व.	२२ २५	१४ ३९	बा.	४९ २५	१ २७	वज्र	१६	१७	३	३	२७				५ ४१	६ १९	१० ४	२२ १२
३१ ३९	५	बु.	४३ ४०	रा.	२३ ८	ज्ये.	२५ ५	दि.	१५ ४२	व.	९ ९	दि.	९ २०	कौ.	१६ ३२	१२ १७	तै.	४३ ४०	२३ ८	ध्वांक्ष	१७	१८	४	४	२८	ध.	२५ ५	१५ ४२	५ ४०	६ २०	१० २५	२३ २०
३१ ४३	६	बृ.	३८ २०	रा.	२१ ०	मू.	२१ २५	दि.	१४ १३	प.	५३ ५१	प्रा.	२१ ३६	ग.	११ ०	१० ३	व.	३८ २०	२१ ०	धूम्र	१८	१९	५	५	२९				५ ३९	६ २१	१० ४६	० २०
३१ ४६	७	शु.	३३ ३७	रा.	१९ ६	पू.	१८ २२	दि.	१३ ०	सि.	४८ ३५	रा.	१ ५	वि.	५ ५९	८ २	व.	३३ ३७	१९ ६	प्र. मा.	१९	२०	६	६	३०	म.	३२ ५५	१८ ४९	५ ३९	६ २१	११ ७	१ १३
३१ ५०	८	श.	२९ ४३	सा.	१७ ३१	उ.	१६ ३३	दि.	१२ १५	सा.	४२ ५५	रा.	२२ ४८	बा.	१ ४०	६ १८	कौ.	[illegible]	[illegible]	रक्ष	२०	२१	७	७	३१				५ ३८	६ २२	११ २८	१ ५७
३१ ५३	९	सू.	२६ ४९	सा.	१६ २१	श्र.	१५ १८	दि.	११ ४५	शु.	३८ २	रा.	२० ५०	ग.	२६ ४९	१६ २१	व.	५५ ५५	३ ५९	गद	२१	२२	८	८	१	कुं.	४५ १२	२३ ४२	५ ३७	६ २३	११ ४८	२ ३४
३१ ५६	१०	चं.	२५ १	दि.	१५ ३७	ध.	१५ ६	दि.	११ ३९	शु.	३४ ५	रा.	१९ १५	वि.	२५ १	१५ ३७	व.	५४ ४५	३ ३१	शुभ	२२	२३	९	९	२				५ ३७	६ २३	१२ ९	३ ८
३२ ०	११	मं.	२६ २९	दि.	१५ २४	श.	१६ ५	दि.	१२ २	ब्र.	३१ ७	सा.	१८ ३	बा.	२६ २९	१५ २६	कौ.	५४ ५३	३ ३३	मृत्यु	२३	२४	१०	१०	३				५ ३६	६ २४	१२ २९	३ ३८
३२ ३	१२	बु.	२५ १७	दि.	१५ ४८	पू.	१७ ४८	दि.	१२ ४२	ऐं.	२९ ११	सा.	१७ १६	तै.	२५ १७	१५ ४२	ग.	५६ १९	४ ७	पद्म	२४	२५	११	११	४	मी.	२२ २२	६ २२	५ ३५	६ २५	१२ ४९	४ ८
३२ ६	१३	बृ.	२७ २१	दि.	१६ ३१	उ.	२१ २१	दि.	१४ ७	वै.	२८ १५	सा.	१६ ५३	व.	२७ २१	१६ ३१	वि.	५८ ५९	५ १०	छत्र	२५	२६	१२	१२	५				५ ३५	६ २५	१३ ८	४ ३७
३२ ९	१४	शु.	३० ३७	सा.	१७ ४९	रे.	२६ ३	दि.	१५ ५९	वि.	२८ १६	सा.	१६ ५२	श.	३० ३७	१७ ४९	च.	६० ०	× ×	श्रीवत्स	२६	२७	१३	१३	६	मे.	२६ ३	१५ ५९	५ ३४	६ २६	१३ २८	
३२ १३	३०	श.	३४ ५१	सा.	१९ ३०	अ.	३१ ४३	सा.	१८ १५	प्री.	२९ ४	सा.	१७ ११	च.	२ ४४	६ ३९	ना.	३४ ५१	१९ ३०	सौम्य	२७	२८	१४	१४	७				५ ३३	६ २७	१३ ४७	

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० वैशाखकृष्णपक्षः (एप्रिल ताः १४···२८सन् १९६८) सौम्यायनं, सौम्यगोलः, वसन्तर्तुः ।

अश्वत्थसेचनम् । धर्मघटादिदानम् । कच्छपावतारः । बंगवैशाखारम्भः । अद्य द्वितीयास्वातीयोगे प्रसूतिकास्नानसूतिकापथ्यौषधदानशिशुताम्बूलभक्षणादि मु० । रे. ३च. बुधः ४।०। रेवत्यां शुक्रः २४।२८ ।
भ. २८।२५(दि. १७।४) उ० ५५।२४ (रा. ३।५१) या । अद्य दोषातिशयाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । रे. ४ च. बुधः ५०।३० ।
श्रीगणेश ४ चतुर्थीव्रतम् । अद्य मैत्रे सतिहीनबलेचन्द्रे रोगविमुक्तस्नान मु. । चतुर्थीज्येष्ठायोगे स्थायिजयद मु. । अश्वि. २च. रविः ३३।३३। भ. ३च. कुजः ५३।१६ ।
अद्य भूम्युपवेशनचूडाकरणशिशुताम्बूलभक्षणधान्यच्छेदनकणमर्दनादि मु० । पञ्चम्यां मूले वधूप्रवेशद्विरागमनयो मुं. । रे. २च. शुक्रः ६।२ । रे. ३च. शुक्र ...
भ. ३८।२०(रा. २।१०)उ. । विष्टेः पूर्वं शिशोस्ताम्बूलभक्षणधान्यच्छेदनकणमर्दनलतावृक्षादिरोपण मु० । अश्विन्यां मेषे च बुधः ३६।... ।
भ. ५।५९(प्रा.८।२)या । अद्य विष्टेः परमुत्तरायामृतुमतीस्नानसूतिकापथ्यदानभूम्युपवेशनशिशुताम्बूलभक्षणधान्यच्छेदनवस्तुविक्रयादि मु. । ...
काल ८।कालभैरवयात्रा । शीतला ८ । (पर्युषितान्नपानादिकं हितावहम्) । अद्य लतागुल्मवृक्षाद्यारोपण मु. । अश्वि. ३ च. रविः ४।३... ।
भ. ५५।५५(रा.३।५९)उ. । राष्ट्रीय वैशाखारम्भः । पञ्चकारम्भः ४५।१२(रा.२३।४२)। अद्य दशम्यां विष्टेःपूर्वं पूर्वदक्षिणदिग्गमननोर्गे । ...
भ. २५।१ (दि. १५।३७) या. । अद्य विष्टेःपरं भैषज्यसेवनसूतिकापथ्यौषधदानस्तनपानजलाशयारामसुरप्रतिष्ठादि मु. । अश्वि. ४ च. ...
वरूथिनी ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । अद्यासवारिष्टनिर्माण मु. ।पूर्वायां वस्तुविक्रयादिकं शुभावहम् । अश्वि. ४च. रवि. ३०।४ । ... ।
प्रदोषः । अद्य पूर्वायामासवारिष्टनिर्माणवस्तुविक्रयादि मु. । वैधृतेः पूर्वमुत्तरायां जातकर्मादि मु. । भरण्यां बुधः ४२।४२ ।
भ. २७।२१ (दि. १६।३१) उ. ५८।५९ (प्रा. ५।१०) या । मासशिवरात्रिः । अद्य रिक्तावैधृतिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । अश्विन्यां ... शुक्रः ... ।
पञ्चक निवृत्तिः २६।३ (दि. १५।५९) । शुभे रिक्ताविधुक्षयादिदोषोऽवधेयः । भरण्यामर्कः ५६।० । कृत्तिकायां कुजः ८।४४ । भ. ... ।
स्नानदानश्राद्धादौ दर्शः ३० । सक्तुदानम् । मुद्गलोपाख्यानं पठनीयं श्रवणीयञ्च । शन्युदयः प्राच्याम् ५९।५० । अश्वि. २च. शुक्र ... ।

विवाहमुहूर्ताः
ति. १ रवौ स्वात्यां घ. १७ उ. मृत्यु-बाणस्यानिष्टफलभावः ।
ति. ... चन्द्रे मैत्रे ...तदोषाद्विवाह-मुहूर्ताभावः ।
ति. ... भौमे मैत्रे ...
ति. ५ बुधे मूले ... घ. २२ उ. ...
ति. ६ गुरौ मूले रे. ... दिवा.ल. ...
ति. ७ शुक्रे ... घ. २४ उ. ... रे. ... ने. दा. ।
ति. ८ शनौ ... रे. ८ दिवा ... ।
ति. १२ बुधे ... घ. ... ततः परं वैधृतिदोषः ।
ति. १३ गुरौ उ. भा. भे वैधृतिदोष. रेवत्यां च शनिराहुसंगाद्विवाहमुहूर्ताभावः ।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.		वृ. प्र.		मि. प्र.		क. प्र.		सि. प्र.		क. प्र.		तु. प्र.		वृ. प्र.		ध. प्र.		म. प्र.		कु. प्र.		मी. प्र.	
१सू.	५	४०	७	१८	९	१४	११	२७	१३	४५	१५	५९	१८	१२	२०	२८	२२	४५	०	५१	२	३७	४	९
३चं.	५	३६	७	१४	९	१०	११	२३	१३	४१	१५	५५	१८	८	२०	२४	२२	४१	०	४७	२	३३	४	५
४मं.	५	३२	७	१०	९	६	११	१९	१३	३७	१५	५१	१८	४	२०	२०	२२	३७	०	४३	२	२९	४	१
५बु.	५	२९	७	७	९	३	११	१६	१३	३४	१५	४८	१८	१	२०	१७	२२	३४	०	४०	२	२६	३	५८
६बृ.	५	२५	७	३	८	५९	११	१२	१३	३०	१५	४४	१७	५७	२०	१३	२२	३०	०	३६	२	२२	३	५४
७शु.	५	२१	६	५९	८	५५	११	८	१३	२६	१५	४०	१७	५३	२०	९	२२	२६	०	३२	२	१८	३	५०
८श.	५	१७	६	५५	८	५१	११	४	१३	२२	१५	३६	१७	४९	२०	५	२२	२२	०	२८	२	१४	३	४६
९सू.	५	१४	६	५२	८	४८	११	१	१३	१९	१५	३३	१७	४६	२०	२	२२	१९	०	२५	२	११	३	४३
१०चं.	५	१०	६	४८	८	४४	१०	५७	१३	१५	१५	२९	१७	४२	१९	५८	२२	१५	०	२१	२	७	३	३९
११मं.	५	६	६	४४	८	४०	१०	५३	१३	११	१५	२५	१७	३८	१९	५४	२२	११	०	१७	२	३	३	३५
१२बु.	५	२	६	४०	८	३६	१०	४९	१३	७	१५	२१	१७	३४	१९	५०	२२	७	०	१३	१	५९	३	३१
१३बृ.	४	५९	६	३७	८	३३	१०	४६	१३	४	१५	१८	१७	३१	१९	४७	२२	४	०	१०	१	५६	३	२८
१४शु.	४	५५	६	३३	८	२९	१०	४२	१३	०	१५	१४	१७	२७	१९	४३	२२	०	०	६	१	५२	३	२४
३०श.	४	५१	६	२९	८	२५	१०	३८	१२	५६	१५	१०	१७	२३	१९	३९	२१	५६	०	२	१	४८	३	२०

ति: १४ शुक्रे—शुक्रचन्द्रयुतिः रे.घं.१२।३४ शुक्रोदक्षिणे। अत्रैव शनिचन्द्रयुतिः रे.घं.५।४२ शनिर्दक्षिणे ।
ति. ३० शनौ—बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. ४।४०चन्द्रोदक्षिणे ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

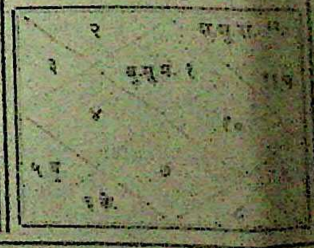
मि. मा.		स्प. सू.				स्प. च.				स्प. मं.				स्प. बु.				स्प. बृ.				स्प. शु.				स्प. श.				स्प. रा.				स्प. के.			
४६	५३	०	१	३०	४	६	२२	१५	४२	०	१८	२७	५२	११	२४	४०	२५	४	६	५६	१४	११	१७	७	४६	११	१७	१	११	११	२८	४९	५५	५	२८	४९	५५
४६	५५	०	२	२८	४३	७	६	३५	२३	०	१९	११	२६	११	२६	३३	१५	४	६	५३	२७	११	१८	२२	५	११	१७	८	५८	११	२८	४६	४४	५	२८	४६	४४
४६	५७	०	३	२७	२१	७	२०	५४	३९	०	१९	५४	५६	११	२८	२६	१५	४	६	५०	५१	११	१९	३६	२३	११	१७	१६	३४	११	२८	४३	३३	५	२८	४३	३३
४७	०	०	४	२५	५६	८	५	९	४३	०	२०	३८	२५	०	०	१९	२१	४	६	४८	२६	११	२०	५०	४०	११	१७	२४	२८	११	२८	४०	२२	५	२८	४०	२२
४७	२	०	५	२४	२९	८	१९	१७	२०	०	२१	२१	५१	०	२	१२	२६	४	६	४६	१४	११	२२	४	५७	११	१७	३२	९	११	२८	३७	१२	५	२८	३७	१२
४७	४	०	६	२३	०	९	३	१४	३९	०	२२	५	१३	०	४	५	२९	४	६	४४	१४	११	२३	१९	१३	११	१७	३९	५२	११	२८	३४	१	५	२८	३४	१
४७	६	०	७	२१	२८	९	१६	५९	१९	०	२२	४८	३३	०	५	५८	२६	४	६	४२	२५	११	२४	३३	२८	११	१७	४७	३२	११	२८	३०	५०	५	२८	३०	५०
४७	९	०	८	१९	५४	१०	०	२९	४०	०	२३	३१	५१	०	७	५१	१८	४	६	४०	५०	११	२५	४७	४२	११	१७	५५	१२	११	२८	२७	४०	५	२८	२७	४०
४७	११	०	९	१८	१९	१०	१३	४४	४२	०	२४	१५	६	०	९	४३	५८	४	६	३९	२५	११	२७	१	५७	११	१८	२	५०	११	२८	२४	२९	५	२८	२४	२९
४७	१३	०	१०	१६	४१	१०	२६	४४	१२	०	२४	५८	१९	०	११	३६	२३	४	६	३८	११	११	२८	१६	११	११	१८	१०	२७	११	२८	२१	१८	५	२८	२१	१८
४७	१५	०	११	१५	१	११	९	२८	४२	०	२५	४१	२९	०	१३	२८	३०	४	६	३७	१०	११	२९	३०	२४	११	१८	१८	३	११	२८	१८	७	५	२८	१८	७
४७	१७	०	१२	१३	१९	११	२१	५९	३१	०	२६	२४	३६	०	१५	२०	१७	४	६	३६	२१	०	०	४४	३६	११	१८	२५	३८	११	२८	१४	५७	५	२८	१४	५७
४७	१९	०	१३	११	३६	०	४	१८	३९	०	२७	७	४०	०	१७	११	४१	४	६	३५	४३	०	१	५८	४८	११	१८	३३	११	११	२८	११	४६	५	२८	११	४६
४७	२१	०	१४	९	५३	०	१६	२८	३७	०	२७	५०	४२	०	१९	२	३८	४	६	३५	१७	०	३	१२	५९	११	१८	४०	४३	११	२८	८	३५	५	२८	८	३५

सर्वपापक्षयद्वारा श्रीमधुसूदनदेवताप्रीत्यर्थममुकतीर्थेवैशाखस्नानारम्भम् करिष्ये । स्नानमन्त्राः—वैशाखे सकल मासे मेषसंक्रमणे रवेः । प्रातःस्नानियमं स्नास्य प्रीयतां मधुसूदन ॥१॥ मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् । निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम् ॥२॥ माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन । स्नानेन मे नाथ फलदो भव तापहन् ॥३॥ इति स्नायात् । एवं संपूर्णे मासे स्नानाशक्तौ वैशाखशुक्ले त्रयोदश्यादिदिनत्रयमन्ते स्नायात् । तदुक्तं—त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां वैशाख्यां वा दिनत्रये । अपिसम्यग्विधानेन नारी वा पुरुषोऽपि वा । प्रातःस्नाने सनियमं सर्वपापैः प्रमुच्यते इति ।

ति. ४ कुजे



ति. ११ कुजे



वैशाखमाहात्म्ये—पद्मपुराणे—एकभक्तनयो नक्तमयाचितमथान्वितः । माधवे ... ॥१॥ वैशाखे विधिना स्नानं देवतार्चादिके ... ॥२॥ व्रतं दानं दमो ... पापं दहति दारुणम् ॥३॥ स्कान्दे— ... उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम् ... पात्राणि च विधाय ... तीर्थे चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम् । ... माधवे मासि कुर्वीत मधुसूदनतुष्टिदम् । ... विसन्ध्यं मधुहन्तारमस्ति तस्य पुनर्भवः ... सिंचेत्—प्रदक्षिणञ्च कुर्वीत ... ति. ३० शनौ मुद्गलोपाख्यानं पठनीयं ... तत्र सारभूतोऽयमुपदेशो-

वधारणीयः । श्रद्धा धर्मसुता देवी पावनी विश्वधारिणी । ... श्रद्धया साध्यते धर्मो महद्भिर्नार्थराशिभिः । अकिञ्चना हि मुनयः श्रद्धावन्तो दिवं गताः ॥ ... अकिञ्चनः । शुद्धेन मनसा विप्र ... ततो गतः ॥ न धर्मं प्रीयते तात दानैर्दत्तैर्महाफलम् । ... किमन्यो न गुणो पुण्य ... स्वर्जितम् सताम् । न ... यथान्यायेन सञ्चितैः । न राजसूयैर्बहुभिरिष्ट्वा ... फलं प्रवरं तव ॥ ... विजितो ब्रह्मलोकस्त्वयाऽक्षयः । ... गच्छ विप्र यथासुखम् । ... इति ॥ योगियाज्ञवल्क्यः—अहरहः संध्यामुपासीत इति श्रुतिः । अहोरात्रकृतं पापं संध्यामुपास्य प्रमुच्यते ॥ ... सेयं हि पावनार्थाय सृष्टा संध्या स्वयंभुवा ॥ संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः । विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥ ... ब्राह्मण्याच्च न हीयेत ... संध्यामुपासीत ... । दीर्घमायुः स विन्देत सर्वपापैः प्रमुच्यते । ... ब्राह्मणो विद्वान् सकलं भद्रमश्नुते । ... ब्रह्माप्नोति य एवं वेद । अथ वैशाखशुक्ले ... वा पूर्णिमाया ... वैशाखस्नानारम्भः—स्नानसंकल्पः (देशकालौ संकीर्त्य—मम ...

दि.मा. प. प.	ति.	वा.	घ. प.	घं. मि.	न.	घ. प.	घं. मि.	यो.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. का. उ.	चन्द्रास्त घं. मि.
३२।१६	१	सू.	३९।३४	रा. २१।२७	भ.	३८। २	रा. २०।४५	आ.	३०।२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुस्थिर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० ८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मातङ्ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ ४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अमृत	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ ५९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	काण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२ ५१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वज	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ ४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	छत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	० २५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्रीवत्स	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौम्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ४३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	का. दं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ १७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुस्थिर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ५२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मातङ्ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ २६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मातङ्ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	काण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	× ×
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्पात	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० वैशाखशुक्लपक्षः (एप्रिल ता० २८…३० मई ता० १…१२ सन् १९६८) सौम्यायनं, सौम्यगोलः, वसन्तर्तुः ।

इष्टिः । वह्निने इष्टिकादाहः शुभः । प्रतिपदि यायिजयप्रदयोगः । भ० ३ च. बुधः १८।३२ । केन्द्रांशवशेनमार्गी गुरुः ५५।५८ । §व्रतबन्धे ल. ३ ने दा. ।

चन्द्रदर्शनम्, मु० ४५ फलं समर्घकरम् । कुजोऽस्तः प्रतीच्याम् ५९।५२ । रात्रिशेषे द्वितीयायां वधूप्रवेशद्विरागमनदक्षिणदिग्गमनादि मु० ।

अक्षयतृतीया ३✻ । परशुरामजयन्ती । ब्रह्मार्चनम् । मणिकर्णिकापूजा । त्रिलोचनयात्रा । सागरेस्नानम् । सजलघटछत्रव्यजनादिदानम् । युगादिः । सफर २ । अथ पुंसवन-*

भ. २२।१२ (दि. १४।२४) उ. ५४।२७ (रा. ३।१८) या. । वैनायकी ४ । रात्रिशेषे पञ्चम्यां मृगे पश्चिमदिग्यात्रा मु. । कृत्तिकायां बुधः ५८।१३ ।

श्री शङ्कराचार्य जयन्ती । अगस्त्यास्तः ४१।३२ । अद्य विद्याक्षरारम्भधान्यच्छेदनादि मु. ।§

बुधोदयः प्रतीच्याम् ३०।३३ । अद्य तिथिवानात् सामान्य शुभकर्मणां कृते शोभनकालः ।†

गङ्गासप्तमी ७ (मध्याह्न व्याप्तेः) । अद्य पुष्ये पूर्वोत्तरदिग्गमनादि मु. ।

*सीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नान[illegible] मु० । पूर्वदक्षिणदिग्गमने लग्नं चिन्त्यम् । भ. २ च. रविः [illegible] । कृ. २ च. वृषे च कुजः ४८।७ । भ० ४ च. बुधः [illegible] । [illegible]

भ. १।५४ (प्रा. ६।१४) उ. । ३२।५५ (सा. १८।१५) या. । अद्य विष्टेःपूर्वं शुभकर्मादी स्वल्पकालः । कृ. ३ न. कुजः २८।५० । कृ. ३ च. बुधः [illegible] । [illegible]

नवम्यां प्राणे यायिजयप्रदयोगः । म. ३ न. गुरुः २९।३१ । ¶प्रतिष्ठाविपणिव्यापारादि विविध मु. । वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु. । कृत्तिकायामर्कः [illegible] । [illegible]

अद्य शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽत्र्येयः । भ. ४ च. रविः १६।२० । कृ. ४ च. बुधः ३९।५१ । †भ. ३ च रविः ४९।३। कृ० २ च वृषे च बुधः ५०।८ । [illegible]

भ. २६।४० (दि. १६।७) उ. ५४।५८ (रा. ३।२६) या. । मोहिनी ११ एकादशीव्रतंस्मार्तानाम् । विष्टेःपूर्वं व्रतबन्धे लग्नं ३ ने दा. । [illegible]

मोहिनी ११ एकादशीव्रतं विधवायतिवैष्णवानाम् । अद्य ऋतुमतीस्नानगर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयननवाम्बरधारण[illegible] विविध मु. ।

प्रदोषः । अग्निष्टोमफलकपूजनम् । अद्य ऋतुमतीस्नानस्तनपानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनखट्वारोहण[illegible]

भ. ४०।३ (रा. २१।२६) उ. । नृसिंह चतुर्दशी १४ व्रतम् । शुभकर्मणि रिक्ताविष्टिदोषोऽत्र्येयः । रा. २ च. बुधः ४०।५३ । [illegible]

भ. ७।३ (प्रा- ८।१४) या. । व्रतस्नानदानादौवैशाखी १५ पूर्णिमा पुण्यतमा । वैशाखस्नानदानयमनियादिसमाप्तिः । पुष्करादेवी [illegible] । [illegible]

‡शिशुताम्बूलभक्षणभूम्युपवेशनखट्वारोहणकर्णमर्दनजलाशयारम्भादि मु. । गृहारम्भप्रवेशयोस्तत्त्वशुद्धि सत्वेऽपिशनिर्बः । [illegible]

विवाहमुहूर्ताः ॥

ति. २ चन्द्रे-रोहिण्यां ।।।।।।।। रे. १० ल. १० ने. दा. ।

ति. ३ भौमे-रोहिण्यां रे. ९ ल. गो. धा. ल. ९ ने. दा. ।

ति. ४ बुधे-मृगे ।।।।।ऽ।। रे. ९ विष्टेः पूर्वं लग्नं चिन्त्यम् ।

ति. ८ चन्द्रे मघा मे ।ऽऽ।ऽ।।। रे. ७ ल. गो. धा. ९ ने. दा. ।

ति. ९ भौमे-मघा मे रे. ८ दिवालग्नं चिन्त्यम् ।

ति. ११ बुधे-उ.फा. मे शनिदोषाल्लग्ना-भावः ।

ति. १२ गुरौ-हस्ते ।।।ऽ।।।। रे. ७ ल. गो. धा. १ ने. दा. ।

ति. १३ शुक्रे-हस्ते दिवा स्वल्पकालः ।

ति. १४ शनौ-स्वात्यां व्यतिपातविष्टि दोषाल्लग्नाभावः ।

ति. १५ रवौ-मंगे रात्रिशेषे स्वल्पकालः

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.
१रवि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२सोम.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४बुध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५गुरु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७शनि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४श.	३ ५८	५ ३६	७ ३२	९ ४५	१२ ३	१४ १७	१६ ३०	१८ ४६	२१ ३	२३ १	० ५५	२ २६
१५र.	३ ५४	५ ३२	७ २८	९ ४१	११ ५९	१४ १३	१६ २६	१८ ४२	२० ५९	२३ ५	० ५१	२ २३

ति. १ रवौ-कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. ४।५१ कुजोदक्षिणे ।
ति. ८ चन्द्रे-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. १९।३० गुरुर्दक्षिणे ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि.मा.	स्प.	सू.	स्प.	चं.	स्प.	मं.	स्प.	बु.	स्प.	गु.	स्प.	शु.	स्प.	श.	स्प.	रा.	स्प.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ४ बुधे



ति. ११ बुधे



मनुः—वेदोदितं स्वकं कर्म नित्यं कुर्यादतन्द्रितः । तद्धि कुर्वन् यथाशक्ति प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ [illegible] यजूंषि च । [illegible] कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम् ॥ [illegible] देवान् देवगणांश्चैव मुनीन्मुनिगणानपि । [illegible] नित्यं समर्पयेत्ततः ॥ एकैकमञ्जलिं देवा द्वौ द्वौ तु [illegible] त्रींस्त्रीन् [illegible] स्त्रियस्त्वेकैकमञ्जलिम् ॥ अथ✻वैशाख-[illegible] च सर्वपापविनाशाय कार्यम् - तथा-[illegible] या पुण्या तृतीया शुक्लपक्षजा । अनन्तफलदा सा तु [illegible] । यत्किञ्चिद्दीयते दानं स्वल्पं वा यदि वा बहु । [illegible] स्मृता ॥ अद्य तृतीयायां प्रदोषे परशुराम-

गविधि संपूज्यार्घ्यंदद्यात्—तन्मन्त्रः—जमदग्निसुतो वीर [illegible] ॥ [illegible] भुवो भारमब्रह्मण्यमनीनशत् । रजस्तमो

व्रतमहन् फलान्यपि कृतेंऽहसि ॥ भागवते ९ स्कन्धे [illegible] इति । ति. ३६ दशमी गङ्गायाम् गङ्गाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते । तथा

कनखले स्नात्वा धूतपाप्मा दिवं व्रजेत् ॥ अथाग्निष्टोमफलकपूजनम् ॥ [illegible] अग्निष्टोममवाप्नोति सोमलोकञ्च गच्छति ॥ वैशाखी

कार्तिकी माघी पूर्णिमासु महाफलाः ॥ इति ॥ [illegible] नास्ति चेत्तत्र पापक्षयार्थं निष्क्रयगोदानं संकल्पेन कार्यम् ॥

तन्मन्त्रः ॥ यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी ॥ [illegible] श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् ॥ [illegible]

नृसिंहचतुर्दशी—व्रतनिर्णयः, सानेकग्रन्थोक्त[illegible] चतुर्दशी माधवमासि शुक्ला नृसिंहसम्भूतिचतुर्दशी स्यात् । [illegible]

मा समुपोषणार्हा जयायुतापौर्णिमयायुता वा । [illegible] नृसिंहचतुर्दश्यां भक्तो नृसिंहस्यावतारकथां तथा पुण्यम्-

भयंकर प्रह्लादचरितञ्च श्रद्धया शृण्वीत पठेद्वा ॥ तत्र श्रीमद्भागवते ७ स्कन्धे १ से १० अध्यायमध्ये द्रष्टव्यम् । ति. १५ [illegible]

अनुशासनपर्वणि २६ अध्याये युधिष्ठिरं प्रति भीष्मवचनम् । [illegible] न गङ्गासदृशी गतिः ॥ [illegible]

[illegible] व्युष्टिः सर्वकाल[illegible] ॥ स इह लोके जन्म जीवितं श्रुतमेव च । स पितृतर्पयेद्—गङ्गामभिगम्य सुरांस्तथा ॥

ताक्ष्यस्य दर्शनात् । गङ्गाया दर्शनात्तद्वत्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ उपासते यथा बाला मातरं क्षुधयार्दिताः । श्रेयस्कामास्तथा गङ्गामुपासन्तीह देहिनः ॥ दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्तथा गंगेति कीर्तनात् । पुनात्यपुण्यान् पुरुषाञ्छतशोऽथ सहस्रशः ॥

तव मम च गुणैर्महानुभावा जुषतु मतिं सततं स्वधर्मयुक्तः । अभिगतजनवत्सला हि गङ्गा जगति युनक्ति सुखैश्च भक्तिमन्तम् ।

§ व्रतबन्धे ल. ३ ने. दा. । त्रयोदश्यां प्रसूतिकास्नान मु. । वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु. । रोहिण्यां बुधः ३८।३८ ।

अगस्त्यः—गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः । अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ पतिशुश्रूषणान्नार्यास्तपो नान्यद्विधीयते । सावित्री पतिशुश्रूषां कृत्वा स्वर्गे महीयते ॥ श्रीरुवाच—वसामि नारीषु पतिव्रतासु कल्याणशीलासु विभूषितासु । सत्यासु नित्यं प्रियदर्शनासु सौभाग्ययुक्तासु गुणान्वितासु ॥

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा.	बं.	क्र.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र.क्रां. उ.	चन्द्रोदय घं. मि.
३३ ०	१	चं.	२७ ५३	प्रा.	१६ ३३	अ.	५० २५	रा.	१ ३४	प.	३८ ४०	रा.	२० ५२	वा.	० ५८	५ ४७	कौ.	[illegible]	[illegible]	मानस	१३	१४	३०	१	२३		५ २४	६ ३६	१८ २१	१८ ४२
३३ २	२	मं.	२१ ४२	दि.	१४ ४	ज्ये.	४६ २४	रा.	२३ ५७	शि.	३१ १	सा.	१७ ४८	ग.	२१ ४२	१४ ४	व.	४८ ५४	० ५७	मुद्गर	१४	१५	३१	२	२४	वृ. ४६ २४ २३ ५७	५ २३	६ ३७	१८ ३५	१९ ५१
३३ ५	३	बु.	१६ ६	दि.	११ ४१	मू.	४२ ४१	रा.	२२ २८	सि.	२३ ३४	दि.	१४ ४८	वि.	१६ ६	११ ४१	ब.	४३ २५	२२ ४५	केतु	१५	१६	१	३	२५		५ २२	६ ३७	१८ ५०	२१ २
३३ ८	४	गु.	१० ४४	दि.	९ ४०	पू.	३९ ३१	रा.	२१ ११	सा.	१६ ५०	दि.	१२ ७	वा.	१० ४४	९ ४०	कौ.	३८ २२	२० ४३	धाता	१६	१७	२	४	२६	म. ५३ ५४ २ ५६	५ २२	६ ३८	१९ ४	२२ १२
३३ १०	५	शु.	६ ०	प्रा.	७ ४६	उ.	३७ ३	रा.	२० ११	शु.	१० २४	दि.	९ ३२	तै.	६ ०	७ ४६	ग.	३४ २	१८ ५९	आनन्द	१७	१८	३	५	२७		५ २२	६ ३८	१९ १८	२३ २०
३३ १३	६	श.	[illegible]	प्रा.	[illegible]	श्र.	३५ ३०	रा.	१९ ३४	शु.	[illegible]	प्रा.	[illegible]	व.	२ ३	६ ११	वि.	[illegible]	[illegible]	सुस्थिर	१८	१९	४	६	२८		५ २२	६ ३८	१९ ३१	० २०
३३ १५	८	र.	५७ ९	रा.	४ १३	ध.	२५ ०	रा.	१९ २१	ऐं.	५५ ३३	रा.	३ ३४	वा.	२८ ७	१६ ३६	कौ.	५७ ९	४ १३	मातङ्ग	१९	२०	५	७	२९	कुं. ५ १५ ७ २७	५ २१	६ ३९	१९ ४४	१ १२
३३ १७	९	चं.	५६ ३१	रा.	३ ५७	श.	३५ ४१	रा.	१९ ३७	वै.	५२ २६	रा.	२ १९	तै.	२६ ५०	१६ ५	ग.	५६ ३१	३ ५७	अमृत	२०	२१	६	८	३०		५ २१	६ ३९	१९ ५७	१ ५७
३३ १९	१०	मं.	५७ ६	रा.	४ ११	पू.	३७ ३७	रा.	२० २३	वि.	५० १८	रा.	१ २७	ग.	२६ ४८	१६ ८	वि.	५७ ६	४ ११	काण	२१	२२	७	९	३१	मी. २२ ८ १४ ११	५ २०	६ ४०	२० ९	२ ३५
३३ २२	११	बु.	५८ ५८	रा.	४ ५५	उ.	४० ४१	रा.	२१ ३९	प्री.	४९ १२	रा.	१ ०	व.	२८ २	१६ ३३	वा.	५८ ५८	४ ५५	लुम्ब	२२	२३	८	१०	१		५ २०	६ ४०	२० २१	३ ८
३३ २४	१२	गु.	६० ०	स.	× ×	रे.	४५ १२	रा.	२३ २४	आ.	४९ ०	रा.	० ५५	कौ.	३० २१	१७ ३१	तै.	६० ०	× ×	मित्र	२३	२४	९	११	२	मे. ४५ १२ २३ २४	५ १९	६ ४१	२० ३३	३ ३८
३३ २६	१२	शु.	२ १	प्रा.	६ ७	अ.	५० ३४	रा.	१ ३३	सौ.	४९ ३८	रा.	१ १०	तै.	२ १	६ ७	ग.	३४ १	१८ ५५	वज्र	२४	२५	१०	१२	३		५ १९	६ ४१	२० ४४	४ ८
३३ २८	१३	श.	६ १	दि.	७ ४३	भ.	५६ ४१	रा.	३ ५९	शो.	५० ५२	रा.	१ ३९	व.	६ १	७ ४३	वि.	३८ २२	२० ३१	ध्वांक्ष	२५	२६	११	१३	४		५ १८	६ ४२	२० ५५	४ ३७
३३ ३०	१४	र.	१० ४२	दि.	९ २५	कृ.	६० ०	स.	× ×	अ.	५२ २७	रा.	२ १७	श.	१० ४२	९ २५	च.	४३ १३	२२ ३५	धूम्र	२६	२७	१२	१४	५	वृ. १३ १८ १० ३७	५ १८	६ ४२	२१ ६	
३३ ३२	३०	चं.	१५ ४४	दि.	११ ३५	कृ.	३ ११	प्रा.	६ ३४	सु.	५४ ५	रा.	२ ५६	ना.	१५ ४४	११ ३५	किं.	४८ १९	० ३७	सुस्थिर	२७	२८	१३	१५	६		५ १८	६ ४२	२१ १६	

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० ज्येष्ठकृष्णपक्षः (मई ता० १३···२७···सन् १९६८) सौम्यायनं, सौम्यगोलः ग्रीष्मर्तुः ।

इष्टिः । अद्य विविध शुभकर्मणां कृते शोभनकालः । द्वितीयायां नैत्रे पूर्वेतरसर्वदिग्गमनेदिग्द्वारानुगं लग्नमनुसन्धेयम् । रो. ३ च. बुधः [illegible] । म. ४८।५४ (रा. ०।५७) उ. । कृ. २ च. वृषेऽर्कः ११।५० (दि. १०।८) मु. १५ फलं महर्घकरम् वाहनादिकं संक्रमणकोष्ठकाद्बोध्यम् । रोहिण्यां बुधः [illegible] । भर. ४ च. शुक्रः [illegible] ।

म. १६।६ (दि. ११।४९) या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । बङ्गज्येष्ठारम्भः । अद्य दोषातिशयाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः । उत्तरायां गर्भाधानप्रसूतिकास्नानननवस्त्र[illegible] ।

अत्यावश्यके शुक्रार्थ्यारम्भः ३४।१९ । अद्य पञ्चम्यामासवारिष्टनिर्माणवस्तुविक्रयादि मु. । कृ. ३ च. रविः ४०।१९ ।

अद्य पञ्चम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारणलतागुल्मवृक्षादिरोपण मु. । मृगे बुधः २१।२५ ।

भ. २१३ (प्रा. ६।११) उ. ३०।३४ (सा. १७।३५) या. । अद्य शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽवधेयः । रो. २ च. कुजः [illegible] ।

शुक्रास्तं प्राच्याम् ३४।१९ । पञ्चकारम्भः ५।१५ (प्रा. ७।२७) । अद्य भैषज्यसेवनसुभगेतरनववस्त्रादिधारण मु. । मृ. २ च. बुधः ५४।१२ ।

रात्रिशेषे दशम्यां वस्तुविक्रयादिकं शोभनम् । विष्टेः परं प्रसूतिकास्नानाचरणं हितावहम् । [illegible]

भ. २६।४८ (दि. १६।४) उ. ५७।६ (रा. ४।११) या. । पूर्वायामासवारिष्टनिर्माणादि मु. । [illegible]

अचला ११ एकादशीव्रतं स्मार्त्तानाम् । राष्ट्रीय ज्येष्ठारम्भः । अद्य ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारण[illegible] ।

अचला ११ एकादशीव्रतं वैष्णवानाम् । तिथिदानादावश्यके विविधकर्मणां कृते शोभनकालः । [illegible]

पञ्चकनिवृत्तिः ४५।१२ (रा. २३।२४) । अद्य त्रयोदश्यामृतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवननववस्त्रभूषा[illegible] ।

प्रदोषः । वटसावित्रीव्रतारम्भः (दिनत्रयं यावत्) । मासशिवरात्रिः । त्रयोदश्यां यायिजयप्रद योगः । रे. ३ च. राहुः [illegible] ।

भ. ६।१ (प्रा. ७।४३) उ. ३८।२२ (रा. २०।३९) या. । सतिहीनबलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. ।

वटसावित्रीव्रतम् । श्राद्धादौ दर्शः ३० । प्रतिपदि सामान्यशुभकर्मणां कृते शोभनकालः । मृ. ४ च. बुधः १८।३५ । रोहिण्यां शुक्रः ३७।४६ ।

स्नानदानादौ सोमवतीअमा ३० । †रोहिण्यामर्कः ३७।४६ । रो. २ च. कुजः २५।[illegible] ।

विवाहमुहूर्त्ताः

ति. १ चन्द्रे-मेषे [illegible] रे. ७ ल. गो. भा. ल. ९ ने. दा. ।

ति. २ भौमे-मूले [illegible] रे. ९ विष्टेः पूर्वं स्वल्पकालः ।

ति. ३ बुधे-मूले विष्टेः परं मृत्यु-[illegible]भावः ।

अतः परं [illegible]दोषादि-[illegible]शुभकर्ममुहूर्त्ताभावः ।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	म. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सि. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
१ चं.	३ ५०	५ २८	७ २४	९ ३७	११ ५५	१४ ९	१६ २२	१८ ३८	२० ५५	२३ १	० ४७	२ १९
२ मं.	३ ४६	५ २४	७ २०	९ ३३	११ ५१	१४ ५	१६ १८	१८ ३४	२० ५१	२२ ५७	० ४३	२ १५
३ बु.	३ ४२	५ २०	७ १६	९ २९	११ ४७	१४ १	१६ १४	१८ ३०	२० ४७	२२ ५३	० ३९	२ ११
४ गु.	३ ३८	५ १६	७ १२	९ २५	११ ४३	१३ ५७	१६ १०	१८ २६	२० ४३	२२ ४९	० ३५	२ ७
५ शु.	३ ३४	५ १२	७ ८	९ २१	११ ३९	१३ ५३	१६ ६	१८ २२	२० ३९	२२ ४५	० ३१	२ ३
६ श.	३ ३०	५ ८	७ ४	९ १७	११ ३५	१३ ४९	१६ २	१८ १८	२० ३५	२२ ४१	० २७	१ ५९
८ र.	३ २६	५ ४	७ ०	९ १३	११ ३१	१३ ४५	१५ ५८	१८ १४	२० ३१	२२ ३७	० २३	१ ५५
९ चं.	३ २२	५ ०	६ ५६	९ ९	११ २७	१३ ४१	१५ ५४	१८ १०	२० २७	२२ ३३	० १९	१ ५१
१० मं.	३ १८	४ ५६	६ ५२	९ ५	११ २३	१३ ३७	१५ ५०	१८ ६	२० २३	२२ २९	० १५	१ ४७
११ बु.	३ १४	४ ५२	६ ४८	९ १	११ १९	१३ ३३	१५ ४६	१८ २	२० १९	२२ २५	० ११	१ ४३
१२ गु.	३ १०	४ ४८	६ ४४	८ ५७	११ १५	१३ २९	१५ ४२	१७ ५८	२० १५	२२ २१	० ७	१ ३९
१२ शु.	३ ६	४ ४४	६ ४०	८ ५३	११ ११	१३ २५	१५ ३८	१७ ५४	२० ११	२२ १७	० ३	१ ३५
१३ श.	३ २	४ ४०	६ ३६	८ ४९	११ ७	१३ २१	१५ ३४	१७ ५०	२० ७	२२ १३	२३ ५९	१ ३१
१४ र.	२ ५८	४ ३६	६ ३२	८ ४५	११ ३	१३ १७	१५ ३०	१७ ४६	२० ३	२२ ९	२३ ५५	१ २७
३० चं.	२ ५४	४ ३२	६ २८	८ ४१	१० ५९	१३ १३	१५ २६	१७ ४२	१९ ५९	२२ ५	२३ ५१	१ २३

ति. १२ गुरौ-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. १७।१० शनिर्दक्षिणे ।
ति. १४ रवौ-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. २२।१० शुक्रोदक्षिणे ।
ति. ३० चन्द्रे-कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. ४।१० कुजोदक्षिणे ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

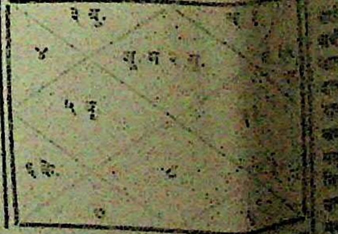
मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. वृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४७ ४८	० २९ ३६ ५४	७ १६ २ ३३	१ ९ १३ १२	१ १६ ४० १८	४ ६ ५५ २१	० २२ ५८ १४	११ २० ३६ ४१	११ २७ १७ ४३	५ २७ १७ ४३
४७ ५०	१ ० ३४ ३४	८ ० २० २३	१ ९ ५५ २९	१ १८ १२ २	४ ६ ५८ १६	० २४ १२ १२	११ २० ४३ ३६	११ २७ १४ ३२	५ २७ १४ ३२
४७ ५१	१ १ ३२ १३	८ १४ ३२ ३०	१ १० ३७ ४४	१ १९ ४१ ४०	४ ७ १ २२	० २५ २६ १०	११ २० ५० २८	११ २७ ११ २२	५ २७ ११ २२
४७ ५२	१ २ २९ ५०	८ २८ ३५ ५१	१ ११ १९ ५६	१ २१ ९ ५	४ ७ ४ ३८	० २६ ४० ७	११ २० ५७ १७	११ २७ ८ ११	५ २७ ८ ११
४७ ५३	१ ३ २७ २५	९ १२ २७ ४७	१ १२ २ ४	१ २२ ३४ १	४ ७ ८ ६	० २७ ५४ २	११ २१ ४ २	११ २७ ५ ०	५ २७ ५ ०
४७ ५४	१ ४ २४ ५९	९ २६ ६ १५	१ १२ ४४ १२	१ २३ ५६ २०	४ ७ ११ ४५	० २९ ७ ५८	११ २१ १० ४३	११ २७ १ ४९	५ २७ १ ४९
४७ ५५	१ ५ २२ ३२	१० ९ २९ ५१	१ १३ २६ १६	१ २५ १५ ५०	४ ७ १५ ३३	१ ० २१ ५३	११ २१ १७ २०	११ २६ ५८ ३९	५ २६ ५८ ३९
४७ ५७	१ ६ २० २	१० २२ ३७ ५६	१ १४ ८ १८	१ २६ ३२ २१	४ ७ १९ ३२	१ १ ३५ ४६	११ २१ २३ ५४	११ २६ ५५ २८	५ २६ ५५ २८
४७ ५७	१ ७ १७ ३१	११ ५ ३० ३९	१ १४ ५० १७	१ २७ ४५ ३६	४ ७ २३ ४३	१ २ ४९ ३९	११ २१ ३० २५	११ २६ ५२ १७	५ २६ ५२ १७
४७ ५८	१ ८ १४ ५८	११ १८ ८ ५१	१ १५ ३२ १४	१ २८ ५५ २४	४ ७ २८ ७	१ ४ ३ ३०	११ २१ ३६ ५४	११ २६ ४९ ७	५ २६ ४९ ७
४७ ५९	१ ९ १२ २३	० ० ३४ ११	१ १६ १४ ८	२ ० १ ३२	४ ७ ३२ ३८	१ ५ १७ २१	११ २१ ४३ १९	११ २६ ४५ ५६	५ २६ ४५ ५६
४८ ०	१ १० ९ ४८	० १२ ४८ ५३	१ १६ ५५ ५९	२ १ ३ ४३	४ ७ ३७ २३	१ ६ ३१ १२	११ २१ ४९ ४१	११ २६ ४२ ४५	५ २६ ४२ ४५
४८ १	१ ११ ७ १०	० २४ ५५ ४४	१ १७ ३७ ४८	२ २ १ ४२	४ ७ ४२ १६	१ ७ ४५ २	११ २१ ५५ ५९	११ २६ ३९ ३४	५ २६ ३९ ३४
४८ २	१ १२ ४ ३२	१ ६ ५७ ५८	१ १८ १९ ३५	२ २ ५५ ११	४ ७ ४७ १९	१ ८ ५८ ५१	११ २२ २ १४	११ २६ ३६ २४	५ २६ ३६ २४
४८ २	१ १३ १ ५१	१ १८ ५९ १६	१ १९ १ १८	२ ३ ४३ ५५	४ ७ ५२ ३३	१ १० १२ ३८	११ २२ ८ २३	११ २६ ३३ १३	५ २६ ३३ १३

ग्राम्प्नुयन्नरः ॥ अथ एकादशीव्रतमाहात्म्यम् । तत्र हेमाद्रिः चतुर्णामपि वर्णानां वर्णाश्रमेतराणाञ्च एकादशीव्रताधिकारः । तत्त्वसागरे—मातृवर्गवत्सानामपि रोगिणामिव । स्वार्थे सर्वलोकानां निर्मलिकादशी तिथिः ॥ संसाररोगशमनी [illegible] ॥ पुंसां शुष्कार्द्रस्यांहसः परम् । तत्स्वरूपं श्रुतं तीर्थस्नानादप्यधिकं विदुः ॥ स्वर्गमोक्षप्रदा ह्येषा राज्यपुत्रप्रसाधिनी । सुकलत्रप्रदा ह्येषा शरीरारोग्यदायिनी ॥ सौरेऽपि [illegible] सौराण्येवसमाचरेत् ॥ मार्कण्डेयः—एकभक्तेन [illegible] ॥ त्वशक्तानामधीतेऽधर्ध्वजीविनाम् ॥ एकभुक्तादिकं कार्यमाह बौधायनी मुनिः ॥ श्राद्धे जन्मदिने चैव संक्रान्त्यां राहुसूतके । उपवासं न कुर्वीत पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥ [illegible] प्रमादतः । एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि । वनस्थयति धर्मोऽयं शुक्ला[illegible]

ति. ४ गुरौ



ति. १२ गुरौ



[illegible] सौभाग्यसमृद्धये कार्यम् । उक्तञ्च । अमायां [illegible] निराहारोषिता नारी विधिनानेन पूजयेत् । [illegible] सार्धं सत्यवतीसाध्वी फलनैवे-[illegible] कुङ्कुमकेसरैः ॥ सावित्र्याख्यानकञ्चापि [illegible] ब्राह्मणाय देयात् ॥ तन्मन्त्रः—सावित्रीयं मया [illegible] ॥ ब्राह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मण प्रतिगृह्यताम् ॥ व्रतेनानेन [illegible] इति । सावित्रीकथा महाभारते वनपर्वणि २९२ [illegible] सावित्री उवाच—दीर्घायुरथवाल्पायु-[illegible] सकृद्वृतो मया भर्ता न द्वितीयं वृणोम्यहम् । मनसा [illegible] क्रियते कर्मणा पश्चात्प्रमाणं मे मनस्ततः ॥ [illegible] सर्वगुणान्विताम् । मुमुदे सा च तं लब्ध्वा भर्तारं [illegible] सर्वाणि संन्यस्याभरणानि सा । जगृहे वल्कलान्येव [illegible] श्वशुर देवसत्कारैर्वाचा संयमनेन [illegible]

वस्त्रं काषायमेव च । परिचारैर्गुणैश्चैव प्रश्रयेण दमेन च । सर्वकामप्रियाभिश्च [illegible] च । तथैव प्रियवादेन नैपुणेन शमेन च । [illegible] भर्तारं पर्यतोषयत् [illegible] प्राप्तः स कालो मर्तव्यं यत्र सत्यवता नृप ॥ चतुर्थेऽहनि मर्तव्यमिति सञ्चिन्त्य भामिनी । [illegible] अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषं निश्चकर्ष यमो बलात् । सावित्रीचैव दुःखार्तायमभवान्वगच्छत । [illegible] कृतं भर्तुस्त्वयानृण्यं [illegible] तपसा गुरुभक्त्या च भर्तुः स्नेहाद् व्रतेन च । [illegible] गतं त्वया । सावित्री उवाच—यत्र मे नियतं भर्ता स्वयं वा यत्र गच्छति । [illegible] महात्मना । स चापदिभिः प्राप्तवतो प्रसादेन न मे प्रतिहता गतिः । [illegible] शृणुत तान् मम । चक्षुषी च स्वराज्यं नैनं जहाम्यहम् । [illegible] भर्तारं जीवितार्थे तु मया चीर्णमिदं व्रतम् । [illegible] च द्वौ वरौ श्वशुरस्य मे । लब्धः पितुः पुत्रशतं पुत्राणां चात्मनः शतम् । [illegible] पिता–माता श्वश्रूःश्वशुर एव च । [illegible] सर्वे कुलञ्च सावित्र्या [illegible] भवेत् ॥ [illegible] ब्रह्मचारी च—शेषं १५ पृष्ठे द्रष्टव्यम्

अगस्त्यः—गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः । अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ पतिशुश्रूषयानार्यास्तपो नान्यद्धि विद्यते । सावित्री पतिशुश्रूषां कृत्वा स्वर्गे महीयते ॥ श्रीरुवाच—वसामि नारीषु पतिव्रतासु कल्याणशीलासु विभूषितासु । सत्यासु नित्यं प्रियदर्शनासु सौभाग्ययुक्तासु गुणान्वितासु ॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	घं. मि.	न.	घ. प.	घं. मि.	यो.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	का.	नं.	फ्र.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रां. उ.	चन्द्रोदय घं. मि
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मानस	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८ ४२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मुद्गर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९ ५१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	केतु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वात	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२ १२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आनन्द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ २०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुस्थिर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	० २०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मातङ्ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ १२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अमृत	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ५७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	काण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ३५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	लुम्ब	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मित्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ३८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वज्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वांक्ष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ३७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धूम्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुस्थिर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० ज्येष्ठकृष्णपक्षः (मई ता० १३…२७…सन् १९६८) सौम्यायनं, सौम्यगोलः ग्रीष्मर्तुः ।

इष्टिः । अद्य विविध शुभकर्मणां कृते शोभनकालः । द्वितीयायां मैत्रे पूर्वतरसर्वदिग्गमने दिग्द्वारानुगं लग्नमनुसन्धेयम् । रो. ३ च. बुधः [illegible] ।
म. ४८।५४ (रा. ०।५७) उ. । कृ. २ च. वृषेऽर्कः ११।५० (दि. १०।८) मु. १५ फलं महर्घकरम् वाहनादिकं संक्रमणकोष्ठकाद्बोध्यम् । रोहिण्यां कुजः [illegible] । मृ. ४ च. शुक्रः ५।२८ ।
म. १६।६ (दि. ११।४९) या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । बड़ज्येष्ठारम्भः । अद्य दोषातिशयाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः ।
अत्यावश्यके शुभकार्यारम्भः ३४।१९ । अद्य पञ्चम्यामासवारिष्टनिर्माणवस्तुविक्रयादि मु. । उत्तरायां गर्भाधानप्रसूतिकास्नान [illegible] । [illegible] ।
अद्य पञ्चम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारणलतागुल्मवृक्षादिरोपण मु. । कृ. ३ च. रविः ४०।९ ।
म. २१३ (प्रा ६।११) उ. ३०।३४ (सा. १७।३५) या. । अद्य शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽवधेयः । मृगे बुधः २१।२५ ।
शुक्रास्तं प्राच्याम् ३४।१९ । पञ्चकारम्भः ५।१५ (प्रा. ७।२७) । अद्य भैषज्यसेवनमुभयेतरनववस्त्रादिधारण मु. । रो. २ च. कुजः ३० [illegible] । कृ. २ च. वृषे च शुक्रः [illegible] ।
रात्रिशेषे दशम्यां वस्तुविक्रयादिकं शोभनम् । मृ. २ च. बुधः ५४।१२ ।
म. २६।४८ (दि. १६।४) उ. ५७।६ (रा. ४।११) या. । पूर्वायामासवारिष्टनिर्माणादि मु. । विष्टेः परं प्रसूतिकास्नानाचरणं [illegible] ।
अचला ११ एकादशीव्रतं स्मार्त्तानाम् । राष्ट्रीय ज्येष्ठारम्भः । अद्य ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारण [illegible] ।
अचला ११ एकादशीव्रतं वैष्णवानाम् । तिथिदानाद्यावश्यके विविधकर्मणां कृते शोभनकालः [illegible] ।
पञ्चकनिवृत्तिः ४।१२ (रा. २३।२४) । अद्य त्रयोदश्यामृतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवननववस्त्र [illegible] ।
प्रदोषः । वटसावित्रीव्रतारम्भः (दिनत्रयं यावत्) ।
म. ६।१ (प्रा. ७।४३) उ. ३८।२२ (रा. २०।३९) या. । मासशिवरात्रिः । त्रयोदश्यां यायिजयप्रद योगः । रे. ३ च. राहुः [illegible] ।
वटसावित्रीव्रतम् । श्राद्धादौ दर्शः ३० । सतिहीनबलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. ।
स्नानदानादौ सोमवतीअमा ३० । प्रतिपदि सामान्यशुभकर्मणां कृते शोभनकालः । मृ. ४ च. बुधः १८।३५ । रोहिण्यां शुक्रः ३।३४६ ।
†रोहिण्यामर्कः ३७।४६ । रो. ३ च. कुजः [illegible] ।

विवाहमुहूर्त्ताः

ति. १ चन्द्रे-मैत्रे ।।।।सत्वल्यो-ऽजः ।।३।। रे. ७ क. गो. ता. ल. ९ ने. दा. ।

ति. २ भौमे-मृगे ।।।।।३।। रे. ९ विष्टेः पूर्वं स्वल्पकालः

ति. ३ बुधे-मृगे विष्टेः परं मृत्यु-बाणव्याप्तलग्नाभावः ।

अतः परं शुक्रास्तमयदोषादि-वशात् शुभकर्ममुहूर्त्ताभावः ।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	म.	प्र.	प्र. मि.	प्र.	क.	प्र.	सिं.	प्र.	क.	प्र.	तु.	प्र.	वृ.	प्र.	ध.	प्र.	म.	प्र.	कुं.	प्र.	मी.	प्र.
१रवि.	[illegible]																					
२सो.	[illegible]																					
३मं.	[illegible]																					
४बु.	[illegible]																					
५गु.	[illegible]																					
६शु.	[illegible]																					
७श.	[illegible]																					
८र.	[illegible]																					
९सो.	[illegible]																					
१०मं.	[illegible]																					
११बु.	[illegible]																					
१२गु.	[illegible]																					
१३शु.	[illegible]																					
१४श.	[illegible]																					
३०र.	[illegible]																					

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

स्प.	सू.	स्प.	चं.	स्प.	मं.	स्प.	बु.	स्प.	गु.	स्प.	शु.	स्प.	श.	स्प.	रा.	स्प.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ४ गुरौ

३		१ शु.
४	बु. २ सू. मं.	रा. १२
बृ. ५		११
के. ६	८	१०
७		चं. ९

ति. १२ गुरौ

३ बु.		
४	सू. मं. २	
५ बृ.		
६ के.		

[illegible] कार्यम् । उक्तञ्च । अमाया [illegible] विरञ्चपोषिता नारी विधिजालेन पूज्यते । [illegible]

ति. १२ गुरौ-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. १७।५० शनिर्दक्षिणे ।
ति. १४ रवौ-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. २२।१० शुक्रोदक्षिणे ।
ति. ३० चन्द्रे-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. ४।० कुजोदक्षिणे ।

प्राज्जुपरः ॥ अथ एकादशीव्रतमाहात्म्यम् । तत्र हेमाद्रिः चतुर्णामपि वर्णानां वर्णाश्रमेतराणाञ्च एकादशीव्रताधिकारः । तत्त्वसागरे-मातेर सर्वकालानामोयम् [illegible] । पुंसां शुक्कार्द्रस्यांहसः पदम् । तत्स्वरूपं श्रुतं तीर्थस्नानादप्यधिकं विदुः ॥ स्वर्गमोक्षप्रदा ह्येषा राज्यपुत्रप्रदायिनी । सुकलत्रप्रदा ह्येषा शरीरारोग्यदायिनी ॥ [illegible] त्वधवतानामपीतेकथ्यंजीविनाम् ॥ एकभुक्तादिकं कार्यमाह बौधायनी मुनिः ॥ श्राद्धे जन्मदिने चैव संक्रान्त्यां राहुसूतके । उपवासं न कुर्वीत यदीच्छेच्छुभमात्मनः [illegible]

वस्त्रं काषायमेव च । परिचारैर्गुणैश्चैव प्रश्रयेण दमेन च । [illegible]

घृत सम क्षमाऽस्तेय शाचोमिन्द्रिय निग्रहः । धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ कायेन त्रिविधं कर्म वाचा चापि चतुर्विधम् । मनसा त्रिविधं चैव दशकर्मपथांस्त्यजेत् ॥ तस्माद्कायमनसा नाचरेदशुभं नरः । शुभाऽशुभान्याचरन् हि तस्य तस्याश्नुते फलम् ॥ मनादि [illegible] शुभाशुभम् । [illegible]

दि.मा. घ. प.	ता.	वा.	घ. प.		घ. मि.	न.	घ. प.		घ. मि.	यो	घ. प.		घ. मि.	क.	घ. प.	घ. मि.	क.	घ. प.	घ. मि.
३३ ३३	१	न.	२० ५४	दि	१३ ३९	रो.	९ ३९	रा	९ ९	धृ.	५५ २७	रा	३ २८	ब.	२० ५४	१३ ३९	बा.	५३ ९	२ २३
३३ ३५	२	बु.	२५ २४	दि	१५ २७	मृ.	१५ ४०	दि.	११ ३३	शू.	५६ १७	रा.	३ ४८	कौ.	२५ २४	१५ २७	तै.	५७ १२	४ १०
३३ ३७	३	बृ.	२९ ०	दि	१६ ५३	आ.	२१ २३	दि	१३ ५०	गं.	५६ २२	रा	३ ४९	ग.	२९ ०	१६ ५३	व.	६० ०	× ×
३३ ३८	४	शु.	३१ ३१	दि	१७ ५३	पु.	२५ ३८	दि	१५ ३१	वृ.	५५ ३३	रा	३ २९	व.	० १६	५ २३	वि.	३१ ३१	१७ ५३
३३ ४०	५	श.	३२ ४८	सा.	१८ २३	पु.	२८ ४१	सा.	१६ ४४	ध्रु	५३ ४६	रा	२ ४६	ब.	२ १०	६ ८	बा.	३२ ४८	१८ २३
३३ ४१	६	र.	३२ ४९	सा.	१८ २३	श्ले	३० ३१	सा	१७ २८	व्या	५० ५९	रा	१ ३९	कौ.	२ ४९	६ २३	तै.	३२ ४९	१८ २२
३३ ४३	७	चं.	३१ ३६	सा	१७ ५४	म.	३१ ६	सा.	१७ ४२	ह.	४७ १४	रा	० ९	ग.	२ १३	६ ८	व.	३१ ३६	१७ ५४
३३ ४४	८	मं.	२९ १२	दि	१६ ५६	पू.	३० २२	सा.	१७ २८	व.	४२ ३४	रा.	२२ १७	वि.	० २४	५ २५	व.	[illegible]	[illegible]
३३ ४६	९	बु.	२५ ४५	दि	१५ ३३	उ.	२८ ५६	सा.	१६ ४९	सि.	३७ ५	रा	२० ५	कौ.	२५ ४५	१५ ३३	तै.	५३ ३४	२ ४१
३३ ४७	१०	बृ.	२१ २३	दि	१३ ४८	ह.	२६ २७	दि	१५ ४९	व्य	३० ५३	सा.	१७ ३६	ग.	२१ २३	१३ ४८	व.	४८ ४२	० ४३
३३ ४८	११	शु.	१६ ०	दि.	११ ३८	चि.	२३ १५	दि	१४ ३२	व.	२४ ५	दि.	१४ ५२	वि.	१६ ०	११ ३८	व.	४३ ११	२२ ३१
३३ ४९	१२	श.	१० २२	रा	९ २३	स्वा	१९ २७	दि	१३ १	प.	१६ ३९	दि	११ ५४	बा.	१० २२	९ २३	कौ.	३७ २३	२० ११
३३ ५०	१३	सू.	[illegible]	रा	[illegible]	वि.	१५ २०	दि	११ २२	शि	९ ९	रा.	८ ५४	तै.	४ २४	७ ०	ग.	[illegible]	[illegible]
३३ ५१	१५	चं.	५२ ५	रा	२ ३	अनु	११ ९	रा	९ ४१	सि.	[illegible]	रा.	[illegible]	वि.	२५ १०	१५ १८	र.	१२ ५	२ ४

ता.	योगः	अं.	फा	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचार (रा. घ. प. घं. मि.)	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. का. उ.	चन्द्रास्त र. मि.
१	मातङ्ग	२८	२९	१४	१६	७	मि. ४२ ३९ २२ २१	५ १७	६ ४३	२१ २९	१९ ५४
२	अमृत	२९	१	१५	१७	८		५ १७	६ ४२	२१ ३६	२० ४७
३	काण	३०	२	१६	१८	९		५ १७	६ ४३	२१ ४५	२१ ३७
४	लुम्ब	३१	३	१७	१९	१०	क. ९ २४ ९ ६	५ १६	६ ४४	२१ ५४	२२ २३
५	मित्र	१	४	१८	२०	११		५ १६	६ ४४	२२ २	२३ ४
६	वज्र	२	५	१९	२१	१२	सि. २० ३१ १७ २८	५ १६	६ ४४	२२ १०	२३ ४२
७	ध्वांक्ष	३	६	२०	२२	१३		५ १५	६ ४५	२२ १८	० १६
८	धूम्र	४	७	२१	२३	१४	क. ४५ ८ २३ १८	५ १५	६ ४५	२२ २५	० ४९
९	प्र. मा.	५	८	२२	२४	१५		५ १५	६ ४५	२२ ३२	१ २२
१०	रक्ष	६	९	२३	२५	१६	तु. ५४ ५१ ३ ११	५ १५	६ ४५	२२ ३८	१ ५७
११	मुसल	७	१०	२४	२६	१७		५ १४	६ ४६	२२ ४४	२ ३१
१२	सिद्धि	८	११	२५	२७	१८		५ १४	६ ४६	२२ ५०	३ ९
१३	उत्पात	९	१२	२६	२८	१९	वृ. १ २२ ५ ४७	५ १४	६ ४६	२२ ५५	४ १०
१५	मानस	१०	१३	२७	२९	२०		५ १४	६ ४६	२३ ०	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० ज्येष्ठशुक्लपक्षः (मई ता० २८…३१, जून ता० १…१० सन् १९६८) उत्तरायणं, सौम्यगोलः, ग्रीष्मर्तुः । पक्षेऽस्मिन् शुक्रास्तत्वात्शुभकर्ममुहूर्ताभावः ।

इष्टिः । चन्द्रदर्शनम्, मु० ३० फलं समम् । दशहरास्नानारम्भः । दशाश्वमेधस्नानारम्भः दशदिनं यावत् । करवीर व्रतम् १ । [illegible] मु. । द्वितीयायां [illegible]

रविजल अव्वल ३ । अद्य मृगे ऋतुमतीस्नानसूतिकास्नानपथ्यौषधदानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनवाद्यारोहणशिशुताम्बूल[illegible] मु. । रो. ३ च. बुधः [illegible]

रम्भाव्रतम् । लवण ३ व्रतम् । तृतीया पुनर्वसुयोगे नववस्त्रादिधारणौषधसेवनगविक्रमदिग्गमनादि मु. । रो. २ च. शुक्रः २०।२४ । [illegible]

म. ०।१६ (प्रा. ५।२३) उ. ३१।३१ (सा. १७।५३) या. । वैनायकी ४ । अद्य पञ्चम्यां सूतिकास्नानपथ्यौषधसेवनवान्यच्छेदनव[illegible] मु. । रो. ३ च. रविः [illegible]

जून ६ । अद्य पुष्ये पूर्वाम्विहायसर्वदिग्गमने दिग्द्वारानुगं लग्नमनुसन्धेयम् ।

अद्य सप्तम्यामासवारिष्टनिर्माणधान्यच्छेदनकणमर्दनादि मु. । आर्द्रायां बुधः ४६।३६ । रो. ३ च. शुक्रः ३।७ ।

भ. ३१।३६ (सा. १७।५४) उ. । मघायामासवारिष्टनिर्माणधान्यच्छेदनकणमर्दनादि मु. । मृगे कुजः १।२९ । केन्द्रांशवशेन वक्रीबुधः [illegible]

भ. ०।२४ (प्रा. ५।२५) या. । अष्टम्यां स्थालिकार्यार्हं योगः । वानानिवारोपकर्मादिकृते शोभनकालः । रो. ४ च. रविः ६।२[illegible]

अद्य दशम्यां व्यतिपातात्पूर्वमृतुमतीस्नानसूतिकापथ्यौषधदानधान्यच्छेदननववस्त्रादिधारण मु. ।

भ. ४८।४२ (रा. ०।४३) उ. । गङ्गादशहरा १० । गङ्गाजन्मदिनम् । श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनम् । अद्य व्यतिपातात्परं विष्टेःपूर्वं [illegible]

भ. १६।० (दि. ११।३८) या. । निर्जला ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् (इदमेव भीमसेनी) । अद्य स्वात्यां पथ्यौषधसेवनस्नानपान[illegible] मु. । [illegible]

शनिप्रदोषः । दाक्षिणात्यानां वटसावित्रीव्रतारम्भः (दिनत्रयं यावत्) । त्रयोदशी स्वाती योगे याम्यिनयाऽर्हं समयः ।

भ. ५८।१४ (रा. ४।३२) उ. । बुधास्तं प्रतीच्याम् ३२।१० । शुभकर्मणि तिथिक्षयादि दोषोऽप्येवः । रे. ३ च. शनिः २१।२६ ।

भ. २५।१० (दि. १५।१८) या. । स्नानदानव्रतादौ ज्येष्ठपूर्णिमा १५ पुण्यतमा । दाक्षिणात्यानां वटसावित्रीव्रतम् । मृग. २ च. [illegible]

दैनिक लग्नसारणी

तिथय	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सि. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.	मि. मा.
१सं.	२ ५०	४ २८	६ २४	८ ३७	१० ५५	१३ ९	१५ २२	१७ ३८	१९ ५५	२२ १	२३ ४७	१ १९	४८ ३
२बु.	२ ४६	४ २४	६ २०	८ ३३	१० ५१	१३ ५	१५ १८	१७ ३४	१९ ५१	२१ ५७	२३ ४३	१ १५	४८ ३
३बृ.	२ ४२	४ २०	६ १६	८ २९	१० ४७	१३ १	१५ १४	१७ ३०	१९ ४७	२१ ५३	२३ ३९	१ ११	४८ ४
४शु.	२ ३८	४ १६	६ १२	८ २५	१० ४३	१२ ५७	१५ १०	१७ २६	१९ ४३	२१ ४९	२३ ३५	१ ७	४८ ४
५श.	२ ३४	४ १२	६ ८	८ २१	१० ३९	१२ ५३	१५ ६	१७ २२	१९ ३९	२१ ४५	२३ ३१	१ ३	४८ ५
६र.	२ ३०	४ ८	६ ४	८ १७	१० ३५	१२ ४९	१५ २	१७ १८	१९ ३५	२१ ४१	२३ २७	० ५९	४८ ५
७चं.	२ २६	४ ४	६ ०	८ १३	१० ३१	१२ ४५	१४ ५८	१७ १४	१९ ३१	२१ ३७	२३ २३	० ५५	४८ ६
८मं.	२ २२	४ ०	५ ५६	८ ९	१० २७	१२ ४१	१४ ५४	१७ १०	१९ २७	२१ ३३	२३ १९	० ५१	४८ ६
९बु.	२ १८	३ ५६	५ ५२	८ ५	१० २३	१२ ३७	१४ ५०	१७ ६	१९ २३	२१ २९	२३ १५	० ४७	४८ ६
१०बृ.	२ १४	३ ५२	५ ४८	८ १	१० १९	१२ ३३	१४ ४६	१७ २	१९ १९	२१ २५	२३ ११	० ४३	४८ ६
११शु.	२ १०	३ ४८	५ ४४	७ ५७	१० १५	१२ २९	१४ ४२	१६ ५८	१९ १५	२१ २१	२३ ७	० ३९	४८ ६
१२श.	२ ६	३ ४४	५ ४०	७ ५३	१० ११	१२ २५	१४ ३८	१६ ५४	१९ ११	२१ १७	२३ ३	० ३५	४८ ६
१३सू.	२ २	३ ४०	५ ३६	७ ४९	१० ७	१२ २१	१४ ३४	१६ ५०	१९ ७	२१ १३	२२ ५९	० ३१	४८ ६
१५चं.	१ ५८	३ ३६	५ ३२	७ ४५	१० ३	१२ १७	१४ ३०	१६ ४६	१९ ३	२१ ९	२२ ५५	० २७	४८ ६

ति. २ बुधे-बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. १९।२७ बुधात्तरेणे ।

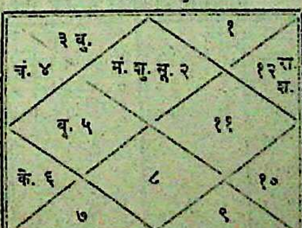
ति. ८ शुक्रे-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. ६।२३ चन्द्रोत्तरेणे ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

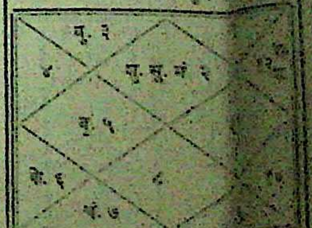
स्प. सू.	स्प. च.	स्प. म.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
१ १३ ५९ ९	२ १ ३ ३५	१ १९ ४३ ०	२ ४ २७ ३६	४ ७ ५७ ५७	१ ११ २६ २७	११ २३ १५ ३१	११ २६ ३० २	५ २६ ३० २
१ १४ ५६ २६	२ १३ १४ १९	१ २० २४ ३९	२ ५ ५ ५७	४ ८ ३ ३०	१ १२ ४० १५	११ २३ २० ३३	११ २६ २६ ५१	५ २६ २६ ५१
१ १५ ५३ ४१	२ २५ ३४ २८	१ २१ ६ १७	२ ५ ३८ ३९	४ ८ ९ १४	१ १३ ५४ १	११ २३ २६ ३१	११ २६ २३ ४१	५ २६ २३ ४१
१ १६ ५० ५६	३ ८ ६ ३२	१ २१ ४७ ५०	२ ६ ५ २७	४ ८ १५ ७	१ १५ ७ ४६	११ २३ ३२ २५	११ २६ २० ३०	५ २६ २० ३०
१ १७ ४८ ९	३ २० ५२ २७	१ २२ २९ २०	२ ६ २६ ६	४ ८ २१ १०	१ १६ २१ ३१	११ २३ ३८ १५	११ २६ १७ १९	५ २६ १७ १९
१ १८ ४५ २०	४ ३ ५३ २६	१ २३ १० ४९	२ ६ ४० २१	४ ८ २७ २३	१ १७ ३५ १६	११ २३ ४४ १	११ २६ १४ ८	५ २६ १४ ८
१ १९ ४२ ३१	४ १७ ९ ५९	१ २३ ५२ १६	२ ६ ४७ ५९	४ ८ ३३ ४६	१ १८ ४८ ५९	११ २३ ४९ ४३	११ २६ १० ५८	५ २६ १० ५८
१ २० ३९ ४०	५ ० ४१ ४७	१ २४ ३३ ४०	२ ६ ४८ ५५	४ ८ ४० १८	१ २० २ ४१	११ २३ ५५ २०	११ २६ ७ ४७	५ २६ ७ ४७
१ २१ ३६ ४८	५ १४ २७ ४५	१ २५ १५ २	२ ६ ४३ ६	४ ८ ४७ ०	१ २१ १६ २३	११ २४ ० ५४	११ २६ ४ ३६	५ २६ ४ ३६
१ २२ ३३ ५५	५ २८ २६ १०	१ २५ ५६ १६	२ ६ ३० ३६	४ ८ ५३ ४९	१ २२ ३० ४	११ २४ ६ २३	११ २६ १ २५	५ २६ १ २५
१ २३ ३१ १	६ १२ ३४ ३८	१ २६ ३७ ३९	२ ६ ११ ३१	४ ९ ० ४८	१ २३ ४३ ४३	११ २४ ११ ४७	११ २५ ५८ १५	५ २५ ५८ १५
१ २४ २८ ६	६ २६ ५० १५	१ २७ १८ ५३	२ ५ ४६ ११	४ ९ ७ ५५	१ २४ ५७ २३	११ २४ १७ ६	११ २५ ५५ ४	५ २५ ५५ ४
१ २५ २५ १०	७ ११ ९ ४५	१ २८ ० ५	२ ५ १६ ४६	४ ९ १५ १२	१ २६ ११ १	११ २४ २२ १९	११ २५ ५१ ५३	५ २५ ५१ ५३
१ २६ २२ १२	७ २५ २९ १५	१ २८ ४१ १५	२ ४ ३७ ३	४ ९ २२ ३७	१ २७ २४ ३९	११ २४ २७ २७	११ २५ ४८ ४२	५ २५ ४८ ४२

पृ० १४ का शेष—[illegible] । अनन्त एव सिद्धान्त [illegible] कोद्रव तथा । शाकं मधुपरान्नं पुनर्भोजनमैथुनमिति ॥ एकादश्यां विशेषः अष्टवर्षाधिको मर्त्यो [illegible] । एकादश्यामुपवासे [illegible] पत्नी भोजयेत् नारी उपोष्य [illegible] मद्यनाम्बूलभक्षणात् । उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् । अत्ययं चाम्बुपानेन नोपवासः प्रणश्यति । (अथार्तस्य गर्भ संकट [illegible]) । तथा च [illegible] प्रायश्चित्ते वदी कुर्यात् [illegible]

ति. ४ शुक्रे



ति. ११ शुक्रे



[illegible] चन्द्रे [illegible] । सुभिक्षं शोभना वृष्टिर्भूमिश्च [illegible] । निर्जला मजला [illegible] ॥ [illegible] दशहरास्नानमारम्भः ॥ काशीखण्डे ॥ ज्येष्ठे [illegible] दशाश्वमेधके स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः [illegible] आयुकल्पादशम्यां प्रतिजन्मान [illegible] सर्वसम्मतं स्मृतम् । तस्यां स्नानं प्रकुर्वीत [illegible] दशपापानि काशीखण्डे कथितानि । यथा [illegible] परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम् ॥ [illegible] वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ [illegible] वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं [illegible]

स्मृतम् ॥ एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि । [illegible] ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता ॥ हरते दश पापानि तस्माद्दशहरा स्मृता ॥ दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि । [illegible] दशमासि सितपक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः । व्यतीपाते गरानन्दे कन्या चन्द्रे वृषे रवौ ॥ दशयोगे [illegible] कल्पभेदेन व्यवस्था बोध्या । [illegible] बाहुल्यं सैव ग्राह्या, तेन ति. १० [illegible] गङ्गादशहरा [illegible] ॥ दशहरायां [illegible] नमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै [illegible] दशहरायां निमित्तं गङ्गास्नानमहं करिष्ये । [illegible] निर्जला सम्पूज्यात्र जलकुम्भान् सशर्करान् ॥ प्रदाय [illegible] त्रिलोकगिण्यै पवित्र्यै ते नमोऽस्तु ते ॥ ति. ११ शुक्ले—ज्येष्ठे मासि [illegible] । [illegible] च हवनं सन्तोषस्तत आर्जवम् ॥ सर्वभूतेष्वयं धर्मः सामान्यो [illegible] विष्णुप्रियम् ॥ [illegible] विधिना कुर्यात् । [illegible] वरो [illegible] ॥ अथ प्रभातदिना [illegible] कुर्यात् [illegible] । [illegible] ॥ तत्र एकादश्यां स्मृत्यन्तरे—कांस्यं मांसं मसूरांश्च [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible]

 मनुः—चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् । भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति ॥ याज्ञवल्क्यः—यज्ञानां तपसां चैव शुभानां चैव कर्मणाम् । वेद एव द्विजातीनां निःश्रेयसकरः परः ॥ वेदमेव सदाऽभ्यस्येत्तपस्तप्स्यन् द्विजोत्तमः । वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते ॥ आ हैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः । यः स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम् ।

पक्षेऽस्मिन् शुक्रास्तत्वाच्छुभकर्म मुहूर्ताभावः ।

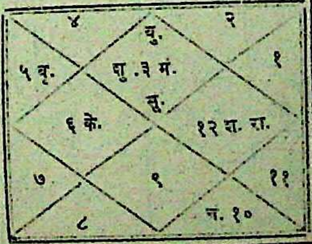
घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	घं. मि.	न.	घ. प.	घं. मि.	यो.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा	व.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसञ्चारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. उ.	नक्षत्रोदय घ. मि.
[illegible]	१	मं.	४६ २०	२३ ४१	ज्ये.	७ ५	[illegible]	शु.	४६ ३०	२३ ५०	व.	१९ ७	१२ ५३	कौ.	४६ २०	२३ ४१	मुद्गर	११	१४	२८	१	२१	व. ७ ५ ८ ४	५ १४	६ ४६	२३ ५	२१ ४६
[illegible]	२	बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	केतु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२० ५०
[illegible]	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धाता	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ ४४
[illegible]	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२ ३०
[illegible]	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ ८
[illegible]	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ ४२
[illegible]	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रक्ष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	० १३
[illegible]	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिद्धि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	० ४१
[illegible]	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्पात	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ११
[illegible]	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मित्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ४१
[illegible]	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ १४
[illegible]	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वांक्ष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ५०
[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धूम्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ३०
[illegible]	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ १७
[illegible]	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रक्ष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री शुभसंवत् २०२५ शकः १८९० आषाढ़कृष्णपक्षः (जून ता० ११…२५ सन् १९६८) सौम्यायनं, गौम्यगोलः, ग्रीष्मर्तुः ।

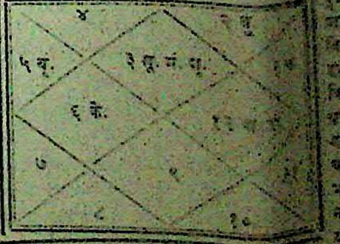
इष्टिः । अद्य सामान्यशुभकर्मादिकृते शोभनकालः । मृग. २ च. रविः ६।४९ ।
अद्य मूले लताद्यारोपणभैषज्यसेवनादि मु. । पूर्वायां वस्तुविक्रयः शुभः । मृग. ३ च. मिथुने च कुजः ४३।५ । मृ. ३ च. वक्री बुधः [illegible] । मृग. ३ च. मिथुने च शुक्रः [illegible]
भ. ८।१० (दि. ८।३०) उ. ३५।४२ (रा. १९।३०) या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । अद्य विष्टेः पूर्वमुत्तरायां प्रसूतिकास्नाननववस्त्रभूषा[illegible]
अद्य रिक्तावैधृतियोगाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । मृग. ३ च. मिथुने चार्कः ३७।१९ (रा. २०।१९) मु. ३०, फलं समम् । वाहनादिकं [illegible]
पञ्चकारम्भः १५।१४ (दि. १५।१९) । वज्रपाद्धारम्भः । वैधृतेः परं पञ्चम्यां यायिजयप्रदयोगः । म. ४ च गुरुः ३८।३५ । मृ. ४ च [illegible]
भ. २६।१९ (दि. १५।४८) उ. ५५।५४ (रा. ३।३५) या. । अद्य विष्टेः पूर्वं सामान्यशुभकर्मणां मु. । मृग. २ च. वक्री बुधः ४६।४६ ।
अद्य वस्तुविक्रयशय्यादिनिर्माणादि मु. । मृ. ४ च. कुजः ३५।५७ ।
शीतला ८ । काल ८ । अद्य तिथिदानात् विविधशुभकर्मादिकृते शोभनकालः । मृग. ४ च. रविः ८।० । आर्द्रायां शुक्रः २८।१ ।
भ. ५९।१४ (रा. ४।५४) उ. । अद्य दशम्यां विष्टेः पूर्वं सूतिकापथ्यौषधदानकर्णवेधननवाम्बरधारणपश्चिमदिग्गमनविपणिव्यापारादि मु. । [illegible]
भ. ३०।४३ (दि. १७।३०) या. । पञ्चकनिवृत्तिः ३।४६ (प्रा. ६।४३) । अद्य विष्टेः परं प्रसूतिकास्नाननववस्त्रधारणभैषज्यसेवन[illegible] आर्द्रायामर्कः ३८।४९ ।
योगिनी ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । अथादिन्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनखट्वारोहणशिशुताम्बूलभक्षणनववस्त्रादिधारण[illegible]
राष्ट्रीयाषाढारम्भः । भरण्यां शय्यासनादेर्भोगः शुभः । मृग. १ च. वक्री बुध. ७।५२ ।
भ. ४८।२२ (रा. २२।५७) उ. । प्रदोषः । अद्य विष्टेः पूर्वं रोहिण्यां प्रसूतिकास्नान मु. । पूर्वदक्षिणयोर्दिग्गमने च कर्म चिन्त्यम् । [illegible]
भ. १६।४९ (दि. ११।५७) या. । मासशिवरात्रिः । शुभकर्मणि रिक्ताविषक्षयादिदोषोऽवसेयः ।
स्नानदानश्राद्धादौ भौमवती अमा ३० । अद्य शुभकर्मादौ विधुक्षयदोषोऽवसेयः । मृगे स्वाधिकार्याऽर्द्र समयोऽवसेयः । आ. २ च. रविः [illegible] आ. २ च. शुक्रः ३१।१७ ।
¶(रा. २०।४४) स्त्री. पु. चं. चं. योगः शकानकवाहनं चण्डनाडी नदयितः [illegible]

*विविध मु. ।

ति. ४ शुके



ति. ११ शुके



दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
१मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	गति	स्प. चं.	गति	स्प. मं.	गति	स्प. बु.	गति	स्प. गु.	गति	स्प. शु.	गति	स्प. श.	गति	स्प. रा.	स्प. के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ९ बुधे-शनिचन्द्रयुतिः रे. चं. ५।६ चन्द्रोदक्षिणे ।
ति. १० कुजे-बुधचन्द्रयुतिः रे. चं. ७।४४ बुधोदक्षिणे । अत्रैव कुजचन्द्रयुतिः रे. चं. १।२२ कुजोदक्षिणे ।

[illegible] पितृभ्यो [illegible] ॥ विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् । [illegible] ॥ अथ विद्यामाहात्म्यम्—गारुडे— [illegible]

फलमाप्नोति आब्दतुल्यं न संशयः ॥ आदित्ये— त्रीणि तुल्यप्रदानानि त्रीणि [illegible] । सर्वेषामेव दानानां विद्यादानं ततोऽधिकम् । [illegible] विद्यादानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति ॥ विद्याबलं सर्वकालं [illegible]
विदुर्बुधाः । आह: समस्तविद्यानां धियमेवाधिदैवतम् । विष्णुधर्मोत्तरे—विद्या कामदुघा धेनुः [illegible] । [illegible] तस्माद्विद्या परा मता ॥ दानानामुत्तमं [illegible]
भाजनं पूज्यो भवेत् ॥ तस्माद्विद्यां हि दद्यात् सर्वेषु सर्वदा ॥ [illegible] ॥ मनुः—योऽधीते [illegible]
तपोत्तमम् । विद्यादानं महाभाग सर्वकामफलप्रदम् ॥ [illegible] विद्या च विद्याविघ्नकरापि यद् ॥ [illegible]
स्कादिव । राजसीभ्य इव स्त्रीभ्यः न विद्यामिच्छन्ति ॥ भारते—यत पुस्तकं [illegible] तत्संधानं श्रवणं विद्याभ्यासं [illegible]
त्रीणि तेजांसि देहिनः । [illegible] ॥ भा. ११ स्क. १० अ. ॥ [illegible] (वैतालिक) [illegible]
यतिाष्टः—योऽपि विद्यासर्वास्याजिते स [illegible] ॥ भारते— [illegible]
फलमश्नुते ॥ मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । [illegible]
[illegible] पृथिवी तत्र पूजिता ॥ येन [illegible] । [illegible]

पूज्यते पिता माता च भारत । आचार्यपूज्या या जाता: सा दिव्या साऽजराऽमरा ॥ येन [illegible] ॥ [illegible]
यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ॥ विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्यापरं दैवतं विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ।

अविणाखलपुरुषेयं त्रिवाचतवान भारताख्यमभृत यः । नमहमरागमगृह्यं कृष्ण द्वयःस्थंबन्द ॥ नमास्तुतेव्यासविशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र । येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥ ऋग्यजुः सामाथर्वाख्याः वेदाश्चत्वार उद्धृताः, इतिहासपुराणञ्च पञ्चमो वेद उच्यते ॥ [illegible]

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. मि.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	चन्द्रराश्यन्तराः	सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रास्त घ. मि.
३३ ।५५	१	बु.	५७ ।१३	रा.	५ । ८	आ.	२९ ।३४	रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३३ ।५५	२	गु.	५९ ।४८	रा.	५ । ८	पु.	४३ ।५२	रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...
[illegible]	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्रीवत्स	१० ।१३	[illegible]	३३ ।५५ ।१८ ।५०	[illegible]	५ ।१५	६ ।४५	×	×

श्रीनृपसंवत् २०२५ शकः १८९० आषाढशुक्लपक्षः (जून ता० २६ … ३० जुलाई ता० १ … १० सन् १९६८) सौम्यायनं, याम्यगोलः, ग्रीष्मर्तुः । [illegible]

इष्टिः । गांगेरे पुनर्वसौ नक्षत्रव्याप्याप्तिर्मदिग्गमनगैरज्यसेवनादि मु० । आ. ४ च. शुक्रः ३१।२ ।
रथयात्रा (श्रीजगन्नाथ …) । चन्द्रदर्शनम्, मु० ४५ फलं समर्घकरम् । अथ पुंसवनसीमन्तोन्नयनसूतिकास्नान … [illegible]
रविडलनी ४ । अथ सूतिकास्वीयसेवनजातकर्मनामकरणान्नप्राशन … [illegible]
म. ३१।२ (रा. १७।४१) उ. । बुधोदयः प्राच्यान् ४५।२३ । वैनायकी ४ । तृतीयायां यायिजययोगः । मृग. २ च. बुधः २२। … [illegible]
म. ३।११ (प्रा. ५।४२) या. । अथ पञ्चमासाष्टमासारिष्टनिर्णय मु० ।
अथ शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽत्रध्येयः । पुन. २ च. शुक्रः ५८।४ ।
भ. ५४।१७ (रा. २।५६) उ. । व्यतिपातात्परं विष्टेः पूर्वं पुंसवनसीमन्तोन्नयनसूतिकास्नानसुभगेतरप्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रादिधारणं मु० । [illegible]
भ. २३।८ (दि. १४।५) या. । विष्टेः परं तिथिक्षयान्न विविधशुभकर्मादिकृते शोभनकालः ।
रात्रिशेषे स्वात्यां प्रसूतिकास्नानसीमन्तोन्नयनवस्त्रभूषणाद्युपादि मु० । मृग. ३ च. मिथुने च बुधः २६।५३ । पुन. ३ च. शुक्रः [illegible]
अथ स्वात्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशनीयसेवनवस्त्रभूषाधारणादि मु० । पुनर्वसुभेऽर्कः ४२।५० (रा. २२।२२) स्त्री. [illegible]
म. ६।१७ (दि. ७।४५) उ. ३३।१६ (रा. १८।३२) या. । हरिशयनी ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । अथ मंगे मासान्तरशुभकर्माणि [illegible]
प्रदोषः । वासुदेव द्वादशी १२ । चातुर्मास्य व्रतारम्भः । विष्णुस्वप्नमहोत्सवः । अथ त्रयोदश्यां मेघे प्रसूतिकास्नानसीमन्तोन्नयन … [illegible]
अथ त्रयोदश्यामनुराधास्नानभूम्युपवेशनाधिकारशुभकर्मारम्भादि मु० । मृग. ४ च. बुधः ०।३३ ।
भ. १४।१८ (दि. ११।१४) उ. ४२।१२ (रा. २२।८) या. । व्रताय पूर्णिमा २५ पुष्यतमा । शुभकर्मणि योगाविचारम् । पुन. २ [illegible]
स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ । गुरुपूर्णिमा । (गुरुव्यासयोः पूजा) । मन्वादिः । कोकिलाव्रतम् । शिवशयनोत्सवः । कर्णग्रहणनक्षत्र तीर्थस्नानं । [illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सि. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
१ बु.	० ।५३	२ ।३१	४ ।२७	६ ।४०	८ ।५८	११ ।१२	१३ ।२५	१५ ।४१	१७ ।५८	२० ।४	२१ ।५०	२३ ।२[illegible]
२ गु.	० ।४९	२ ।२७	४ ।२३	६ ।३६	८ ।५४	११ ।८	१३ ।२१	१५ ।३७	१७ ।५४	२० ।०	२१ ।४६	२३ ।२[illegible]
३ शु.	० ।४५	२ ।२३	४ ।१९	६ ।३२	८ ।५०	११ ।४	१३ ।१७	१५ ।३३	१७ ।५०	१९ ।५६	२१ ।४२	२३ ।१[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५ बु.	२३ ।५६	१ ।३४	३ ।३०	५ ।४३	८ ।१	१० ।१५	१२ ।२८	१४ ।४४	१७ ।१	[illegible]	[illegible]	[illegible]

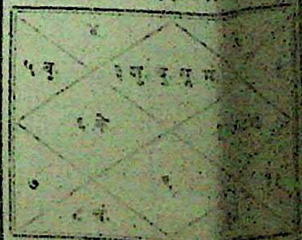
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४८ ०	२ ।११ ।३३ ।१०	२ ।२१ ।४६ ।४८	२ । ९ ।३४ ।३०	१ ।२५ ।५९ ।४३	४ ।११ ।२९ ।२५	२ ।१७ । ० ।४५	११ ।२१ ।३७ ।१६	११ ।२६ ।५७ ।५०	५ ।२६ ।१७ ।५०
४७ ।५९	२ ।१२ ।३० । ०	३ । ४ ।११ ।५८	२ ।१० ।१४ ।५१	१ ।२६ ।१० । ३	४ ।११ ।४८ ।५१	२ ।१८ ।१४ । ९	११ ।२१ ।३८ ।३३	११ ।२६ ।५४ ।४०	५ ।२६ ।१४ ।४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ३ शनौ



ति. ११ शनौ



[illegible] … त्रिविधतर्पणावसा विन्दुः सूर्यो बलितो भृगुनन्दनः । जलाभ्यदृक्यस्य सततं वृष्टिर्भवति मन्द्रोष्णे … [illegible] ॥१॥ … [illegible] ॥२॥ प्रावृषीन्दुःसिता- … [illegible] सर्वार्वृष्टिविनाशनम् ॥४॥ पुरतः … [illegible] प्रायो वृष्टिः प्रजायते ॥६॥ … [illegible] ॥८॥

सप्तराशिगः शुभवीक्षितः । मन्दात् त्रिकोणसप्तमस्थो यदि वा वृष्टिकृद्भवेत् । [illegible] पृष्ठतो भानोः शुभा यदि समीपगाः । तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत् … [illegible] उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ॥ … [illegible] अर्वाग्या प्रयोगादे मासि … [illegible] नूतनेन विधिना … विष्णुपूजनमहं करिष्ये इति … [illegible] नियमं निर्विघ्नं कुरुष्वाच्युत । … [illegible] एकादश्यामुपोषितः । चातुर्मास्यव्रतं कुर्यात् … [illegible] कर्तव्यं … [illegible] ॥ … [illegible] भारतं श्रवणाद्यं भारतं परिकीर्तितम् ।

ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ । यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न कुत्रचित् । जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो … [illegible] । ब्राह्मणेन च राज्ञा च … [illegible] ॥ … [illegible] भारतं भवनं यस्य तस्य हस्तगतो जयः । य इदं शृणुयाद् भक्त्या महाभारतमादितः । ब्रह्महा गुरुतल्पो वा सुरापः स्तेयकारकः ॥ अपि चाण्डालयोनिस्थः सोऽपि … [illegible] इतिहासमिदं पुण्यं महार्थं वेदसम्मितम् । व्यासोक्तं श्रूयते येन कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः । स नरः सर्वकामांश्च कीर्तिं प्राप्येह शौनक ॥ … [illegible]

ति. १ बुधे—शुक्रचन्द्रयुतिः दे. घं. ७।१४ शुक्रदक्षिणे ।
ति. ४ सूर्ये—गुरुचन्द्रयुतिः दे. घं. १९।१३ गुरुदक्षिणे ।

१८ बृहदारण्यके-तदेतदेवैषा दैवीवागनुवदति स्तनयित्नुर्दद्दइति दाम्यत दत्त दयध्वमिति । तस्मादेतत् त्रयं शिक्षेद् दमं दानं दयामिति ॥ बृहस्पतिः-तपो धर्मः कृतयुगे ज्ञानं त्रेतायुगे स्मृतम् । द्वापरे चाध्वराःप्रोक्ताःकलौ दानं दया दमः ॥ भारते-एष धर्मो महायोगो दानं भूतदया तथा ॥ ब्रह्मचर्यं तथा सत्यमनुक्रोशो धृतिः क्षमा । सनातनस्य धर्मस्य मूलमेतत्सनातनम् ॥

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घ. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा.	घं.	फ	रा.	चन्द्रराशिसचारः रा. घ. प. घ. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. उ.	चन्द्रोदय घं. मि.

आशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० श्रावणकृष्णपक्षः (जुलाई ता० ११···२५ सन् १९६८) सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मर्तुः, कर्काकीत् याम्यायनं वर्षर्तुश्च ।

इष्टिः । अशून्यशयनव्रतम् । श्रावणे वर्जयेच्छाकम् (मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डविरूढकाः, त्वक्पुष्पकवकञ्चेति शाकं दशविधंस्मृतम्) । नैमित्तिकमासिकव्रतारम्भः । अद्य द्वितीयायां पुनर्वसौ ऋतुमतीस्नानपुंसवनसीमन्तो-*

भ. २८।४५ (रा. १७।४६) उ. ५७।९ (रा. ४।७) या. । पञ्चकारम्भः ४४।३९ (रा. २३।८) । शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽवधेयः । पुन. ३ च. रविः ४४।४७ । पुनर्वसुमें कुजः २१।२५ । पु. २ च. शुक्रः ४३।६ ।

* जातकर्मादि शस्त्रास्त्रवासकर्मनामकरणान्नप्राशनपूर्वदिग्गमनादि मु. ।

गणेश ४ व्रतम् । दुर्गायात्रा । सतिहीनवलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. । आ. २ च. बुधः २२।३७ ।

शुक्रोदयः प्रतीच्याम् ३०।३० । अद्य शतभिषजि सस्यरोपणासवारिष्टनिर्माणादि मु. । पूर्वायां विक्रयः शुभः ।

भ. ५४।२२ (रा. ३।२) उ. । सोमप्रदोषः । पूर्वायां विक्रयः शुभः । आ. ३ च. बुधः ४३।४४ । पु. ३ च. शुक्रः ३५।५९ ।

भ. २५।११ (दि. १५।२२) या. । अद्य विष्टेःपरं शुभकर्मादौ संक्रान्तिदोषोऽवधेयः । पुन. ४ च. सं. कर्के चार्कः १५।३७ (दि. ११।३२) ... । ...

पञ्चकनिवृत्तिः २।२६ (दि. १३।५२) । यजुःश्रावणारम्भः । अत्यावश्यके शुक्रबालत्वनिवृत्तिः ३०।३० । अद्य विपणिव्यापारनववस्त्र... मु. । पुन. ... । आ. ४ च. बुधः ...

सतिहीनवलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. । पु. ४ च. शुक्रः १९।४२ ।

भ. ३४।५० (रा. १९।१५) उ. । अद्य दशम्यां भरणीयोगे नवशय्यासनादेर्भोगः शुभावहः । पुष्ये चार्कः ४६।१७ (रा. २३।४९) स्त्री. पु. ... ।

भ. ७।७ (प्रा. ८।१०) या. । अद्य रोहिण्यां दक्षिणदिग्गमनेदिग्द्वारानुगलग्नमनुसन्धेयम् । पुनर्वसुमे बुधः ४।३६ । रोहिण्यां गृहप्रवेशे ... ।

कामदा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ✳ । अद्यैकादश्यां पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानशिशुताम्बूलभक्षणनुभगेतरनववस्त्रधारणपूर्वदिग्गमनादि मु. । ... शुक्रः ३।१० ।

सोमप्रदोषः । अद्य त्रयोदश्यां मृगे जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनशिशुताम्बूलभक्षणपश्चिमदिग्गमनविपणिव्यापारादि मु. । गृहप्रवेशो ... । पुन. ... । ... । सिंहे बुधश्चार्कः ४३।१८ ।

भ. २१।४५ (दि. १४।२) उ. ५३।३६ (रा. २।४७) या. । राष्ट्रीय श्रावणारम्भः । मासशिवरात्रिः । विष्टेःपूर्वं मघकर्मादिकं शोभनम् । ... ।

अद्य शुभकर्मणि रिक्ताविषुवयादिदोषोऽवधेयः । पुन. ३ च. बुधः ८।३ । पू. फा. २ च. गुरुः ३२।२ ।

स्नानदानश्राद्धादौदर्शः ३० । प्रतिपदि पुष्ये विविधशुभकर्मणां कृते समयोऽवधेयः ।

दैनिक लग्नसारिणी

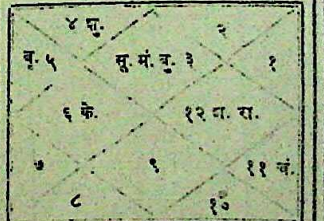
तिथय	म. प्र.		वृ. प्र.		मि. प्र.		क. प्र.		सिं. प्र.		क. प्र.		तु. प्र.		वृ. प्र.		ध. प्र.		म. प्र.		कु. प्र.		मी. प्र.	
१बु.	२३	५२	१	३०	३	२६	५	३९	७	५७	१०	११	१२	२४	१४	४०	१६	५७	१९	३	२०	४९	२२	२१
२गु.	२३	४८	१	२६	३	२२	५	३५	७	५३	१०	७	१२	२०	१४	३६	१६	५३	१८	५९	२०	४५	२२	१७
४श.	२३	४४	१	२२	३	१८	५	३१	७	४९	१०	३	१२	१६	१४	३२	१६	४९	१८	५५	२०	४१	२२	१३
५सू.	२३	४०	१	१८	३	१४	५	२७	७	४५	९	५९	१२	१२	१४	२८	१६	४५	१८	५१	२०	३७	२२	९
६चं.	२३	३६	१	१४	३	१०	५	२३	७	४१	९	५५	१२	८	१४	२४	१६	४१	१८	४७	२०	३३	२२	५
७मं.	२३	३१	१	९	३	५	५	१८	७	३६	९	५०	१२	३	१४	१९	१६	३६	१८	४२	२०	२८	२२	०
८बु.	२३	२७	१	५	३	१	५	१४	७	३२	९	४६	११	५९	१४	१५	१६	३२	१८	३८	२०	२४	२१	५६
९गु.	२३	२३	१	१	२	५७	५	१०	७	२८	९	४२	११	५५	१४	११	१६	२८	१८	३४	२०	२०	२१	५२
९शु.	२३	१९	०	५७	२	५३	५	६	७	२४	९	३८	११	५१	१४	७	१६	२४	१८	३०	२०	१६	२१	४८
१०श.	२३	१५	०	५३	२	४९	५	२	७	२०	९	३४	११	४७	१४	३	१६	२०	१८	२६	२०	१२	२१	४४
११सू.	२३	११	०	४९	२	४५	४	५८	७	१६	९	३०	११	४३	१३	५९	१६	१६	१८	२२	२०	८	२१	४०
१२चं.	२३	७	०	४५	२	४१	४	५४	७	१२	९	२६	११	३९	१३	५५	१६	१२	१८	१८	२०	४	२१	३६
१३मं.	२३	४	०	४२	२	३८	४	५१	७	९	९	२३	११	३६	१३	५२	१६	९	१८	१५	२०	१	२१	३३
१४बु.	२३	०	०	३८	२	३४	४	४७	७	५	९	१९	११	३२	१३	४८	१६	५	१८	११	१९	५७	२१	२९
३०बृ.	२२	५६	०	३४	२	३०	४	४३	७	१	९	१५	११	२८	१३	४४	१६	१	१८	७	१९	५३	२१	२५

ति. ८ बुधे-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. १५।२४ शनिर्दक्षिणे ।
ति. १४ बुधे-बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. ९।४० बुधोदक्षिणे ।
अद्यैव कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. २१।२२ कुजोदक्षिणे ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

म. मा.	स्प. सू.	स्प. च.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. ब.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.

ति. ४ शनौ



ति. १० शनौ



कथयिष्यामि येन श्रेयो ह्यवाप्स्यसि । पीत्वाऽमृतमिव प्राज्ञो ज्ञानतृप्तो-... निःश्रेयसे प्राहुर्वृद्धा निश्चयदर्शिनः । ब्राह्मणस्य विशेषेण दमो धर्मः सनातनः ॥ ... सुखं च प्रतिबुध्यते । सुखं पर्येति लोकांश्च मनश्चास्य प्रसीदति ॥ ... तथादान्तस्य भारत । यत्रैव निवसेद्दान्तस्तदरण्यं तदाश्रमः ॥ ... भारते-गङ्गायमुनयोर्मध्ये ... । ... मरणं विक्रय वापि मत्स्यैर्धान्यास्मह सह । ... नशंसतरस्ततः ॥ ... कः यान्ति शरणं तदा ॥ ... महाप्राया सुवर्णपरिपीडिताः ॥ ... नान्युद्धितान्-ब्रह्मणोऽथ... ॥ न कश्चिच्च... । ... विद्यापुल ॥ कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव । ... प्रवदन्ते धीर सर्वपापहरं विभुम् ॥ ...

... दाम सर्वक्रतुफलाधिकम् । ...

... निविष्टं गोकुलं यत्र ... ।

स पापा पातमाप्नुयात् ॥ अपहृत्याल्लमतानां सुखं यद्युपजायते । तस्य स्वर्गापवर्गा वा कला नार्हति षोडशीम् । ... कीर्तोऽसि भार्गवः । एतन्मूल्यमहं मन्ये तव धर्मभृतां वर ॥ इतिष्ठाम्येव राजेन्द्र सम्यक्कीर्तोऽस्मितेऽनघ । गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत ॥ ... विराजयति नं देशं पायं चाप्यपकर्षति । भागवते-ब्राह्मणः मम दयालो दीनानां धर्मपेक्षकः । ... ।

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशि सञ्चारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. उ.	चन्द्रास्त घं. मि.
३३।१२	१	सु.	२९।३२	दि.	१७।१०	पु.	५।२४	दि.	७।३१	सि.	३।४०	रा.	२०।२६	व.	२९।३२	१७।१०	बा	५९।३८	५	३ उत्पात	२६	२९	१०	१६	४		५।२२	६।२८	१९।२९	१९।४२
३३।१०	२	शु.	२९।४३	दि.	१७।१५	श्ले	७।४७	दि.	८।२९	व्य.	३५।१६	रा.	१९।२९	कौ	२९।४३	१७।१५	तै.	५९।११	५	२ मानस	२७		११	१७	५	सि. ७।४७ ८।२९	५।२२	६।२८	१९।१५	२०।१९
३३।७	३	सू.	२८।३८	दि.	१६।५०	म.	८।५५	दि.	८।५७	व.	३१।५२	दि.	१८।७	ग.	२८।३८	१६।५०	व.	५९।३१	४	२३ मुद्गर	२८		११	१८	६		५।२३	६।२८	१९।२	२०।५३
३३।५	४	चं.	२६।२३	दि.	१५।५६	पू.	८।५३	दि.	८।५६	प.	२७।३३	दि.	१६।२४	वि	२६।२३	१५।५६	व.	५४।४३	३	१६ केतु	२९		११	१९	७	क. २३।३६ १४।५०	५।२३	६।२७	१८।४८	२१।२५

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० श्रावणशुक्लपक्षः (जुलाई ता० २६…३१, अगस्त ता० १…८ सन [illegible] दक्षिणायनं, सौम्यगोलः, वर्षर्तुः।

इष्टिः। चन्द्रदर्शनम्, मु. १५ फल महर्घकरम्। पुष्ये सूतिकापथ्योपवदानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनवस्त्रभूषाधारणविविध[illegible] *१९।२८।

जमादिल अव्वल ५। अद्य व्यतिपातात्परमासवारिष्टनिर्माणादि मु.। पुन. ४च. कर्के च कुजः २९।३९। रे. २च. राहुः हस्त [illegible]

भ. ५३।११ (रा. ४।२३) उ.। मधुश्रवा ३ (मिथिलायां प्रसिद्धा)। ठकुराइनजयन्ती (गुर्जरेषु प्रसिद्धाः)। मुक्ताव्रतम्। स्वर्णगौरी[illegible]

भ. २६।२३ (दि. १५।५६) या। वैनायकी ४। सोमप्रदोषः। बुधास्तं प्राच्याम् २५।४८। अद्य पञ्चम्यां स्तनपानलतापादपारोपण[illegible]

नागपञ्चमी ५। (मध्याह्ने नागपूजा)। नागकूपयात्रा। वासुकिदर्शनम्। तक्षकपूजनम्। अद्य पञ्चम्यां पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिका[illegible]

अद्य सप्तम्यां विपणिव्यापारनववस्त्रभूषाधारणादि कृते शोभनकालः। हस्ते गृहप्रवेशे लग्नं चिन्त्यम्। चित्रायां भूशयनदोषः। पु. [illegible]

भ. १३।१९ (दि. १०।४८) उ. ४०।४२ (रा. २१।४१) या.। विष्टेः पूर्वं स्वात्यामृतुमतीस्नानसूतिकापथ्योपधसेवनप्रसूतिकास्नान[illegible]

श्लेषायामर्कः ४०।१ (रा. ०।१३) स्त्री नपुं. चं. मू. योगः महिषवाहनं चण्डानाडी तदधिपः शनिस्तेनग्रहसंस्थया ववचित्सुवृष्टिः [illegible]

तिथिक्षयदोषसत्त्वेऽप्यावश्यके मैत्रे पूर्वाभ्विहायान्यदिग्गमने दिग्द्वारानुगं कालमनुसन्धेयम्। म. २च. शुक्रः ४०।५८।

भ. २२।४३ (दि. १४।३१) उ. ४९।२८ (रा. १।१७) या.। पुत्रदा ११ एकादशीव्रतं प्रायस्सर्वेषाम्। विष्टेः पूर्वं [illegible]

पुत्रदा ११ एकादशीव्रतं केषाञ्चिद्वैष्णवानाम्। सोमप्रदोषः। दधित्याग व्रतारम्भः। शाकदानम्। वैधृतेः परं मूले भैषज्यसेवन[illegible]

भौमप्रदोषः (उपाकरणाय चास्य व्रताचरणम्)। पूर्वामुग्रक्रूरकर्माचरणं हितावहम्। श्ले. २च. रविः १६।३६। पु. २च. कुजः [illegible]

भ. ३३।० (रा. १८।४०) उ.। शुभकर्मणि रिक्ताविघ्नदोषोऽन्वेषेयः।

भ. ०।५३ (प्रा. ५।४९) या.। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। ऋग्वेदिनां यजुर्वेदिनाञ्चोपाकर्म। श्रावणी। भद्रोत्तरं रक्षा[illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

ति. ३ सूर्य

५ के. चं.		३
६ के.	४ सू. बु. शु. गु.	२
७		१
८	१०	१२ रा. श.
९		११

ति. ११ सूर्य

५		
६ के.	४ सू. शु.	
[illegible]		

[illegible]

वि. १ शुक्रे-गुरुचन्द्रयुतिः दै. घं. १३।३५. शुक्रोदक्षिणे।

वि. ३ सर्वा-गुरुचन्द्रयुतिः दै. घं. १८।११ गुरुर्दक्षिणे।

[illegible] विनाशनम्। ध्रुवं यां नाजयदर्म स शोच्यो मूढचेतनः॥ यदि प्राण्युपकाराय देहोऽयं नोपयुज्यते। ततः [illegible] प्रत्यहं क्रियते वृथा॥ [illegible] गतिम्॥ बध्यमानं तु यः शक्तः शरण्यं समुपेक्षते। स याति नरकं घोरमिति प्राहुर्मनीषिणः॥ [illegible] जगद्दुःखमोक्षार्थं बद्धः करुणया नृपः॥ अकुल्वेप्सी विघिष्टेपु हीनानामनवमान्यच। [illegible]

 भागवते—अवताराह्यसंख्येया हरेः सत्वनिधेर्द्विजाः । यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः ॥ ऋषयो मनवो देवा मनुपुत्रा महौजसः । कला: सर्वे हरेरेव सप्रजापतयस्तथा ॥ एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् । निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने ॥ देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः । आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	का.	ग्रं.	क.	रा.	चन्द्रराशि सञ्चार रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रां. उ.	चन्द्रोदय घं. मि.
[illegible]																														

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० भाद्रपदकृष्णपक्षः (अगस्त ता० ९ ··· २३ सन् १९६८) याम्यायनं, सौम्यगोलः, शरदृतुः ।

पञ्चकारम्भः ३।२२ (प्रा. ६।५४) । इष्टिः । रविभाद्रपदे त्यजेत् । अशून्यशयनव्रतम् । अद्य ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशन… [illegible]
भ. ५२।४० (रा.३।३४) उ. । अद्यासवारिष्टनिर्माणसस्यरोपणादि मु. । पूर्वायां विक्रयः शुभः । [illegible]
भ.२२।१० (दि.१४।२२) या. । श्री गणेश४व्रतम् । (इयमेवसंकष्टचतुर्थी) : ☽ । कज्जली ३ । चन्द्रार्घ्यदानम् । अद्य शुभकर्मनिमित्तादि… [illegible]
बहुला ४ व्रतम् । अद्य पञ्चम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशनशिशुताम्बूलभक्षणविपणिव्यापारादि मु. । पञ्चम्यामेव यायिजयप्रदयोगः [illegible]
पञ्चकनिवृत्तिः ३६।२५ (रा.२१।२२) अद्य पञ्चम्यां पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नाननूतनवस्त्रप्रवालरदशङ्खसुवर्णरक्तवस्त्रादिधारणं मु. [illegible]
भ. २६।५८ (दि.१६।१९) उ. ५८।५५ (प्रा.५।१६) या. । हलषष्ठी ६ व्रतम् (इयमेव वाराणस्यां ललहीछठ ६ नाम्नाप्रसिद्धा) । [illegible]
श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं स्मार्तानाम् । भारतीय स्वतन्त्रतादिवस । अद्य नवशय्यासनादेर्भोगः शुभः । म. ३ च. बुधः २२।४२ । [illegible]
श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतं वैष्णवानाम् । मघायांसिंहे चार्कः ४३।३१ (रा. २२।५८) मु. ३० फलं समम् । वाहनादिकं संक्रमण… [illegible]
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतं विशुद्धनंगासीनां केषाञ्चिद्वैष्णवानाम् । बङ्गभाद्रपदारम्भः । नवम्यां यायिजयप्रदयोगः । म. ४ च. बुधः २१। [illegible]
म. १३।५ (दि.१०।४९) उ. ४५।३६ (रा.२३।४९) या. । अद्य विष्टेः पूर्वं पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानशिशुताम्बूलभक्षण… [illegible]
जया ११ एकादशीव्रतं प्रायः सर्वेषाम् । अद्य मृगे जातकर्मनामकरणान्नप्राशनदोलारोहणभूम्युपवेशनखट्वाधिरोहणशिशुताम्बूलभक्षणादि मु. [illegible]
जया ११ एकादशी व्रतं केषाञ्चिद्वैष्णवानाम् । रात्रिशेषे पुनर्वसौ नूतनेतररक्तवस्त्रधारणदक्षिणदिग्गमनादि मु. । म. २ च. रविः [illegible]
भ. ५६।४२ (रा.१।१८) उ. । प्रदोषः । अत्यावश्यके गुरोर्वार्धक्यारम्भः ५१।२३ । बुधोदयः प्रतीच्याम् २५।२५ । अद्य [illegible]
भ. २७।३० (दि.१६।३७) या. । मासशिवरात्रिः । अगस्त्योदयः १६।४० । श्लेषायां कुजः ११।० । पू. फा. ३ च. बुधः ४५।४० । [illegible]
स्नानदानश्राद्धामावस्या ३० । कुशोत्पाटिनी ('ॐ हूं फट्' इति मन्त्रेण कुशोत्पाटनम्) । घर्मेश्वरयात्रा । पञ्चपुष्करणीस्नानम् [illegible]
*श्ले. ३ च. रविः ४५।५४ । श्ले. ४ च. कुजः ५५।५३ । पू. फा. ३ च. गुरुः ४३।१५ । म. ४ च. रविः ।

[illegible] नम ॥ ज्योत्स्नानां पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः । नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास नमोस्तु ते ॥ नमो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटेः । कलाभिर्वर्द्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे ॥ सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वलाः । तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाः ॥ इति ॥ सिंहकर्के गोप्रसवे माघे वृषे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा । सिंहे नराः प्रसूयन्ते स्वामिनः कष्टदायिकाः ॥

दैनिक लग्नसारिणी

दिवस	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.	मे. प्र.	वृ. प्र.
[illegible]												

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मा.	स्प.	सू.	स्प.	चं.	स्प.	मं.	स्प.	बु.	स्प.	गु.	स्प.	शु.	स्प.	श.	स्प.	रा.	स्प.	के.
[illegible]																		

ति. ४ चन्द्रे

बु. ५ बृ. शु.	३	
६ के.	४ म. सू.	२
७	१	
८	१०	१२ रा.
९	११	

ति. ११ चन्द्रे

के. ६		
७		
८		
९	१०	११

[illegible] अष्टम्यां व्रतम् । श्रोतव्यो बहुलानामा स्त्रीभिश्च [illegible] महिमा परः । अलायरणं धर्मः यत्र [illegible] विशेषतया स्मर्तव्यौ । अलावरक्षा—यः [illegible] ॥ श्रावण बहुल पक्षे कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । [illegible] एव धर्मः सनातनः ॥ [illegible] । तत्र, तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते वा व्रती [illegible] प्रातरेव हि पारणमित्यादिना च ७ गुरौ स्मार्त [illegible]

गृहाश्रमिणां जन्माष्टमी ॥ अन्यदपि—अष्टमी रोहिणीयुक्ता निश्यर्द्धे [illegible] हरिः स्वयम् । पुराणान्तरेपि—रोहिणी च यदा कृष्णे पक्षेऽष्टम्यां द्विजोत्तम । जयन्ती नाम सा प्रोक्ता सर्वपापहरा तिथिः ॥ [illegible] अष्टमी । जयन्ती नाम सा प्रोक्ता सा ह्युपोष्या महाफला ॥ तस्यां श्रीमद्भगवतः कृष्णस्य पावनं प्रोत्साहनं पथ्यं धर्मवर्धनं [illegible] श्रीमद्भगवद्वचनम्—यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ तन्माहात्म्यं भीष्मपर्वणि ६६ अध्याये भीष्मो दुर्योधनं प्रति—यस्मात् ब्रवीमि ते राजन्नेषोऽसौ शाश्वतोऽव्ययः । सर्वलोकमयो नित्यः शास्ता धाता धरो [illegible] लोकानामस्य वशीत्रयश्वस्वयम्भूः प्रभुः । योद्धा जयश्च जेता च सर्वप्रकृतिरीश्वरः ॥३४॥ राजन् सत्वमयो ह्येष तमोरजोविवर्जितः । यतः कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः ॥३५॥ तस्य माहात्म्ययोगेन योगेनात्मभवेन च । धृताः पाण्डुसुता राजन् जयश्चैषां भविष्यति ॥३६॥ श्रेयोयुक्तां सदा बुद्धिं पाण्डवानां दधाति च । बलं चैव रणे नित्यं [illegible] रक्षति ॥३७॥ स एव शाश्वतो देवः सर्वभूतमयः शिवः । वासुदेव इति ख्यातो यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥३८॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्च कृतलक्षणैः । सेव्यतेऽभ्यर्च्यते चैव नित्ययुक्तैः स्वकर्मभिः ॥३९॥ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः । भगवद्वचनम्—सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् । साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग् व्यवसितो हि सः ॥ क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति । कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ सत्यव्रतो [illegible] युधिष्ठिरो । उभाभ्यां पूजितः कृष्णः साक्षाद्विष्णुरिति श्रुतम् ॥ माहात्म्यं वासुदेवस्य हरेरद्भुतकर्मणः । तमेव शरणं गच्छ यदि श्रेयोऽभिवाञ्छसि ॥ प्रार्थना—मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः । वाचोऽभिधायिनीर्नाम्नां कायस्तत्प्रह्वणादिषु ॥ कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्र क्वापीश्वरेच्छया । मङ्गलाचरितैर्दानैः [illegible] ॥ कः पण्डितस्त्वदपरं शरणं समीयाद्भक्तप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात् । सर्वान् ददाति सुहृदो भजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौ न यस्य ॥ त्वयोदितोऽयं जगतो हिताय यदा यदा वेदपथः पुराणः । बाध्येत पाखण्डपथैरसद्भिस्तदा भवान् सत्वगुणं बिभर्ति ॥ ☽ संकष्ट ४ ति. ३ सूर्ये चन्द्रार्घ्यं [illegible] मन्त्रः—क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव । गृहाणार्घ्यं शशांकेदं रोहिणीसहितो [illegible]

ति. ५ बुधे-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. ०।१६ चन्द्रोदक्षिणे ।
ति. १४ गुरौ-कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. १६।२८ कुजोदक्षिणे ।

 भागवत—अवताराह्यसंख्येया हरेः सत्वनिधेर्द्विजाः। यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः॥ ऋषयो मनवो देवा मनुपुत्रा महौजसः। कला: सर्वे हरेरेव सप्रजापतयस्तथा॥ एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्। निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने॥ देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः। आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		नं. मि.	न.	घ. प.		नं. मि.	यो.	घ. प.		नं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	का.	नं.	क.	रा.	चन्द्रराशि संचार रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. का. उ.	चंद्रोदय घं. मि.
[illegible]																															

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० भाद्रपदकृष्णपक्षः (अगस्त ता० ९—२३ सन् १९६८) याम्यायनं, सौम्यगोलः, वर्षर्तुः।

पञ्चकारम्भः ३।३२ (रा. ६।५८)। इष्टिः। दधिभाद्रपदे त्यजेत्। अशून्यशयनव्रतम्। अथ ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्न[illegible] बुधः ४४।४१। पूर्वा[illegible]

भ. ५२।४० (रा.१३।३४) उ.। वृक्षारोपणारिष्टनिर्माणसस्यरोपणादि मु.। पूर्वायां विक्रयः शुभः।

भ. २३।१० (दि.१४।२९) या.। श्री गणेश४व्रतम्। (इयमेवसंकष्टचतुर्थी): [illegible]। कज्जली ३। चन्द्रार्घ्यदानम्। अथ शुभकर्मणि[illegible]

बहुला ४ व्रतम्। अथ पञ्चम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशनशिशुताम्बूलभक्षणविपणिव्यापारादि मु.। पञ्चम्यामेव याम्ययवः[illegible]

पञ्चकनिवृत्तिः ३।३५ (रा.२१।२२) अथ पञ्चम्यां पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानानुभगेतरप्रवालरदशङ्खसुवर्णरक्तवस्त्रादिधारण म.[illegible]

भ. २६।५८ (दि.१६।१९) उ. ५८।५५ (प्रा.५।१६) या.। हलषष्ठी ६ व्रतम् (इयमेव वाराणस्यां ललहीछठ ६ नाम्ना प्रसिद्धा:)। [illegible]

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं स्मार्तानाम्। भारतीय स्वतन्त्रतादिवस। अथ नवशय्यासनादिर्योगः शुभः। म. ३ च. बुधः २२।४२। [illegible]

श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतं वैष्णवानाम्। मघायांसिंहे चार्कः ४३।३१ (रा. २२।५८) मु. ३० फलं समम्। वाहनादिकं संक्रमण[illegible]

श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतं विशुद्धभोपासीनां केषाञ्चिद्वैष्णवानाम्। वज्रभाद्रपदारम्भः। नवम्यां याथिजयप्रयोगः। म. ४ च. बुधः २२।[illegible]

भ. १३।५ (दि.१०।४९) उ. ४५।३६ (रा.२३।४९) या.। अथ विष्टेः पूर्व पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानशिशुताम्बूलभक्षण[illegible]

जया ११ एकादशीव्रतं प्रायः सर्वेषाम्। अथ मृगे जातकर्मनामकरणान्नप्राशनदोलारोहणभूम्युपवेशनवस्त्राधिरोहणशिशुताम्बूलभक्षणादि[illegible]

जया ११ एकादशीव्रतं केषाञ्चिद्वैष्णवानाम्। रात्रिशेषे पुनर्वसौ मुभगेतररक्तवस्त्रधारणदक्षिणदिग्गमनादि मु.। म. २ च. रविः [illegible]

भ. ५६।४२ (रा.३।२८) उ.। प्रदोषः। अत्यावश्यके गुरोर्वाक्यारम्भः ५१।२३। बुधोदयः प्रतीच्याम् २५।२५। अथ [illegible]

भ. २७।३० (दि.१६।३७) या.। मासशिवरात्रिः। अगस्त्योदयः १६।४०। श्लेषायां कुजः ११।०। पू. फा. ३ च. बुधः ४।१८०। [illegible]

स्नानदानश्राद्धदर्शः ३०। कुशोत्पाटिनी ('ॐ हूं फट्' इति मन्त्रेण कुशोत्पाटनम्)। धर्मेश्वरयात्रा। पञ्चपुष्करस्नानम्। [illegible]

*श्ले. ३ च. रविः ४५।५४। श्ले. ४ च. कुजः ५५।५३। पू. फा. ३ च. गुरुः ४३।२५। म. [illegible]

मेष॥ ज्योतिषां पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकान्त सुधाधार नमोऽस्तु ते॥ नमो मण्डलदीपाय त्रिरोरत्नाय धूर्जटेः। कलाभिर्वर्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे॥ सिंहकर्कट[illegible] सूर्यो नभो दर्शे[illegible] सायं स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाः॥ इति॥ [illegible] गोवत्सं सायं पूजयेत्[illegible] श्रावणे बहुले[illegible] स्वामिनः[illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	र. सि.	घ. प.	प्र. मि.	प्र. क.	प्र. सिं.	प्र. क.	प्र. तु.	प्र. वृ.	प्र. ध.	प्र. म.	प्र. कुं.	प्र. मी.	प्र.
१बु.	[illegible]												
२गु.	[illegible]												
३शु.	[illegible]												
४श.	[illegible]												
५र.	[illegible]												
६सो.	[illegible]												
७मं.	[illegible]												
८बु.	[illegible]												
९गु.	[illegible]												
१०शु.	[illegible]												
११श.	[illegible]												
१२र.	[illegible]												
१३सो.	[illegible]												
१४मं.	[illegible]												
३०बु.	[illegible]												

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

स्.	सू.	स्.	चं.	स्.	मं.	स्.	बु.	स्.	गु.	स्.	शु.	स्.	श.	स्.	रा.	स्.	के.
[illegible]																	

ति. ५ कुजे-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. ०।१६ चन्द्रोदक्षिणे।

ति. १४ गुरौ-कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. १६।२८ कुजोदक्षिणे।

ति. ४ चन्द्रे

ति. ११ चन्द्रे

गृहाश्रमिणां जन्माष्टमी॥ अन्यदपि—अष्टमी रोहिणीयुक्ता निशार्धे यदि दृश्यते। [illegible] द्विजोत्तम। जयन्ती नाम सा प्रोक्ता सर्वपापहरा तिथिः॥ [illegible] जयन्ती नाम सा प्रोक्ता सा ह्युपोष्या महाफला॥ तस्यां श्रीमद्भगवतः कृष्णस्य पावनं प्रोत्साहनं यन्त्रं धर्मतन्त्रं मर्यादानाशनं [illegible] यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ तत्र महाभारते भीष्मपर्वणि ६६ अध्याये भीष्मो दुर्योधनं प्रति—तस्मात् ब्रवीमि ते राजन्नेषोऽसौ शाश्वतोऽव्ययः। सर्वलोकमयो नित्यः शास्ता धाता धरो ध्रुवः [illegible] प्रभुः। योद्धा जयश्च जेता च सर्वप्रकृतिरीश्वरः॥३४॥ राजन् सत्त्वमयो ह्येष तमोरजोविवर्जितः। यतः कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः॥३५॥ तस्य माहात्म्ययोगेन योगेनात्मभवेन च। धृताः पाण्डुसुता राजन् जयश्चैषां भविष्यति॥३६॥ श्रेयोयुक्तां सदा बुद्धिं पाण्डवानां ददाति यः। [illegible]॥३७॥ स एव शाश्वतो देवः सर्वभूतमयः शिवः। वासुदेव इति ख्यातो यन्मां त्वं परिपृच्छसि॥३८॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्च कृतलक्षणैः। [illegible]॥३९॥ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः। भगवद्वचनम्—सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग् व्यवसितो हि सः॥ क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥ [illegible] उभाभ्यां पूजितः कृष्णः साक्षाद्विष्णुरिति श्रुतम्॥ माहात्म्यं वासुदेवस्य [illegible] हरेरद्भुतकर्मणः। तमेव शरणं गच्छ यदि श्रेयोऽभिवाञ्छसि॥ प्रार्थना—मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः। [illegible] कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्र क्वापीश्वरेच्छया। मङ्गलाचरितैर्दानैर्रतिर्नः कृष्ण ईश्वरे॥ कः पण्डितस्त्वदपरं शरणं समीयाद्भक्तप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात्। सर्वान् ददाति सुहृदो भजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौ न यस्य॥ त्वयोदितोऽयं जगतो हिताय यदा यदा वेदपथः पुराणः। [illegible] पाखण्डपथैरसद्भिस्तदा भवान् सत्त्वगुणं बिभर्ति॥ [illegible] संकष्ट ४ ति. ३ चूर्णे चन्द्रार्घ्यं [illegible] मन्त्रः—क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशाङ्केदं रोहिण्या सहितो मम॥

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणामसंयमः । तज्जयः सम्पदां मार्गो येनेष्टं तेन गम्यताम् । वेदास्त्यागाश्च यज्ञाश्चनियमाश्च तपांसि च । न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्तिकर्हिचित् ॥ रथशरीरंपुरुषस्यराजन्नात्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः । तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैर्दान्तैःसुखंयाति रथीव धीरः ॥ [illegible]

दि.मा. घ.प.	ति.	वा.	घ.प.	दि./रा.	घं.मि.	न.	घ.प.	दि./रा.	घं.मि.	यो.	घ.प.	दि./रा.	घं.मि.	क.	घ.प.	घं.मि.	क.	घ.प.	घं.मि.	योगः	अं.	फा.	चं.	फ.	रा.	चन्द्रराशि संचारः रा.	घ.प.	घं.मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र.क्रां. उ.	चन्द्रास्त घं.मि.
३१ ४७	१	श.	५७ ३९	रा.	४ ४२	म.	२८ ६	दि.	१६ ५३	शि.	५२ ४५	रा.	२ ४५	कि.	२८ ७	१६ ५३	व.	५७ ३९	४ ४२	पद्म	२४	२९	८	१६	२				५ ३९	६ २१	११ १०	१८ ५३
३१ ४४	२	सू.	५५ ३२	रा.	३ ५२	पू.	२८ १८	दि.	१६ ५८	सि.	४८ ३४	रा.	१ ५	बा.	२६ ३५	१६ १७	कौ.	५५ ३२	३ ५२	छत्र	२५	३०	९	१७	३	क.	४३ ४	२२ ५३	५ ३९	६ २१	१० ४९	१९ २६
३१ ४०	३	चं.	५२ २०	रा.	२ ३६	उ.	२७ २२	दि.	१६ ३७	सा.	४३ २९	रा.	२३ ४	तै.	२३ ५६	१५ १४	ग.	५२ २०	२ ३६	श्रीवत्स	२६	१	१०	१८	४				५ ४०	६ २०	१० २८	१९ ५८
३१ ३७	४	मं.	४८ १३	रा.	० ५८	ह.	२५ २७	दि.	१५ ५२	शु.	३७ ३८	रा.	२० ४४	व.	२० १७	१३ ४७	वि.	४८ १३	० ५८	सौम्य	२७	२	११	१९	५	तु.	५४ ५	३ १२	५ ४१	६ १९	१० ८	२० ३२
३१ ३३	५	बु.	४३ २०	रा.	२३ १	चि.	२२ ४२	दि.	१४ ४६	शु.	३१ ६	सा.	१८ ८	ब.	१५ ४६	१२ ०	बा.	४३ २०	२३ १	कालद.	२८	३	१२	२०	६				५ ४१	६ १९	९ ४६	२१ ९
३१ ३०	६	बृ.	३७ ५०	रा.	२० ५०	स्वा.	१९ १६	दि.	१३ २४	ब्र.	२४ २	दि.	१५ १९	कौ.	१० ३५	९ ५६	तै.	३७ ५०	२० ५०	सुस्थिर	२९	४	१३	२१	७				५ ४२	६ १८	९ २५	२१ ५०
३१ २६	७	शु.	३१ ५५	सा.	१८ २९	वि.	१५ १७	दि.	११ ४९	ऐं.	१६ ३०	दि.	१२ १९	ग.	४ ५३	७ ४०	व.	३१ ५५ / ५८ ५०	१८ २९ / [illegible]	मातङ्ग	३०	५	१४	२२	८	वृ.	१ १६	६ १३	५ ४३	६ १७	९ ४	२२ ४७
३१ २३	८	श.	२५ ४५	दि.	१६ १	अ.	११ १०	दि.	१० ११	वै.	८ ५१	दि.	९ १६	व.	२५ ४५	१६ १	बा.	५२ ३८	२ ४७	अमृत	३१	६	१५	२३	९				५ ४३	६ १६	८ ४२	२३ ३०
३१ १९	९	सू.	१९ ३१	दि.	१३ ३३	ज्ये.	६ ५९	दि.	८ ३२	वि.	[illegible]	प्रा.	[illegible]	कौ.	१९ ३१	१३ ३३	तै.	४६ २९	० २४	पद्म	१	७	१६	२४	१०	ध.	६ ५९	८ ३२	५ ४४	६ १६	८ २१	० ३१
३१ १६	१०	चं.	१३ ४३	दि.	११ १६	मू.	[illegible]	प्रा.	[illegible]	आ.	४६ ९	रा.	० १३	ग.	१३ ४७	११ १९	व.	४१ ३	२२ १०	लम्ब	२	८	१७	२५	११				५ ४५	६ १५	७ ५९	१ ३७
३१ १२	११	मं.	८ १९	दि.	९ ५	उ.	५६ ११	रा.	४ १४	सौ.	३९ १०	रा.	२१ २६	वि.	८ १९	९ ५	ब.	३५ ५१	२० ६	मानस	३	९	१८	२६	१२	म.	१३ ३१	११ १०	५ ४६	६ १४	७ ३७	२ ४३
३१ ९	१२	बु.	[illegible]	प्रा.	[illegible]	श्र.	५३ ४७	रा.	३ १३	शो.	३२ ४३	सा.	१८ ५२	बा.	३ २२	७ ७	कौ.	[illegible]	[illegible]	मुद्‌गर	४	१०	१९	२७	१३				५ ४६	६ १४	७ १५	३ ४८
३१ ५	१४	गु.	५५ ५८	रा.	४ १०	ध.	५२ १८	रा.	२ ४२	अ.	२६ ५६	दि.	१६ ३३	ग.	२३ ३५	१६ ४९	व.	५५ ५८	४ १०	श्रीवत्स	५	११	२०	२८	१४	कुं.	२३ २	१५ ०	५ ४७	६ १३	६ ५३	४ ४८
३१ २	१५	शु.	५२ ४८	रा.	३ १९	श.	५१ ५२	रा.	२ ३३	सु.	२१ ५८	दि.	१४ ३५	वि.	२४ ५३	१५ ४५	ब.	५२ ४८	३ १९	सौम्य	६	१२	२१	२९	१५				५ ४८	६ १२	६ ३०	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० भाद्रपदशुक्लपक्षः (अगस्त ता० २४···३१ सितम्बर ता० १···६ [illegible]

इष्टिः । गुरुस्तं प्रतीच्याम् ५१।२३ । अथासवारिष्टनिर्माणवस्तुविक्रयमद्यकर्मादीनां कृते समयोऽयंयेगः । पू. फा. ४ च. बुधः ३९।१[illegible]
चन्द्रदर्शनम्, मु. ४५ फलं समर्घकरम् । अथोत्तरायां प्रसूतिकास्नानसुभगेतरनववस्त्रधारणपूर्वदिग्गमनविपणिव्यापारादि मु. । [illegible]
सामगानामुपाकर्म । हरितालिका ३ व्रतम् ★ (तीज) । जनादिजस्नानी ६ । अथ ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशन[illegible]
भ. २०।१७ (दि. १३।४७) उ. ४८।१३ (रा. ०।५८) या. । वैनायकी ४ । अथ चन्द्रदर्शनं निषिद्धम् । वरद ४ व्रतम् [illegible]
ऋषिपञ्चमी ५ व्रतम् (मध्याह्ने सप्तर्षिपूजनम्) । अथ सूतिकाबलाथपथ्यौषधसेवनजातकर्मनामकरणान्नप्राशन[illegible]
लोलार्कषष्ठी ६ व्रतम् । लोलार्ककुण्डे स्नानम् । कार्तिकेयदर्शनम् । सूर्यषष्ठीव्रतम् । तिथिदानात् शुभकर्मणां मु. ।
भ. ३१।५५ (सा. १८।२९) उ. ५८।५० (प्रा. ५।१५) या. । मुक्ताभरण ७ व्रतम् । पूर्वाफाल्गुन्यामर्कः ३४।२९ (रा. १९।३१) [illegible]
वैधृतेःपरं मैत्रे तिथिदानात् सामान्यशुभकर्मणां मु. । [illegible]
अथ दशम्यां लतागुल्मवृक्षाद्यारोपणौषधसेवनशिशुताम्बूलभक्षणादि मु. । नवम्यां मतिहीनबलेचन्द्रेरोगविमुक्तस्नान मु. । [illegible]
भ. ४१।३ (रा. २२।१०) उ. । दशावतार व्रतम् । अथ मूले लतापादपारोपणभैषज्यसेवनशिशुताम्बूलभक्षणादि मु. । हस्ते बुधः [illegible]
भ. ८।१९ (दि. ९।५) या. । पद्मा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । विष्टेःपरं तिथिदानात् विविधशुभकर्मारम्भः । पू. फा. २ च. [illegible]
वामनद्वादशी । प्रदोषः । दधिदानम् । दुग्धत्यागव्रतारम्भः । शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽवधेयः । [illegible] कुज. २३।२७
भ. ५५।५८ (रा. ४।१०) उ. । पञ्चकारम्भः २३।२ (दि. १५।०) । अनन्तचतुर्दशी १४ व्रतम् । [illegible]
भ. २४।५३ (दि. १५।४५) या. । व्रतस्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा । उमामहेश्वर व्रतम् । महालयारम्भः । [illegible]
दूर्वा दशनामभिः समर्पयेत् । दशनामानि १–गणाधिपायनमः । २–उमापुत्रायनमः । ३–अघनाशनायनमः । ४–विनायकायनमः । [illegible]
८–इभवक्त्रायनमः । ९–मूषकवाहनायनमः । १०–कुमारगुरवेनमः । मतिहीनबलेचन्द्रे रोगविमुक्तस्नान न. । [illegible]

[illegible]

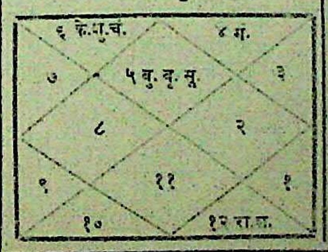
दैनिक लग्नसारिणी

तथय:	मि. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.
१श.	२१ ३	२२ ४१	० ३७	२ ५०	५ ८	७ २२	९ ३५	११ ५१	१४ ८	१६ १२	१८ ०	१९ ३२
२सू.	२१ ०	२२ ३८	० ३४	२ ४७	५ ५	७ १९	९ ३२	११ ४८	१४ ५	१६ ११	१७ ५७	१९ २९
३च.	२० ५६	२२ ३४	० ३०	२ ४३	५ १	७ १५	९ २८	११ ४४	१४ १	१६ ७	१७ ५३	१९ २५
४मं.	२० ५२	२२ ३०	० २६	२ ३९	४ ५७	७ ११	९ २४	११ ४०	१३ ५७	१६ ३	१७ ४९	१९ २१
५बु.	२० ४९	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५४	७ ८	९ २१	११ ३७	१३ ५४	१६ ०	१७ ४६	१९ १८
६बृ.	२० ४५	२२ २३	० १९	२ ३२	४ ५०	७ ४	९ १७	११ ३३	१३ ५०	१५ ५६	१७ ४२	१९ १४
७शु.	२० ४१	२२ १९	० १५	२ २८	४ ४६	७ ०	९ १३	११ २९	१३ ४६	१५ ५२	१७ ३८	१९ १०
८श.	२० ३८	२२ १६	० १२	२ २५	४ ४५	६ ५७	९ १०	११ २६	१३ ४३	१५ ४९	१७ ३५	१९ ७
९सू.	२० ३४	२२ १२	० ८	२ २१	४ ४१	६ ५३	९ ६	११ २२	१३ ३९	१५ ४५	१७ ३१	१९ ३
१०चं.	२० ३०	२२ ८	० ४	२ १७	४ ३५	६ ४९	९ २	११ १८	१३ ३५	१५ ४१	१७ २७	१८ ५९
११मं.	२० २७	२२ ५	० १	२ १४	४ ३२	६ ४६	८ ५९	११ १५	१३ ३२	१५ ३८	१७ २४	१८ ५६
१२बु.	२० २३	२२ १	२३ ५७	२ १०	४ २८	६ ४२	८ ५५	११ ११	१३ २८	१५ ३४	१७ २०	१८ ५२
१४बृ.	२० १९	२१ ५७	२३ ५३	२ ६	४ २४	६ ३८	८ ५१	११ ७	१३ २४	१५ ३०	१७ १६	१८ ४८
१५शु.	२० १६	२१ ५४	२३ ५०	२ ३	४ २१	६ ३५	८ ४८	११ ४	१३ २१	१५ २७	१७ १३	१८ ४५

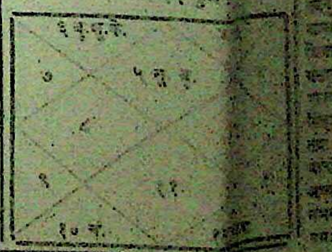
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि.मा.	स्प. सू.	स्प. च.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४६ ५६	४ ७ ४४ ४१	४ १७ ३१ ५६	३ १८ १९ ५५	४ २३ ३३ २४	४ २३ १५ २	४ २९ ८ ३८	११ २५ ० २८	११ २१ ५० १६	५ २१ ५० १६
४६ ५५	४ ८ ४२ २१	५ ० ५३ ४०	३ १८ ५८ १८	४ २५ १७ ५६	४ २३ २८ ९	५ ० २२ १	११ २४ [illegible]	११ २१ ४७ ६	५ २१ ४७ ६
४६ ५५	४ ९ ४० १८	५ १४ ३० २३	३ १९ ३६ ३९	४ २७ १ ४२	४ २३ ४१ १७	५ १ ३५ २३	११ २४ [illegible]	११ २१ ४३ ५५	५ २१ ४३ ५५
४६ ५३	४ १० ३८ १०	५ २८ २० ४७	३ २० १४ ५८	४ २८ ४४ २९	४ २३ ५४ २५	५ २ ४८ ४७	११ २४ [illegible]	११ २१ ४० ४४	५ २१ ४० ४४
४६ ५२	४ ११ ३६ ३	६ १२ २२ ५२	३ २० ५३ १६	५ ० २६ १८	४ २४ ७ ३५	५ ४ २ ९	११ २४ [illegible]	११ २१ ३७ ३३	५ २१ ३७ ३३
४६ ५१	४ १२ ३३ ५९	६ २६ ३४ ५	३ २१ ३१ ३१	५ २ ७ ४	४ २४ २० ४७	५ ५ १५ ३१	११ २४ [illegible]	११ २१ ३४ २३	५ २१ ३४ २३
४६ ५१	४ १३ ३१ ५६	७ १० ५१ २४	३ २२ ९ ४५	५ ३ ४६ ४३	४ २४ ३३ ५७	५ ६ २८ ५४	११ २४ [illegible]	११ २१ ३१ १२	५ २१ ३१ १२
४६ ५०	४ १४ २९ ५४	७ २५ ११ २२	३ २२ ४७ ५६	५ ५ २५ ९	४ २४ ४७ ८	५ ७ ४२ १६	११ २४ [illegible]	११ २१ २८ १	५ २१ २८ १
४६ ४९	४ १५ २७ ५६	८ ९ २९ ५९	३ २३ २६ ५	५ ७ २ १७	४ २५ ० २२	५ ८ ५५ ४०	११ २४ [illegible]	११ २१ २४ ५०	५ २१ २४ ५०
४६ ४८	४ १६ २५ ५९	८ २३ ४३ ३८	३ २४ ४ १२	५ ८ ३८ ४	४ २५ १३ ३५	५ १० ९ ३	११ २४ [illegible]	११ २१ २१ ४०	५ २१ २१ ४०
४६ ४७	४ १७ २४ ४	९ ७ ४९ ८	३ २४ ४२ १९	५ १० १२ १८	४ २५ २६ ४६	५ ११ २२ २६	११ २४ [illegible]	११ २१ १८ २९	५ २१ १८ २९
४६ ४६	४ १८ २२ ११	९ २१ ४३ ४५	३ २५ २० २३	५ ११ ४४ ५५	४ २५ ३९ ५८	५ १२ ३५ ५०	११ २४ [illegible]	११ २१ १५ १८	५ २१ १५ १८
४६ ४५	४ १९ २० २०	१० ५ २५ १९	३ २५ ५८ २७	५ १३ १५ ४९	४ २५ ५३ ११	५ १३ ४९ १३	११ २४ [illegible]	११ २१ १२ ८	५ २१ १२ ८
४६ ४४	४ २० १८ ३२	१० १८ ५२ १४	३ २६ ३६ २७	५ १४ ४४ ५६	४ २६ ६ २३	५ १५ २ ३६	११ २४ [illegible]	११ २१ ८ ५७	५ २१ ८ ५७

ति. ४ कुजे



ति. ११ कुजे



नमो नमः ॥ यस्त्वगस्थितं पात देहे तिष्ठति सामके । [illegible]
स्नायात् ॥ भाद्रशुक्लाष्टमीमारभ्य १६ दिनपर्यन्तं महालक्ष्मीव्रतम् ॥ [illegible]
ति. १० चन्द्रे दशावताराः— मत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनपरशुरामरामकृष्णबुद्ध[illegible]
कुर्वीत । पौलस्त्य जयते हत कालनेमे [illegible]
[illegible] दिनगतो नृप । विजया नाम सा प्रोक्ता [illegible] ॥ [illegible]
सर्वेषाम् वामनाय नमोनमः ॥ अथार्घ्यमन्त्रो—नमस्ते पद्मनाभाय नमस्ते जलशायिने [illegible]
फलार्घ्यं च वामनाय नमो नमः ॥ अन्या वामनद्वादश्यां महाफलं [illegible]
वामनस्यावतारस्य पर्वतेयः—भाग० ८ स्क० २७ अ० । दिवेषवोः निम्नलिखिता [illegible]
व्रतानिदं द्वादशाहमतन्द्रिता ॥१॥ [illegible] महापुरुषदर्शनम् । [illegible]
[illegible] सत्स्वाय सादरम् । ननाम भुवि कायेन दण्डवत्प्रीतिविह्वला ॥२॥ [illegible]
[illegible] भगवन्नमि दीननाथ ॥८॥ [illegible] स्वैरं गृहीतपुरुशक्तिगुणाय [illegible]
[illegible] अनन्तव्रत तत्र युधिष्ठिरं प्रति श्रीकृष्णः—अनन्त पूजयेद्वस्तु मध्याह्ने सुसमाहितः । [illegible]

[illegible]

ति. १ शनौ-गुरुचन्द्रयुतिः दे. घ. ३।२७ गुरुर्दक्षिणे ।
ति. २ रवौ-बुधचन्द्रयुतिः दे. घं. १२।३५ बुधोदक्षिणे । अत्रैव शुक्रचन्द्रयुतिः दे. घं. १६।१८ शुक्रोदक्षिणे ।

समाचाय चचार ह पयोव्रतम् ॥३॥ तस्याः प्रादुरभूत्तात भगवानादिपूरुषः । पीतवासाश्चतुर्बाहुः शङ्खचक्रगदाधरः ॥४॥ तं नेत्रगोचरं वीक्ष्य सहसोत्थाय सादरम् । ननाम भुवि कायेन दण्डवत्प्रीतिविह्वला ॥५॥ [illegible]
जगत्पतिम् ॥७॥अदितिरुवाच—यज्ञेश यज्ञपुरुषाच्युत तीर्थपाद तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गल नामधेय ॥ आपन्नलोकवृजिनोपशमोदयाद्य शं नः कृधीश भगवन्नसि दीननाथः [illegible]
मतुल्यलक्ष्मीर्द्यौर्भूरसकलयोगगुणास्त्रिवर्गः । ज्ञानं च केवलमनन्त भवन्तितुष्टात्त्वत्तो नृणां किमु सपत्नजयादिराशीः ॥१०॥ ति. [illegible] १४ गुरौ अनन्तव्रत तत्र युधिष्ठिरं प्रति श्रीकृष्णः—अनन्त पूजयेद्वस्तु मध्याह्ने सुसमाहितः ।

ऋग्वेदे—इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः । ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विक्षु ॥ अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः । अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिषि यथा रयिं सर्ववीरं दधातन ॥ ये यजन्ति पितृन् देवान् ब्राह्मणान् [illegible] । सर्व भूतान्तरात्मानं विष्णुमेव यजन्ति ते ॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.		नं. मि.	न.	घ. प.		नं. मि.	यो.	घ. प.		नं. मि.	क.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	का.	घं.	क.	रा.	चन्द्रराशि संचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. का. उ.	चंद्रोदय घं. मि.
३०।५८	१	गु.	१२।४९	रा.	२।२६	पू.	१२।३७	रा.	२।५१	पू.	१०।५४	दि.	१२।५८	वा.	२३।१८	२५	८	कौ.	५२।४९	२।५६	का. द.	७	१३	२२	१	१६	मी. ३७।२५।२०।४७	५।४८	६।१२	६	८।१८।३७
३०।५५	२	शु.	१६	३	रा.	३।४	उ.	१४।३६	रा.	३।४०	ध्रु.	१५।२७	दि.	१२	०	गं.	२२।५८	२५	०	ग.	५३	७	३।४	सुस्थिर	८	१४	२३	२	१७		५।४९	६।११	५।४५	१९।७

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० आश्विनकृष्णपक्षः (सितम्बर ता० ७…२२ सन् १९६८) याम्यायनं, सौम्यगोलः, वर्षर्तुः, कन्यार्कतः शरदृतुश्च ।

इष्टिः । [illegible] । प्रत्यहं पार्वणश्राद्धं कर्तव्यञ्च महालये । पितृभ्यश्च जलं देयं तेन संवत्सरं सुखम् । प्रतिपच्छ्राद्धम् । [illegible]

अशून्यशयनव्रतम् । द्वितीयाश्राद्धम् । अद्य पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नान[illegible] मु. । ह. ३ चं. बुधः ३।२५ । [illegible]

भ. २३।५५ (दि. १५।२६) उ. ५४।४२ (रा. ३।४३) या. । तृतीयाश्राद्धम् । पञ्चकनिवृत्तिः ५७।५० (प्रा. ४।५८) । विष्टिः पूर्वमृदु[illegible]

संकष्टी ४ व्रतम् । चतुर्थीश्राद्धम् । रात्रिशेषे पञ्चम्यां प्रसूतिकास्नानोत्तराभिहायसर्वा[illegible]दिग्गमनादि मु. । ह. ४ च. बुधः ३३।३१ । [illegible]

पञ्चमीश्राद्धम् । अद्याश्विन्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशन[illegible]दिग्गमनादि मु. ।

षष्ठीश्राद्धम् । अद्य भरण्यां नवरात्र[illegible]देर्भोगः शुभः । पञ्चम्यां [illegible] । मघायां सिंहे च कुजः ८।५४ ।

भ. ५।५८ (दि. ८।२६) उ. ३८।३० (रा. २१।१७) या. । सप्तमीश्राद्धम् । उत्तराफाल्गुन्यामर्कः १९।१४ (दि. १३।३१) [illegible]

महालक्ष्मीव्रतम् । ([illegible] इत्यादिवचनप्रामाण्यादिति) । मतान्तरेण जीवित्पुत्रिकाव्रतम् । अष्टकाश्राद्धम् । [illegible]

जीवित्पुत्रिकाव्रतम् । अन्वष्टकाश्राद्धम् । महालक्ष्मीव्रतसमाप्तिः । [illegible]

भ. ५२।५ (रा. ३।१) उ. । मातृनवमी ९ । उ. फा. २ च. सं. कन्यायामर्कः ४४।१० (रा. २३।३५) मु. ४५ फल [illegible]

भ. ७५।४ (दि. १५।१७) या. । एकादशीश्राद्धम् । [illegible] मु. । ग. २ च. कुजः [illegible]

इन्दिरा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । एकादशीश्राद्धम् । अद्य [illegible]

द्वादशीश्राद्धम् । अद्य त्रयोदश्यां [illegible] शुभा । [illegible] । चि. ३ च. तुले च बुधः ४१।२५ । चि. ३ च. तुले च [illegible]

भ. ३०।४ (रा. १७।५९) उ. ५३।३९ (प्रा. ५।४९) या. । प्रदोषः । मासशिवरात्रिः । त्रयोदशीश्राद्धम् । [illegible]

शस्त्रादिहतानामद्यैव श्राद्धम् । शुभकर्मणि [illegible] । चि. ४ च. शुक्रः ४४।२७ ।

स्नानदानश्राद्धादौदर्शः ३० । अज्ञाततिथीनामद्यैवश्राद्धम् । पितृविसर्जनम् । महालयसमाप्तिः । ग्रस्तास्त सूर्यग्रहणम् ([illegible]

दैनिकलग्नसारिणी

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

ति. ४ बुधे

ति. १० बुधे

आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम् । [illegible] विन्दति ॥ न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः । [illegible] पुल्कसायादयश्च योनयः । [illegible] गयाश्राद्धे मातापित्रोः क्षयेऽहनि । [illegible] मरीचिः—श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अविज्ञाते मृतेऽहनि ॥ [illegible] मध्याह्ने [illegible] ॥ [illegible] तर्पणादि [illegible] पित्र्ये [illegible] ॥ [illegible] वृहस्पतिः—महालये [illegible] मृतेऽहनि ॥ [illegible] पार्वणम् । एकोद्दिष्टं [illegible] । अहंत्साय [illegible] तस्मै दत्तं महाफलम् ॥ [illegible]

ति. ४ बुधे—दक्षिणचन्द्रायतिः दे. घं. ७।३ हानिर्दक्षिणे ।
ति. १३ भृगे—बुधचन्द्रयुतिः दे. घं. ११।० बुधोदक्षिणे ।
ति. १४ शनौ—गुरुचन्द्रयुतिः दे. घं. ३२।४२ अल्पान्तरे दक्षिण गुरुः ।

कव्यानि प्रतिष्ठाप्यानि यत्नतः । हव्यानि तु यथान्यायं सर्वेष्वपि चतुर्ष्वपि ॥ द्वौ दैवे पितृकार्ये त्रीनेकैकमुभयत्र वा । [illegible] वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु अन्नं च नो बहुभवेदतिथींश्च लभेमहि । [illegible] सात्त्विकं धार्मिकं तथा । अथात्र तीर्थश्राद्धविधौ विहितकर्माह ॥ स्मृत्यन्तरे । पिण्डासनं पिण्डदानं पुनः प्रत्यवनेजनम् [illegible] ॥ पिण्डान्ते पितृप्रार्थना—मन्त्रः— [illegible] पितॄन् ॥ गोत्रं नो वर्द्धताम्, दातारो नोऽभिवर्धन्ताम् [illegible] आयुष्मन्तं सुतं सूते यशोमेधासमन्वितम् । [illegible]

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	न.	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	योगः	घं.	फा.	घं.	फ.	रा	चन्द्रराशि प्रचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. द.	चन्द्रास्त घं. मि.
३० ०	१	चं.	२४	६	दि.	१५	३८	ह.	४४	५०	रा.	२३	५६	शु.	[illegible]		प्रा.	[illegible]		व.	२४	६	१५	३८	बा.	[illegible]		२	५०	वज्र	२३	२९	७	१७	१		६ ०	६ ०	०	१८ ३१
२९ ५६	२	मं.	२०	३	दि.	१४		चि.	४२	१७	रा.	२२	५६	ऐं.	५१		रा.	२	२६	कौ.	२०	३	१४		[illegible]			१	०	ध्वांक्ष	२४	३०	८	१८	२		६	५ ५९	० २४	१९ ८
२९ ५३	३	बु.	१४	५२	दि.	११	५८	स्वा.	३९	३	रा.	२१	३८	वै.	४४		रा.	२३	३०	ग.	१४	५	११	५८	व.	[illegible]		२२	५८	धम्र	२५	१	९	१९	३	तु. १२ ३४ ११ २६	६	५ ५९	० ४५	१९ ४८
२९ ४९	४	गु.	९	३०	दि.	९	५०	वि.	३५	१६	रा.	२०	९	वि.	३६	३९	रा.	२०	४२	दि.	९	३०	[illegible]							प्र. मा.	२६									
[illegible]																																								

श्रीशुभसंवत २०२५ शकः १८९० आश्विनशुक्लपक्षः (सितम्बर ता० २३…३०, अक्टूबर ता० १…५, १९६८) याम्यायनं, सौम्यगोलः, शरदृतुः ।

इष्टिः । शारदीयनवरात्रारम्भः । पश्चिमे सूक्ष्मचन्द्रदर्शनम् अत्यावश्यके गुरोर्बालत्वनिवृत्तिः १३।२० । राष्ट्रीय-आश्विनारम्भः । [illegible] । अथ [illegible]
चन्द्रदर्शनम्, ग. १० फल समम् "पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयमहेतवे" । अत्यावश्यके वैधृते:पूर्वं स्वात्यां प्रवृत्तिकारमाना[illegible] । स्वाती प्र. शुक्र. २८।१० ।
भ. ४९।१ (रा० २२।५४) उ. । रज्जब ७ । "दर्पणं तु तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा" । वैनायकी ४ । अथ वैधृति-[illegible]
भ. ११।३० (दि. ९।५०) या. "मधुपर्कं चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमण्डनम्" उपाङ्गललिताव्रतम् (महाराष्ट्रेषुप्रसिद्धा) । [illegible]
"पञ्चम्यामङ्गरागञ्च सर्वालङ्करणानि च" । "षष्ठ्यां बिल्वतरौ बोधं सायंसन्ध्यासु कारयेत्" । बिल्वाभिमन्त्रणम् । [illegible]
भ. ५१।२६ (रा. २।४२) उ. । सप्तम्यां प्रातरानीय गृहमध्ये प्रपूजयेत् । "मूलेनावाहयेद्देवीं पूर्वाषाढासु पूजयेत्" । सप्तम्यां [illegible]
भ. १८।४० (दि. १३।२२) या. । सरस्वत्याऽऽवाहनम् । महाष्टमी ८ । अन्नपूर्णापरिक्रमा । "उपोषणमथाष्टम्यां [illegible]
महानवमी ९ "नवम्यां च जपं होमं समाप्यविधिवद्बलिम्" । बलिदानाविकल्पः । अथ दशम्यां मूर्तिकाभ्योपविसर्जन[illegible]
विजया दशमी १० । राजापट्टाभिषेकयोग्या दशमी १० । राजचिह्नपूजा । सीमोल्लङ्घनम् । विजययात्रा । शमीपूजनम् । अपराजिता[illegible]
भ. ३।२३ (दि. ७।२८) उ. २१।७ (सा. १८।३४) या. । पापाङ्कुशा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । पञ्चकारम्भः [illegible]
पद्मनाभ १२ । प्रदोषः । प्रहृष्टशूलदोषारम्भः । दुग्धदानम् । [illegible] । अथ तिथिदानात् [illegible]
[illegible]
भ. २४।५० (दि. १३।५) उ. ५५।२ (रा. ४।१०) या. । वाराही १४ (वाराहीपूजा) । व्रताय शारदीय पूर्णिमा १५ पुष्करनी । [illegible]
स्नानदानादौ शारदीयपूर्णिमा १५ पुष्करनी । प्रस्तोदर चन्द्रग्रहणम् (विवरणं प्रकृष्टे द्रष्टव्यम्) । कार्तिकस्नानारम्भ[illegible]

*[illegible]

§ [illegible]

दैनिकलग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
[illegible]												

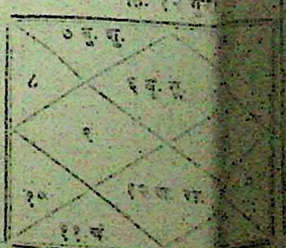
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. च.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
[illegible]									

ति. २ कुजे-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. १५।२७ चन्द्रोदक्षिणे । अथैव बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. १५।४० बुधोदक्षिणे ।

ति. ४ गुरौ [illegible]





नैव रात्रि न दिवस न मुहूर्तं न च क्षणम् । रामरावणयोर्युद्धं विराममुपगच्छति ॥ अभिमन्त्र्य ततः रामस्तं[illegible] पुनराविशत् ॥ तस्य हस्ताद्धतस्याशु कार्मुकं चापि सायकम् । निपपात सहप्राणे भ्रंश्यमानस्य जीवितात् ॥ ततो विनेदुः संहृष्टा [illegible] बभूव । रघुकुलनृपनन्दनो महौजास्त्रिदशगणैरभिसंवृतो महेन्द्रः ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे दशमी सर्वराशिषु । सायंकाले शुभा यात्रा [illegible]

इदं च शुभकारणादावपि [illegible] तु नरैः सम्यक् पूजनीयाऽपराजिता । ऐशानीं दिशमाश्रित्य अपराह्णे प्रयत्नतः [illegible] देवि यथाशक्तिसमन्विताम् । रक्षार्थं ते समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ [illegible] इत्यादिमन्त्रैर्विजया सम्प्रार्थ्य पूर्ववद्विसर्जयेदिति ॥ [illegible] शमनी शमनीं दुष्कृतस्य च । दुःस्वप्ननाशिनी धन्यां [illegible] ॥ यात्रायां यथाकाले सुखं मया । तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव [illegible] ॥ परस्त्रीनिरीक्षणनिषेधविधौ—मा मतिः परदारेषु परद्रव्येषु मा मतिः । [illegible] हि पुरुषस्याद्य परदाराभिमर्शनम् ॥ सीतारावणप्रति—[illegible] नयन्ति निकृतिप्रज्ञं परदाराः पराभवम् । [illegible] विधिना [illegible] कार्मुकं बली । स रावणाय संक्रुद्धो भृशमायम्य कार्मुकम् । [illegible] ॥ आविवेश महान् हर्षो देवानां [illegible] ॥ एकादशमुहूर्तो यै विजयः समुदीरितः । तस्मिन् सर्वा विधातव्या यात्रा विजय[illegible]

[illegible] सदा देवं कूष्माण्डं बलि- [illegible] नैव कारयेत् ॥ कुमारीपूजाञ्च कुर्यात् । [illegible] नवरात्रिकं प्रत्यालयदाहोरात्रमेकचित्तदृढव्रतः ॥ [illegible] दशम्यां अपराह्णे अपराजितापूजा—तदुक्तं स्कान्दे । दशम्यां [illegible] पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ तत्र प्रार्थनामन्त्रः ॥ इमां पूजां मया [illegible] । अपराजिता भद्ररता करोतु विजयं मम ॥ [illegible] अर्चयित्वा धर्मीवृक्षमर्चयेच्च ततः पुनः ॥ अमङ्गलानां [illegible] धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी । करिष्यमाण- [illegible] मुदम् । ततो बाढविधिर्योर्विरानयेत्स्वगृहं प्रति ॥ इति ॥ [illegible] भीष्मः—नहीदृशमनायुष्यं लोके किञ्चन विद्यते । यथा [illegible] आत्मानमनुपर्यां कृत्वा स्वेषु दारेषु रम्यताम् । अतुष्टं स्वेषु दारेषु चपलं [illegible] सर्वलाङ्गलिवर्जातः । रामरावणयोर्युद्धे तु प्रसिद्धमेव । युद्धकाण्डे— [illegible] ॥ स शरो रावणं हत्वा रुधिरार्द्रकृतच्छविः । कृतकर्मा निभृतवत्सतूणीं न [illegible] । स तु निहतरिपुः स्थिरप्रतिज्ञः स्वजनबलाभिवृतो रणे [illegible] सा तिथिर्विजयाभिधा ॥ श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुत्स्थः प्रस्थितो यतः ।

दि.मा. क. प.	ति.	वा.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	न.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	यो.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	का.	नं.	फ.	रा.	चन्द्रराशि संचारः रा. न. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. द.	चन्द्रास्त घं. मि.
३० ०	१	बु.	२४	[illegible]	१५।३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८ ३१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० आश्विनशुक्लपक्षः (सितम्बर ता० २३…३०, अक्टूबर ता० १…६, सन् १९६८) [illegible]

इष्टिः। शारदीयनवरात्रारम्भः। पश्चिमे सूक्ष्मचन्द्रदर्शनम् अत्यावश्यके गुरोर्बालत्वनिवृत्तिः १३।२०। राष्ट्रीय-[illegible] । [illegible]
चन्द्रदर्शनम्, मु. ३० फलं समम् "पट्टडोरं द्वितीयायां केशसंयमहेतवे"। अत्यावश्यके वैधृते:पूर्वं स्वात्यां प्रसूतिकास्नानादारभ्य [illegible]
भ. ४३।११ (रा० २२।५४) उ.। रज्जव ७। "दर्पणं तु तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा"। वैनायकी ४। अद्य वैधृति-[illegible]
भ. ९।३० (दि. ९।५०) या. "मधुपर्कं चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमंडनम्" उपाङ्गललितावतम् (महाराष्ट्रेषुप्रसिद्धम्)। हस्ते [illegible]
"पञ्चम्यामङ्गरागञ्च सत्यालङ्करणानि च"। "षष्ठ्यां बिल्वतरौ बोधं सायंसंध्यासु कारयेत्"। बिल्वाभिमन्त्रणम्। तिथिक्षये [illegible]
भ. ५१।३६ (रा. २।४२) उ.। सप्तम्यां प्रातरानीय गृहमध्ये प्रपूजयेत्। "मूलेनावाहयेद्देवीं पूर्वाषाढासु पूजयेत्"। सप्तम्यां [illegible]
भ. १८।४८ (दि. १३।३२) या.। सरस्वत्याऽऽवाहनम्। महाष्टमी ८। अन्नपूर्णापरिक्रमा। "उपोषणमथाष्टम्यां [illegible]
महानवमी ९ "नवम्यां च जपं होमं समाप्तविधिवद्‌बलिम्"। बलिदानादिकञ्च। अद्य दशम्यां सूतिका [illegible]
विजया दशमी १०। राज्यपट्टाभिषेकयोग्या दशमी १०। राजचिह्नपूजा। सीमोल्लङ्घनम्। विजययात्रा। शमीपूजनम्। अपराह्णे [illegible]
भ. ३।१३ (दि. ७।२४) उ. ३।१७ (रा. १८।३६) या.। पापाङ्कुशा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। पञ्चकारम्भः [illegible]
पद्मनाभ १२। प्रदोषः। वहणशूलदोषारम्भः। कुम्भदानम्। [illegible]। अद्य तिथिदानात् जातकर्म [illegible]
अद्य भद्रोन्त्यां जातकर्मसंपञ्चसंचनलतागुल्मवृक्षाद्यारोपणं मु.। †[illegible]
भ. २६।५० (दि. १६।५) उ. ५५।२ (रा. ४।१०) या.। वाराही १४ (वाराहीपूजा)। व्रताय शारदीय पूर्णिमा १५ पुष्यतक्षा। [illegible]
स्नानदानादौ शारदीयपूर्णिमा १५ पुष्यतक्षा। ग्रस्तोदयचन्द्रग्रहणम् (विवरण चतुर्थपृष्ठे द्रष्टव्यम्)। कार्तिकस्नान [illegible]
*[illegible]
§ प्रसूतिकास्नानसुभगेतर[illegible] मु०।
* प्रतीक्ष्यम् ९।४२।

दैनिकलग्नसारिणी

तिथ्यं.	[illegible]
[illegible]	[illegible]

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

दि. मा.	स्प.	सू.	स्प.	चं.	स्प.	मं.	स्प.	बु.	स्प.	गु.	स्प.	शु.	स्प.	श.	स्प.	रा.	स्प.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ३ बुधे-शुक्रचन्द्रयुतिः दे. घं. १५।२७ चन्द्रोदक्षिणे। अद्यैव बुधचन्द्रयुतिः दे. घं. १५।४० बुधोदक्षिणे।

नैव रात्रिं न दिवसं न मुहूर्तं न च क्षणम्। रामरावणयोर्युद्धं विराममुपगच्छति ॥ अभिमन्त्र्य ततो रामस्तं महेषुं महाबलः। वेदप्रोक्तेन विधिना संदधे कार्मुके बली। [illegible] पुनराविशत् ॥ तस्य हस्ताद्धतस्याशु कार्मुकं चापि सायकम्। निपपात सहप्राणैर्भ्रश्यमानस्य जीवितात् ॥ ततो विनेदुः संहृष्टा वानरा जितकाशिनः। [illegible] बभूव। रघुकुलनृपनन्दनो महौजास्त्रिदशगणैरभिसंवृतो महेन्द्रः ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे दशमी सर्वराशिषु। सायंकाले शुभा यात्रा दिवा च विजयप्रदा ॥ [illegible]

ति. ४ गुरौ

७ शु. बु.		५ मं०
८ च.	६ के. बु. सू.	४
	९	
१०	१२ श. रा.	२
११		१

ति. १२ गुरौ

७ शु. सू.		
८	६ बु. सू.	
१०		
११ च.		

[illegible] ॥ तदादौ संकल्पपूर्वकं विधिवत् [illegible] जीर्णायां नूतनायां वा प्रतिमायां [illegible] सम्पूजयेत् ॥ पूजनमन्त्रः। [illegible] दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा [illegible] देवि दैत्यदर्पनिषूदिनी। पूजां गृहाण सुमुखि [illegible] षोडशोपचारैः अथवा [illegible] स्वाहेति सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये [illegible] माषभक्तेन कूष्माण्डेन वा बलिदानम् ॥ यथोक्तं [illegible] मांसं सारक्षमेव च। एता बलिसमाः [illegible] सदा। तथा च। ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्माण्डं [illegible] नैव कारयेत् ॥ कुमारीपूजनञ्च कुर्यात्। [illegible] प्रबालयदहोरात्रमेकचित्तं [illegible] ॥

[illegible] ति. १० [illegible] विजया १० ॥ तत्र दशम्यां अपराह्णे अपराजितापूजा—तदुक्तं स्कान्दे। दशम्यां [illegible] कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ तत्र प्रार्थनामन्त्रः ॥ इमां पूजां मया [illegible]

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	नक्षत्र	घ. मि.	न.	घ. प.	योग	घं. मि.	क.	घ. प.	समाप्ति	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	का.	वं.	क.	रा.	चन्द्रराशि सञ्चारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. द.	नतांश घं. मि.
२९ ९	१	व.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मातंग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० कार्तिककृष्णपक्षः (अक्टूबर ता० ७···२१, सन् १९६८) याम्यायनं, सौम्यगोलः, तुलार्कात् याम्यगोलः, शरदृतुः।

इष्टिः। चन्द्रोदयव्यापिन्यामशून्यशयनव्रतम्। तुलसीदलेन श्रीविष्णु प्रपूजयेत्। कार्तिके द्विदलं त्यजेत्। अत्र शुभकर्मणि ग्रहणमूलदोषो ... [illegible]

अत्यावश्यके कर्त्तव्या प्रसूतिकास्नान मु.। पू. फा. २ च. कुजः ५३।२२। चि. २ च. शुक्रः ७।५४।

भ. १।५५ (प्रा. ३।५८) उ. ३३।५६ (रा १९।४६) या.। ग्रहणमूलदोषनिवृत्तिः। चित्रे: पूर्वं नवशय्यासनादेर्भोगः मुन.। उ. फा. [illegible]

गणेश ४ व्रतम् (करवा ४)। "स्त्रीणामेवाधिकारो व्रतेऽस्मिन् तासामेव फलश्रुतिः"। अद्य पञ्चम्यां व्यतिपातदोषोऽन्वेषः। चि. १च. [illegible]

व्यतिपातादरं तिथिदानादावश्यके सामान्य शुभकर्मणां मुहूर्तोऽन्वेषः।

भ. ४९।९ (रा. १।१४) उ.। तिथिदानात् सामान्य शुभकर्मादिकृते शोभन कालः।

भ. २१।२२ (दि १४।५२) या.। रात्रिशेषे पुनर्वसौ सामान्यशुभकर्मणां मुहूर्तः। चि. २ च. रवि. ४८।१९। विशा ४ च. वृश्चिके व शुक्र [illegible]

अहोई ८ व्रतम् (चन्द्रोदय अष्टमी योगात्)। अद्य पुनर्वसौ भैषज्यसेवन मु.। पू. फा. ३ च. कुजः १७।२४।

नवम्यां सतिर्हीनश्लेषचन्द्रे रोगविमुक्तस्नान मु.। ह. ४ च. बर्कोवृष ३०।४५।

भ. ३१।४५ (रा. १८।५९) उ.। विष्टेः परं वस्तुविक्रयादि मु.। मेषे शुक्रः १०।१४।

भ. २।२७ (दि ७।२०) वा.। चित्रा ३ च. सं. तुले भास्करः १०।५ (दि. १०।१९) मु. ३० फल समम्। वाहनादिक [illegible]

रम्भा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। गोवत्सद्वादशी १२ (सायाह्ने पूजनम्)। यक्षकार्तिकारम्भः। [illegible]

दानिप्रदोषः। धनत्रयोदशी १३ (धनतेरस)। धन्वन्तरिजयन्ती। अद्य [illegible]

भ. ०.२५ (प्रा. ६।३०) उ. २८।५४ (रा. १७।५२) या.। मासशिवरात्रिः। नरकचतुर्दशी १४। हनुमज्जयन्ती। [illegible]

दीपावली ३०। प्रदोषे लक्ष्मीन्द्रकुबेरादिपूजा। रात्रिशेषे दरिद्रनिस्सारणम्। [illegible]

दैनिकलग्नसारिणी

तारीख	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	सू.	ग.	चं.	ग.	मं.	ग.	बु.	ग.	गु.	ग.	शु.	ग.	श.	ग.	रा.	स्प.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ४ गुरी

७ गु. | ५ मं. | ६ के.चं.बु. | ८ | ४ | ९ | ३ | १० | १२ श.रा. | २ चं | ११ | १

ति. १० गुरी

८ ग. | ७ गु. | १० | ११ | १२ श. [illegible]

१२ जन्मा सायं धन्वन्तरिजन्मोत्सवः कार्यः। [illegible] मनुजास्त्वतीर्थं लोके। श्रीवत्सदानमाहात्म्यं [illegible] भौमदिवः स्नानं कार्यम्। [illegible] यमलोकं न पश्यति॥ अथ ति. १४ सूर्ये हनुमज्जन्मतिथिः [illegible] स्कन्दे वाल्मीकिरामायणे सुन्दरकाण्डे [illegible] त्रिदिवे सीता न द्रक्ष्यामि कुत्रचन। [illegible] लक्ष्मणस्य महाबल। राजा वानर सुग्रीवो [illegible] न वदे प्रतिवाक्यं कुर्वन्॥ त्रिलोकनिरूप [illegible] प्रार्थना मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। [illegible] पाद्यआर्घ्यादिभिः भक्त्या [illegible] ॥ अथ अमायां [illegible]

[illegible] अथ नरकचतुर्दशी ति. १४ सूर्ये विधुदयेऽस्य [illegible] दीपावल्यां विधुदये। यः करोति [illegible] श्रीरामादेवी हनुमन्तमजीजनत् सौख्यवर्धनं [illegible] अनेनैव हि वेगेन गमिष्यामि सुरालयम्॥ [illegible] सह सीतया। तथा च तस्य जननीमन्याः [illegible] हनुमान्यदर्शनेच्छा निहन्ता मारुतात्मजः॥ न रावण [illegible] समुद्रांश्च गमिष्यामि मिषतां सर्वरक्षसाम्॥ [illegible] उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं [illegible] नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां [illegible] स्त्रीभिः स्वगृहात् लक्ष्मीनिस्सारणं कार्यमिति। एवं गते निशीथे [illegible] धात्रीफलं कार्तिके च पुष्पाश्चैव [illegible]

[illegible] व्रताधिकारी अथ कार्तिकस्नानविधिः तत्र सङ्कल्पः [illegible] कार्तिकमाहात्म्ये [illegible] तुलसीमाहात्म्यं पाद्मे—तुलसीकाननं कार्तिके [illegible] तुलसीं विष्णुप्रियाम् [illegible] फलम्—ति. ११ शुक्ले [illegible]

ति. १ चन्द्र-शनिचन्द्रयुतिः रे. प. ११।२८ शनिर्दक्षिणे। ति. ११ शुक्र-भौमचन्द्रयुतिः रे. प. ८।५६ कुजोत्तरे। ति. १२ शनी-गुरुचन्द्रयुतिः रे. प. १८।५३ गुरूदक्षिणे।
ति. १० चन्द्र-बुधचन्द्रयुतिः रे. प. ७।५८ चन्द्रोत्तरे।

स्नानायाः। आदावन्तेन ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ अथ कार्तिके धात्रीमाहात्म्यमाह—[illegible] सा मे भूयात् सर्वदेवानां॥ धनदायै नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपे धने। भवन्तु त्वत्प्रसादेन [illegible] जनं निद्रावशात्प्राने। तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिमवादनैः। निष्कास्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात्॥ [illegible]

परीक्षितः–भृत्या बलिसमः। भाग०–चलन्ति गिरयः कामं युगान्तपवनाहताः। कृच्छ्रेऽपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मनः॥ पुत्रदारैः सुखैश्चैव वियुक्तस्य धनेन वा। मग्नस्य व्यसने कृच्छ्रे धृतिः श्रेयस्करी नृप॥ धैर्येण युक्तं सततं शरीरं न विशीर्यते। विशोकता सुखं धत्ते–धत्ते चारोग्यमुत्तमम्। आरोग्य[illegible]॥ [illegible]॥

दि.प.	मा.प.	ति.	वा	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा.	चं.	फ.	रा.	चन्द्रराशि सचारः रा.	घ. प.	घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. द.	चन्द्रास्त घं. मि.
२८	१६	१	मं.	४८ ४०	रा.	१ ४९	चि.	५३ ५६	प्रा.	२२ ४६	वि.	९ ४	दि.	९ ५९	कि.	२१ २	१४ ४६	व.	४८ ४०	१ ४९	ध्वांक्ष	२२	२८	५	१६	३०				६ २१	५ ३९	११ ०	१७ ४१
२८	१२	२	बु.	४३ १८	रा.	२३ ४१	वि.	५५ ४	रा.	४ २३	प्री.	५३ ३८	प्रा.	७ १४	वा.	१५ ५०	१२ ४५	कौ.	४३ १८	२३ ४१	धाता	२३	२९	६	१७	१	वृ.	४० ५९	२२ ४५	६ २२	५ ३८	११ २१	१८ २५
२८	८	३	बृ.	३७ ३२	रा.	२१ २३	अ.	५१ ३	रा.	२ ४७	सौ.	४७ ९	रा.	१ १४	तै.	१० २५	१० ३३	ग.	३७ ३२	२१ २३	आनन्द	२४	१	७	१८	२				६ २२	५ ३८	११ ४२	१९ १७
२८	५	४	शु.	३१ ३०	सा.	१८ ५९	ज्ये.	४६ ५१	रा.	१ ७	शो.	३९ १८	रा.	२२ ६	व.	४ ३१	८ ११	वि.	५८ २८	५ ४६	चर	२५	२	८	१९	३	ध.	४६ ५१	१ ७	६ २३	५ ३७	१२ ३	२० १५
२८	१	५	श.	२५ २५	दि.	१६ ३४	मू.	४२ ४१	रा.	२३ २८	अ.	३१ २६	सा.	१८ ५८	वा.	२५ २५	१६ ३४	कौ.	५२ २८	३ २३	गद	२६	३	९	२०	४				६ २४	५ ३६	१२ २३	२१ २०
२७	५८	६	सू.	१९ ३१	दि.	१४ १३	पू.	३८ ४७	रा.	२१ ५५	सु.	२३ ४३	दि.	१५ ५४	तै.	१९ ३१	१४ १३	ग.	४७ ०	१ १२	शुभ	२७	४	१०	२१	५	म.	५२ ५५	३ ३५	६ २४	५ ३६	१२ ४४	२२ २७
२७	५४	७	चं.	१४ २९	दि.	१२ १३	उ.	३५ २०	रा.	२० ३३	धृ.	१६ १७	दि.	१२ ५६	व.	१४ २९	१२ १३	वि.	४२ ५	२३ १५	मृत्यु	२८	५	११	२२	६				६ २५	५ ३५	१३ ४	२३ ३३
२७	५१	८	मं.	९ ४१	दि.	१० १८	श्र.	३२ ३१	रा.	१९ २६	शू.	९ ५१	दि.	१० २२	व.	९ ४१	१० १८	वा.	३७ ४१	२१ ३०	लुम्ब	२९	६	१२	२३	७				६ २६	५ ३४	१३ २४	० ३६
२७	४८	९	बु.	५ ४१	दि.	८ ४३	ध.	३० ३३	सा.	१८ ४०	गं.	५४ ३५	प्रा.	२१ ४८	कौ.	५ ४१	८ ४३	तै.	३४ ९	२० ६	मित्र	३०	७	१३	२४	८	कुं.	१ ३२	७ १	६ २६	५ ३४	१३ ४४	१ ३६
२७	४४	१०	बृ.	२ ३७	दि.	७ ३०	श.	२९ ३४	सा.	१८ १७	ध्रु.	५३ ३३	रा.	३ ५२	ग.	२ ३७	७ ३०	व.	३१ २७	११ ६	वज्र	३१	८	१४	२५	९				६ २७	५ ३३	१४ ४	२ ३२
२७	४१	११	शु.	५९ ५६	प्रा.	५ ४२	पू.	२९ ४६	सा.	१८ २२	व्य.	४९ ५०	रा.	२ २४	वि.	० ३७	६ ४२	व.	३० ५१	१९ ६	ध्वांक्ष	१	९	१५	२६	१०	मी.	१४ ४३	१२ २१	६ २८	५ ३२	१४ २३	३ २६
२७	३८	१२	श.	६० ०	स.	×	×	उ.	३१ ११	सा.	१८ ५७	ह.	४७ ७	रा.	१ १९	कौ.	३० ४	१८ ३०	तै.	६० ०	× ×	धूम्र	२	१०	१६	२७	११			६ २८	५ ३२	१४ ४२	४ १९
२७	३५	१३	सू.	० १९	प्रा.	६ ३७	रे.	३३ ५१	रा.	२० ३	व.	४५ २४	रा.	० ३९	तै.	० १९	६ ३७	ग.	३१ १२	१८ ५८	प्र. मा.	३	११	१७	२८	१२	मे.	३३ ५१	२० २	६ २९	५ ३१	१५ १	५ १३
२७	३१	१४	चं.	२ ६	प्रा.	७ २०	अ.	३७ ४७	रा.	२१ ३६	सि.	४४ ३९	रा.	० २१	व.	२ ६	७ २०	वि.	३३ ३५	१९ ५६	रक्ष	४	१२	१८	२९	१३				६ ३०	५ ३०	१५ २०	× ×
२७	२८	१५	मं.	५ ३	दि.	८ ३५	भ.	४२ ४६	रा.	२३ ३७	व्य.	४४ ४५	रा.	० २४	व.	५ ३	८ ३५	बा.	३७ ५	२१ २१	मुसल	५	१३	१९	३०	१४	वृ.	५९ १३	६ १२	६ ३०	५ ३०	१५ ३८	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० कार्तिकशुक्लपक्षः (अक्टूबर ता० २२···३१, नवम्बर ता० १···५ (१९६८) याम्यायनं, याम्यगोलः, शरदृतुः।

इष्टिः। अन्नकूटः। गोक्रीडनम्। काश्यां गोवर्धनपूजा। मार्गपालीबन्धनम्। यष्टयाकर्षणम्। नीराजनं प्रातः। सायं मङ्गलमालिका। [illegible]

चन्द्रदर्शनम्, मु. ४५ फलं समर्घकरम्। यमद्वितीया २। भ्रातृ २। भगिनीगृहे भोजनम्※। चित्रगुप्तपूजा। लेखन्यादिपूजा। [illegible] अनु. ४ च. शुक्रः ३५।१२।

अथ ऋतुमतीस्नानगर्भाधानप्रसूतिकास्नानौषधसेवनजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनदोलारोहणखट्वारोहण[illegible] *पूर्वेषाढे बुधार्कः ३२।४८।

भ. ४।३१ (दि. ८।११) उ. ३१।३० (सा. १८।५९) वा.। वैनायकी ४ व्रतम्। अद्य विष्टेःपर धान्यच्छेदनकणमर्दननृत्यारम्भादि मु. [illegible]

सूर्यषष्ठीव्रतारम्भः (संयतेत्यादिनाम्ना लोके प्रसिद्धम्, तच्चैकभुक्तेन भवितव्यम्)। पञ्चम्यां लतापादपारोपणकणमर्दनासवारिष्टनि[illegible]

सूर्यषष्ठीव्रतम् ६ (छठव्रतम्)। सम्पूर्णदिनमुपोष्य सायंकालीनार्घ्यदानम्। अद्यान्तरायां प्रसूतिकास्नानपूर्वदिग्गमनधान्यच्छेदनादि मु. [illegible]

भ. १४।२१ (दि. १२।१३) उ. ४२।५ (रा. २३।१५) वा.। सूर्योदये अर्घदत्वा पारणा चार्कव्रतीनाम्। अद्य सप्तम्यामृतुमतीस्नान[illegible]

गोपाष्टमी ८ व्रतम्। यमदंष्ट्रारम्भः। कार्तिकान्ते दिनान्यष्टावाद्यावग्रहणस्य च। यमदंष्ट्रेति विख्याता स्वल्पाहारी स जीवति। [illegible]

अक्षयनवमी ९ व्रतम् (सरत्नगर्भकूष्माण्डादिदानम्। अयोध्यापरिक्रमा। त्रिरात्रव्रतारम्भः। सौवर्णीं विष्णुमूर्तिं सम्पूज्य[illegible]

भ. ३१।३७ (रा. १९।६) उ.। प्रबोधिनी ११ एकादशीव्रतं स्मार्तानाम्※। अद्य विष्टेःपूर्वं सूतिकाप्यौषधसेवनस्तनपानजातकर्म[illegible]

भ. ०।३७ (प्रा. ६।४२) या.। प्रबोधिनी ११ एकादशीव्रतं वैष्णवानाम्। शुभकर्मणि तिथित्रयदोषोऽस्त्यचेयः। ज्ये. ३ च. शुक्रः ५[illegible]

शनिप्रदोषः। यायिजयप्रयोगः। पश्चिमोत्तरदिग्गमनयोर्लग्नंचिन्त्यम्। स्वा. ४ च. रविः ४९।५१।

वैकुण्ठचतुर्दशी १४ (श्रीविष्णुपूजायां रात्रिव्यापिनीग्राह्या)। पंचकनिवृत्तिः ३३।५१ (रा. २०।२)। अत्यावश्यके यत्रोदस्या प्र[illegible]

भ. २।६ (दि. ७।२०) उ. ३३।३५ (रा. १९।५६) या.। व्रताय कार्तिकी पूर्णिमा १५। श्रीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनम्। विष्टेःपरा[illegible] उ. फा.३

स्नानदानादौ कार्तिकीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा। भीष्मपंचकनिवृत्तिः। कार्तिकस्नानदानयमनियमादिसमाप्तिः। दीपदानम्। कार्ति[illegible] वर्गोत्तमः ४।२२।

† भक्षणोपधसेवनपश्चिमदिग्गमननववस्त्रभूषाधारणादि मु.। स्वा. ३ च. रविः ३०।४०। उ. फा. २ च. कन्यायां कुजः ४१।३४[illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

तिथय	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सि. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
१मं.	१७ २७	१९ ५	२१ १	२३ १४	१ ३२	३ ४६	५ ५९	८ १५	१० २२	१२ ३८	१४ २४	१५ ५६
२बु.	१७ २३	१९ १	२० ५७	२३ १०	१ २८	३ ४२	५ ५५	८ ११	१० २८	१२ ३४	१४ २०	१५ ५२
३बृ.	१७ १९	१८ ५७	२० ५३	२३ ६	१ २४	३ ३८	५ ५१	८ ७	१० २४	१२ ३०	१४ १६	१५ ४८
४शु.	१७ १५	१८ ५३	२० ४९	२३ २	१ २०	३ ३४	५ ४७	८ ३	१० २०	१२ २६	१४ १२	१५ ४४
५श.	१७ ११	१८ ४९	२० ४५	२२ ५८	१ १६	३ ३०	५ ४३	७ ५९	१० १६	१२ २२	१४ ८	१५ ४०
६सू.	१७ ७	१८ ४५	२० ४१	२२ ५४	१ १२	३ २६	५ ३९	७ ५५	१० १२	१२ १८	१४ ४	१५ ३६
७चं.	१७ ३	१८ ४१	२० ३७	२२ ५०	१ ८	३ २२	५ ३५	७ ५१	१० ८	१२ १४	१४ ०	१५ ३२
८मं.	१६ ५९	१८ ३७	२० ३३	२२ ४६	१ ४	३ १८	५ ३१	७ ४७	१० ४	१२ १०	१३ ५६	१५ २८
९बु.	१६ ५५	१८ ३३	२० २९	२२ ४२	१ ०	३ १४	५ २७	७ ४३	१० ०	१२ ६	१३ ५२	१५ २४
१०बृ.	१६ ५१	१८ २९	२० २५	२२ ३८	० ५६	३ १०	५ २३	७ ३९	९ ५६	१२ २	१३ ४८	१५ २०
११शु.	१६ ४७	१८ २५	२० २१	२२ ३४	० ५२	३ ६	५ १९	७ ३५	९ ५२	११ ५८	१३ ४४	१५ १६
१२श.	१६ ४३	१८ २१	२० १७	२२ ३०	० ४८	३ २	५ १५	७ ३१	९ ४८	११ ५४	१३ ४०	१५ १२
१३सू.	१६ ३९	१८ १७	२० १३	२२ २६	० ४४	२ ५८	५ ११	७ २७	९ ४४	११ ५०	१३ ३६	१५ ८
१४चं.	१६ ३५	१८ १३	२० ९	२२ २२	० ४०	२ ५४	५ ७	७ २३	९ ४०	११ ४६	१३ ३२	१५ ४
१५मं.	१६ ३१	१८ ९	२० ५	२२ १८	० ३६	२ ५०	५ ३	७ १९	९ ३६	११ ४२	१३ २८	१५ ०

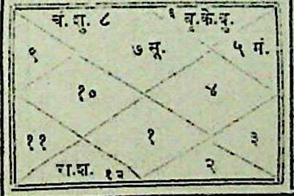
ति. ३ गुरौ-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. १२।११ चन्द्रोदक्षिणे।

ति. १३ रवौ-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. १४।८ शनिर्दक्षिणे।

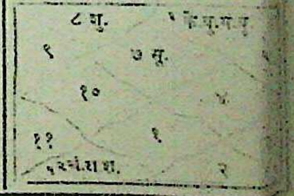
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४५ ५६	६ ५ ३४ ४६	६ १६ ५८ ४३	४ २५ १० ५७	५ २२ २ १०	५ ६ ३ १३	७ ११ ७ २९	११ २० ३४ [illegible]	११ १८ ४२ ४२	५ १८ ४२ ४२
४५ ५४	६ ६ ३४ ४१	७ १ ९ ५	४ २५ ४७ २९	५ २२ १७ २१	५ ६ १५ ३१	७ १२ २० १३	११ २० २९ १५	११ १८ ३९ ३२	५ १८ ३९ ३२
४५ ५२	६ ७ ३४ ३८	७ १५ २५ ५३	४ २६ २३ ५९	५ २२ ३८ २५	५ ६ २७ ४६	७ १३ ३२ ५६	११ २० २४ २१	११ १८ ३६ २१	५ १८ ३६ २१
४५ ५१	६ ८ ३४ ३८	७ २९ ४५ ४५	४ २७ ० ३०	५ २३ ५ ९	५ ६ ३९ ५७	७ १४ ४५ ३५	११ २० १९ ४८	११ १८ ३३ १०	५ १८ ३३ १०
४५ ५०	६ ९ ३४ ४०	८ १४ ४ ४२	४ २७ ३६ ५७	५ २३ ३७ २५	५ ६ ५२ ५	७ १५ ५८ १४	११ २० १५ ९	११ १८ २९ ५९	५ १८ २९ ५९
४५ ४८	६ १० ३४ ४३	८ २८ १९ ३	४ २८ १३ २४	५ २४ १४ ५१	५ ७ ४ १०	७ १७ १० ४९	११ २० १० ३३	११ १८ २६ ४९	५ १८ २६ ४९
४५ ४७	६ ११ ३४ ४८	९ १२ २५ ३५	४ २८ ४९ ४९	५ २४ ५७ ११	५ ७ १६ ११	७ १८ २३ २३	११ २० ६ १	११ १८ २३ ३८	५ १८ २३ ३८
[illegible]	६ १२ ३४ ५६	९ २६ २१ ३२	४ २९ २६ १२	५ २५ ४४ १७	५ ७ २८ ९	७ १९ ३५ ५४	११ २० १ ३३	११ १८ २० २७	५ १८ २० २७
४५ ४४	६ १३ ३५ ६	१० १० ४ ३५	५ ० २ ३१	५ २६ ३५ २५	५ ७ ४० २	७ २० ४८ २३	११ १९ [illegible]	११ १८ १७ १६	५ १८ १७ १६
४५ ४३	६ १४ ३५ १७	१० २३ ३३ ९	५ ० ३८ ५१	५ २७ ३० ४५	५ ७ ५१ ५२	७ २२ ० ५१	११ १९ [illegible]	११ १८ १४ ६	५ १८ १४ ६
४५ ४१	६ १५ ३५ ३१	११ ६ ४६ २१	५ १ १५ ८	५ २८ २८ ६	५ ८ ३ ३८	७ २३ १३ १५	११ १९ ४८ २२	११ १८ १० ५५	५ १८ १० ५५
४५ ३९	६ १६ ३५ ४७	११ १९ ४४ २	५ १ ५१ २३	५ २९ ३२ ४९	५ ८ १५ २१	७ २४ २५ ३९	११ १९ ४४ ५७	११ १८ ७ ४४	५ १८ ७ ४४
४५ ३७	६ १७ ३६ ५	० २ २६ ५१	५ २ २७ ३८	६ ० २८ ५८	५ ८ २६ ५९	७ २५ ३७ ५७	११ १९ [illegible]	११ १८ ४ ३४	५ १८ ४ ३४
४५ ३६	६ १८ ३६ २४	० १४ ५६ ११	५ ३ ३ ५०	६ १ ४८ १५	५ ८ ३८ ३३	७ २६ ५० १५	११ १९ [illegible]	११ १८ १ २३	५ १८ १ २३
४५ ३४	६ १९ ३६ ४६	० २७ १४ ५	५ ३ ४० ०	६ ३ ० २५	५ ८ ५० ३	७ २८ २ ३०	११ १९ [illegible]	११ १७ ५८ १२	५ १७ ५८ १२

ति. ४ शुक्रे



ति. ११ गुरौ



[illegible] वलि प्रति त्रिविक्रम [illegible] हृष्टाः स्वर्ण- [illegible] भविष्यति दिवानिशि॥ [illegible] सुरारते पुज्यं [illegible] दानवदैत्यानाम्रणीः कीर्ति- [illegible] ध्यानात् क्षितौ [illegible] शप्तो ब्रह्मो [illegible] एष मे प्रापितः स्थानं [illegible] विन्द- [illegible] निवसतां संभवन्ति [illegible] किमुतापरे। [illegible] अन्नकूटगोवर्धनपूजा- [illegible] ऐश्वर्यं च सदा सौख्य [illegible] लोकपालानां धेनुरूपेण [illegible] महाभारते-गावः

ममेच्छया॥ इन्द्रसेन महाराज याहि भो भद्रमस्तु ते। सुतल स्वर्गिभिः [illegible] पुत्रपौत्रादिसन्ततिः। ऐश्वर्यं च सदा सौख्य सूदयिष्यति॥ रक्षिष्ये सर्वतोऽहं त्वां सानुगं सपरिच्छदम्। सदा सन्निहितं वीरं [illegible] लोकपालानां धेनुरूपेण विरये व्रतराजे श्रीकृष्ण उवाच—एतत्सेवाप्रभावेण बलं लब्धं मया महत्। [illegible] गोपूजने फलमनन्तम्—महाभारते-गावः भवेद् गोवर्धनोत्सवात्॥ गोवर्धनपूजने मन्त्रः। गोवर्धन धराधार गोकुलत्राणकारक [illegible] भारत॥ गोभि- संस्थिताः। घृतं वहन्ति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु॥ अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे [illegible] गोषु पाप्मा न विद्यते। मातरः श्रेष्ठाः पवित्राश्च पावन्यो जगदुत्तमाः। [illegible] स्तुल्य न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत। कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव [illegible] ति. ९ बुधे अक्षयनवम्यां दानादि- सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः॥ ※द्वितीयायाम्—[illegible] ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः। आब्र- कृते अक्षयपुण्यादिः। अस्याम् ॐ धात्र्यै नमः—इत्यादि मन्त्रैः—धात्रीपूजां कृत्वा [illegible] दामोदरनिवासायै धात्र्यै देव्यै नमोनमः। स्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः॥ [illegible] ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। दास्यामि सुनेत्रास्तेजगत्कानि धाति दीप नमोऽस्तु ते—इति परिक्रमादिकं विधाय [illegible] त्वयि सुप्ते जगन्नाथ [illegible] कार्या। [illegible] यथा—आग्नेयन्तु यदा ऋक्षं [illegible] कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे कार्तिकेयदर्शनम्।

विष्णवे तुभ्यं पितॄणां तारणाय च इति ब्राह्मणाय दद्यात्॥ ※ततश्चैकादश्याम्—ब्रह्मेन्द्रुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दित वन्दनीयः। बुध्यस्व देवेश जगन्निवास मन्त्रप्रभावेण सुखेन देव। इयन्तु द्वादशी देव प्रबोधार्थं विनिर्मिता॥ [illegible] जगत्सुप्तं भवेदिदम्। उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गता मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव। अयं [illegible] इत्यादिना हरिं प्रार्थ्य संबोधयेत्—ततः पूर्णिमायां [illegible] भवन्ति नित्यं स्वपचा हि विप्राः। कार्तिक्यां भवति क्वचित्। महती सा तिथिर्ज्ञेया स्नानदानेषु चोत्तमा। कार्तिकपूर्णिमायान्तु सन्ध्यायां कर्तव्यस्त्रिपुरोत्सवः। दर्शनेन भवेत् प्रीतो [illegible] कीटाः पतङ्गाः मशकाश्च वृक्षाः जले स्थले ये विचरन्ति जीवाः। दृष्ट्वा [illegible] जन्मभागिनो भवन्ति नित्यं स्वपचा हि विप्राः।

 मन्दोदरीविलापः—सीतां सर्वानवद्याङ्गीमरण्ये विजने शुभाम् । आनयित्वा च तां दीनां छद्मनात्मस्वदूषणाम् । अप्राप्य चैव तं कामं मैथिली संगमे कृतम् । पतिव्रतायास्तपसा नूनं दग्धोऽसि मे प्रभो ॥ अवश्यमेव लभते फलं पापस्य कर्मणः । भर्तुः पर्यागते काले कर्तानास्त्यत्र संशयः । शुभकृच्छुभमाप्नोति पापकृत् पापमश्नुते । विभीषणः सुखं प्राप्तस्त्वं प्राप्तः पापमीदृशम् ।

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	न.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	यो.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगाः	अ.	फा	वं.	क.	रा.	चन्द्रराशि संचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रां. द.	चन्द्रोदय घं. मि.
[illegible]																														

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० मार्गशीर्षकृष्णपक्षः (नवम्बर ता० ६····२०, सन् १९६८) याम्यायनं, याम्यगोलः, शरदृतुः वृश्चिकार्कात्हेमन्तर्तुश्च ।

इष्टिः । कार्तिकव्रतस्य पारणा । विशाखायामर्कः ८।२९ । रात्रिशेषे रोहिण्यां नववस्त्रभूषाधारणलतागुल्मवृक्षाद्यारोपणपूर्वदिग्गमनादि मु. । [illegible]

भ. ४६।२५ (रा. ११।०) उ. । अद्य विष्टेः पूर्वं प्रसूतिकास्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनलतारोपणनिष्क्रमण[illegible]

भ. १९।१३ (दि. १४।१३) वा. । गणेश ४ व्रतम् । अद्य आदौ विष्टिस्ततो रिक्तादोषेण शुभकर्ममुहूर्ताभावः । चतुर्थ्यां स्थापिकार्यो[illegible] । स्वात्यां बुधः [illegible]

श्री मालवीयवर्द्धदिनम् । चतुर्थ्यां रात्रिहीनबलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. । विशा. २ च. रविः २७।६ ।

अद्य पुनर्वसुज्येष्ठायोगे सूतिकावस्त्राद्यधारणस्तनपाननिर्गमनमूलभक्षणगूढीकर्मदक्षिणदिग्गमनादि मु. । उ. फा. ४ च. गुरुः ४४।४९ । म. २ च. बुधः [illegible]

भ. ३३।३१ (रा. १९।५८) उ. । तिथिदानात् विष्टेः पूर्वं सामान्यशुभकर्मणां कृते शोभनकालः । स्वा. २ च. बुधः ०।२२ । तुले शुक्रः ५९।३१ ।

भ. ५।१ (दि. ८।३५) वा. । विष्टेः परं पुष्ये पुंसवनसीमन्तोन्नयनशुभरक्षाबन्धनधारणोत्तराभिक्षाचारादिदिग्गमनादि मु. । विशा. ३ च. रविः [illegible]

कालभैरवाष्टमी ८ । सायंकाले भैरवोत्पत्तिः । अद्य सार्धे त्रिदिनकर्मणां कृते शोभनकालः । स्वा. ३ च. बुधः १७।१९ ।

पूर्वफल्गुन्यां रोगविमुक्तस्नान मु. ।

भ. ८।२५ (दि. ११।५८) उ. ३८।२ (रा. २१।४९) वा. । अद्य वैधृतेः परं नववस्त्रभूषाधारणलतागुल्मवृक्षाद्यारोपणपूर्वदिग्गमनादि मु. । [illegible]

उत्पन्ना ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । विशाखा ४ च. सं. वृश्चिके चार्कः ३।१ (दि. ७।४९), मु. ४५ फर्ष समर्घंकरम् । [illegible]

वड़्मार्गशीर्षारम्भः । तिथिदानात् विविधशुभकर्मणां मुहूर्तोऽभावः । विशाखायां बुधः २६।५१ ।

भ. २२।८ (रा. १८।१६) उ. ५६।४१ (प्रा. ५।१८) वा. । सोमप्रदोषः । मासशिवरात्रिः । अद्य विशाखायां जातकर्मनामकरण[illegible]

अनुराधायामर्कः २०।३० (दि. १७।५०) । चतुर्दश्यां विशाखायोगे स्थापितजलयोगः । वि. २ च. बुधः ४१।२१ । बुधास्तं प्राच्याम् [illegible]

स्नानदानश्राद्धादौ दर्शः ३० । प्रतिपदि गते विहितकर्मणां कृते शोभनकालः ।

विवाह-मुहूर्ताः

ति. १० रवौ-पूर्वफाल्गुन्यांसैर्क-[illegible]

ति. ११ चन्द्रे-निर्दोषरं स्वात्यां ॥।३॥। रे. १ लग्नं विलयम् ।

ति. १४ बुधे-स्वात्यां [illegible]

ति. २० बुधे-मैत्रे ॥।३॥ रे. ८ आवश्यके ल. गोधूलि वा. ल. ४ मे. वा. ।

※वर्णितम् ॥ हनुमानपि विभाग्य सर्वं मुश्राव तस्वतः । ※[illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

[illegible]
[illegible]

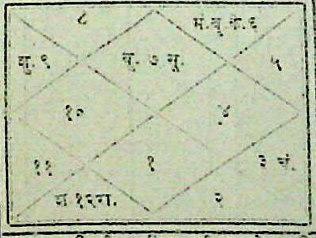
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतः

मि. मा.	स्प.	सू.	स्प.	चं.	स्प.	मं.	स्प.	बु.	स्प.	बृ.	स्प.	शु.	स्प.	श.	स्प.	रा.	स्प.	के.
[illegible]																		

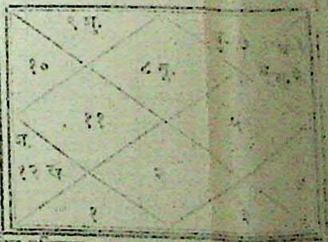
ति. ११ शनौ-नक्षत्रयुतिः र. घ. १६।३ गुरुर्दक्षिण । अत्रैव कुजचन्द्रयुतिः र. घ. २१।४६ चन्द्रोदक्षिणे ।

ति. १४ कुजे-बुधचन्द्रयुतिः र. घं. २०।४८ चन्द्रोदक्षिणे ।

ति. ४ शनौ



ति. ११ शनौ



[illegible] ॥ रामं प्रति [illegible] भजस्व [illegible] । जगन्मातुः [illegible] । विलेपतोऽयो [illegible] संवादः स्मरणीयः । वा. [illegible] सीतां निरानन्दां तपस्विनीम् । साकारैर्मधुरै- [illegible] मूढमानास्तनोदरम् । अदर्शन- [illegible] ॥ कामये त्वां विशालाक्षि बहुमन्यस्व मां प्रिये । [illegible] ॥ भव मैथिलि भार्या मे मोहमेनं विसर्जय ॥ [illegible] ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सीता रौद्रस्य [illegible] ॥ दुःखार्ता रुदती सीता वेप- माना तपस्विनी । चिन्तयन्ती वरारोहा पतिमेव पतिव्रता । [illegible] न मां प्रार्थयितुं युक्तस्त्वं सिद्धिमिव पापकृत् । अकार्यं न मया कार्यमेकपत्न्या विगर्हितम् । [illegible] एवमुक्त्वा तु वैदेही रावणं तं यशस्विनी । रावणं पृष्ठतः कृत्वा भूयो- वचनमब्रवीत् ॥ नाहमौपयिकी भार्या परभार्या सती तव । [illegible] निशाचर । आत्मानमुपमां कृत्वा स्वेषु दारेषु रम्यताम् ॥ अतुष्टं स्वेषु दारेषु चपलं चपलेन्द्रियम् । [illegible] ॥ अनन्या राघवेणाहं भास्करेण यथा प्रभा ॥ साधु रावण रामेण मां समानय दुःखिताम् । [illegible] ॥ सीतायाः वचनं श्रुत्वा परुषं राक्षसेश्वरः । प्रत्युवाच ततः सीतां विप्रियं प्रियदर्शनाम् ॥ संनियच्छति मे क्रोधं त्वयि कामः समुत्थितः । [illegible] ॥ वामः कामो मनुष्याणां यस्मिन् किल निबध्यते । जने तस्मिंस्त्वनुक्रोशः स्नेहश्च किल जायते ॥ [illegible] ॥ एवमुक्त्वा तु वैदेहीं रावणो राक्षसाधिपः । क्रोधसंरम्भसंयुक्तः सीता- मुत्तरमब्रवीत् ॥ [illegible] ॥ [illegible] भर्तारं नाभिनन्दतीम् । मम त्वां प्रातराशार्थे सूदा- श्छेत्स्यन्ति लेशशः ॥ [illegible] । सीतामादवासयामासुस्तर्जिता तेन रक्षसा ॥ [illegible] । तस्य धर्मात्मनः पत्नीं स्नुषां दशरथस्य च कथं व्याहरतो मां ते न जिह्वा पाप शीर्यति ॥ असंदेशात्तु रामस्य तपसश्चानुपालनात् । न त्वा कुर्मि दशग्रीव भस्म भस्मार्ह तेजसा ॥ [illegible] ॥ न मानुषी राक्षसस्य भार्या भवितुमर्हति । कामं खादत मां सर्वा न करिष्यामि वो वचः ॥ दीनो वा राज्यहीनो वा यो मे भर्ता स मे गुरुः । तं नित्यमनुरक्ताऽस्मि यथा सूर्यं सुवर्चला ॥ यथा शची महाभागा शक्रं समुपतिष्ठति । अरुन्धती वसिष्ठं च रोहिणी शशिनं यथा । लोपामुद्रा यथाऽगस्त्यं सुकन्या च्यवनं यथा । सावित्री सत्यवन्तं च कपिलं श्रीमती यथा । सौदासं मदयन्तीव केशिनी सगरं यथा । नैषधं दमयन्तीव भैमी पतिमनुव्रता । [illegible] रामं [illegible] । ततः सीतां समस्तास्ता राक्षस्यो विकृता- ननाः । परुषं परुषानर्हामूचुस्तद्वाक्यमप्रियम् ॥ राक्षसीनां वचः श्रुत्वा सीता पद्मनिभेक्षणा । [illegible] वचनमब्रवीत् ॥ [illegible] । रावणं नोपतिष्ठेयं किं प्रलापेन※

भारते—यद्यद्धि किंचित् संधाय पुरुषस्तप्यते तपः। सर्वमेतदवाप्नोति विद्यया चेति नः श्रुतम् ॥ दुरन्वयं दुष्प्रधर्षं दुरापं दुरतिक्रमम् । सर्वं वै तपसाऽभ्येति तपोहि बलवत्तरम् । प्रजापतिरिदं सर्वं तपसैवासृजत्प्रभुः । तथैव वेदानृषयस्तपसा प्रतिपेदिरे ॥ इमानीष्टविभागानि फलानि तपसः सदा ॥ [illegible] २७

दि.मा. त्र.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	न.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	यो	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	क.
२६	४४	१	बु.	१३	४	दि.	११	५३	अ.	१०	४१	दि.	१०	५६	अ.	[illegible]	२५	प्रा.	[illegible]	५२	व.	१३	४	११	१३	बा.
२६	४१	२	शु.	७	१०	दि.	९	३२	ज्ये.	६	३२	प्रा.	९	१७	वृ.	४७	४०	रा.	१	४४	कौ.	७	१०	९	३२	तै.
२६	३९	३	श.	५४	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	मू.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	शू.	३९	५२	रा.	२२	३७	ग.	१	१५	७	१०	व.
२६	३७	५	सू.	५०	१४	रा.	२	४६	उ.	५४	५३	रा.	४	३८	गं.	३२	२१	रा.	१९	३७	व.	२२	५३	१५	१०	बा.
२६	३५	६	चं.	४५	३०	रा.	०	५३	श्र.	५१	५८	रा.	३	२८	वृ.	२५	१२	दि.	१६	४६	कौ.	१७	५२	१३	१०	तै.
२६	३२	७	मं.	४१	३३	रा.	२३	१९	ध.	४९	४८	रा.	२	३७	ध्रु.	१८	३८	दि.	१४	९	ग.	१३	३२	१२	६	व.
२६	३०	८	बु.	३८	३३	रा.	२२	७	श.	४८	३६	रा.	२	९	व्या.	१३	१८	दि.	१२	१	वि.	१०	३	१०	४	त.
२६	२८	९	गु.	३६	४०	रा.	२१	२२	पू.	४८	३१	रा.	२	७	ह.	८	२२	दि.	१०	३	बा.	७	३७	९	५	कौ.
[illegible]																										

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० मार्गशीर्षशुक्लपक्षः (नवम्बर ता० २१…३०, दिसम्बर ता० १…[illegible] सन् १९६८) याम्यायनं, याम्यगोलः, हेमन्तर्तुः ।

चन्द्रदर्शनम्, मु. १५ फलं महर्घंकरम् । इष्टिः । रुद्रोपवासः (पीड़िया इति लोके प्रसिद्धम्) । अद्य मैत्रे प्रसूतिकास्नानजातकर्म[illegible]
राष्ट्रीय मार्गशीर्षारम्भः । अद्य मूले सूतिकावस्त्राथपथ्यौषधसेवनशिशुताम्बूलभक्षणधान्यच्छेदनकणमर्दनलतावृक्षरोपणादि मु.। वधूप्रवेश[illegible]
भ. २८।२४ (सा. १८।२) उ. ५५।३२ (प्रा. ४।५३) या. । वैनायकी ४ । शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽववेयः । वि. ४ च. वृश्चिके [illegible]
नागपञ्चमी ५ (पञ्चमीनागपूजायां कार्याषष्ठीसमन्वितेत्याद्युक्तेः) । श्रीरामविवाहदिनम् । बलदेव जयन्ती (इयमेव हलधरजय[illegible]
अद्य सप्तम्यां वधूप्रवेशद्विरागमनयोः दिग्द्वारानुगं लग्नमनुसन्धेयम् । अनु. ३ च. रविः ५४।३८ । अनुराधाभे बुधः ४२।१ । ‡मूलभदा[illegible]
भ. ४१।३३ (रा. २३।१९) उ. । पञ्चकारम्भः २०।५३ (दि. १५।३) । अद्य विष्टेः पूर्वं शुभगेतरस्ताम्बरधारण मु. । पू. पा. [illegible]
भ. १०।३ (दि. १०।४३) या. । विष्टेःपरं भैषज्यसेवनलतागुल्मवृक्षाद्यारोपणासवारिष्टनिर्माणादि मु. । ह. ३ च. कुजः ३२।३० । [illegible]
रात्रिशेषे उत्तरायां प्रसूतिकास्नाननववस्त्रधारणविपणिव्यापारादि मु. । वधूप्रवेशद्विरागमनयोश्च लग्नं चिन्त्यम् । §रविः ११।१८ [illegible]
अद्य ऋतुमतीस्नानस्तनपानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनंभूम्युपवेशनखट्वारोहणशिशुताम्बूलभक्षणनवाम्बरधारणविपणिव्यापारादि मु. [illegible]
भ. ६।२१ (दि. ९।१६) उ. ३६।४१ (रा. २१।२४) या. । मोक्षदा ११ एकादशीव्रतंसर्वेषाम् । पञ्चकनिवृत्तिः ५१।५९ (रा. [illegible]
अद्य त्रयोदश्यामश्विनीयोगे प्रसूतिकास्नानभैषज्यसेवनपरिधेयरसवंदिग्गमनादि मु. । अनु. ४ च. बुधः ३१।० । ह. २ च. गुरुः ५[illegible]
सोमप्रदोषः । ज्येष्ठायामर्कः २७।४३ । अद्य काष्ठपीठनवशय्यासनादेर्भोगः शुभः । उ. षा. २ च. मकरे च शुक्रः ३६।२२ ।
भ. ४६।३ (रा. ११९) उ. । शुभकर्मण्यादौ रिक्ताविष्टिदोषश्च । ह. ४ च. कुजः १२।३० । ज्येष्ठायां बुधः २५।५७ ।
भ. १८।३२ (दि. १४।९) या. । व्रतस्नानदानादौ मार्गशीर्षीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा । विष्टेःपरं सामान्यशुभकर्मणां मु. । §१४।४५ [illegible]
¶एकादश्यां यायिजयदयोगश्च । व्यतिपातात्पूर्वं वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु. । उ. भा. ४ च. राहुः हस्त २ च. च केतुः २०।४६ ।
श्रेयश्च प्रेयश्च यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ यशस्विनी मन्युमती कुले जाता विभावरी । क्षात्रधर्मरता दान्ता विदुलादीर्घदर्शिनी ॥ [illegible]

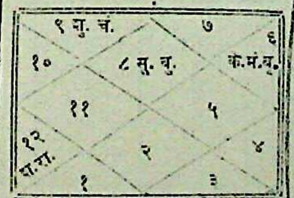
विवाह-मुहूर्त्ताः
[illegible]

दैनिक लग्नसारिणी

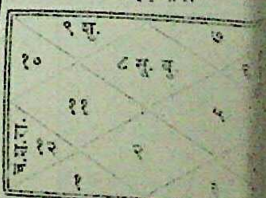
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

तिथय:	[illegible]
१बु.	[illegible]
२शु.	[illegible]
३श.	[illegible]
५सू.	[illegible]
६चं.	[illegible]
७मं.	[illegible]
८बु.	[illegible]
९गु.	[illegible]
१०शु.	[illegible]
११श.	[illegible]
१२सू.	[illegible]
१३चं.	[illegible]
१४मं.	[illegible]
१५बु.	[illegible]

तिथि ३ शनी



तिथि ११ शनी



वर्षाणि व्रतीभूतेन शुद्धचता । आराध्य पशुभर्तारं रुक्मिण्या जनिताः सुताः ॥ [illegible] आस्थाय तोषयामास शंकरम् । दत्तो भगवता पुत्रः साम्बो नाम महानय [illegible] श्रीशुकउवाच—शुक्ले मार्गशिरे पक्षे योषिद्भर्तुरनुज्ञया । आरभेत व्रतमिदं सार्वकामिकम् [illegible] म्बरे ॥ पूजयेत् प्रातराशात्प्राग्भगवन्तं श्रिया सह । अलं ते निरपेक्षाय पूर्णकाम [illegible] जुष्ट ईश गुणैः सर्वैस्ततोऽसि भगवान्प्रभुः । विष्णुपत्नि महामाये महापुरुषलक्षणे [illegible] पतये सहमहाविभूतिभिर्बलिमुपहराणीति ॥ अनेन मन्त्रेणाहरहरावाहनार्घ्य [illegible] हविश्शेषं तु जुहुयादनले द्वादशाहुतीः ॥ ॐ नमो भगवते महापुरुषाय महाविभूतिपतये [illegible] प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ भक्तिप्रह्वेण चेतसा । दशवारं जपेन्मन्त्रं ततः स्तोत्रमुदीरयेत् [illegible] अधीश्वरः साक्षात् त्वमेव पुरुषः परः ॥ त्वं सर्वयज्ञ इज्येयं क्रियेयं फलभुग्भवान् [illegible] भगवती प्रत्ययस्त्वमपाश्रयः ॥ यथा युवां त्रिलोकस्य वरदौ परमेष्ठिनौ । तथा मे [illegible] दत्वा वैनमथार्चयेत् ॥ ततः स्तुवीत स्तोत्रेण भक्तिप्रह्वेण चेतसा । यज्ञोच्छिष्टम [illegible] वासुदेव उवाच—अम्बर [illegible] मीदृशं यदि मां ॥ दूरं बलवता [illegible] च्युत मा चिरम् ॥ त्वया द्वादश [illegible] तथा ममापि तनयं प्रयच्छ मधुसूदन ॥ ततोऽहं तप [illegible] श्रीमद्भागवते ६ स्कं. १९ अ.— [illegible] स्नात्वा शुक्लदती शुक्ले वसीतालंकृता- [illegible] यथा त्वं कृपया भूत्या तेजसा महिम्नौजसा ॥ [illegible] महानुभावाय महाविभूति- [illegible] समाहितं उपाहरेत् ॥ [illegible] भवत्या संपूजयेन्नित्यं यदीच्छेत्सर्वसंपदः ॥ [illegible] इयं हि प्रकृतिः सूक्ष्मा मायाशक्तिर्दुरत्यया । तस्या [illegible] त्वं हि सर्वशरीरात्मा श्रीः शरीरेन्द्रियाशया । नामरूपे [illegible] श्रीनिवासं श्रिया सह । तन्निःसार्योपहरणं [illegible] पतिं च परया भक्त्या महापुरुषचेतसा । प्रियैस्तैस्तैरुप नमेत् प्रेमशीलः [illegible] कृष्णमभ्यर्च्य पूर्ववत् । पयः शृतेन जुहुया- [illegible] विविधद्रव्ये विभोरभीप्सितार्थं लभते पुमानिह । स्त्रीत्वेतदास्थाय [illegible] विदुलायाश्च संवादं पुत्रस्य च परन्तप । ततः

स्वयं पतिः ॥ विभूयात्सर्वकर्माणि पत्न्या उच्चावचानि च । कृतमेकतरेणापि दम्पत्योरुभयोरपि ॥ पत्न्यां कुर्यादनर्हायां पति [illegible] व्यरुणा सह सर्पिषा ॥ पाकयज्ञविधानेन द्वादशैवाहुतीः पतिः । आशिषः शिरसाऽऽदाय द्विजैः प्रीतैःसमीरिताः । प्रणम्य [illegible] लभेत सौभगं श्रियं प्रजां जीवपतिं यशो गृहम् । सत्पुत्रप्राप्तिकामैः जयकामैश्च पुरुषैः स्त्रीभिश्च महाभारते उद्योगपर्वणि १३[illegible]

ति. ३ शनौ-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. ७।३५ चन्द्रोदक्षिणे ।
ति. ११ शनौ-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. १६।५६ शनिर्दक्षिणे ।

 व्यासः। उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु। भविष्यतीत्येव मनः कृत्वासततमव्यथैः॥ किं दुरापादनं तेषां पुंसामुद्दामचेतसाम्। यैराश्रितस्तीर्थपदश्चरणव्यसनात्ययः॥ मनु—नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः। आमृत्योर्यत्नमातिष्ठन्नैनां मन्येत दुर्लभाम्॥ यद्दुष्करं यद्दुरापं यद्दुर्गं यच्च दुस्तरम्। तत्सर्वं तपसा साध्यं तपोहि दुरतिक्रमम्।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	न.	घ.	प.		घं.	मि.	यो.	घ.	प.		घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	योगः	अं.	क्रा.	त्रं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय		सूर्यास्त		र. क्रा. द.		चन्द्रोदय घं.	मि.
२६	१६	१	बृ.	५६	२३	प्रा.	५	१८	रो.	१२	८	दि.	११	३६	मा.	६०	०	स.	×	×	वा.	२३	४२	१६	१४	कौ.	५६	२३	५	१८	उत्पात	५	१४	१९	१	१४	मि.	४५	२६	०	५५	६	४५	५	१५	२२	२१	१७	१७
२६	१५	२	शु.	६०	०	स.	×	×	मृ.	१८	४३	दि.	१४	१४	मा.	०	३४	प्रा.	६	५९	तै.	२९	२	१८	२२	ग.	६०	०	×	×	मानस	६	१५	२०	२	१५						६	४५	५	१५	२२	२१	१८	६
२६	१४	२	श.	१	४१	प्रा.	७	२६	आ.	२५	६	दि.	१६	४७	शु.	१	४८	प्रा.	७	२९	ग.	१	४१	७	२६	व.	३४	६	२०	२४	मुद्गर	७	१६	२१	३	१६						६	४५	५	१५	२२	३६	१९	०
२६	१२	३	सू.	६	३१	प्रा.	९	२२	पु.	३०	५०	रा.	१९	५	शु.	२	४१	प्रा.	७	५०	वि.	६	३१	९	२२	व.	२८	३२	२२	१०	केतु	८	१७	२२	४	१७	क.	१४	२४	१२	३१	६	४६	५	१४	२२	४१	१९	५५
२६	११	४	चं.	१०	३४	दि.	१०	५९	पु.	३५	४२	रा.	२१	३	ब्र.	२	५७	प्रा.	७	५७	बा.	१०	३४	१०	५९	कौ.	४२	३	२३	३५	धाता	९	१८	२३	५	१८						६	४६	५	१४	२२	४९	२०	११
२६	१०	५	मं.	१३	३२	दि.	१२	११	श्ले.	३९	२७	रा.	२२	३३	ऐं.	२	२८	प्रा.	७	४५	तै.	१३	३२	१२	११	ग.	४४	४२	०	३९	आनन्द	१०	१९	२४	६	१९	सिं.	३९	२७	२२	३३	६	४६	५	१४	२२	५४	२१	४७
२६	९	६	बु.	१५	५२	दि.	१३	७	म.	४२	०	रा.	२३	३४	वै.	४७	३३	प्रा.	२३	११	व.	१५	५२	१३	७	वि.	४६	५	१	१२	चर	११	२०	२५	७	२०						६	४६	५	१४	२२	५९	२२	४३
२६	८	७	बृ.	१६	१८	दि.	१३	१७	पू.	४३	१९	रा.	०	६	प्री.	५५	१९	रा.	४	५४	व.	१६	१८	१३	१७	बा.	४५	५३	१	८	गद	१२	२१	२६	८	२१	क.	५८	२१	६	७	६	४६	५	१४	२३	४	२३	३८
२६	७	८	शु.	१५	२८	दि.	१२	५८	उ.	४३	२६	रा.	०	९	आ.	५१	१	रा.	३	११	कौ.	१५	२८	१२	५८	तै.	४४	१२	०	२७	शुभ	१३	२२	२७	९	२२						६	४७	५	१३	२३	९	०	३५
२६	७	९	श.	१२	५५	दि.	११	५७	ह.	४२	२७	रा.	२३	४५	सौ.	४५	५०	रा.	१	७	ग.	१२	५५	११	५७	व.	४१	२३	२३	२०	मृत्यु	१४	२३	२८	१०	२३						६	४७	५	१३	२३	१२	१	३४
२६	६	१०	सू.	९	५१	दि.	१०	४३	चि.	४०	२९	रा.	२२	५८	शो.	२९	५३	रा.	२२	४४	वि.	९	५१	१०	४३	व.	३७	५१	२१	५५	पद्म	१५	२४	२९	११	२४	तु.	११	२८	११	२२	६	४७	५	१३	२३	१६	२	३६
२६	५	११	चं.	५	५२	प्रा.	९	८	स्वा.	३७	४२	रा.	२१	५२	अ.	३३	१५	रा.	२०	५	बा.	५	५२	९	८	कौ.	३३	३०	२०	११	छत्र	१६	२५	१	१२	२५						६	४७	५	१३	२३	१९	३	४२
२६	५	१२	मं.	४४	४१	प्रा.	२१	५३	वि.	३४	१६	रा.	२०	२९	सु.	२६	४	सा.	१७	१३	तै.	१	७	७	१४	ग.	२८ ५५	२८ ४८	१६ ५	१० ६	श्रीवत्स	१७	२६	२	१३	२६	वृ.	२०	७	१४	५०	६	४७	५	१३	२३	२१	४	५३
२६	५	१४	बु.	५०	७	रा.	२	५०	अ.	३०	२२	सा.	१८	५६	धृ.	१८	२७	दि.	१४	१०	वि.	२२	५७	१५	५८	श.	५०	७	२	५०	सौम्य	१८	२७	३	१४	२७						६	४७	५	१३	२३	२३	६	६
२६	४	३०	बृ.	४४	१२	रा.	०	२८	ज्ये.	२६	९	सा.	१७	१५	शू.	१०	३४	दि.	११	१	च.	१७	९	१३	३९	ना.	४४	१२	०	२८	का. द.	१९	२८	४	१५	२८	ध.	२६	९	१७	१५	६	४७	५	१३	२३	२५		

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० पौषकृष्णपक्षः (दिसम्बर ता. ५...१९, सन् १९६८) याम्यायनं, याम्यगोलः, हेमन्तर्तुः।

इष्टिः। वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्लग्नं चिन्त्यम्। अथ प्रसूतिकास्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनखट्वारोहणशिशुताम्बूलभक्षणविपणिव्यापाराग-* अद्य मृगे वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु.। मृगे जातकर्मनामकरणान्नप्राशनखट्वारोहणशिशुताम्बूलभक्षणवान्नभक्षणदक्षिणदिग्गमनविपणिव्यापारादि मु.। भ. ३४।६ (रा. २०।२४) उ.। अद्य विष्टेःपूर्वं तृतीयायां वाणिज्यप्रदयोगः। पश्चिमदिग्गमने च लग्नं चिन्त्यम्। ज्ये. ३ च. बुधः १५।१३। भ. ६।३१ (दि. ९।२२) या.। गणेश ४ व्रतम्। अथ रिक्ताविष्टिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः। चित्राभे कुजः ५४।५९। उ. षा. ४ च. शुक्रः [illegible]। अद्य पञ्चम्यां पुष्ये जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनशिशुताम्बूलभक्षणखट्वारोहणपश्चिमेतरदिग्गमनविपणिव्यापारादि विविध मु.। ज्ये. ३ च. ... उ.षा. ३ च. शुक्रः २०।१८। वैधृतेः पूर्वमालवारिष्टनिर्माणादि मु.। *दिविविध मु.। ज्ये. २ च. रविः ४३।५८। ज्ये. २ च. बुधः २०।३८। भ. १५।५२ (दि. १३।१७) उ. ४६।५ (रा. ११।१२) या। अद्य विष्टेः परं पूर्वायां वस्तुविक्रयः शुभः। मूले धनुषि च बुधः ५।३०। श्रवसि शुक्रः [illegible]। †च. रविः ०।१। ज्ये. ४ च. बुधः [illegible]। ज्ये. ४ च. रविः १५।५२। पूर्वायां विक्रयः शुभः। उत्तरायां नवाम्बरधारणलतागुल्मवृक्षाद्यारोपण मु.। म. २ च. बुधः १।२९। श्र. २ च. शुक्रः ५।२३। श्री मालवीय जयन्ती। आवश्यके तिथिदानात् नवाम्बरधारणलतागुल्मवृक्षाद्यारोपण मु.। मू. २ च. बुधः १।२९। श्र. २ च. शुक्रः ५।२३। विष्टेःपूर्वं दशम्यां पूर्वाग्निवाहायाग्न्यदिग्गमनेदिग्द्वारानुगं लग्नं चिन्त्यम्। नवम्यां वाणिज्यप्रदयोगश्च। [illegible] भ. ४१।२३ (रा. २३।२०) उ.। मूले धनुषिचार्कः ३१।३५ (रा. १९।२५) मु. ३० फलं समम्। वाहनादिकं संक्रमणकोष्ठकाद्बोध्यम्। म. ९।५१ (दि. १०।४३) या.। अद्य ऋतुमतीस्नानसूतिकापथ्यौषधसेवनजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनशिशु[illegible]¶ सफला ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। वङ्गपौषारम्भः। तिथिक्षयदोषसत्वेप्यावश्यके मैत्रे उत्तरेतरदिग्यात्रायां लग्नं चिन्त्यम्। श्र. ३ च. गुरुः ०।१०। भ. ५५।४८ (प्रा. ५।६) उ.। प्रदोषः। मासशिवरात्रिः। शुभकर्मणि रिक्ताविधुक्षयादिदोषांत्र्यवेयः। मू. २ च. रविः ४७।१०। पूर्वाषाढायां बुधः [illegible]। भ. २२।५७ (दि. १९।५८) या.। §कुजः ३९।५३। मू. ३ च. बुधः ५८।२४। केन्द्रांशवशेन मार्गीशनिः [illegible]। स्नानदानश्राद्धादौ दर्शः ३०। श्र. ४ च. शुक्रः ५६।१५। ¶भक्षणादि मु.। एकादश्यामेव वाणिज्यप्रदयोगश्च। मू. ४ च. बुधः [illegible]।

विवाह मुहूर्त्ताः

ति. १ गुरौ रोहिण्यां मृत्युबाण[illegible] आर्द्रालग्नाभावः। मृगे च प. ४५ वा. [illegible] [illegible] रे. [illegible]
ति. २ शुक्रे मृगे रे. ६ [illegible] लग्नं चिन्त्यम्।
ति. ५ भौमे मघा में वैधृति-दोषाल्लग्नाभावः।
ति. ६ बुधे मघा में [illegible] रे. ७ विष्टेः पूर्वं [illegible]
ति. ७ गुरौ उ. फा. में [illegible] [illegible]लग्नाभावः।
ति. ८ शुक्रे उ. फा. में पूर्वदोष[illegible]
ति. ९ शनौ [illegible] [illegible] [illegible]

§[illegible]॥ अर्थोऽपि सन्ता-नगोपालमन्त्रः। ॐ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेवजगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] सम्य-क्कुर्वति। [illegible] भौमे च षष्ठी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। गुरौ गोचरभिन्नाधिष्ठानकन्यादानं च [illegible]॥ [illegible] दोषे [illegible]। गुरुचन्द्रकृते दोषे [illegible]॥ शेष २९ पृष्ठे§

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मि.	प्र.	वृ.	प्र.	मि.	प्र.	क.	प्र.	सि.	प्र.	क.	प्र.	तु.	प्र.	वृ.	प्र.	ध.	प्र.	म.	प्र.	कुं.	प्र.	मी.	प्र.
१बृ.	१४	२७	१६	५	१८	१	२०	१४	२२	३२	०	४६	२	५९	५	१५	७	३२	९	३८	११	२४	१२	५६
२शु.	१४	२२	१६	०	१७	५६	२०	९	२२	२७	०	४१	२	५४	५	१०	७	२७	९	३३	११	१९	१२	५१
२श.	१४	१८	१५	५६	१७	५२	२०	५	२२	२३	०	३७	२	५०	५	६	७	२३	९	२९	११	१५	१२	४७
३सू.	१४	१४	१५	५२	१७	४८	२०	१	२२	१९	०	३३	२	४६	५	२	७	१९	९	२५	११	११	१२	४३
४चं.	१४	९	१५	४७	१७	४३	१९	५६	२२	१४	०	२८	२	४१	४	५७	७	१४	९	२०	११	६	१२	३८
५मं.	१४	५	१५	४३	१७	३९	१९	५२	२२	१०	०	२४	२	३७	४	५३	७	१०	९	१६	११	२	१२	३४
६बु.	१४	१	१५	३९	१७	३५	१९	४८	२२	६	०	२०	२	३३	४	४९	७	६	९	१२	१०	५८	१२	३०
७बृ.	१३	५६	१५	३४	१७	३०	१९	४३	२२	१	०	१५	२	२८	४	४४	७	१	९	७	१०	५३	१२	२५
८शु.	१३	५२	१५	३०	१७	२६	१९	३९	२१	५७	०	११	२	२४	४	४०	६	५७	९	३	१०	४९	१२	२१
९श.	१३	४८	१५	२६	१७	२२	१९	३५	२१	५३	०	७	२	२०	४	३६	६	५३	८	५९	१०	४५	१२	१७
१०सू.	१३	४४	१५	२२	१७	१८	१९	३१	२१	४९	०	३	२	१६	४	३२	६	४९	८	५५	१०	४१	१२	१३
११चं.	१३	३९	१५	१७	१७	१३	१९	२६	२१	४४	२३	५८	२	११	४	२७	६	४४	८	५०	१०	३६	१२	८
१२मं.	१३	३४	१५	१२	१७	८	१९	२१	२१	३९	२३	५३	२	६	४	२२	६	३९	८	४५	१०	३१	१२	३
१४बु.	१३	३०	१५	८	१७	४	१९	१७	२१	३५	२३	४९	२	२	४	१८	६	३५	८	४१	१०	२७	११	५९
३०बृ.	१३	२५	१५	३	१६	५९	१९	१२	२१	३०	२३	४४	१	५७	४	१३	६	३०	८	३६	१०	२२	११	५४

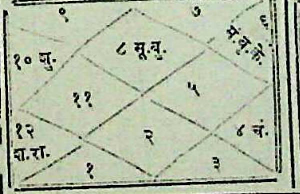
ति. ९ शनौ–गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. ५।४२ चन्द्रो दक्षिणे।
ति. १० रवौ–कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. १२।३९ चन्द्रोदक्षिणे।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

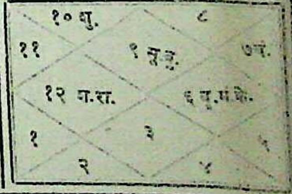
तिथयः	मि.मा.		स्प. सू.				स्प. चं.				स्प. मं.				स्प. बु.				स्प. बृ.				स्प. शु.				स्प. श.				स्प. रा.				स्प. के.			
१बृ.	४४	४१	७	२०	०	४४	१	२९	५१	५६	५	२१	२९	४	७	२०	४१	१७	५	१३	५३	७	९	३	४०	१८	११	१८	१०	१४	११	१६	२२	५०	५	१६	२२	५०
२शु.	४४	३९	७	२१	१	५४	२	११	५३	२२	५	२२	४	६	७	२२	२६	३४	५	१४	१	३०	९	४	५०	१	११	१८	९	१०	११	१६	१९	३९	५	१६	१९	३९
२श.	४४	३७	७	२२	३	५	२	२३	५८	१८	५	२२	३९	५	७	२४	११	८	५	१४	९	४८	९	५	५९	५४	११	१८	८	११	११	१६	१६	२८	५	१६	१६	२८
३सू.	४४	३६	७	२३	४	१६	३	६	१०	०	५	२३	१३	५८	७	२५	५५	३३	५	१४	१७	५८	९	७	९	३६	११	१८	७	४९	११	१६	१३	१७	५	१६	१३	१७
४चं.	४४	३४	७	२४	५	२९	३	१८	३१	२६	५	२३	४८	४९	७	२७	३९	४७	५	१४	२५	५९	९	८	१९	९	११	१८	७	१४	११	१६	१०	७	५	१६	१०	७
५मं.	४४	३२	७	२५	६	४३	४	१	५	६	५	२४	२३	३७	७	२९	२३	४७	५	१४	३३	५२	९	९	२८	३४	११	१८	६	३७	११	१६	६	५६	५	१६	६	५६
६बु.	४४	३१	७	२६	७	५८	४	१३	५२	४२	५	२४	५८	२२	८	१	७	२९	५	१४	४१	३६	९	१०	३७	५१	११	१८	६	८	११	१६	३	४५	५	१६	३	४५
७बृ.	४४	२९	७	२७	९	१४	४	२६	५५	२८	५	२५	३३	८	८	२	५०	५०	५	१४	४९	१३	९	११	४६	५८	११	१८	५	४६	११	१६	०	३४	५	१६	०	३४
८शु.	४४	२७	७	२८	१०	३०	५	१०	१३	५०	५	२६	७	५९	८	४	३३	४६	५	१४	५६	४२	९	१२	५६	०	११	१८	५	३२	११	१५	५७	२४	५	१५	५७	२४
९श.	४४	२६	७	२९	११	४८	५	२३	४७	२२	५	२६	४२	३७	८	६	१६	१६	५	१५	४	१	९	१४	४	४८	११	१८	५	२६	११	१५	५४	१३	५	१५	५४	१३
१०सू.	४४	२४	८	०	१३	७	६	७	३४	५३	५	२७	१७	१२	८	७	५८	१३	५	१५	११	१२	९	१५	१३	३०	११	१८	५	२३	११	१५	५१	२	५	१५	५१	२
११चं.	४४	२३	८	१	१४	२६	६	२१	३४	३६	५	२७	५१	४४	८	९	३९	३७	५	१५	१८	१३	९	१६	२२	२	११	१८	५	२८	११	१५	४७	५१	५	१५	४७	५१
१२मं.	४४	२१	८	२	१५	४६	७	५	४४	३	५	२८	२६	१६	८	११	२०	२१	५	१५	२५	५	९	१७	३०	२१	११	१८	५	४०	११	१५	४४	४१	५	१५	४४	४१
१४बु.	४४	२०	८	३	१७	६	७	२०	०	१९	५	२९	०	४६	८	१३	०	२३	५	१५	३१	४९	९	१८	३८	३५	११	१८	६	०	११	१५	४१	३०	५	१५	४१	३०
३०बृ.	४४	१९	८	४	१८	२७	८	४	२०	१	५	२९	३५	५	८	१४	३९	२६	५	१५	३८	२३	९	१९	४६	३०	११	१८	६	२७	११	१५	३८	१९	५	१५	३८	१९

कुर्वन्तो निन्दितानि च। सुखं नैवेह नामुत्र लभन्ते पुरुषाधमाः॥ युद्धाय क्षत्रियाः सृष्टः सञ्जयेह जयाय च। जयन् वा वध्यमानो वा प्राप्नोतीन्द्रसलोकताम्॥ न ह्येतानि पुरस्कृत्य ब्राह्मणाश्चेश्वरः गृह॥ यदैव क्षत्रु जानीयात् सपत्नं त्यक्तजीवितम्। तदैवास्मादुद्विजेत सर्पाद्वेश्मगतादिव॥ मद्य एतत् संविजानासि यदि सम्यग्ब्रवीम्यहम्। इदं कृत्वां सौम्यमिवात्मानं जयायोत्तिष्ठ सञ्जय॥ कुन्त्युवाच।॥ सदश्व इव स क्षिप्तःप्रणुन्नो वाक्यसायकैः। तच्चकार तथा सर्वं यथावदनुशासनम्। इदमुद्धर्षणं भीमं तेजोवर्धनमुत्तमम्। राजानं श्रावयन्मंत्री सीदन्तं शत्रुपीडितम्॥ जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा। महीं विजयते क्षिप्रं श्रुत्वा शत्रूंश्च मर्दति॥ इदं पुंसवनञ्चैव वीरा जननमेव च। अभीक्ष्णं गर्भिणी श्रुत्वा ध्रुवं वीरं प्रजायते॥ विद्याशूरं तपःशूरं दानशूरं तपस्विनम्। ब्राह्मया श्रिया दीप्यमानं साधुवादे च सम्मतम्। अर्चिष्मन्तं बलोपेतं महाभागं महारथम्। धृतिमन्तमनाधृष्यं जेतारमपराजितम्। नियन्तारमसाधूनां गोप्तारं धर्मचारिणाम्। ईदृशं क्षत्रिया सूते वीरं॥§

ति. ३ सूर्ये



ति. १० सूर्ये



[illegible] बहुश्रुता। विदुला नाम राजन्या [illegible] दीनचेतसम्॥ विदुलोवाच–अनन्दन [illegible] स्वाभ्यागतोऽसि॥ निर्मन्यु-[illegible] कल्याणाय धुरं वह। मात्मा-[illegible] मा मैवं प्रति संहर॥ उत्तिष्ठ [illegible] कापुरुषः स्वल्पकेनैव तुष्यति॥ त्वमेवप्रेतवच्छेष [illegible] ह्यलातं तिन्दुकस्यैव [illegible] विदुलोवाच—कृत्वा [illegible] धर्मस्यानृण्यमाप्नोति न चात्मानं विगर्हते। उद्भाव-[illegible] छिन्नं भोगमूलं किं निमित्तं हि यस्य वीर्यं वा तां वा गच्छ ध्रुवां गतिम्। धर्मपुत्राग्रतः कृत्वा किं निमित्तं हि जीवसि॥ शत्रुनिमज्जता ग्राह्यो जंघायां प्रपतिष्यता। [illegible] स्मरन्। कुरु सत्त्वञ्च मानञ्च विद्धि पौरुषमात्मनः। उद्भावय कुलमग्नं त्वत्कृतेस्वयमेव हि॥ [illegible] नैव स्त्री न पुनः पुमान्॥ दाने तपसि सत्ये च यस्य नोच्चरितं यशः। विद्यायामर्थलाभे वा मातुरुच्चार एव सः। [illegible] कर्मणा हि स वै पुमान्॥ न त्वेव जाल्मीं कापालीं वृत्तिमेषितुमर्हसि। नृशंस्यामयशस्याञ्च दुःखां कापुरुषोचिताम्॥ [illegible] संजय त्वा मजीजनम्॥ निरामर्षं निरुत्साहं निर्वीर्यमरिनन्दनम्॥ मा स्म सीमन्तिनी काचित् जनयेत्पुत्रमीदृशम्॥ [illegible] मुहूर्त्तमपि वा क्षणम्। एतावानेव पुरुषो यदमर्षी यदक्षमी। क्षमावान् निरमर्षश्च नैव स्त्री न पुनः पुमान्॥ [illegible] अनुत्थानभये चोभे निरीहो नाश्नुते महत्॥ एष्यो निकृतिपरेभ्यः प्रमुञ्चात्मानमात्मना। आयसं हृदयं कृत्वा मृगयस्व पुनः स्वकम्॥ [illegible] तस्मात् पुरुष उच्यते। तमाहुर्व्यर्थनामानं स्त्रीवद् य इह जीवति॥ स्वबाहुबलमाश्रित्य योऽभ्युज्जीवति मानवः। स लोके लभते कीर्तिं परत्र च शुभां गतिम्॥ [illegible] स्वधर्ममनुपालय। मा त्वादृशं सुकृपणं शत्रूणां भयवर्द्धनम्। अस्मदीयैश्च शोचद्भिर्नदद्भिश्च परै र्वृतम्। अपि त्वा नानुपश्येयं दीना दीनमिव स्थितम्॥ यथा स्त्रोम संगतो विजयाभिजनेन च। यस्त्वादृशो विकुर्वीत यशस्वी लोकविश्रुतः। अनर्थानिव वोढव्यो मन्ये मरणमेव तत्॥ यदि त्वामनुपश्यामि परस्य प्रियवादिनम्। पृष्ठतोऽनुव्रजन्तं वा का शान्तिर्हृदयस्य मे॥ अकुर्वन्तो हि कर्माणि

शक्यं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते । द्विजातीनां च वर्णानां विप्लवे कालकारिते ॥ आत्मनश्च परित्राणे दक्षिणानाञ्च सङ्करे । स्त्रीविप्राभ्युपपत्तौ च घ्नन्धर्मेण न दुष्यति ॥ गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम् । आततायिनमायान्तं हन्यादेवाऽविचारयन् ॥ नाततायिवधे दोषो [illegible] प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा मन्युस्तं मन्युमृच्छति ॥

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	घं. मि.	न.	घ. प.	घं. मि.	यो.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसञ्चारः सं. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रां. द.	चन्द्रास्त घं. मि.
२६ ४	१ शु.	२८ १७	रा. २२ ६	मू.	२१ ५३	दि. १५ ३२	गं.	५३ ३३	प्रा. २० ४२	कि.	११ १४	११ १३	व.	३८ १७	२२ ६	सुस्थिर	२०	२९	५	१६	२९		६ ४७	५ १३	२३ २६	१७ ४७
२६ ४	२ श.	३२ ३५	रा. १९ ४९	पू.	१७ ४७	दि. १३ ५४	ध्रु.	४७ १२	रा. १ ४०	वा.	५ २६	८ ५८	कौ.	३२ ३५	१९ ४९	मातङ्ग	२१	३०	६	१७	३०	म. ३१ ५१ ११ ३१	६ ४७	५ १३	२३ २६	१८ ५९
२६ ४	३ सू.	२७ १८	सा. १७ ४२	उ.	१४ १	दि. १२ २३	व्या.	३९ ५७	रा. २२ ४६	ग.	२७ १८	१७ ४२	व.	५४ ५७	४ ४६	अमृत	२२	१	७	१८	१		६ ४७	५ १३	२३ २७	२० ९
२६ ४	४ चं.	२२ ३६	दि. १५ ४९	श्र.	११ २२	दि. ११ २०	ह.	३३ ११	रा. २० ४	वि.	२२ ३६	१५ ४९	ब.	५० ३९	३ ३	सिद्धि	२३	२	८	१९	२	कु. ४० ११ २२ ५२	६ ४७	५ १३	२३ २६	२१ १५
२६ ४	५ मं.	१८ ४३	दि. १४ १६	ध.	९ १	दि. १० २४	व.	२७ ५	सा. १७ ३७	बा.	१८ ४३	१४ १६	कौ.	४७ १६	१ ४१	उत्पात	२४	३	९	२०	३		६ ४७	५ १३	२३ २६	२२ १७
२६ ४	६ बु.	१५ ४९	दि. १३ ७	श.	७ ३९	दि. ९ ११	सि.	२१ ४३	दि. १५ २८	तै.	१५ ४९	१३ ७	ग.	४४ १६	० ४५	मानस	२५	४	१०	२१	४	मी. ५२ २३ ३ ४४	६ ४७	५ १३	२३ २४	२३ १५
२६ ५	७ बृ.	१४ २	दि. १२ २६	पू.	७ १८	दि. ९ ४२	व्य.	१७ १७	दि. १५ ४२	व.	१४ २	१२ २६	वि.	४३ ४७	० १८	मुद्गर	२६	५	११	२२	५		६ ४७	५ १३	२३ २२	० १०
२६ ५	८ शु.	१३ ३३	दि. १२ १२	उ.	८ ८	दि. १० २	व.	१३ ४८	दि. १२ १८	ब.	१३ ३३	१२ १२	बा.	४३ ५८	० २२	केतु	२७	६	१२	२३	६		६ ४७	५ १३	२३ २०	१ ४
२६ ६	९ श.	१४ २४	दि. १२ ३२	रे.	१० १३	दि. १० ५२	प.	११ ५५	दि. ११ ३३	कौ.	१४ २४	१२ ३३	तै.	४५ ३०	० ५९	धाता	२८	७	१३	२४	७	मे. १० १३ १० ५२	६ ४७	५ १३	२३ १८	१ ५७
२६ ६	१० सू.	१६ ३७	दि. १३ २५	अ.	१३ २९	दि. १२ ११	शि.	१० २८	दि. १० ५८	ग.	१६ ३७	१३ २५	व.	४८ १८	२ ६	आनन्द	२९	८	१४	२५	८		६ ४७	५ १३	२३ १५	२ ५१
२६ ७	११ चं.	१९ ५९	दि. १४ ४६	भ.	१७ ३७	दि. १३ ४९	सि.	९ ५६	दि. १० ४५	वि.	१९ ५९	१४ ४६	ब.	५२ १३	३ ४०	चर	३०	९	१५	२६	९	वृ. ३४ ० २० २३	६ ४७	५ १३	२३ ११	३ ४६
२६ ८	१२ मं.	२४ २६	दि. १६ ३३	कृ.	२३ ११	दि. १६ ३	सा.	१० ११	दि. १० ५१	बा.	२४ २६	१६ ३३	कौ.	५७ १	५ ३५	गद	३१	१०	१६	२७	१०		६ ४६	५ १४	२३ ७	४ ४२
२६ ९	१३ बु.	२९ ३६	सा. १८ ३७	रो.	२९ २६	सा. १८ ३३	शु.	११ २	दि. ११ ११	तै.	२९ ३६	१८ ३	ग.	६० ०	× ×	शुभ	१	११	१७	२८	११		६ ४६	५ १४	२३ २	५ ४०
२६ ९	१४ बृ.	३५ ४	रा. २० ४८	मृ.	३६ ०	रा. २१ १०	शु.	१२ १३	दि. ११ ३९	ग.	२ २०	७ ४२	व.	३५ ४	२० ४८	मृत्यु	२	१२	१८	२९	१२	मि. २ ४३ ७ ५१	६ ४६	५ १४	२२ ५७	×
२६ १०	१५ शु.	४० २६	रा. २२ ५६	आ.	४२ २५	रा. २३ ४४	ब्र.	१३ ३०	दि. १२ १०	वि.	७ ४५	९ ५३	ब.	४० २६	२२ ५६	पद्म	३	१३	१९	३०	१३		६ ४६	५ १४	२२ ५२	×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० पौषशुक्लपक्षः (दिसम्बर ता. २०…३१, जनवरी ता. १…३ सन् १९६९) उत्तरायणं, याम्यगोलः, हेमन्तर्तुः ।

इष्टिः । पक्षेऽस्मिन् धनुष्यर्के दोषसत्वाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । मूले लतापादपारोपणभैषज्यसेवनादि मु. । पूर्वायां विक्रयः शुभः । चि. [illegible]
चन्द्रदर्शनम्, मु. ४५ फलं समर्घकरन् । अद्य पूर्वायां विक्रयः शुभः । तृतीयायां यायियात्रा शुभा । मकरे दृश्यार्कः ५८।३ ।
भ. ५४।५७ (रा. ४।४६) उ. । राष्ट्रीयपौषारम्भः । अद्योत्तरायां प्रसूतिकास्नानाचरणं हितावहम् । उत्तरायामेव यायियात्रा शुभा । [illegible]
भ. २२।३६ (दि. १५।४९) या. । वैनायकी ४ । पञ्चम्यां जातकर्मादिकृते शोभनकालः । पू.षा. ३च. बुधः १।५१ ।
अद्य पञ्चम्यां वासवे शुभेतरप्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रादिधारण मु. ।
अद्य व्यतिपातात्पूर्वं मासवारिष्टनिर्माणभैषज्यसेवनादि मु. । मू. ४च. रविः १८।२ । पू.षा. ४च. बुधः ९।१४ । धनि. २च. शुक्रः ५।२[illegible]
भ. १४।२ (दि. १२।२४) उ. ४३।४७ (रा. ०।१८) या. । अद्य विष्टेः परं नववस्त्रधारणलतागुल्मवृक्षाद्यारोपण मु. । नि. ४च. कुज [illegible]
अद्य अष्टम्यां तिथिदानात् सामान्यशुभकर्मणां कृते शोभनकालः । उत्तराषाढायां बुधः २०।२९ ।
पूर्वाषाढायामर्कः ३३।२२ (रा. २०।७) । अद्य दशम्यां पुनैंतरदिग्यात्रायां दिग्द्वारानुगं लग्नमनुसन्धेयम् । धनि. ३च. कुम्भे च शुक्रः [illegible]
भ. ४८।१८ (रा. २।६) उ. । अश्विन्यां प्रसूतिकास्नानभैषज्यसेवनशिशुताम्बूलभक्षणलतावृक्षादिरोपणपश्चिमेतरसर्वदिग्गमनादि मु. [illegible]
भ. १९।५९ (दि. १४।४६) या. । पुत्रदा ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । विष्टेः परं वह्निभे अग्निकार्यं हितावहम् । ह. ३च. गुरुः ४०।[illegible]
भौमप्रदोषः । कृत्तिकायां स्थायिकार्यार्थ्योगः । त्रयोदश्यां प्रसूतिकास्नानाचरणं हितावहम् । पू.षा. २च. रविः ४८।४१ । धनि. [illegible]
अद्य त्रयोदश्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशननवाम्बरधारणादि मु. । स्वात्यां कुजः १४।३५ । उ. षा. ३च. बुधः ०।५१ ।
भ. ३५।४ (रा. २०।४८) उ. । शुभकर्मणि रिक्ताविष्टयादिदोषश्च ।
भ. ७।४५ (दि. ९।५३) या. । व्रतस्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा । शाकम्भरीजन्म । माघस्नानदानयमनियमाद्यारम्भः । मार्गे [illegible]
* फलाधिकम् । रात्रिशेषे पुनर्वसौ सामान्यशुभकर्मणां मु. । उ. षा. ४ च. बुधः २४।५२ ।

[illegible] सन्तान हरिपूज- नम् । [illegible] । अद्य [illegible] [illegible] मकरे [illegible] [illegible] ॥ [illegible] अधिमासे [illegible] [illegible] ।

दैनिक लग्नसारिणी

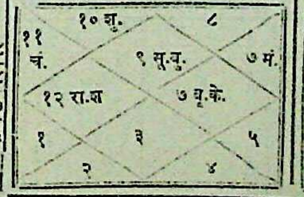
तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.
१ शु.	१३ २१	१४ ५९	१६ ५५	१९ ८	२१ २६	२३ ४०	१ ५३	४ ९	६ २६	८ ३२	१० १८	११ ५०
२ श.	१३ १६	१४ ५४	१६ ५०	१९ ३	२१ २१	२३ ३५	१ ४८	४ ४	६ २१	८ २७	१० १३	११ ४५
३ सू.	१३ १२	१४ ५०	१६ ४६	१८ ५९	२१ १७	२३ ३१	१ ४४	४ ०	६ १७	८ २३	१० ९	११ ४१
४ चं.	१३ ७	१४ ४५	१६ ४१	१८ ५४	२१ १२	२३ २६	१ ३९	३ ५५	६ १२	८ १८	१० ४	११ ३६
५ मं.	१३ ३	१४ ४१	१६ ३७	१८ ५०	२१ ८	२३ २२	१ ३५	३ ५१	६ ८	८ १४	१० ०	११ ३२
६ बु.	१२ ५८	१४ ३६	१६ ३२	१८ ४५	२१ ३	२३ १७	१ ३०	३ ४६	६ ३	८ ९	९ ५५	११ २७
७ बृ.	१२ ५४	१४ ३२	१६ २८	१८ ४१	२० ५९	२३ १३	१ २६	३ ४२	५ ५९	८ ५	९ ५१	११ २३
८ शु.	१२ ५०	१४ २८	१६ २४	१८ ३७	२० ५५	२३ ९	१ २२	३ ३८	५ ५५	८ १	९ ४७	११ १९
९ श.	१२ ४५	१४ २३	१६ १९	१८ ३२	२० ५०	२३ ४	१ १७	३ ३३	५ ५०	७ ५६	९ ४२	११ १४
१० सू.	१२ ४१	१४ १९	१६ १५	१८ २८	२० ४६	२३ ०	१ १३	३ २९	५ ४६	७ ५२	९ ३८	११ १०
११ चं.	१२ ३७	१४ १५	१६ ११	१८ २४	२० ४२	२२ ५६	१ ९	३ २५	५ ४२	७ ४८	९ ३४	११ ६
१२ मं.	१२ ३२	१४ १०	१६ ६	१८ १९	२० ३७	२२ ५१	१ ४	३ २०	५ ३७	७ ४३	९ २९	११ १
१३ बु.	१२ २८	१४ ६	१६ २	१८ १५	२० ३३	२२ ४७	१ ०	३ १६	५ ३३	७ ३९	९ २५	१० ५७
१४ बृ.	१२ २३	१४ १	१५ ५७	१८ १०	२० २८	२२ ४२	० ५५	३ ११	५ २८	७ ३४	९ २०	१० ५२
१५ शु.	१२ १९	१३ ५७	१५ ५३	१८ ६	२० २४	२२ ३८	० ५१	३ ७	५ २४	७ ३०	९ १६	१० ४८

ति. १ शुक्र-बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. १२।११ चन्द्राद्दक्षिणे ।
ति. ३ रवी-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. ३।२५ चन्द्राद्दक्षिणे ।
ति. ८ शुक्र-शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. २२।१९ शनिर्दक्षिणे ।

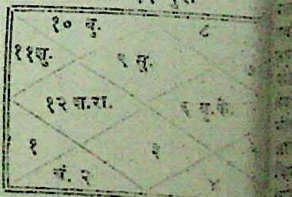
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४४ १७	८ ५ १९ ४९	८ १८ ३९ १६	६ ० ९ २३	८ १६ १७ ५८	५ १५ ४४ ५१	९ २० ५४ २१	११ १८ ७ १	११ १५ ३५ ८	५ १५ ३५ ८
४४ १६	८ ६ २१ १२	९ २ ५४ १७	६ ० ४३ ४०	८ १७ ५५ २५	५ १५ ५१ ७	९ २२ १ ५४	११ १८ ७ ४२	११ १५ ३१ ५८	५ १५ ३१ ५८
४४ १५	८ ७ २२ ३५	९ १७ १ ५०	६ १ १७ ५१	८ १९ ३१ ५२	५ १५ ५७ १४	९ २३ ९ १७	११ १८ ८ २९	११ १५ २८ ४७	५ १५ २८ ४७
४४ १४	८ ८ २३ ५८	१० ० ५९ ४	६ १ ५१ ५९	८ २१ ७ १०	५ १६ ३ ११	९ २४ १६ २४	११ १८ ९ २३	११ १५ २५ ३६	५ १५ २५ ३६
४४ १३	८ ९ २५ २२	१० १४ ४३ ३८	६ २ २६ ३	८ २२ ४१ १७	५ १६ ८ ५९	९ २५ २३ २५	११ १८ १० २४	११ १५ २२ २६	५ १५ २२ २६
४४ १२	८ १० २६ ४६	१० २८ १३ ५३	६ ३ ० ५	८ २४ १४ ७	५ १६ १४ ३७	९ २६ ३० २३	११ १८ ११ ३३	११ १५ १९ १५	५ १५ १९ १५
४४ ११	८ ११ २८ ११	११ ११ २८ ४८	६ ३ ३४ ४	८ २५ ४५ ३३	५ १६ २० ४	९ २७ ३६ ५२	११ १८ १२ ४८	११ १५ १६ ४	५ १५ १६ ४
४४ १०	८ १२ २९ ३५	११ २४ २८ ११	६ ४ ७ ५७	८ २७ १५ २८	५ १६ २५ २२	९ २८ ४३ २१	११ १८ १४ ११	११ १५ १२ ५३	५ १५ १२ ५३
४४ ९	८ १३ ३१ १	० ७ १२ ३५	६ ४ ४१ ५१	८ २८ ४३ ४४	५ १६ ३० ३१	९ २९ ४९ २०	११ १८ १५ ४१	११ १५ ९ ४३	५ १५ ९ ४३
४४ ८	८ १४ ३२ २७	० १९ ४३ १८	६ ५ १५ ३५	९ ० १० १७	५ १६ ३५ २९	१० ० ५५ ११	११ १८ १७ १७	११ १५ ६ ३२	५ १५ ६ ३२
४४ ७	८ १५ ३३ ५२	१ २ २ २१	६ ५ ४९ १९	९ १ ३४ ५७	५ १६ ४० १५	१० २ ० ५२	११ १८ १९ ०	११ १५ ३ २१	५ १५ ३ २१
४४ ६	८ १६ ३५ १८	१ १४ १२ १६	६ ६ २२ ५५	९ २ ५७ ३३	५ १६ ४४ ५६	१० ३ ६ ८	११ १८ २० ४९	११ १५ ० १०	५ १५ ० १०
४४ ५	८ १७ ३६ ४५	१ २६ १६ ६	६ ६ ५६ ३१	९ ४ १७ ५७	५ १६ ४९ २०	१० ४ ११ १४	११ १८ २२ ४६	११ १४ ५७ ०	५ १४ ५७ ०
४४ ४	८ १८ ३८ ११	२ ८ १७ १८	६ ७ २९ ५९	९ ५ ३६ २	५ १६ ५३ ३८	१० ५ १६ ४	११ १८ २४ ४९	११ १४ ५३ ४९	५ १४ ५३ ४९
४४ ३	८ १९ ३९ ३७	२ २० १९ ५२	६ ८ ३ २२	९ ६ ५१ ३५	५ १६ ५७ ४४	१० ६ २० ३६	११ १८ २७ ०	११ १४ ५० ३८	५ १४ ५० ३८

ति. ४ चन्द्रे



ति. ११ गुरौ



[illegible] केनदारहूतश्चैतान् षड्विधा- [illegible] शिरोभूत्वा शृणु चेदं वचो मम । [illegible] गुणैरपि समन्वितम् । [illegible] धर्मः क्षत्रियाणां धनञ्जय । [illegible] रक्षा भवेत् तावा- [illegible] विहितः । क्षात्रधर्म प्रशंसा । [illegible] सर्वलोकहितं धर्मं [illegible] सर्वभूतानुकम्पा लोकज्ञानं पालनं मोक्षणञ्च । [illegible] एवं वीर्यः सर्वधर्मोपगत [illegible] स्यात्तदभावः प्रजा-
नाम् । त्यागं श्रेष्ठं मुनयो वै वदन्ति सर्वं श्रेष्ठं यच्छरीरं त्यजेत् ॥ [illegible] धर्मं विदुर्जनाः ॥ तेभ्यो नमश्च भद्रञ्च ये शरीराणि जुह्वते । ब्रह्मद्विषो [illegible] पूता भव- न्त्युत । दुष्कृतस्य प्रणाशश्च तथा शस्त्रहता रणे ॥ [illegible] कृतानि कुर्वन्तो जयन्ति स्वर्गमुत्तमम् । धर्म्याः पापानि कुर्वाणा गच्छन्ति परमां गतिम् ॥ [illegible] अभ्युत्थिते दस्युबले क्षत्रार्थे वर्णसंकरे । संप्रमूढेषु वर्णेषु यद्यन्योऽभिभवेद्बली । [illegible] कार्यं कुर्वीत वा कुर्वीत स वार्यो वा भवेन्न वा ॥ भीष्म उवाच । अपारे यो भवेत् पारमप्लवे यः प्लवो भवेत् । [illegible] नरा राजन् वर्तेयुर्यथासुखम् । अनाथाः परिपालयन्तो दस्युभिः परिपीडिताः । तमेव पूजयेयुस्ते प्रीत्या स्वमिव बान्धवम् । [illegible] गोब्राह्मणहितार्थञ्च वर्णानां संकरेषु च । वैश्यो गृह्णीत शस्त्राणि परित्राणाय चात्मनः । अथ मानसतीर्थे [illegible] सर्वभूतदयातीर्थं सर्वत्रार्जवमेव च ॥ दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते । ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं [illegible] तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा ॥ अनुशा. १०८ अ.–अगाधे विमले शुद्धे सत्यतोये धृतिह्रदे । स्नातव्यं मानसे तीर्थे [illegible] अहिंसा सर्वभूतानामानृशंस्यं दमः शमः । [illegible] ज्ञानोत्पन्नं च यच्छौचं तत्कीर्तं परमं मतम् । मनसा च प्रदीप्तेन ब्रह्मज्ञानजलेन च । स्नाति यो मानसे तीर्थे [illegible] परं स्मृतम् । [illegible] शुचिर्हि स शुचिर्न मृदाग्निशुचिः शुचिः ॥ शरीरस्थानि तीर्थानि प्रोक्तान्येतानि भारत । पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यानि शृणु तान्यपि ॥ शरीरस्य यथोद्दिष्टाः शुचयः परिकीर्तिताः । तथा पृथिव्या भागाश्च पुण्यानि सलिलानि च ॥ [illegible] ते प्रयान्ति सुखं दिवम् ॥ परिग्रहाच्च साधूनां पृथिव्याश्चैव तेजसा । अतीव पुण्यभागास्ते सलिलस्य च तेजसा ॥ मनसश्च पृथिव्याश्च पुण्यतीर्थास्तथापरे । उभयोरेव यः स्नायात् स सिद्धिं शीघ्रमाप्नुयात् ॥ यथा बलं क्रिया हीनं क्रिया वा बलवर्जिता । नह साधयते कार्यं [illegible] ॥ एवं शरीरशौचेन तीर्थशौचेन चान्वितः । शुचिः सिद्धिमवाप्नोति द्विविधं शौचमुत्तमम् ॥ अथ माघकृष्ण ११ कुजे मकर संक्रान्तिजन्यपुण्यकालः । तत्र शिवरहस्ये – तस्यां कृष्णतिलैः स्नानं कार्यं चोद्वर्तनं शुभैः ॥ तिला देवाश्च [illegible] शिवगृहे शुभाः । [illegible] सर्वदोषनाशनम् ।

३० आपो अस्मान्मातरश्शुन्धयन्तु ॥ यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैवसुसंयतम्। विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते ॥ प्रतिग्रहादपावृत्तः संतुष्टो येन केनचित्। अहङ्कारनिवृत्तश्च स तीर्थफलमश्नुते ॥ अकल्कको निरारम्भो लघ्वाहारी जितेन्द्रियः। विमुक्तः सर्वपापेभ्यः स तीर्थफलमश्नुते ॥ अक्रोधनश्च राजेन्द्र सत्यशीलो दृढव्रतः। आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते

दि. मा.	ब्र. प.	ति.	वा.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	न.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय		सूर्यास्त		र. क्रां. द.		चंद्रोदय घ.	मि.
२६	११	१	श.	४५	१६	रा.	०	५२	पु.	४८	२०	रा.	२	६	ऐ.	१४	४८	दि.	१२	४१	वा.	१२	५१	११	५४	कौ.	४५	१६	०	५२	छत्र	४	१४	२०	१	१४	क.	३१	५१	१९	३०	६	४६	५	१४	२२	४६	१७	४९
२६	१३	२	सू.	४९	१४	रा.	२	२७	पु.	५३	२६	रा.	४	८	वै.	१५	२४	दि.	१२	५५	तै.	१७	१५	१३	३९	ग.	४९	१४	२	२७	श्रीवत्स	५	१५	२१	२	१५						६	४५	५	१५	२२	३९	१८	४६
२६	१४	३	चं.	५२	८	रा.	३	३६	श्ले	५७	२९	प्रा.	५	४५	वि.	१५	१६	दि.	१२	५२	व.	२०	४१	१५	३	वि.	५२	८	३	३६	सौम्य	६	१६	२२	३	१६	सिं.	५७	२९	५	४५	६	४५	५	१५	२२	३३	१९	४३
२६	१६	४	मं.	५३	४७	रा.	४	१६	म.	६०	०	म.	×	×	प्री.	१३	४४	दि.	१२	१५	व.	२२	५७	१५	५६	बा.	५३	४७	४	१६	का. द.	७	१७	२३	४	१७						६	४५	५	१५	२२	२५	२०	३९
२६	१७	५	बु.	५४	१०	रा.	४	२५	म.	०	२१	प्रा.	६	५३	आ.	११	४१	दि.	११	२५	कौ.	२३	५९	१६	२०	तै.	५४	१०	४	२५	चर	८	१८	२४	५	१८						६	४५	५	१५	२२	१८	२१	३५
२६	१९	६	बृ.	५३	१६	रा.	४	३	पू.	१	५८	प्रा.	७	३२	सौ.	८	४०	दि.	१०	१२	ग.	२३	४३	१६	१४	व.	५३	१६	४	३	गद	९	१९	२५	६	१९	क.	१७	५	१३	३४	६	४४	५	१६	२२	१०	२२	३१
२६	२०	७	शु.	५१	१२	रा.	३	१३	उ.	२	२४	प्रा.	७	४२	शो.	४/५५	४१/८	प्रा.	८/२२	३३/३	वि.	२२	१४	१५	३८	व.	५१	१२	३	१३	शुभ	१०	२०	२६	७	२०						६	४४	५	१६	२२	१	२३	२७
२६	२२	८	श.	४८	५	रा.	१	५८	ह.	५८	४५/१६	प्रा.	७/२१	२६/५१	सु.	५४	७	रा.	४	२२	बा.	१९	३९	१४	३५	कौ.	४८	५	१	५८	मृत्यु	११	२१	२७	८	२१	तु.	३०	४९	१९	३	६	४४	५	१६	२१	५२	०	२४
२६	२४	९	सू.	४४	३	रा.	०	२१	स्वा	५७	२३	प्रा.	५	४०	धृ.	४७	४३	रा.	१	४८	तै.	१६	४	१३	९	ग.	४४	३	०	२१	लुम्ब	१२	२२	२८	९	२२						६	४३	५	१७	२१	४३	१	२६
२६	२५	१०	चं.	३९	१२	रा.	२२	२४	वि.	५४	३	रा.	४	२०	शू.	४०	४०	रा.	२२	५९	व.	११	३७	११	२२	वि.	३९	१२	२२	२४	मित्र	१३	२३	२९	१०	२३	वृ.	२९	५३	२२	४०	६	४३	५	१७	२१	३३	२	३२
२६	२७	११	मं.	३३	५०	रा.	२०	१५	अ.	५०	१८	रा.	२	५०	गं.	३३	१५	रा.	२०	०	व.	६	३१	९	१९	बा.	३३	५०	२०	१५	वज्र	१४	२४	१	११	२४						६	४३	५	१७	२१	२२	३	४२
२६	२९	१२	बु.	२८	६	सा.	१७	५६	ज्ये.	४६	१३	रा.	१	११	वृ.	२५	२८	सा.	१६	५३	कौ.	०	५८	७	५	तै.	२८/५५	६/६	१७/४	५६/४९	ध्वांक्ष	१५	२५	२	१२	२५	ध.	४६	१३	१	११	६	४२	५	१८	२१	१२	४	५२
२६	३१	१३	बृ.	२२	६	दि.	१५	३२	मू.	४२	२	रा.	२३	३१	ध्रु.	१७	३०	दि.	१३	४२	ग.	२२	६	१५	३२	वि.	४९	८	२	३१	धूम्र	१६	२६	३	१३	२६						६	४२	५	१८	२१	१	५	५७
२६	३३	१४	शु.	१६	१०	दि.	१२	९	पू.	३७	५७	रा.	२१	५२	व्या	९	४४	दि.	१०	३५	श.	१६	१०	१३	९	च.	४३	२८	०	५	प्र. मा.	१७	२७	४	१४	२७	म.	५२	१	३	३०	६	४१	५	१९	२०	४९		
२६	३५	३०	श.	१०	४७	दि.	११	०	उ.	३४	११	रा.	२०	२१	ह.	५१/१	५१/१	प्रा.	२१	२८	ना.	१०	४७	११	०	कि.	३८	१३	२१	५८	रक्ष	१८	२८	५	१५	२९						६	४१	५	१९	२०	३७		

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० माघकृष्णपक्षः (जनवरी ता० ४...१८, सन् १९६९) याम्यायनं, याम्यगोलः, हेमन्तर्तुः मकरार्कात् सौम्यायनं, शिशिरर्तुः।

इष्टिः। माघे त्यजेन्मूलकम्। प्रयागाद्भिन्नस्थलेऽपि प्रयागस्मरणपूर्वकस्नानेन तत्फलाप्तिः। प्रतिपदि यायिजययोगः। पू. षा. ३ च. रविः*
वैधृतेः परं पुंसवनसीमन्तोन्नयनौषधसेवनशिशुताम्बूलभक्षणपश्चिमेतरसर्वदिग्गमनादि मु.। *३।५८। शतभिषजि शुक्रः २।१।
भ. २०४१ (दि. १५।२) उ. ५२।८ (रा. ३।३६) या.। विष्टेःपूर्वं यायिजययोगः। श्रवणे बुधः २५।१।
गणेश ४ व्रतम् (इयमेवसंकष्टचतुर्थी)। गणेशोत्पत्तिः। चतुर्थ्यां स्थायिजययोगः। पू. षा. ४ च. रविः १९।१९। स्वा. २ च. कुजः १४।२५।
पूर्वायां वस्तुविक्रयादि मु.। शत. २ च. शुक्रः १०।८। ‡संक्रान्तिजन्यपुण्यकालः। स्वा. ३ च. कुजः २१।१४। शत. ४ च. शुक्रः ३५।५३।
भ. ५३।१६ (रा. ४।३) उ.। तिथिदानादुत्तरायां सामान्यशुभकर्मादिकृते शोभनकालः। श्र. २ च. बुधः ४३।२६।
भं २२।१४ (दि. १५।३८) या.। भानुसप्तमी ७ (सूर्योपरागसमा)। उत्तराषाढायामर्कः ३४।४४। विष्टेःपरं सप्तम्यामौषधसेवनन[illegible]
श्रीरामानन्द जयन्ती। अद्य लतागुल्मवृक्षाद्यारोपणकृष्णवस्त्रादिधारण मु.। ¶तराम्विहायान्यदिग्गमन मु.। श्र. ३ च. बुधः १०।२३।
दशम्यां प्रसूतिकास्नानौषधसेवनसुभगेतरनववस्त्रादिधारण मु.। नवम्यां यायिजययोगः।
भ. ११।३७ (दि. ११।१२) उ. ३९।१२ (रा. २२।२४) या.। उ. षा. २ च. गं. मकरेचार्कः ५०।१४ (रा. २१४९), मु. ४५ फल समर्घकारः। [illegible]
पट्तिला ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। वङ्क्षमाघारम्भः। अद्य प्रातरारभ्य दिवा १०।४८ वादनं यावन्मकरसंक्रान्तिजन्यपुण्यकालः। [illegible]
प्रदोषः। अद्य ऋतुमतीस्नानशिशुताम्बूलभक्षणनृत्यारम्भादि मु.। §लताद्यारोपणादि मु.। पूर्वभाद्रपदा भे शुक्रः ५३।५०।
भ. २२।६ (दि. १५।३२) उ. ४९।८ (रा. २।२१) या.। मासशिवरात्रिः। त्रयोदश्यां पुंसवनसीमन्तोन्नयनौषधसेवनशिशुताम्बूल[illegible]
श्राद्धादीदर्शः ३०। रिक्ताविषुक्षयादिदोषसत्वाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः। चतुर्दश्यां स्थायिजयाऽङ्गारोगस्य। उ. षा. ३ च. रविः ५।५०।
स्नानदानादौदर्शः ३०। मौनीअमावस्या ३०। प्रयागे दशाश्वमेधे वा स्नानात्फलाधिक्यम्। प्रतिपदि सामान्यशुभकर्मणां मु.।
† भूपाधारणलतागुल्मवृक्षाद्यारोपण मु.। सप्तमीहस्तयोगे पश्चिमेतर सर्वदिग्गमनविपणिव्यापारादि मु.। शत. ३ च. शुक्र. २१।१२।

विवाह-मुहूर्ताः

ति. १२ बृबे-मूल भे ११।३०।१५ से ४ च. लि.।

ति. १३ गुरौ-मूल भे से ८ च. घ.।

ति. १४ शुक्रे-उ. षा. भे विशुद्धलग्ने।

(३२ पृष्ठीय शेष कथाभागः)

ईश्वरतया हृदि स्थितः। तेन चेदविवादस्ते मा गङ्गां मा कुरून् गमः॥ अवाक्शिराः तमस्यन्धे किल्बिषी नरकं व्रजेत्। यः प्रश्नं वितथं ब्रूयात् पृष्टः सन् धर्मनिश्चये॥ तस्य विज्ञान् हि वक्तुः श्रेयसी [illegible] सर्वकेभ्यो [illegible] यद् प्रयतात् [illegible] वदेत्। [illegible] सम्यगपि तं वियाद् ब्रह्मघातकम्॥ गोवधः—[illegible] [illegible] नरकं सर्वेभ्यः [illegible] शरीरः प्राज्ञ-[illegible]॥

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे.	प्र.	वृ.	प्र.	मि.	प्र.	क.	प्र.	सिं.	प्र.	क.	प्र.	तु.	प्र.	वृ.	प्र.	ध.	प्र.	म.	प्र.	कुं.	प्र.	मी.	प्र.
१श.	१२	१४	१३	५२	१५	४८	१८	१	२०	१९	२२	३३	०	४६	३	२	५	१९	७	२५	९	११	१०	४३
२सू.	१२	१०	१३	४८	१५	४४	१७	५७	२०	१५	२२	२९	०	४२	२	५८	५	१५	७	२१	९	७	१०	३९
३चं.	१२	५	१३	४३	१५	३९	१७	५२	२०	१०	२२	२४	०	३७	२	५३	५	१०	७	१६	९	२	१०	३४
४मं.	१२	१	१३	३९	१५	३५	१७	४८	२०	६	२२	२०	०	३३	२	४९	५	६	७	१२	८	५८	१०	३०
५बु.	११	५७	१३	३५	१५	३१	१७	४४	२०	२	२२	१६	०	२९	२	४५	५	२	७	८	८	५४	१०	२६
६बृ.	११	५२	१३	३०	१५	२६	१७	३९	१९	५७	२२	११	०	२४	२	४०	४	५७	७	३	८	४९	१०	२१
७शु.	११	४८	१३	२६	१५	२२	१७	३५	१९	५३	२२	७	०	२०	२	३६	४	५३	६	५९	८	४५	१०	१७
८श.	११	४४	१३	२२	१५	१८	१७	३१	१९	४९	२२	३	०	१६	२	३२	४	४९	६	५५	८	४१	१०	१३
९सू.	११	३९	१३	१७	१५	१३	१७	२६	१९	४४	२१	५८	०	११	२	२७	४	४४	६	५०	८	३६	१०	८
१०चं.	११	३५	१३	१३	१५	९	१७	२२	१९	४०	२१	५४	०	७	२	२३	४	४०	६	४६	८	३२	१०	४
११मं.	११	३१	१३	९	१५	५	१७	१८	१९	३६	२१	५०	०	३	२	१९	४	३६	६	४२	८	२८	१०	०
१२बु.	११	२७	१३	५	१५	१	१७	१४	१९	३२	२१	४६	२३	५९	२	१५	४	३२	६	३८	८	२४	९	५६
१३बृ.	११	२२	१३	१	१४	५७	१७	१०	१९	२८	२१	४२	२३	५५	२	११	४	२८	६	३४	८	२०	९	५२
१४शु.	११	१८	१२	५६	१४	५२	१७	५	१९	२३	२१	३७	२३	५०	२	६	४	२३	६	२९	८	१५	९	४७
३०श.	११	१४	१२	५२	१४	४८	१७	१	१९	१९	२१	३३	२३	४६	२	२	४	१९	६	२५	८	११	९	४३

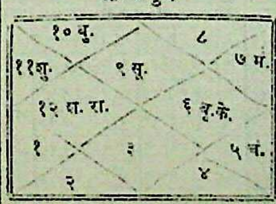
ति. ७ शुक्रे-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. १५।५० गुरुर्दक्षिणे।
ति. ९ सूर्ये-कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. ०।२९ चन्द्रोदक्षिणे।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

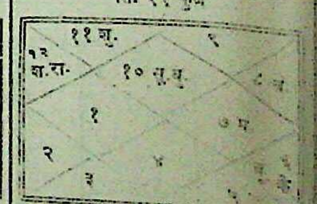
मि.	मा.	स्प.			सू.	स्प.			चं.	स्प.			मं.	स्प.			बु.	स्प.			बृ.	स्प.			शु.	स्प.			श.	स्प.			रा.	स्प.			के.
४४	३	८	२०	४१	२	३	२	२७	२४	६	८	३६	४४	९	८	४	२८	५	१७	१	३९	१०	७	२४	५३	११	१८	२९	१७	११	१४	४७	२७	५	१४	४७	२७
४४	२	८	२१	४२	२८	३	१४	४३	५	६	९	१०	०	९	९	१४	२३	५	१७	५	२२	१०	८	२८	५१	११	१८	३१	४१	११	१४	४४	१७	५	१४	४४	१७
४४	२	८	२२	४३	५३	३	२७	९	३९	६	९	४३	१४	९	१०	२१	१०	५	१७	८	५६	१०	९	३२	२९	११	१८	३४	१२	११	१४	४१	६	५	१४	४१	६
४४	२	८	२३	४५	१७	४	९	४९	१८	६	१०	१६	२०	९	११	२४	३६	५	१७	१२	१८	१०	१०	३५	४४	११	१८	३६	४८	११	१४	३७	५५	५	१४	३७	५५
४४	१	८	२४	४६	४२	४	२२	४३	३५	६	१०	४९	२६	९	१२	२४	२९	५	१७	१५	२९	१०	११	३८	४४	११	१८	३९	३१	११	१४	३४	४४	५	१४	३४	४४
४४	१	८	२५	४८	६	५	५	५३	१८	६	११	२२	२१	९	१३	२०	३२	५	१७	१८	२९	१०	१२	४१	२३	११	१८	४२	२०	११	१४	३१	३४	५	१४	३१	३४
४४	१	८	२६	४९	२९	५	१९	१८	२९	६	११	५५	१६	९	१४	१२	२८	५	१७	२१	१९	१०	१३	४३	३७	११	१८	४५	१४	११	१४	२८	२३	५	१४	२८	२३
४४	०	८	२७	५०	५३	६	२	५८	२५	६	१२	२८	०	९	१५	०	५	५	१७	२३	५६	१०	१४	४५	४०	११	१८	४८	१२	११	१४	२५	१२	५	१४	२५	१२
४४	०	८	२८	५२	१६	६	१६	५१	४०	६	१३	०	४४	९	१५	४३	४	५	१७	२६	२३	१०	१५	४७	५	११	१८	५१	१६	११	१४	२२	१	५	१४	२२	१
४४	०	८	२९	५३	३८	७	०	५७	८	६	१३	३२	२४	९	१६	२०	३७	५	१७	२८	३८	१०	१६	४८	१७	११	१८	५४	२३	११	१४	१८	५१	५	१४	१८	५१
४४	०	९	०	५४	५९	७	१५	१०	१	६	१४	५	५१	९	१६	५५	१३	५	१७	३०	४२	१०	१७	४९	४	११	१८	५८	३	११	१४	१५	४०	५	१४	१५	४०
४४	०	९	१	५६	१९	७	२९	२८	१४	६	१४	३८	१६	९	१७	२१	१६	५	१७	३२	३६	१०	१८	४९	४१	११	१९	१	३०	११	१४	१२	२९	५	१४	१२	२९
४४	०	९	२	५७	३९	८	१३	४८	१६	६	१५	१०	३९	९	१७	४२	४३	५	१७	३४	१६	१०	१९	५०	१६	११	१९	५	३	११	१४	९	१८	५	१४	९	१८
४४	१	९	३	५८	५९	८	२८	६	३	६	१५	४२	५३	९	१७	५८	४१	५	१७	३५	४४	१०	२०	४९	४४	११	१९	८	४३	११	१४	६	८	५	१४	६	८
४४	१	९	५	०	१८	९	१२	१८	७	६	१६	१५	२	९	१८	८	१४	५	१७	३७	१	१०	२१	४७	४८	११	१९	१२	२९	११	१४	२	५७	५	१४	२	५७

यमद्वारे महानदी। शतयोजनविस्तीर्णा पृथुत्वे सा महासरित्। अगाधानन्तरूपा च दृष्टमात्रा भयप्रदा॥ पतन्ति तत्र वै भग्ना पन्थमानाः सुदारुणम्। उष्णे वर्षासु शीते च मारुते चापितीक्ष्णके। दातारं आरयेत्प्राप्त् तस्माद्वैतरणी स्मृता॥ [illegible]
पटलामभयां कृष्णां दद्याद्वैतरणीं तु गाम्। स्वर्णशृङ्गीरौप्यखुरां कांस्यपात्रोपदोहनाम्—कृष्णवस्त्रयुतां तां तु सप्तधान्यसमन्विताम्। कार्पासद्रोणशिखरे आसीनां [illegible]
संकल्पः—मम यमद्वारस्थितवैतरण्यां समुत्तरणार्थं इमां कृष्णां गां सवत्सां यमप्रतिमायुक्तां कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नां सप्तधान्ययुतां कृष्णमाल्याद्यलंकृतां स्वर्णशृङ्गीमुपस्करोपेतां कार्पासद्रोणशिखरां [illegible]

ति. ४ कुजे



ति. ११ कुजे



[illegible] मासस्नानं कर्तव्यम्। तत्र मङ्गल[illegible] प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्॥ [illegible] माघकृष्णचतुर्थ्यां कुजे गणेशोत्पत्तिः॥ [illegible] माघकृष्णचतुर्थ्यां तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः॥ [illegible] पञ्चमीयुता ग्राह्या। गौरीविना-[illegible] ग्राह्या॥ परदिने एव मध्याह्नव्यापिनी चेत्परैव॥ दिनद्वय

मध्याह्नव्यापित्वे दिनद्वये मध्याह्नव्याप्त्यभावे साम्येन [illegible] तदनन्तरं तु पूर्वदिन एव मध्याह्नव्यापिनी चेत्पूर्वैव॥ उभयदिने मध्याह्नव्याप्त्यादिपक्षचतुष्टय पंचमीयुतैव ग्राह्या॥ श्रावणकृष्णचतुर्थी [illegible] ग्राह्या॥ परदिने चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव॥ उभयदिने चन्द्रोदय व्यापित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या॥ दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे पूर्वैव॥ किन्त्वत्र पूर्वदिने [illegible] ति. ४ कुजे गणेशचतुर्थीव्रतमिति। अस्यां रात्रौ पूजनानन्तरं चन्द्रोदये चन्द्रार्घ्यदाने मन्त्राः—क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव। [illegible] नमोऽस्तु ते॥ नमो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटेः। [illegible] ज्योतिषां पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास [illegible] तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पापनाशिनी॥ अथ माघे समुपर्णनिरूपा[illegible] तत्र दानमन्त्रः: देव देव जगन्नाथ वाञ्छितार्थफलप्रद। तिलपात्रं प्रदास्यामि तवाग्रे संस्थितोऽस्म्यहम्। मासेऽस्मिन्[illegible] महाफलानि। प्रयाग महिमा महाभारते वनपर्वणि युधिष्ठिरं प्रति पुलस्त्य उवाच—तपनस्य सुता देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता। यमुना गङ्गया सार्धं सङ्गता लोकपावनी। गङ्गायमुनयोर्मध्ये पृथिव्या जघनं स्मृतम्। प्रयागं संप्रतिष्ठानं कम्बलाश्वतरौ यथा॥ तीर्थं भोगवती चैव वेदि रेषा प्रजापतेः। तत्र वेदाश्च यज्ञाश्च मूर्तिमन्तो युधिष्ठिर॥ प्रजापतिमुपासन्ते ऋषयश्च तपोधनाः। यजन्ते क्रतुभिर्देवास्तथा चक्रधरा नृपाः॥ ततः पुण्यतमं नाम त्रिषुलोकेषु भारत। प्रयागं सर्वतीर्थेभ्यः प्रवदन्त्यधिकं विभो॥ [illegible] लोके विश्रुते। पुण्यं सकलमाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः। कुरुक्षेत्रसमा गङ्गा यत्र तत्रावगाहिता। विशेषो वै कनखले प्रयागे परमं महत्। [illegible] एवं सार्धमत्रैव कीर्तितं कुरुनन्दन॥ वैतरणीधेनुदानम् या सा वैतरणी नाम [illegible] तस्माद्वैतरणी स्मृता॥ [illegible]। अयने विषुवे पुण्ये व्यतीपाते दिनक्षये। अन्येषु पुण्यकालेषु दीयते दानमादरात्। [illegible] कृत्वा छत्रोपानहसंयुक्तां वैतरणीं गां मृत्युकाले वा दद्यात्। अत्र [illegible] नश्यदं न मम इति तिलयवघृत युक्तं गोपुच्छं द्विजहस्ते दद्यात्।

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	न.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	यो.	घ. प.	[illegible]	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योग.	[illegible]	का.	[illegible]	फ.	रा.	चन्द्राग्रहसंचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	र. क्रा.	चन्द्रास्त घं. मि.
२६।३८	१	बु.	५।४०	प्रा.	८।५६	श्र.	३०।५६	रा.	१९। ३	सि.	४७।५१	रा.	[illegible]	व.	५।४८	८।५६	बा.	३३।२५	२०। २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० माघशुक्लपक्षः (जनवरी ता० १९⋯३१ फरवरी ता० १⋯२ सन् ६९) सौम्यायनं, सौम्यगोलः, शिशिरर्तुः ।

चन्द्रदर्शनम्, मु. ३० कर्क नमन । इष्टिः । पंचकारम्भः ५९।४० (प्रा. ६।३२) । अद्य [illegible] मु. । स्ना. ४ च. [illegible]
गौरीव्रतम् । शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽत्रधंयः । उ. षा. ४च. रविः २१।३७ । पू. भा. २ च. शुक्रः १८।५० । कुम्भे बुधार्कः २४।५ [illegible]
भ. २६।७ (दि. १७।६) उ. ५४।४६ (रा. ४।३४) या. वैनायकी ४ । सतिहीनबलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. । [illegible]
श्रीः पञ्चमी ५ । वसन्त पञ्चमी ५ । सरस्वत्या जन्मदिनम् । वागीश्वरी जयन्ती । कामनहोत्सवः । काशीहिन्दूविश्वविद्यालयप्रतिष्ठा [illegible]
श्रवणेऽर्कः ३७।३२ (रा. २१।२९) । रात्रिशेषे रेवत्यां प्रसूतिकास्नाननवाम्बरधारणनव्यसेवनविपणिव्यापारादि मु. । पू. भा. ३ च. [illegible]
भ. ५३।४४ (रा. ४।८) उ. । अचला ७ । रथ ७ । (अरुणोदये प्रयागस्नानान्महत्फलम्) । अद्य विष्टेः पूर्वं जातकर्मनामकरणा[illegible]
भ. २४।५१ (दि. १६।३४) या. । भीष्माष्टमी ८ । तिथिदानादशिन्यां सामान्य शुभकर्मणां मु. । विशाखाभे कुजः ४९।१२ । [illegible]
कृत्तिकायां सतिहीनबले चन्द्र रोगविमुक्तस्नान मु. । भरण्यां यायिजयदयोगः । श्र. २ च. रविः ५३।३८ ।
अद्य राहिण्यां सूतिकापथ्यस्नानपानविपणिव्यापारजलाशयारामनुप्रतिष्ठादि मु. । पू. भा. ४ च. ओने च कुजः २६।३५ ।
भ. ३६।२० (रा. २१।८) उ. । अद्य विष्टेः पूर्वं पुंसवनसीमन्तोन्नयनसूतिकास्नानशुभगदरवतवस्त्रधारणपूर्वदिग्गमनादि मु. ।
भ. ८।५५ (दि. १०।९) या. । जया ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । अद्य विष्टेः पर वैधृतेः पूर्वञ्च उपनयने लग्नं चिन्त्यम् । तिथि[illegible]
प्रदोषः । अद्य वैधृतेः परं सामान्यशुभकर्मणां कृते लग्नं चिन्त्यम् । श्र. ३ च रविः ९।५६ ।
अद्य भयोदशी पुनर्वसौ जातकर्मनामकरणान्नप्राशनकर्णवेधचूडाकरणशिशुनान्वलभक्षणजलाशयारामनुप्रतिष्ठादि मु. । [illegible]
भ. २४।३९ (दि. १३।२५) उ. ५६।३६ (प्रा. ५।१२) या. । व्रतायमाघीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा । शुभकर्मणि रिक्ताविष्टिदोषः । [illegible]
व्रतस्नानदानादीमाघीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा । माघस्नानसमाप्तिः । तिलवस्त्रकम्बलादिदानम् । पुष्ये सूतिकास्नानीत्यसेवनशिशु[illegible]

विवाह-मुहूर्ताः

[illegible]

दैनिक लग्नसारणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सि. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
१बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२वृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६च.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७भ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९बृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३च.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४भ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ३ रवि-कुम्भलग्नस्पष्टः र. घ. [illegible] । ति. ४ [illegible] । ति. ७ [illegible] । ति. ११ [illegible]

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

दि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. गु.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ति. ५ बुधे

ति. ११ बुधे

त्वजेच्च पृथिवीगन्धमापश्च रसमात्मनः । ज्योतिस्तथा [illegible] वायुः [illegible]
विक्रमं वृत्रहा जह्याद् धर्मं जह्याच्च धर्मराट् । नत्वहं [illegible]
र्थभाः ॥ कृष्ण उवाच—पश्य भूतं भविष्यच्च भीष्मं [illegible]
हि धर्ममयो निधिः । त्वां हि राज्ये स्थिरं [illegible]
[illegible]

 पञ्चमहायज्ञाः । अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ एतान् पञ्चमहायज्ञान् कुर्यादहरहर्द्विजः । न हापयेत्तु तान् प्राज्ञः श्रूयन्तेहि श्रुतावपि ॥ स्वाध्यायेनार्चयेदृषीन् होमैर्देवान् यथाविधि । पितॄन्श्राद्धेन नॄनन्नैर्भूतानि बलिकर्मणा ॥ अप्युद्धृत्य यथाशक्ति किञ्चिदन्नं यथाविधि । पि[illegible]ऽथ [illegible] दद्यादहरहर्द्विजः ॥

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.		घं.	मि.	न.	घ.	प.		घं.	मि.	यो.	घ.	प.		घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	योगः	अं.	का.	ई.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र. क्रा.	द.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२७	१८	१	च.	३१	२०	रा.	१९	५	आश्ले.	१६	४६	दि.	१३	१५	सौ.	२७	३४	सा.	१७	३४	कौ.	३१	२०	१९	५	गै.	६०	०	×	×	सौम्य	३	१५	२१	१	१४	सिं.	१६	४६	१३	१५	६	३३	५	२८	१६	२८	१८	३३
२७	२१	२	मं.	३२	५४	रा.	१९	४१	म.	१९	५७	दि.	१४	३१	शो.	२५	५९	सा.	१६	५५	गै.	२	७	७	२३	ग.	३२	५४	१९	४१	का.द	४	१६	२२	२	१५						६	३३	५	२८	१६	२१	१९	२७
२७	२४	३	बु.	३३	९	रा.	१९	४७	पू.	२१	३३	दि.	१५	१७	अ.	२३	२४	दि.	१५	५३	व.	३	२	७	४४	वि.	३३	९	१९	४७	सुस्थिर	५	१७	२३	३	१६	क.	२७	३	२१	२०	६	३१	५	२९	१६	३	२०	२१
२७	२७	४	गु.	३२	८	रा.	१९	२२	उ.	२२	३३	दि.	१५	३२	सु.	१९	४८	दि.	१४	२६	व.	२	३९	७	३४	बा.	३२	८	१९	२२	मातङ्ग	६	१८	२४	४	१७						६	३१	५	२९	१५	४४	२१	१६
२७	३०	५	शु.	२९	५७	सा.	१८	२२	ह.	२२	५	दि.	१५	२०	धृ.	१५	१७	दि.	१२	३६	कौ.	१	२	६	५५	तै.	२९ / ५८	५७ / २०	१८ / ५	२२ / ५०	अमृत	७	१९	२५	५	१८	तु.	५१	१९	३	२	६	३०	५	३०	१५	२६	२२	१२
२७	३४	६	श.	२६	४४	सा.	१७	११	चि.	२०	३३	दि.	१४	४३	शू.	९	२४	दि.	१०	१५	व.	२६	४४	१७	११	वि.	५४	४०	४	२१	काण	८	२०	२६	६	१९						६	२९	५	३१	१५	७	२३	१२
२७	३७	७	र.	२२	२६	दि.	१५	३१	स्वा.	१८	१०	दि.	१३	४५	गं.	[illegible]	[illegible]	सा.	[illegible]	[illegible]	व.	२२	२६	१५	३१	बा.	५०	९	२	३२	लुम्ब	९	२१	२७	७	२०						६	२९	५	३१	१४	४८	०	१७
२७	४०	८	च.	१७	४३	दि.	१३	३३	वि.	१५	०	दि.	१२	२८	ध्रु.	४१	१८	रा.	२	११	कौ.	१७	४३	१३	३३	तै.	४४	५२	०	२५	मित्र	१०	२२	२८	८	२१	वृ.	०	४८	६	४७	६	२८	५	३२	१४	२९	१	२५
२७	४३	९	मं.	१२	३	दि.	११	२६	अ.	११	५	दि.	१०	५३	व्या.	४१	४३	रा.	२२	९	ग.	१२	३	११	२६	व.	३९	११	२२	८	वज्र	११	२३	२९	९	२२						६	२७	५	३३	१४	९	२	३५
२७	४७	१०	बु.	६	१९	प्रा.	८	५८	ज्ये.	७	६	प्रा.	९	१७	ह.	३३	५४	रा.	२०	०	वि.	६	१९	८	५८	ब.	३३	२२	१९	४८	ध्वांक्ष	१२	२४	३०	१०	२३	ध.	७	६	९	१७	६	२७	५	३३	१३	५०	३	४२
२७	५०	११	गु.	० [illegible]	५४ [illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	मू.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	व.	२६	०	सा.	१६	५०	बा.	०	२६	६	३६	कौ.	२७ [illegible]	५४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वज	१३	२५	१	११	२४						६	२६	५	३४	१३	३०	४	४३
२७	५३	१३	शु.	४९	१	रा.	२	२	उ.	५५	८	रा.	४	२९	सि.	१८	१२	दि.	१३	४२	ग.	२१	४८	१५	२	व.	४९	१	२	२	आनन्द	१४	२६	२	१२	२५	म.	१२	५८	११	३७	६	२५	५	३५	१३	९	५	३८
२७	५६	१४	श.	४३	५६	रा.	२३	५८	श्र.	५१	१०	रा.	३	९	व्य.	११	१	दि.	१०	४९	वि.	१६	२७	१२	५९	श.	४३	५६	२३	५८	चर	१५	२७	३	१३	२६						६	२५	५	३५	१२	४९	●	●
२८	०	३०	र.	३९	२२	रा.	२२	९	ध.	४९	१०	रा.	२	४	व.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	च.	११	३७	११	[illegible]	ना.	३९	२२	२२	९	मातङ्ग	१६	२८	४	१४	२७	कुं.	२०	३०	१४	३६	६	२४	५	३६	१२	२८	●	●

श्रीशुभसंवत २०२५ शकः १८९० फाल्गुनकृष्णपक्षः (फर. ता. ३…१६, सन् १९६९) सौम्यायनं, याम्यगोलः, शिशिरर्तुः ।

दृष्टिः । सर्वार्थविजयदयोगः । मघायां वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्लग्नं चिन्त्यम् । बुधोदयः प्राच्याम् ४४।४८ ।

मघायामुग्रक्रूरकर्माचरणं हिताहम् । उ. भा. २ च. गुरुः १६।२७ ।

भ. ३।२ (प्रा. ७।४४) उ. ३३।९ (रा. १९।४७) या. । गणेशचतुर्थी व्रतम् । धनिष्ठायामर्कः ४३।१४ । विष्टेः पूर्वं वस्तुविक्रयादिकं शुभम् ।

अद्य पञ्चम्यां प्रसूतिकास्नाननवाम्बरधारणभैषज्यसेवनशिशुताम्बूलभक्षणदक्षिणेतरसर्वदिग्गमनवधूप्रवेशद्विरागमनादि मु० ।

अद्य ऋतुमतीस्नानसूतिकास्यौषधसेवनजातकर्मनामकरणान्नप्राशनविद्यारम्भकर्णवेधचूडाकरणगृहप्रवेशद्विरागमनविपणिव्यापार[illegible]मनादि मु० । विवा.[*]

भ. २६।४४ (सा. १७।११) उ. ५४।४० (रा. ४।२१) या. । विष्टेः पूर्वं तिथिदानात् लतागुल्मवृक्षाचारोपणवस्तुक्रयादि मु० । उ. भा. ३ च. गुरुः २०।२० ।

अद्य स्वात्यां प्रसूतिकास्नानौषधसेवनशिशुताम्बूलभक्षणादि मु० । धनि. २ च रविः ०।१३ । उ. भा. ३ च. वक्री बुधः ४९।३५ ।

जानकीजयन्ती । तिथिदानात् मैत्रे सामान्यशुभकर्मणां कृते शोभनकालः । केन्द्रांशवशेनमार्गी बुधः ३८।३८ ।

भ. ३९।११ (रा. २२।८) उ. । नवम्यां सतिहीनबलेन्दौ रोगविमुक्तस्नान मु. ।

भ. ६।१९ (दि. ८।५८) या. । विजया ११ एकादशीव्रतं स्मार्तानाम् । धनिष्ठा ३ च. सं. कुम्भेऽर्कः १७।३१ (दि. १३।२७) मु. ३० फल [illegible] । [illegible]

विजया ११ एकादशीव्रतं वैष्णवानाम् । वसन्तफाल्गुनारम्भः । प्रातः ६।३६ वादनात्परमेकादशीव्रतीनां पारणा । शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषः । उ. भा. ४ च. गुरुः [illegible] ।

भ. ४९।१ (रा. २।२) उ. । प्रदोषः । व्यतिपातात्पूर्वं जातकर्मनामकरणान्नप्राशननवाम्बरधारणादि मु० । गृहप्रवेशे चक्रशुद्धिः । [illegible] च. वृश्चिके च. शुक्रः [illegible] ।

भ. १६।२७ (दि. १२।५९) या. । महाशिवरात्रिः । (पूर्वेद्युः निशीथाद्धूर्ध्वप्रवृत्ताः परेद्युस्तत्कैव समाप्तास्तदा परेद्युरेव [illegible]) । [illegible] च. रविः [illegible] ।

स्नानदानश्राद्धादौ दर्शः ३० । पञ्चकारम्भः २०।३० (दि. १४।३६) ।

[illegible] च. गुरुः [illegible]

विवाह-मुहूर्ताः

ति. १ चन्द्रे मघाभे रविवेधात्[illegible]भावः ।
ति. २ भौमे मघाभे पूर्वदोषः ।
ति. ३ बुधे उ. फा. भे. शनि वेधा-[illegible]भावः ।
ति. ४ गुरौ उ. फा. भे पूर्वदोषः । हस्ते राहु वेधा[illegible]भावः ।
ति. ५ शुक्रे हस्ते पूर्वदोषः ।
ति. ६ शनौ स्वात्यां विष्टेः परं [illegible] [illegible] दे. ८ रू. वि. ।
ति. ७ रवौ स्वात्यां विना लग्न वि. ।
ति. ८ चन्द्रे मैत्रे कुलुषाणभावाप्येवं.प्रा. ।
ति. ९ भौमे मैत्रे पूर्वदोषः ।
ति. १० बुधे मूलभे संक्रान्तिदोषः ।
ति. ११ गुरौ मूलभे स्वल्पकाल. ।
ति. १३ शुक्रे उ. षा. भे. व्यतिपातात्पूर्वं मृत्युबाणः ।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.
१च.	१० ७	११ ४५	१३ ४१	१५ ५८	१८ १२	२० २६	२२ ३९	० ५५	३ १२	५ १८	७ ४	८ ३
२मं.	१० ३	११ ४१	१३ ३७	१५ ५०	१८ ८	२० २२	२२ ३५	० ५१	३ ८	५ १४	७ ०	८ ३
३बु.	९ ५९	११ ३७	१३ ३३	१५ ४६	१८ ४	२० १८	२२ ३१	० ४७	३ ४	५ १०	६ ५६	८ २
४गु.	९ ५५	११ ३३	१३ २८	१५ ४१	१७ ५९	२० १३	२२ २६	० ४२	२ ५९	५ ५	६ ५१	८ २
५शु.	९ ५०	११ २८	१३ २४	१५ ३७	१७ ५५	२० ८	२२ २२	० ३८	२ ५५	५ १	६ ४७	८ १
६श.	९ ४६	११ २४	१३ २०	१५ ३३	१७ ५१	२० ५	२२ १८	० ३४	२ ५१	४ ५७	६ ४३	८ ५
७सू.	९ ४२	११ २०	१३ १६	१५ २९	१७ ४७	२० १	२२ १४	० ३०	२ ४७	४ ५३	६ ३९	८ १
८चं.	९ ३८	११ १६	१३ १२	१५ २५	१७ ४३	१९ ५७	२२ १०	० २६	२ ४३	४ ४९	६ ३५	८ ७
९मं.	९ ३४	११ १२	१३ ८	१५ २१	१७ ३९	१९ ५३	२२ ६	० २२	२ ३९	४ ४५	६ ३१	८ ३
१०बु.	९ ३१	११ ९	१३ ५	१५ १८	१७ ३५	१९ ५०	२२ ३	० १९	२ ३६	४ ४२	६ २८	८ ०
११गु.	९ २६	११ ४	१३ ०	१५ १३	१७ ३१	१९ ४५	२१ ५८	० १४	२ ३१	४ ३७	६ २३	७ ५
१३शु.	९ २२	११ ०	१२ ५६	१५ ९	१७ २७	१९ ४१	२१ ५४	० १०	२ २७	४ ३३	६ १९	७ १
१४श.	९ १९	१० ५७	१२ ५३	१५ ६	१७ २४	१९ ३८	२१ ५१	० ७	२ २४	४ ३०	६ १६	७ ८
३०सू.	९ १५	१० ५३	१२ ४९	१५ २	१७ २०	१९ ३४	२१ ४७	० ३	२ २०	४ २६	६ १२	७ ४

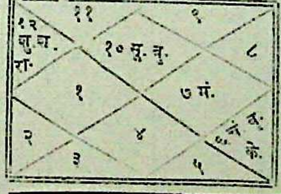
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४४ १४	९ २१ ११ ४	४ ५ ५० २६	६ २४ ३४ २६	९ ९ २२ ३८	५ १७ ३० १७	११ ६ १४ २४	११ २० २५ २२	११ १३ १२ ५	५ १३ १२ ५
४४ १६	९ २२ २० ५	४ १८ ३६ २७	६ २५ ४ ३७	९ ८ ४२ १८	५ १७ २८ ५५	११ ७ २ ८	११ २० ३० ४०	११ १३ ८ ५४	५ १३ ८ ५४
४४ १७	९ २३ २१ ४	५ १ ३७ ३३	६ २५ ३४ ३७	९ ८ ६ ३६	५ १७ २६ ४३	११ ७ ४० २६	११ २० ३६ २	११ १३ ५ ४३	५ १३ ५ ४३
४४ १८	९ २४ २२ २	५ १४ ५४ १२	६ २६ ४ ३०	९ ७ ३६ ६	५ १७ २४ १७	११ ८ ३५ ३३	११ २० ४१ ३१	११ १३ २ ३३	५ १३ २ ३३
४४ १९	९ २५ २२ ५८	५ २८ २६ ६	६ २६ ३४ ९	९ ७ ११ २४	५ १७ २१ २९	११ ९ २१ १	११ २० ४७ ४	११ १२ ५९ २२	५ १२ ५९ २२
४४ २०	९ २६ २३ ५३	६ १२ १२ १०	६ २७ ३ ४८	९ ६ ५२ ४८	५ १७ १८ ५०	११ १० ५ १३	११ २० ५२ ४१	११ १२ ५६ ११	५ १२ ५६ ११
४४ २२	९ २७ २४ ४६	६ २६ २० ४०	६ २७ ३३ ११	९ ६ ४० ३१	५ १७ १५ ५०	११ १० ४८ २५	११ २० ५८ २३	११ १२ ५३ ०	५ १२ ५३ ०
४४ २३	९ २८ २५ ३८	७ १० ११ १२	६ २८ २ २५	९ ६ ३४ ३९	५ १७ १२ ४०	११ ११ ३० ५१	११ २१ ४ ९	११ १२ ४९ ५०	५ १२ ४९ ५०
४४ २५	९ २९ २६ २८	७ २४ ३४ ५२	६ २८ ३१ ३१	९ ६ ३५ १६	५ १७ ९ १८	११ १२ ११ २७	११ २१ ९ ५९	११ १२ ४६ ३९	५ १२ ४६ ३९
४४ २७	१० ० २७ १७	८ ८ ५४ २२	६ २९ ० २६	९ ६ ४२ १७	५ १७ ५ ४६	११ १२ ५१ ४१	११ २१ १५ ५६	११ १२ ४३ २८	५ १२ ४३ २८
४४ २८	१० १ २८ ५	८ २३ १३ ५२	६ २९ २९ १३	९ ६ ५५ ३५	५ १७ २ ३	११ १३ ३० २५	११ २१ २१ ५२	११ १२ ४० १८	५ १२ ४० १८
४४ ३०	१० २ २८ ५०	९ ७ २९ ३२	६ २९ ५७ ४७	९ ७ १५ ०	५ १६ ५८ ९	११ १४ ७ ३३	११ २१ २७ ५४	११ १२ ३७ ७	५ १२ ३७ ७
४४ ३३	१० ३ २९ ३४	९ २१ ३८ ३	७ ० २६ १२	९ ७ ४० २१	५ १६ ५४ ५	११ १४ ४३ ५८	११ २१ ३४ [illegible]	११ १२ ३३ ५६	५ १२ ३३ ५६
४४ ३४	१० ४ ३० १६	१० ५ ३६ ३१	७ ० ५४ २४	९ ८ ११ २३	५ १६ ४९ ५१	११ १५ १८ २७	११ २१ ४० १२	११ १२ ३० ४५	५ १२ ३० ४५

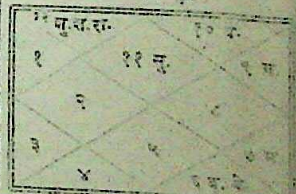
ति. ८ चन्द्रेकुज चन्द्रयुतिः रे. घं. ८।३२ चन्द्रोदक्षिणो ।

ति. १३ शुक्रेबुध चन्द्रयुतिः रे. घं. २।११ चन्द्रोदक्षिणो ।

ति. ४ गुरौ



ति. ११ गुरौ



[illegible] वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम् । कार्यः शरीर-[illegible] ॥ गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौलमौञ्जीनिबन्धनैः । बैजिकं गार्भिकं [illegible] ॥ स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः । महायज्ञैश्च यज्ञैश्च [illegible] ॥ प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते । मन्त्रवत्प्राशनं चास्य [illegible] ॥ नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यां वाऽस्य कारयेत् ॥ पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा [illegible] ॥ चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात् । षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि [illegible] ॥ चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः । प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं [illegible] ॥ [illegible] बीजगर्भसमुद्भवम् । तूष्णीमेताः क्रियाः स्त्रीणां विवा-[illegible] ॥ गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् । गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे [illegible] कार्यं विप्रस्य पञ्चमे । राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनो-ऽष्टमे ॥ आषोडशाद् ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते । [illegible] ॥ अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः । सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः ॥ नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यपि हि कर्हिचित् ॥ [illegible] ग्रहणं चैव क्रमेण विधिपूर्वकम् ॥ सेवेतेमांस्तु नियमान्ब्रह्मचारी गुरौ वसन् । संनियम्येन्द्रियग्रामं [illegible] । नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम् । देवताभ्यर्चनं चैव समिदाधानमेव च ॥ वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान् स्त्रियः । शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम् । [illegible] ञ्जनं चाक्ष्णोरुपानच्छत्रधारणम् । कामं क्रोधं च लोभं च नर्तनं गीतवादनम् ॥ द्यूतं जनापवादं च परिवादं तथानृतम् । स्त्रीणां च प्रेक्षणा[illegible] ॥ एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत् क्वचित् । कामाद्धि स्कन्दयन् रेतो हिनस्ति व्रतमात्मनः ॥ स्वप्ने सिक्त्वा ब्रह्मचारी द्विजः शुक्रमकामतः । स्नात्वा[illegible] ॥ [illegible]दितो गुरुणा नित्यमप्रचोदित एव वा । कुर्यादध्ययने यत्नमाचार्यस्य हितेषु च ॥ वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि यथाक्रमम् । अविप्लुत[illegible] ॥ गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधिः । उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम् ॥ याज्ञवल्क्यः—अविप्लुतब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् । [illegible] यवीयसीम् । अरोगिणीं भ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् ॥ एतैरेव गुणैर्युक्तः सवर्णः श्रोत्रियो वरः । यत्नात्परीक्षितः पुंस्त्वे युवा धीमान् जनप्रियः ॥ अथ फाल्गुनकृष्ण १४ शनौ शिवरात्रिव्रतमाचरणीयं भुक्तिमिच्छद्भिः । उक्तं च— तुष्टोहं [illegible] शिवरात्रिमुपोषकः । [illegible] । माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी । दत्तं शिवफलं यस्मात् तेन सर्वसुरासुरैः । शिवरात्रिरिति ख्याता [illegible] पृथक् स्थिता ॥ साक्ष्येऽनृतं विगर्हितं तत्र मनुः । [illegible] साक्ष्यं श्रवणाच्चैव सिद्ध्यति । तत्र सत्यं ब्रुवन् साक्षी धर्मार्थाभ्यां न हीयते ॥ साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्विब्रुवन्नार्यसंसदि । अवाङ् नरकमभ्येति प्रेत्य स्वर्गाच्च हीयते ॥ यत्रानिबद्धोऽपीक्षेत शृणुयाद्वापि किञ्चन । दृष्टस्तत्रापि तद् ब्रूयाद् यथादृष्टं यथाश्रुतम् ॥ सत्यं साक्ष्ये ब्रुवन् साक्षी लोकानाप्नोति पुष्कलान् । इह चानुत्तमां कीर्तिं वागेषा ब्रह्मपूजिता ॥ साक्ष्येऽनृतं वदन् पाशैर्बध्यते वारुणैर्भृशम् । विवशः शतमाजातीस्तस्मात्साक्ष्ये वदेदृतम् ॥ सत्येन पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्धते । तस्मात् सत्यं हि वक्तव्यं सर्ववर्णेषु साक्षिभिः । द्यौर्भूमिरापो हृदयं चन्द्रार्काग्नियमानिलाः । [illegible] ॥ मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः ॥ तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तरपूरुषः ॥ ब्रह्मघ्ना ये स्मृता लोका ये च स्त्रीबालघातिनः । मित्रद्रुहः कृतघ्नस्य ते ते स्युर्ब्रुवतो मृषा ॥ जन्मप्रभृति यत् किंचित्पुण्यं भद्र त्वया कृतम् । तत्तत्सर्वं शुनो गच्छेद्यदि ब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानं यत्त्वं कल्या[illegible], § ३० पृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

दि. मा. व. प.	ति.	वा.	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	क्रा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचार घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. अं. क.	चंद्रास्त घं. मि.
२८ ४	१	चं.	३५ ४१	रा.	२० ३१	श.	४७ २२	रा.	१ २०	शि.	५१ ५५	रा.	३ ९	कि.	७ ३१	९ २४	ब.	३५ ४१	२० ३१	अमृत	१७	२१	५	१५	२८		६ २३	५ ३७	१२ ७	१८ ४१
२८ ८	२	मं.	३२ ५९	रा.	१९ ३४	पू.	४६ ३३	रा.	१ ०	सि.	४७ ०	रा.	१ ११	बा.	४ २०	८ ६	कौ.	३२ ५९	१९ ३४	काण	१८	३०	६	१६	२९	मी. २१ ४५ १९ ५	६ २३	५ ३७	११ ४५	१९ ४३
२८ ११	३	बु.	३१ २५	सा.	१८ ५६	उ.	४६ ५३	रा.	१ ७	सा.	४३ ०	रा.	२३ ३४	तै.	२ १२	७ १५	ग.	३१ २५	१८ ५६	लुम्ब	१९	१	७	१७	३०		६ २२	५ ३८	११ २५	२० ४१
२८ १५	४	गु.	३१ ८	सा.	१८ ४८	रे.	४८ २७	रा.	१ ४४	शु.	३९ ५१	रा.	२२ २१	व.	१ १७	६ ५२	वि.	३१ ८	१८ ४८	मित्र	२०	२	८	१८	१	मे. ४८ २७ १ ४४	६ २१	५ ३९	११ ४	२१ ३८
२८ १८	५	शु.	३२ ११	रा.	१९ १३	अ.	५१ १६	रा.	२ ५१	शु.	३७ ५१	रा.	२१ ३२	ब.	१ ३९	७ ०	बा.	३२ ११	१९ १३	वज्र	२१	३	९	१९	२		६ २०	५ ४०	१० ४२	२२ ३४
२८ २१	६	श.	३४ २८	रा.	२० ७	भ.	५५ १३	रा.	४ २६	ब्र.	३६ ५७	रा.	२१ ७	कौ.	३ २०	७ ४०	तै.	३४ २८	२० ७	ध्वांक्ष	२२	४	१०	२०	३		६ २०	५ ४०	१० २१	२३ ३०
२८ २५	७	र.	३७ ५९	रा.	२१ ३१	कृ.	६० ०	ग.	× ×	ऐं.	३६ ५१	रा.	२१ ३	ग.	६ १४	८ ४९	व.	३७ ५९	२१ ३१	धूम्र	२३	५	११	२१	४	वृ. ११ ३३ १० १६	६ १९	५ ४१	९ ५९	० २५
२८ २८	८	चं.	४२ २७	रा.	२३ १७	कृ.	० २१	प्रा.	६ २७	वै.	३७ २९	रा.	२१ १८	वि.	१० १३	१० २४	ब.	४२ २७	२३ १७	सुस्थिर	२४	६	१२	२२	५		६ १८	५ ४२	९ ३७	१ २०
२८ ३२	९	मं.	४७ ३४	रा.	१ १९	रो.	६ १७	प्रा.	८ ४८	वि.	३८ ४०	रा.	२१ ४६	बा.	१५ ०	१२ १८	कौ.	४७ ३४	१ १९	मातङ्ग	२५	७	१३	२३	६	मि. ३९ २१ २२ ५	६ १८	५ ४२	९ १५	२ १५
२८ ३६	१०	बु.	५२ ५७	रा.	३ २८	मृ.	१२ ४२	दि.	११ २२	प्री	४० ७	रा.	२२ २०	तै.	२० १६	१४ २३	ग.	५२ ५७	३ २८	अमृत	२६	८	१४	२४	७		६ १७	५ ४३	८ ५२	३ ८
२८ ३९	११	गु.	५८ ११	प्रा.	५ ३३	आ.	१९ २६	दि.	१४ २	आ.	४१ ३०	रा.	२२ १२	व.	२५ ३४	१६ ३२	वि.	५८ ११	५ ३३	काण	२७	९	१५	२५	८		६ १६	५ ४४	८ ३०	३ ५५
२८ ४३	१२	शु.	६० ०		× ×	पु.	२५ ४३	दि.	१६ ३३	सौ.	४२ ३२	रा.	२३ १६	ब.	३० ३०	१८ २८	बा.	६० ०	× ×	लुम्ब	२८	१०	१६	२६	९	क. ९ ९ ९ ५५	६ १५	५ ४५	८ ७	४ ३१
२८ ४६	१२	श.	२ ५०	प्रा.	७ २३	पु.	३१ १७	सा.	१८ ४५	शो.	४२ ५९	रा.	२३ २६	बा.	२ ५०	७ २३	कौ.	३४ ४२	२० ८	मित्र	१	११	१७	२७	१०		६ १५	५ ४५	७ ४५	५ १८
२८ ५०	१३	र.	६ ३५	प्रा.	८ ५२	श्ले.	३५ ५२	रा.	२० ३५	अ.	४२ ३१	रा.	२३ १८	तै.	६ ३५	८ ५२	ग.	३७ ५४	२१ २४	वज्र	२	१२	१८	२८	११	सिं. ३५ ५३ २० ३५	६ १४	५ ४६	७ २२	५ ५४
२८ ५४	१४	चं.	९ १३	प्रा.	९ ५५	म.	३९ २१	रा.	२१ ५८	सु.	४१ २५	रा.	२२ ४७	व.	९ १३	९ ५५	वि.	३९ ५६	२२ १२	ध्वांक्ष	३	१३	१९	२९	१२		६ १३	५ ४७	६ ५९	× ×
२८ ५७	१५	मं.	१० ३९	दि.	१० २८	पू.	४१ ३५	रा.	२२ ५१	धृ.	३९ ११	रा.	२१ ५३	ब.	१० ३९	१० २८	बा.	४० ४२	२२ २९	धूम्र	४	१४	२०	३०	१३	क. ५६ ५० ४ ५७	६ १३	५ ४७	६ ३६	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० फाल्गुनशुक्लपक्षः (फरवरी ता० १७···२८, मार्च ता० १....४ सन् १९६९) सौम्यायनं, याम्यगोलः शिशिरर्तुः ।

इष्टिः । प्रतिपदि सूतिकास्नानजातकर्मनामकरणादि मु. । पूर्वायां वस्तुविक्रयः शुभः । *१७।२९ । मीने दृश्याकः ०।५५ । †शिल्पकार्यविपणिव्यापारादि मु. ।
चन्द्रदर्शनम्, मु. ३० फलं समम् । शतभिषायामर्कः ५२।५७ । अथोत्तरायां प्रसूतिकास्नानसुभगतरस्त्रवस्त्रादिधारण मु. । ह. २ च. वक्रीगुरुः ५।५६ ।
तृतीयायामृतुमतीस्नानस्तनपानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभूम्युपवेशनखट्वारोहणनिगृताम्लूलभक्षणनवाम्बरधारणादि मु. । उपनयने लग्नं चिन्त्यम् । श्रवणे बुधः २३।२४ । रेवत्यां शुक्र [illegible]
भ. ११।१७ (प्रा. ६।५२) उ. ३१।८ (सा. १८।४८) या. । वैनायकी ४ । पञ्चकनिवृत्तिः ४८।२७ (रा. १।४४) । अत्र पञ्चम्यां प्रसूतिकास्नानवधूप्रवेशद्विरागमन [illegible]
पञ्चम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशनकर्णवेधचूडाकरणविद्यारम्भजलाशयारामसुरप्रतिष्ठाविपणिव्यापारशिल्पेतरदिग्गमनवधूप्रवेशद्विरागमनादि विविध मु. । व्रतबन्धे [illegible] ।
भरण्यां विहितकर्मणां मुहूर्तः । शत. २ च. रविः ११।८ । मैत्रे कुजः ०।५४ । ¶वादनात्परं होलिकादाहः । धनिष्ठा ने बुधः [illegible] । रे. ३ च. शनिः [illegible] ।
भ. ३७।५९ (रा. २१।३१) उ. । विष्टेः पूर्वं वस्तुविक्रयधान्यच्छेदनाग्निकार्यादि मु. । श्र. २ च. बुधः २।९ । ‡रामसुरप्रतिष्ठादि मु. । व्रतबन्धे लग्नं चिन्त्यम् ।
भ. १०।१३ (दि. १०।२४) या. । होलाष्टकारम्भः । वैधृतिरिक्तादि दोषाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । ||भूशयनदोषः । अनु. २ च. कुजः ३३।२९ ।
अत्र रात्रिशेषे प्रसूतिकास्नानसुभगेतरनवाम्बरधारणपूर्वदिग्गमनादि मु. । शत. ३ च. रविः २९।४१ । श्र. ३ च. बुधः ५९।४४ । §श. बुधः ३३।० । [illegible]
मृगशिरसि ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनकर्णवेधचूडाकरणविद्यारम्भजलाशयारामसुरप्रतिष्ठाविपणिव्यापारादि मु. । व्रतबन्धे लग्नं चिन्त्यम् । [illegible]
भ. २५।३४ (दि. १६।३०) उ. ५८।११ (प्रा. ५।३३) या. । आमलकी ११ एकादशीव्रतं स्मार्तानाम् । पुनर्वसौ विष्टेः पूर्वं सूतिकास्नान [illegible]
आमलकी ११ एकादशीव्रतं वैष्णवानाम् । अत्र जातकर्मकर्णवेधनिगुताम्लूलभक्षणविद्यारम्भजलाशयारामसुरप्रतिष्ठाविपणिव्यापारादि विविध मु. । [illegible]
शनिप्रदोषः । त्रयोदश्यां पुष्ये वधूप्रवेशद्विरागमनपूर्वेतरसर्वदिग्गमनादि मु. । गृहारम्भे चक्रशुद्धिसत्त्वेऽपि ||
[illegible] धान्यच्छेदनाग्निकार्यादिकं च ।
भ. ९।१३ (दि. ९।५५) उ. ३९।५६ (रा. २२।१२) या. । व्रताय पूर्णिमा १५ पुण्यतमा । अद्य रात्रौ २२।१२¶
स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा । काश्यामद्यैव होलिकोत्सवः । चतुःषष्ट्योयात्रा । पूर्वाभाद्रपदायामर्कः ७।४७ ।

वयस्यां च महाभागः [illegible]
कुलं ततः । पुत्रा. [illegible]
धानते । पुत्रा [illegible]
अ. द. म. प. [illegible] ३० [illegible]

॥ विवाह मुहूर्ताः ॥
ति. २ भौमे-उ. भा. [illegible]
ति. ३ बुधे-उ. भा. [illegible] पूर्वदोषः । [illegible]
ति. ४ गुरौ-रेवत्यां पूर्वदोषः ।
ति. ८ चन्द्रे-रोहिण्यां वैधृतेःपरं [illegible] रे. ७ ज. चि. ।
ति. ९ भौमे-रोहिण्यां विवाह. चि. । मृगे च [illegible] रे. ७ [illegible]
ति. १० बुधे-मृगे विवाहलग्नं चिन्त्यम् ।
ति. १३ शनौ-मघायां [illegible] रे. ७ [illegible] चि. ।
ति. १४ रवौ-विष्टेःपूर्वं मघायां [illegible]
ति. १५ भौमे उ. फा. [illegible] दोषः ।

दैनिक लग्नसारिणी

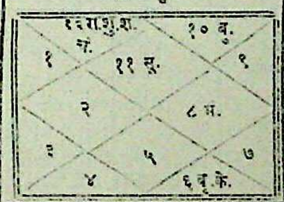
तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कुं. प्र.	मी. प्र.
१च.	९ ११	१० ४९	१२ ४५	१४ ५८	१७ १६	१९ ३०	२१ ४३	२३ ५९	२ १६	४ २२	६ ८	७ ४०
२मं.	९ ८	१० ४६	१२ ४२	१४ ५५	१७ १३	१९ २७	२१ ४०	२३ ५६	२ १३	४ १९	६ ५	७ ३७
३बु.	९ ४	१० ४२	१२ ३८	१४ ५१	१७ ९	१९ २३	२१ ३६	२३ ५२	२ ९	४ १५	६ १	७ ३३
४गु.	९ ०	१० ३८	१२ ३४	१४ ४७	१७ ५	१९ १९	२१ ३२	२३ ४८	२ ५	४ ११	५ ५७	७ २९
५शु.	८ ५६	१० ३४	१२ ३०	१४ ४३	१७ १	१९ १५	२१ २८	२३ ४४	२ १	४ ७	५ ५३	७ २५
६श.	८ ५३	१० ३१	१२ २७	१४ ४०	१६ ५८	१९ १२	२१ २५	२३ ४१	१ ५८	४ ४	५ ५०	७ २२
७सू.	८ ४९	१० २७	१२ २३	१४ ३६	१६ ५४	१९ ८	२१ २१	२३ ३७	१ ५४	४ ०	५ ४६	७ १८
८चं.	८ ४५	१० २३	१२ १९	१४ ३२	१६ ५०	१९ ४	२१ १७	२३ ३३	१ ५०	३ ५६	५ ४२	७ १४
९मं.	८ ४१	१० १९	१२ १५	१४ २८	१६ ४६	१९ ०	२१ १३	२३ २९	१ ४६	३ ५२	५ ३८	७ १०
१०बु.	८ ३७	१० १५	१२ ११	१४ २४	१६ ४२	१८ ५६	२१ ९	२३ २५	१ ४२	३ ४८	५ ३४	७ ६
११गु.	८ ३४	१० १२	१२ ८	१४ २१	१६ ३९	१८ ५३	२१ ६	२३ २२	१ ३९	३ ४५	५ ३१	७ ३
१२शु.	८ ३०	१० ८	१२ ४	१४ १७	१६ ३५	१८ ४९	२१ २	२३ १८	१ ३५	३ ४१	५ २७	६ ५९
१२श.	८ २६	१० ४	१२ ०	१४ १३	१६ ३१	१८ ४५	२० ५८	२३ १४	१ ३१	३ ३७	५ २३	६ ५५
१३सू.	८ २२	१० ०	११ ५६	१४ ९	१६ २७	१८ ४१	२० ५४	२३ १०	१ २७	३ ३३	५ १९	६ ५१
१४चं.	८ १९	९ ५७	११ ५३	१४ ६	१६ २४	१८ ३८	२० ५१	२३ ७	१ २४	३ ३०	५ १६	६ ४८
१५मं.	८ १५	९ ५३	११ ४९	१४ २	१६ २०	१८ ३४	२० ४७	२३ ३	१ २०	३ २६	५ १२	६ ४४

ति. ४ गुरौ-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घ. ९।३७ चन्द्रोदक्षिणे । अद्यैव शनिचन्द्रयुतिः रे. घं. २१।५ शनिर्दक्षिणे ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतः

मि. मा.	स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
४४ ३६	१० ५ ३० १६	१० १९ २२ ३३	७ १ २२ २९	९ ८ ४७ ४९	५ १६ ४५ २५	११ [illegible] ११ ४४	११ २१ ४६ २६	११ १२ २७ ३५	५ १२ २७ ३५
४४ ३८	१० ६ ३१ २५	११ २ ५४ २५	७ १ ५० १९	९ ९ २९ २४	५ १६ ४० ४९	११ १६ २३ ३२	११ २१ ५२ ४५	११ १२ २४ २४	५ १२ २४ २४
४४ ३९	१० ७ ३२ १२	११ १६ ११ ३	७ २ १७ ५९	९ १० १५ ४८	५ १६ ३६ ३	११ १६ ५३ ३८	११ २१ ५९ ७	११ १२ २१ १३	५ १२ २१ १३
४४ ४१	१० ८ ३२ ४८	११ २९ १२ ६	७ २ ४५ २६	९ ११ ६ ४९	५ १६ ३१ ८	११ १७ २२ ४७	११ २२ ५ ३३	११ १२ १८ २	५ १२ १८ २
४४ ४३	१० ९ ३३ २२	० ११ ५८ ६	७ ३ १२ ४३	९ १२ २ ९	५ १६ २६ ४	११ १७ ४९ २०	११ २२ १२ ३	११ १२ १४ ५२	५ १२ १४ ५२
४४ ४५	१० १० ३३ ५३	० २४ ३० १४	७ ३ ३९ ४५	९ १३ १ ४४	५ १६ २० ४८	११ १८ १४ ४३	११ २२ १८ ३६	११ १२ ११ ४१	५ १२ ११ ४१
४४ ४८	१० ११ ३४ २३	१ ६ ५० २६	७ ४ ६ ३८	९ १४ ४ ४७	५ १६ १५ २६	११ १८ ३८ २१	११ २२ २५ ११	११ १२ ८ ३०	५ १२ ८ ३०
४४ ५०	१० १२ ३४ ५१	१ १९ १ १२	७ ४ ३३ १५	९ १५ ११ ३८	५ १६ ९ ५३	११ १८ ५९ ३८	११ २२ ३१ ५०	११ १२ ५ १९	५ १२ ५ १९
४४ ५२	१० १३ ३५ १७	२ १ ५ २३	७ ४ ५९ ४१	९ १६ २१ ४९	५ १६ ४ १३	११ १९ १९ ४६	११ २२ ३८ ३३	११ १२ २ ९	५ १२ २ ९
४४ ५४	१० १४ ३५ ४१	२ १३ ६ ५१	७ ५ २५ ५९	९ १७ ३५ ९	५ १५ ५८ २४	११ १९ ३७ ६	११ २२ ४५ २०	११ ११ ५८ ५८	५ ११ ५८ ५८
४४ ५६	१० १५ ३६ ३	२ २५ ९ ४	७ ५ ५२ ११	९ १८ ५१ २७	५ १५ ५२ २५	११ १९ ५२ ४१	११ २२ ५२ १०	११ ११ ५५ ४७	५ ११ ५५ ४७
४४ ५९	१० १६ ३६ २३	३ ७ १५ ५४	७ ६ १७ ५३	९ २० १० २८	५ १५ ४६ १८	११ २० ६ २८	११ २२ ५९ ५	११ ११ ५२ ३६	५ ११ ५२ ३६
४५ १	१० १७ ३६ ४२	३ १९ ३० ३३	७ ६ ४३ ७	९ २१ ३२ ४	५ १५ ४० ४	११ २० १७ ३५	११ २३ ६ १	११ ११ ४९ २६	५ ११ ४९ २६
४५ ३	१० १८ ३६ ५९	४ १ ५५ ४९	७ ७ ८ १२	९ २२ ५६ ५	५ १५ ३३ ४२	११ २० २७ १०	११ २३ १३ ०	११ ११ ४६ १५	५ ११ ४६ १५
४५ ६	१० १९ ३७ १३	४ १४ ३३ ५७	७ ७ ३३ १३	९ २४ २२ २१	५ १५ २७ १४	११ २० ३३ ३५	११ २३ २० १	११ ११ ४३ ४	५ ११ ४३ ४
४५ ८	१० २० ३७ २६	४ २७ २६ ३६	७ ७ ५७ ५५	९ २५ ५० ४८	५ १५ २० ३८	११ २० ३७ ५१	११ २३ २७ ४	११ ११ ३९ ५३	५ ११ ३९ ५३

ति. ४ गुरौ



ति. ११ गुरौ



[illegible] आपदं । कस्मात्त्विषयन्ते पुरुषा
[illegible] प्रब्रवीमि यन्मां त्वमनुपृच्छसि ।
[illegible] आचारात्तल्लभते श्रियम् ।
[illegible] दुराचारो हि पुरुषो नेहायुर्विन्दते महत् ।
[illegible] आचारलक्षणो धर्मः सन्तश्चारित्रलक्षणाः ।
[illegible] ये नास्तिका निष्क्रियाश्च गुरुशास्त्रातिलङ्घिनः ।
[illegible] विशीला भिन्नमर्यादा नित्यं संकीर्णमैथुनाः ।
[illegible] अक्रोधनः सत्यवादी भूतानां सर्वहितकः ।
[illegible] ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत् ।
[illegible] एवमेवापरां सन्ध्यां समुपासीत वाग्यतः ।

नेक्षेतादित्यमुद्यन्तं नास्तं यान्तं कदाचन ॥ [illegible] सर्वदा ॥ परदारा न गन्तव्याः सर्ववर्णेषु कर्हिचित् । न हीदृशमनायुष्यं लोके किञ्चन विद्यते । यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम् । [illegible] । पूर्वाह्ण एव कार्याणि देवतानाञ्च पूजनम् । नाज्ञातैः सह गच्छेत नैको न वृषलैः सह । [illegible] राजन्य एव च । वृद्धाय भारतप्ताय गर्भिण्यै दुर्बलाय च ॥ ब्रह्मचारी च नित्यं स्यात् पादं पादेन नाक्रमेत् । [illegible] अष्टम्यां सर्वपक्षाणां ब्रह्मचारी सदा भवेत् । आक्रोशं परिवादं च पैशुन्यं च विवर्जयेत् ॥ नारुन्तुदः स्यान्न नृशंसवादी न हीनतः परमभ्याददीत । [illegible] वाक्सायका वदनान्निष्पतन्ति यैराहतः शोचति रात्र्यहानि । परस्य ये मर्मसु निपतन्ति तान् पण्डितो नावसृजेत् परेषु ॥ हीनाङ्गानतिरिक्ताङ्गान् विद्याहीनान् विगर्हितान् । रूपद्रविणहीनांश्च सत्त्वहीनांश्च नाक्षिपेत् ॥ नास्तिक्यं वेदनिन्दां च देवतानां च कुत्सनम् । द्वेषस्तम्भाभिमानञ्च तैक्ष्ण्यञ्च परिवर्जयेत् ॥ कृत्वा मूत्रपुरीषे तु रथ्यामाक्रम्य वा पुनः । पादप्रक्षालनं कुर्यात् स्वाध्याये भोजने तथा ॥ न चाभ्युदितशायी स्यात् प्रायश्चित्ती तथा भवेत् ॥ माता पितरमुत्थाय पूर्वमेवाभिवादयेत् । आचार्यमथवाप्यन्यं तथायुर्विन्दते महत् ॥ न चैवार्द्राणि वासांसि नित्यं सेवेत मानवः । उदक्यया च सम्भाषां न कुर्वीत कदाचन ॥ नोत्सृजेत पुरीषं च क्षेत्रे ग्रामस्य चान्तिके । उभे मूत्रपुरीषे तु नाप्सु कुर्यात् कदाचन ॥ [illegible] दूरतः परिवर्जयेत् ॥ निषण्णश्चापि खादेत न तु गच्छन् कदाचन । मूत्रं नोत्तिष्ठता कार्यं न भस्मनि न गोव्रजे ॥ आर्द्रपादस्तु भुञ्जीत नार्द्रपादस्तु संविशेत् । आर्द्रपादस्तु भुञ्जानो वर्षाणां जीवते शतम् ॥ ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर आयति । प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते । अभिवाद्य च वृद्धांश्च दद्यात्तैवासनं स्वयम् । कृताञ्जलिरुपासीत गच्छन्तं पृष्ठतोऽन्वियात् ॥ नैकवस्त्रेण भोक्तव्यं न नग्नः स्नातुमर्हति ॥ न चाभाष्य गिरः स्नायात् तथाऽस्यायुर्न रिष्यते ॥ नाध्यापयेत्तथोच्छिष्टो नाधीयात कदाचन । [illegible] च पूतिगन्धं च मनसापि न चिन्तयेत् ॥ प्रत्यादित्यं प्रत्यनलं प्रतिगाञ्च प्रतिद्विजान् । ये मेहन्ति च पन्थानं ते भवन्ति गतायुषः ॥ दूरादावसथान्मूत्रं दूरात् पादावसेचनम् । उच्छिष्टोत्सर्जनं चैव दूरे कार्यं हितैषिणा ॥ विपर्ययं न कुर्वीत वाससो बुद्धिमान् नरः । तथानान्यधृतं धार्यं न चापदशमेव च ॥ अन्यदेव भवेद् वासः शयनीये नरोत्तम ॥ अन्यद्रथ्यासु देवानामर्चायामन्यदेव हि ॥ उपवासञ्च कुर्वीत स्नातः शुचिरलङ्कृतः ॥ पर्वकालेषु सर्वेषु ब्रह्मचारी सदा भवेत् ॥ परापवादं न ब्रूयान्नाप्रियं च कदाचन । न मन्युः कश्चिदुत्पाद्यः पुरुषेण भवार्थिना ॥ न चास्नातां स्त्रियं गच्छेत्तथायुर्विन्दते महत् । निष्ठीव्य तु तथा क्षुत्वा स्पृश्यापो हि शुचिर्भवेत् । वृद्धो ज्ञातिस्तथा मित्रं दरिद्रो यो भवेदपि । गृहे वासयितव्यास्ते धन्यमायुष्यमेव च । गन्धर्व्यां न स्वपेद्राजन् स्त्रियं न च समाचरेत् । न भुञ्जीत च मेधावी तथायुर्विन्दते महत् ॥ महाकुले प्रसूतां च प्रशस्तां लक्षणैस्तथा ।

 तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्यं मे धेहि ॥ बलमसि बलं मे धेहि बलंवाऽथ विज्ञानाद्‌भूयोऽपि ह शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते ॥ नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः । सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया । बलवन्तं प्रतिष्ठाहमात्मानं सततं कुरु ॥ दृतेदृंह मासिन्नस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

दि. मा. घ. प	ति	वा.	घ. प	सूर्य	घं. मि.	न.	घ. प.	सूर्य	घं. मि	यो	घ. प.	सूर्य	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	योगः	अं.	क्रा.	घं.	क्र.	रा.	चन्द्रराशिसञ्चारः रा. घ. प. घं. मि	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. द. उ	चन्द्रोदय घं. मि
[illegible]																														

श्रीशुभसंवत् २०२५ शकः १८९० चैत्रकृष्णपक्षः (मार्च ता० ५……१८ मन् १९६९) सौम्यायनं, याम्यगोलः, वसन्तर्तुश्च ।

इष्टिः । होली । वसन्तोत्सवः । रजोत्सवः । श्वपचस्पर्शः । होलिकाभस्मधारणम् । चूतकुसुमप्राशनम् । तैलाभ्यङ्गपूर्वकस्नानम् । अथ द्वितीयायां
भ. ३८।३० (रा. २१।३५) उ. । विष्टेःपूर्वं प्रसूतिकास्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनविद्यारम्भजलाशयारामसुरप्रतिष्ठादिगिरागार§
भ. ७।२१ (प्रा. ९।७) या. । गणेश ४ व्रतम् । शुभकर्मणि आदौ विष्टिस्ततोरिक्तादोषः । पू. भा. २ च. रविः २७।२६ । धनि. ३ च. कुम्भे च बुधः§
शुभकर्मणि तिथिक्षयदोषोऽवर्ज्यः । पञ्चम्यां यायिजयप्रदयोगः । ‡विविधशुभकर्मादिकृतेशोभनकालः । धनि. २ च. बुधः १७।५३ ।
भ. ५४।४४ (रा. ४।६) उ. । विद्यायामग्निकार्यंहितावहम् । मैत्रे विष्टेः पूर्वं भैषज्यसेवनलतागुल्मवृक्षारोपण मु. । अनु. ३ च. शुक्रः¶
भ. २२।११ (दि. १५।१०) या. । विष्टेः परं मैत्रे भैषज्यसेवनपूर्वोत्तरसर्वदिग्गमनजातकर्मादि मु. । पू. भा. ३ च. रविः ४७।२५ ।
अष्टका श्राद्धम् । शीतलाष्टमी ८ । ज्येष्ठायां स्थायिकार्यंऽह समयः । शतभिषजि बुधः ३४।४३ । रे. ३ च. शुक्रः ४५।१७ ।
अथ व्यतिपातात्परं वस्तुविक्रयादि मु. । ऽवधूप्रवेशद्विरागमनादि विविध मु. । शतवर्षे लग्नं चिन्त्यम् । §२७।५२ ।
भ. ४।४२ (प्रा. ७।५९) उ. ३१।४४ (सा. १८।४७) या. । अथ विष्टेः परं विविधशुभकर्मणां कृते शोभनकालः । प्रसूतिकास्नानमूर्ध्वं
पापमोचनी ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । पू. भा. ४ च. सं. मीने चार्कः ७।४८ (दि. ९।१२) मु. ४५ फलं समर्घकरम् । वाहनादिकं [illegible]
शनिप्रदोषः । वक्रचन्द्रारम्भः । त्रयोदश्यां कुम्भेन्दौ पश्चिमदिग्यात्रा शुभा । शत. ३ च. बुधः २९।१४ । ¶५२।८ । धनि. ४ च. बुधः [illegible]
भ. १६।११ (दि. १२।३२) उ. । ४४।३६ (रा. २३।५४) या. । वारुणीपर्व । मासशिवरात्रिः । त्रयोदश्यामेव सामान्यशुभकर्माणि मु. ।
श्राद्धादौ दर्शः ३० । उ. भा. भेऽर्कः २८।३८ । शुभे रिक्ताविष्ट्यादिदोषः । शत. ४ च. बुधः २३।२१ । ⊕शत. २ च. बुधः [illegible]
स्नानदानादौ दर्शः ३० । प्रतिपदुत्तरायोगे प्रसूतिकास्नानाचरणं हितावहम् । Σकोष्ठकाद्‌ग्राह्यम् ।

विवाहमुहूर्त्ताः

ति. १ बुधे उ. फा. भे शान्तिकापाल्कन्या-
मावः । तुले च [illegible] ।
ति. २ गुरौ हस्ते [illegible] ।
ति. ३ शुक्रे [illegible] रे. ८
[illegible] लग्नं चिन्त्यम् ।
ति. ४ शनौ स्वात्यां [illegible]
[illegible] ।
ति. ६ रवौ मैत्रे [illegible]
[illegible] ।
ति. ७ चन्द्रे मैत्रे [illegible] ।
ति. ८ भौमे मूले [illegible]
[illegible] रे. ८ [illegible] ।
ति. ९ बुधे मूले [illegible] ।
ति. १० गुरौ विष्टेः पर रे. ८ [illegible] ।
[illegible]

[illegible] मनीषिभिर्गवेषितम् ॥ [illegible] उवाच-एवमुक्तस्ततो भीमो जरासन्धमरिन्दमम् । उत्तिष्ठ [illegible] महाबलम् । [illegible] भरत-र्षभ । बभञ्ज पृष्ठं संक्षिप्य निष्पिष्य विननाद च ॥ [illegible] राजानो मधुसूदनम् । पूजयामासु-[illegible] ॥ दैत्य-[illegible] महाकाले त्वयि देवकिनन्दने । भीमार्जुनबलोपेते धर्मस्य प्रतिपाल-नम् ॥ [illegible] शान्तिः शान्तिः शान्तिः श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।

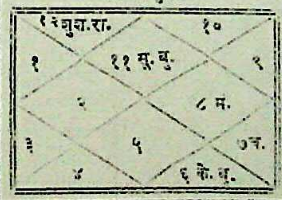
दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	म.	प्र.	कु.	प्र.	मी.	प्र.	मे.	प्र.	वृ.	प्र.	मि.	प्र.	क.	प्र.	सिं.	प्र.	क.	प्र.	तु.	प्र.	वृ.	प्र.	ध.	प्र.
[illegible]																								

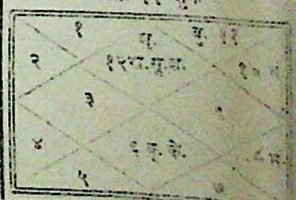
मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

स्प.	सू.	स्प.	चं.	स्प.	मं.	स्प.	बु.	स्प.	गु.	स्प.	शु.	स्प.	श.	स्प.	रा.	स्प.	के.
[illegible]																	

ति. ३ शुक्रे



ति. ११ शुक्रे



ति. १ बुधे-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. २२।५५ चन्द्रोदक्षिणे ।
ति. १२ रवौ-बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. २११७ बुधेदक्षिणे ।

पादाभिवन्दनम् । कर्षः कक्ष्या विधुन्वानावास्फोट तत्र चक्रतुः ॥ स्कन्धे दाभ्यां समाहृत्य निहत्य च मुहुर्मुहुः । अङ्गमङ्गैः समाश्लिष्य पुनरास्फालनं विभो । [illegible] कृत्वा कक्षाबन्धं च चक्रतुः । गलगण्डाभिघातेन सस्फुलिङ्गेन चाशनिम् ॥ करग्रहणपूर्वं तु कृत्वा करसम्पीडनं कृत्वा गर्जन्तौ वारणाविव । नर्दन्तौ मेघसङ्काशौ बाहुप्रहरणावुभौ ॥ तलेनाहन्यमानौ तौ अन्योन्यकृतवीक्षणौ । सिंहाविव सुसंक्रुद्धौ बाहुव्याकृष्य युध्यताम् ॥ अङ्गेनाङ्गं समापीड्य बाहुभ्यामुभयोरपि । आवृत्य बाहुभिश्चापि उदरं च प्रचक्रतुः ॥ बाहुपाशादिकं कृत्वा पादाहतशिरावुभौ । उरोहस्तं ततश्चक्रे पूर्णकुम्भौ प्रयुज्यतौ ॥ चाक्षिपत् ॥ सर्वातिक्रान्तमर्यादं पृष्ठभङ्गञ्च चक्रतुः । सम्पूर्णमूर्च्छा बाहुभ्यां पूर्णकुम्भं प्रचक्रतुः ॥ तृणपीडं यथाकामं पूर्णयोगं समुष्टिकम् । एवमादीनि युद्धानि प्रकुर्वन्तौ परस्परम् ॥ नयोर्युद्धं ततो द्रष्टुं समेताः पुरवासिनः । ब्राह्मणा वणिजश्चैव क्षत्रियाश्च सहस्रशः ॥ शूद्राश्च नरशार्दूल स्त्रियो वृद्धाश्च सर्वशः । निरन्तर-

[illegible] जितात्मा नरो न रोगी स्यात् । [illegible] ॥ हिताशी स्यान्मिताशी स्यात् कालभोजी [illegible] नियमात्मवान् ॥ [illegible] दुर्लभा ॥ योगः कर्मसु कौशलम् ॥ [illegible] काले स्निग्धं हितं मितम् ॥ [illegible] व्यायामसंज्ञितम् । तत्कृत्वा तु सुखं [illegible] कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता । दीप्ताग्नित्व-[illegible] ॥ श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता । आरोग्यं [illegible] ॥ न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणम् । न च [illegible] ॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरासमधिरोहति । स्थिरं भवति मांसञ्च व्यायामनिरतस्य च ॥ व्यायामक्षुण्णगात्रस्य [illegible] सुरूपता [illegible] । वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् । व्यायाम कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ [illegible] स्निग्धभोजिनाम् । स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥ सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः । बलस्यार्धेन कर्तव्यो व्यायामो [illegible] प्रपद्यते । व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम् । वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च । समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ॥ [illegible] । कासज्वरच्छर्दयश्च अतिव्यायामसम्भवाः ॥ रक्तपित्ती कृशः शोषी श्वासकासक्षयातुरः । भुक्तवान् स्त्रीषु च क्षीणो [illegible] ॥ [illegible] मल्लयुद्धमभिमतमासीत् भगवान् कृष्णस्तु मल्ला-नाशनिरिति श्रीमद्भागवते प्रसिद्धा, तेनैव मल्लयुद्धेन मुष्टिकं [illegible] भागवते १० स्कं, ४४ अ. एवं चाणूरकूटौ भगवान्मधुसूदनः ॥ आससादाथ चाणूरं मुष्टिकं रोहिणीसुतः ॥ हस्ताभ्यां हस्तयोर्बद्ध्वा [illegible] । [illegible] विजिगीषया ॥ अरत्नी द्वे अरत्नीभ्यां जानुभ्यां चैव जानुनी । शिरः शीर्ष्णोरसोरस्तावन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ [illegible] । [illegible] प्रयुज्यताम् । उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैः स्थापनैरपि । परस्परं जिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ॥ भीमसेनस्य [illegible] महाभारते सभापर्वणि जरासन्धं प्रति श्रीकृष्णः—त्वामाह्वयाम्यहे राजन् स्थिरो युद्धस्व मागध । मुञ्च वा नृपतीन् सर्वान् गच्छ वा त्वं यमक्षयम् ॥ जरासन्ध उवाच—भीम योत्स्ये त्वया सार्धं श्रेयसा निर्जितं वरम् ॥ ततः सम्मन्त्र्य कृष्णेन कृतस्वस्त्ययनो बली । भीमसेनो जरासन्धमाससाद युयुत्सया ॥ ततस्तौ नरशार्दूलौ बाहुशस्त्रौ समीयतुः । वीरौ परमसंहृष्टावन्योन्यजयकाङ्क्षिणौ ॥

आयुस्सम्बन्धिनिर्णयः

अथजन्मकालाद्दीर्घादि ३ भेदानामत्रचरादि-

राशिवशादायुर्बोधकचक्रमिदम् ॥

दीर्घायुः	मध्यायु.	अल्पायुः ॥
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः ॥
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः स्थिरभे २ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः ॥
द्विदेहभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः	द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः

अथायुर्निर्णयं चक्रानुसारेण ॥ जन्मलग्नाष्टमेशाभ्यां लग्नसप्तमयोः स्थितेचन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां लग्नहोरालग्नाभ्यां चेतिप्रकारत्रयेणायुर्निर्णेतव्यम् ॥ प्रकारत्रयेऽप्येकस्मायुष्यागते तदेवग्राह्यम् ॥ विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् ॥ त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् ॥ जन्मलग्ने विषमे द्वितीयाष्टमाधीशयोर्यो बली लग्ने समे द्वादशषष्ठाधीशयोर्मध्ये योबली तस्य केन्द्रे स्थित्यादीर्घायुः ॥ पणफरे स्थित्यामध्यायुः ॥ आपोक्लिमे स्थित्याहीनायुरेव । एवमेवात्मकारकवशेनापिनिर्णेतव्यम् । अष्टमेशयोः कारकेण सहैक्ये वा योगे सर्वदा मध्यमायुरेव ॥ विषमे जन्मलग्ने कारकः तृतीये समे जन्मलग्नेकारकः एकादशेभवेत्तदा कारकायुषि केन्द्रे हीनायुः पणफरे मध्यायुः अपोक्लिमेदीर्घायुरिति । लग्नदशमाष्टमाधीशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगाः तदादीर्घायुः । लग्नेशोरवेर्मित्रंदीर्घायुः समस्चेन्मध्यायुः शत्रुश्चेदल्पायुरिति ॥ सारण्युदाहरणम् ॥ कस्यचिज्जन्मेष्टम् २८।५ जन्मलग्नं ७।३।५६।५४ होरालग्नं १।१०।२१।१ लग्नेशो भौमः ९।१९।३०।३० अष्टमेशो बुधः २।३।१।४७ चन्द्रः १०।१६।२०।० अत्रलग्नेशाष्टमेशयोः प्रथमान्त्ययोः स्थित्या अल्पायुः । मन्देन्दुभ्यामल्पायुः । लग्नहोरालग्नाभ्यामल्पायुः । एवमत्राल्पायुरेवसिद्धम् । तत्रभौम-बुध-लग्न-चन्द्र-लग्न होरालग्नानां षण्णामंशानां योगषष्ठांशः ९।३१-।११ अत्रांशानां वर्षादिफलं ९।७।६ कलानां मासादि ६।१८।२४ विकलानां दिनादि १।१०।२४ तेषामेकापचितस्यानयोगाद्भुक्तवर्षादि १०।१।२५।३४।२४ अल्पायुषि शुद्धं स्पष्टमायुषो भोग्य वर्षादिकम् २१।१०।४।२५।३६ एवमेवमोघ्यांशैरपि भवेदिति ॥ एवम् ३६।४० वर्षं खण्डाभ्यामपि ॥

जैमिनीयसूत्रोक्तायुस्साधने अंशफलज्ञानाय सारिणीयम् ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

जैमिनीयसूत्रोक्तायुसाधने कलाफलज्ञानाय सारिणी[illegible] ॥

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२६	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीयसूत्रोक्तायुः साधने विकलाफल सारिणीयम् ॥

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

अथत्रिधायुर्योगोस्ति ॥ तदाह ॥ त्रिविधास्त्वायुषोयोगाः स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमाः ॥ द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत् ॥१॥ चतुःषष्ठ्यापुरस्तात्तु ततोदीर्घमुदाहृतम् ॥ उत्तमायुः शतादूर्ध्वमिति । अथाल्पाद्यायुस्त्रयेपित्रिधायुर्योगोस्तितदाह ॥ अल्पायुरल्पमध्यायुर्पूर्णायुस्त्रिविधं भवेत् ॥ मध्यमादल्पमध्यं च पूर्णायुस्त्रिविधं भवेत् ॥ दीर्घायुषोल्पमध्यंतुपूर्णायुस्त्रिविधंभवेत् ॥ एवं नवविधं प्रोक्तमायुषांतुविनिर्णये ॥ अल्पायुर्योगजातस्य विपद्दायेमृतिर्भवेत् ॥ जातस्यमध्यमेयोगप्रत्यरौतुमृतिर्भवेत् ॥ दीर्घायुर्योगजातानांवधभेतुमृतिर्भवेत् ॥ त्रिपुयोगेपुसर्वेपुप्रत्येकं त्रिविधंभवेदिति ॥ अथ मारकस्थानायुस्थानयोर्ज्ञानमाह ॥ अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् । द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ क्वचिद् रोगेशव्ययेशाष्टमेशदशास्वपि मारकसम्भवः परस्परषष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तरञ्च न शोभनम् । मारकेमारकांतरमशोभनम् व्ययद्वितीयेशवद्ग्रहाः सम्बंधतः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽनिष्टसम्बंधरहिता न मारककारिणी पापदशात्वनिष्टैवेति ।

अथात्रचरकारकः—रव्यादि सप्तग्रहेषुयोंशाधिकःस आत्मा तन्न्यूनन्यूनक्रमेणामात्यभ्रातृ-मातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः भवन्ति द्वयोस्तुल्यत्वे बली प्रथमः निर्बलो द्वितीयकारक इति । एवंस्थिरकारकाःजैमिनौ द्रष्टव्याः । अथ होरालग्नानयनम्—द्विघ्नेष्टनाद्यःपञ्चाप्ता भशेषंच पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्तेयुक्ता रवौहोरोदयो भवेत्—इतिवास्तविकं होरालग्नानयनम् ॥ विषमेऽङ्गे रवौयोज्यं समेऽङ्गे स्वभादिषु—इति यदुक्तंतत्सिद्धान्तविचारबहिर्भूतं यतः सर्वेषां लग्नानां सूर्योदयादेव प्रवृत्तिः ।

[illegible]ग्रहाणां च अंशायुः साधनाय सारणीयम् ॥

[illegible] सारणी [illegible]

मास	दिन	घटी
[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथात्र-अंशायुस्साधने कलाफलज्ञानाय सारिणीयम् ॥

क.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
दिन	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	०	२	४
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
क.को.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
मास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	१	३	४	६	[illegible]	[illegible]
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	[illegible]	[illegible]	०	४८	३६	[illegible]	[illegible]
क.को.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मास	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिन	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	०	१	३	५	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथात्रसत्योक्तांशायुस्साधने विकलाफलज्ञानाय सारिणीयम् ॥

वि.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घटी	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वि.को.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घटी	३६	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	५०	५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वि.को.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन	१	१	१	१	१	१	१	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घटी	१२	१३	१५	१७	१९	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शनैश्चरण विचारः—शनैश्चरस्य [illegible] स्यातुर्यंतद्दशोनपादं ज्ञेयम्—यथा [illegible] नन्दैः २।५।३ रजतस्य पादम् । [illegible] सार्कोष्विह ४।८।१२ लोहपादम् ॥ [illegible] कांचने । ताम्रे च समता ज्ञेया [illegible] इति विचारः ॥

आसन्नमृत्युलक्षणम् [illegible] चन्द्रार्कमार्गेणि न पश्यति ॥ [illegible] जिह्वाग्रमस्य यस्यास्ये [illegible] प्रतीतिर्नृपेषु [illegible] नासाग्रं [illegible] ॥ [illegible] स्वांगजः प्रतिबिम्बेजलादिषु ॥ [illegible] निर्वाप गन्धञ्च सुहृदुक्तमलक्षणतीम् । नचि[illegible] ।

सत्योक्तमार्गेण अंशायुस्साधनार्थमत्र सनिर्णयोदाहरणम् ॥

[illegible] ॥ तथा रविः ४।३।१८। [illegible] ॥ एवं हानिस्तु ॥ [illegible] स्यायुरपहरति ॥ एवमेकादशस्थे [illegible] ॥ [illegible] रस्तांशमेवायुर्निरिति । [illegible] शुभग्रहश्चेत् तद्दिक- [illegible] सर्वत्रबोध्यम् । एवं हि प्रत्येकग्रह- [illegible] सर्वेषां [illegible] कार्यम् ॥ एवं कृते यदाप्तं तदेवस्पष्टांशायुर्मानं स्यादि- तिसिद्धम् ॥ अथहानिवृद्धिविशेषमाह—भूपायहानिः कर्तव्यास्ततोऽन्यासुबहुष्वपि ॥ प्राप्तास्वेकैव कर्तव्यादायासानुमहत्तरा ॥१॥ ततोत्रिगुणमाकार्याऽप्येकैवमहत्तारकृत् ॥ [illegible] ॥२॥ त्रिभिर्वक्रगतस्यायस्योच्चराशिगतस्य च ॥ ग्रहदायो भवत्येवचोप्यपेक्षत क्रियः ॥३॥ इति ॥

अथग्रहाणांविंशोत्तरीयमहादशान्तर्दशादिज्ञानायचक्रमिदम् ।

१६ २ १११२ ३।१८ ३।६ ३।२४ ३।१२ १११२ ४

सूर्यदशावर्ष ६	चन्द्रदशावर्ष १०	भौमदशावर्ष ७	राहुदशावर्ष १८	गुरुदशावर्ष १६	शनिदशावर्ष १९	बुधदशावर्ष १७	केतुदशावर्ष ७	शुक्रदशावर्ष २०
कृ.उ.फा.उ.षा.	रोहि.ह.श्रवण	मृ. चि. ध.	आर्द्रा. स्वा. श.	पुन. वि. पू. भा.	पुष्य.अनु.उ.भा.	आश्ले.ज्ये.रे.	मघा.मू.अश्वि.	पू.फा.पू.षा.भर.
अन्तर्दशादि. १८	अन्तर्दशादि. ३०	अन्तर्दशादि. २१	अन्तर्दशादि. ५४	अन्तर्दशादि. ४८	अन्तर्दशादि. ५७	अन्तर्दशादि. ५१	अन्तर्दशादि. २१	अन्तर्दशादि. ६०
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
सू. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	सू. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	सू. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	सू. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	सू. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	सू. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	सू. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शनिचक्रम्

द. करे. ४—रोग:
पादयुगले ६—लाभ:
वाम. करे. ४—गमनम्
उदरे. ५—दरिद्रता
शिरसि. ३—लाभ:
द. नेत्रे २ वा. नेत्रे २—सौभाग्यम्
गुदा.१ अल्प मृत्यु:। फलं शनिचार-

वशाद्ज्ञेयम्

श्लोक:—यस्मिन् शनिश्चरति यत्रगतं ततश्च, चत्वारि दक्षिण करेऽङ्घ्रियुगं भषट्कम् । चत्वारि वामकरगोष्युदरे च पञ्च मूर्ध्नि-त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ रोगो लाभं तथाध्वानमथनं लाभमेव च । सौभाग्यमल्पमृत्युश्च शनेः प्रोक्तं क्रमात्फलम् ॥

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थं चक्रमिदम् ॥

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	सङ्कटा ८
मा. १२ च.	मा. २४ सू.	मा. ३६ बृ.	मा. ४८ मं.	मा. ६० बु.	मा. ७२ श.	मा. ८४ शु.	मा. ९६ के.
मं. ० १०	पि. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०
पि. ० २०	धा. २ ०	भ्रा ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०
धा. १ ०	भ्रा २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि. ५ १०
भ्रा १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पि. ४ २०	धा. ८ ०
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पि. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा १० २०
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पि. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा ९ १०	भ. १३ १०
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पि. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०
सं. २ २०	मं. ० २०	पि. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०
ध. आर्द्रा.	श. पुनर्वसु.	श. पुष्य.	अश्वि.आश्ले.	भर. मघा	कृ.पू.फा.	रो. उ. फा.	मृग. हस्त
.चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.पू.भा.	ज्ये.उ.भा.	मू. रे.	पू. षा.	उ. षा.

पर्याजनाय सन्नाडी चक्रम्

पतय:	भानि	भानि	भानि	भानि	ना.ना.
रवि:	रो.	स्वाती	ज्येष्ठा	अश्वि.	वात:
भौम:	मृ.	चित्रा	मूल	रेवती	वह्नि:
गुरु:	आर्द्रा	हस्त	पू.षा.	उ.भा.	सौम्य
बुध:	पुनर्वसु	उ.फा.	उ.षा.	पू.भा.	नीरस
शुक्र:	पुष्य	पू.फा.	अभि.	शत	जलम्
चन्द्र:	आश्ले.	म.	श्रवण	धनि.	अमृत
शनि:	कृत्ति.	विशा.	अनुरा.	भरणी.	चंडा

वर्षप्रवेशसारणीयम्

जन्मवारेष्टघटीपलेषु प्रतिवर्षक्षेपकवारादि

ग. व.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वा.	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घ.	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग. व.	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वा.	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घ.	१२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३
प.	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग. व.	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
वा.	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
घ.	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०
प.	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपाः ।

लग्नानि	मे	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	च.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	च.
रात्रौ	बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

त्रिपताकचक्रेग्रहस्थापनम् — सैकागताब्दसंख्यावाविभक्तानवशि-ष्टतः शेषांके जन्मनिगताचन्द्रराशेरिह्नयसेत् ॥ शेषग्रहांश्चतुर्भक्तं-शेषसंख्यापुविन्यसेत् । त्रिपताकेवर्षलग्नमादौ तत्रत्रिचुर्यदा । शुभैर्विद्धः शुभफल: पापैः पापफलप्रद इति ॥

विंशोत्तरीयमुद्दावशाक्रमः ।

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	कं.	शु.	पतय:
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मासा:
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिनानि

गताब्दप्रमाणं जन्मर्क्षसंख्यायुक्तं द्विरूनं विधायनवतष्टं शेषेदशापतिः ।

हद्दाचक्रमिदम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मि.	राशय:
६	८	५	७	६	६	६	७	१२	७	७	१२	अं.
बृ.	शु.	बु.	मं.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बृ.	बु.	शु.	स्वा.
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं.
शु.	बु.	शु.	शु.	श.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	शु.	बृ.	स्वा.
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं.
बृ.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	स्वा.
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अं.
मं.	श.	मं.	बृ.	बृ.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.	स्वा.
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं.
श.	मं.	श.	श.	मं.	मं.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	स्वा.

नवमांशचक्रमिदम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	३	२०
शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	६	४०
बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	१०	०
चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	च.	मं.	श.	शु.	१३	२०
सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	१६	४०
बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	२०	०
श.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	२३	२०
मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	२६	४०
बृ.	बृ.	बु.	बृ.	बृ.	बृ.	बु.	बृ.	बृ.	बृ.	बु.	बृ.	३०	०

गतर्क्षनाड़ीगुणिता दशाब्दाः सर्वर्क्षनाड़ी विहृतात्फलं यैं । वर्षादिकं भुक्तमिदंविशोध्यं दशाब्दतोभोग्य मिदं फलं तत् । दशामानं त्रिगुणितं त्वन्तरे ध्रुवकं स्फुटम् । दशाब्दैर्गुणितं तद्धि भुक्तिमानं प्रजायते ।

द्रेष्काणचक्रमिदम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशय.
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशा:
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहा:
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अंशा:
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	बृ.	चं.	मं.	ब.	बृ.	ग्रहा:
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंशा:
शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ग्रहा:

ग्रहाणां गृहोच्चनीचदीप्तांश हर्षस्थानानि

सू.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहा:
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११	गृहाणि
०	१	९	५	३	११	६	उच्च
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	रा अं
६	७	३	११	९	५	०	नीच
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	रा अं
१५	१२	८	७	९	७	९	दीप्ता
९	३	६	१	११	५	१२	हर्ष

उच्चं बलमानम् ॥ नीचग्रहान्तरं कार्यं ॥ एकस्थानलग्नानं भवेत् ॥ गृहपूर्णबलं भवेत् ।

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि ॥ सद्वाराः चन्द्रबुधगुरुशुक्राः । तिथयः १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३। शुभभानि पुष्य. अश्वि. रो. मृ. उ. फा. पुनर्व. ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. श. एषु शुभः ॥ दक्षिणाङ्गेऽपि केषुचाङ्गमार्गे तु मृगीदृशाम् ॥ शुभम् ॥ अन्यथामृत्युयोगेऽपि दग्धेविष्ट्यादिदूषिते ॥ अशुभम् ॥ अथ पल्लीपतनेविशेषफलम् ॥ पादयोर्जंघने जान्वोः गुदे गुह्ये च मृत्युदा ॥ अन्यत्र शुभदा प्रोक्ता सचैलं स्नानमाचरेत् ॥१॥ पल्याः प्रपतने चैव सरटस्याधिरोहणे ॥ यत्फलं हि मनुष्यस्य शुभाशुभप्रसूचकम् ॥२॥ स्त्रीणां तु वामेऽरोहणा ... ॥ तिलभाण्डविधानं च द्रव्याम्बुद्धिमता सदा इति ॥ पल्लीसरटस्याऽनिष्टफलउद्धारणार्थं मंत्रजपदानादि ॥ तिलपात्रविधानं च ... स्नात्वा देयं द्विजन्मने ॥ शिवालये प्रदद्याद्वै दानं दोषोपशान्तये ॥ २ ॥ अशुभफलस्यै मृत्युञ्जयजपदानादि सर्वदोषनिबर्हणम् ॥ कार्यमिति शुभम् ।

रविसंक्रमणे वाहनादिबोधकचक्रमिदम् ॥

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निविष्ट	उपविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निविष्ट	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फलं	सम	मध्य	श्रेष्ठ	समर्घं	समर्घ	[illegible]	[illegible]	समर्घं	महर्घं	महर्घं	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवाह	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फल	भीति	भय	पीड़ा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृष्ण	[illegible]	कम्बल	नग्न	[illegible]
उपवस्त्र	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	[illegible]	[illegible]	धूम्र	अजिन	कुसुम	[illegible]	[illegible]
आयुध	भुसुण्ड	गदा	खड्ग	[illegible]	[illegible]	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	[illegible]	दुग्ध	दधि	[illegible]	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अगर	कर्पूर
जाति	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्णसंकर
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	करवा	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पत्ता	हरित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वल्कल	धूम्र
स्नान	गंगा	यमुना	सरस्वती	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कावेरी	कृष्णा
वय	बाला	कुमारी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृद्धा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रव्राजक

सूर्यभुक्तनाद्वृहलचक्रम्
३ हानिरस्तु
८ समृद्धिः
९ कर्तुर्नाश:
८ द्रव्यलाभ:
हलचक्रमन्यत् सूर्यभुक्तनक्षत्रात्
३ अशुभम्
३ शुभम्
३ अशुभम्
५ शुभम्
३ अशुभम्
५ शुभम्
३ अशुभम्
२ शुभम्
वर्षमुन्थानयनम्
न.व.+ज.ल. १२ हृते
पञ्चाधिकारिण:
१ जन्मलग्नपति:
२ अब्दलग्नपति:
३ मुन्थहापति:
४ त्रिराशिपति:
५ दि.रवि राशीश:
६ रा. चन्द्रराशीश:

[illegible] पल्लीपतन फलमिदम् ॥

स्थानानि	फलं	स्थानम्	फलं	स्थानम्	फलं	स्थानम्	फलं	स्थानम्	फलं
शिरसि	राज्यलाभ:	ललाटे	बन्धुदर्शनम्	भ्रूमध्ये	राजमान्यता	उत्तरोष्ठे	धननाश:	अधरोष्ठे	धनस्वर्णलाभ:
नासाग्रे	व्याधिपीडनं	दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धि	वामकर्णे	बहुलाभ:	नयनयो: २	बंधनप्रा.	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
वामभुजे	राजभीति.	कण्ठे	शत्रुनाश	स्तनद्वये २	सौभाग्यं	उदरे	भूषणलाभ:	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाश:
जानुद्वये	शुभागमन.	२ जंघे	सुखलाभ:	हस्तद्वये	वस्त्रलाभ:	स्कंधयो: २	विजय:	नाभौ	बहुधनाप्ति:
कटिभागे	अन्नलाभ:	द. मणिबं.	धनलाभ:	वा.मणिबं.	कीर्तिनाश:	हृदये	धनलाभ:	मुखेपादे	मिष्टान्नभोजनम्
गुल्फयो:	धनलाभ:	केशाग्रे	अतिकष्टम्	दक्षिणपादे	गमनम्	वामपादे	बंधुविनाश:	पादान्ते	स्त्रीनाश:

रवेरष्टकवर्गः ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्रस्याष्टकवर्गः ४९

चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
	११	१०	१२	११			
		११					

भौमाष्टकवर्गः ३९

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

बुधाष्टकवर्गः ५४

बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	९		११	९	१०
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

गुरोरष्टकवर्गः ५६

बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

शुक्राष्टकवर्गः ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८		४	९	९	१०	४
५	९		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
९	११		९				९
१०			११				११
११			१२				

शनेरष्टकवर्गः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्नाष्टकवर्गः ५२

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	३	३	१	१	१	१	१
३	४	६	३	२	२	२	३
४	६	१०	६	४	४	३	४
५	१०	११	१०	६	५	४	६
७	१२		११	८	६	५	१०
९				१०	७	८	११
१०				११	९	९	
११					१०	११	
					११		

समुदायाष्टकवर्ग ३३७

प्राचीनमते गोचरबलाभावेऽष्टवर्गशुद्धिरेव ॥

तदुक्तं ॥ अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु ॥ व्रतोद्वाहौचकर्त्तव्यौगोचरेणकदाचन ॥११॥ उपलक्षणमप्युक्तं तत्रैव—अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते—शुद्धाः सर्वकर्मसु ॥ सूक्ष्माष्टवर्गसंशुद्धिः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे ॥ २ ॥ इति ॥

अथ सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यौषधिचक्रम्

गर्भ	देवदारु	हरिद्रा	लोध्र	सरपुंखा	कुष्ठ	तीर्थोदक
धान्य लाजा		बरियरा कजारू		नागरमोथा		फगुनी

एभिस्सवारिभिः स्नानं प्रोक्तं दानपुरस्सरम् ॥ एतत्सामान्यतः सर्वग्रहपीडोपशान्तये ॥१॥ यथा सिद्धौषधैः रोगा नश्यंयुर्मन्त्रतो भयम् ॥ तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषं प्रणश्यति इति ॥

अथ रव्यादिग्रहाणां जन्मभावाद्गोचरफलवेधयोर्ज्ञानाय चक्रम् ।

श्री	सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
१	स्थाननाशः पन्थाः	पुष्टिः अन्नलाभः	भयम्भी-छाव	बन्धन भयम्	अरिष्टादि भयम्	सुखं शत्रुनाशः	सर्वनाशः पीड़ाभयम्	हानिः कष्टम्	हानिः रोगभयम्
२	हानिः भयम्	धनलाभः सुखम्	धननाशः नेत्रपीड़ा	धनलाभः	धनादिलाभः	सुखम् अर्थलाभः	शोकः धनहानिः	नैःस्व्यं व्ययश्च	वैरं वित्तनाशः
३	सुखं श्रीप्राप्तिः	द्रव्याप्तिः सुखम्	सुखं श्रीप्राप्तिः	शत्रुतो भयम्	भय रोगाप्तिः	सुखम अर्थलाभः	सुखार्थलाभः	नैकर्म्यं धनप्राप्तिः	सुखलाभः वृद्धिः
४	रोगभयं माननाशः	रोगोमानार्थनाशः	कष्टं शत्रुभीतिः	धन सुखादिप्राप्तिः	धनहानिः व्यय	धनागमः	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धिः	वैरं शोकश्च	भीतिः पीड़ा च
५	दैन्यं अर्थनाशः	सुखं कार्यनाशः	रुग्भयं धननाशः	रुक्शोकश्च	लाभ सुखं च	लाभः पुत्रलाभः	धनपुत्रयोर्नाशः	हानिः शोकश्च	शोकोऽर्थनाशः
६	रिपुनाशः सुखं	वित्तलाभः	सुखार्थलाभः	अलाभः स्थितिः	रोगः शोकश्च	शत्रुवृद्धिः पीड़ा च	सुखं वित्तलाभः	सुखं लक्ष्मी प्राप्तिः	सुखवित्तदम्
७	गमनं धनहानिः	द्रव्यप्राप्तिः सुखम्	कार्श्यम् धननाशः	पीड़ाभयं विग्रहः	सम्मान सुखं च	शोकः अतिभयम्	दोषः पीड़ाभयम्	हानिः कलहः	दुर्गतिः पीड़ा च
८	रोगाप्तिः भयम्	क्लेशभय मृत्युः	भय पापवृद्धिः	धनान्नादि लाभः	मृत्युभयं पीड़ा च	विपत्तिः धनक्षयः	पीड़ाभयम् शत्रुवृद्धिः	रुग्भयं	पीड़ाभयं हानिश्च
९	कान्तिक्षयः पापवृद्धिः	मान नृपभयम्	रुग्भयम्	रुग्भयं धननाशः	सुखं सम्मानम्	सुखं लाभः	पापः धननाशः	पापकर्म रतिः	पापं दैन्यञ्च
१०	सौख्यं कर्मसिद्धिः	शुभं सुखम्	सुखं शोकश्च	सुखं सुभोगः	अतिदैन्यम्	धर्मनाशः असुखम्	वैमनस्यम्	वैरं सुखम्	भयं शोकश्च
११	वित्ताप्तिः सुखम्	विविधार्थ लाभः	लाभः सुखाप्तिः	शुभमर्थागमः	सौख्यं धन प्राप्तिः	दुःखं धनागमः	सुखंवित्तलाभः	सुखं वित्तप्राप्ति	सुयशोऽर्थलाभः
१२	द्रव्यनाशः पीड़ाभयं	रोगो धननाशः	रोगदंशकश्च	शोकः धननाशः	देहपीड़ा भयं	धनागमः	क्लेशः अनर्थश्च	हानिः पीड़ा च	पीड़ा वैरञ्च
शु.	३।११। ६।१०।	७।६।१०। १।३।११।	३।६। ११	२।४। ६।८। १०।११	५।२।९ ।७।११	१।२।३ ४।५।८ ९।११।१२	६।११ ।३।	३।११ ६	३।६ ११
वे.	९।५ १२।४ शनिवर्जितः	२।१२।४ ।५।९।८ बुधवर्जितः	१२।९ ।५।	५।३।९। १।८।१२ चंद्रवर्जितः	४।१२ १०।३ ८।	८।७।१ १०।९।५ ११।६।३	९।५। १२ रविवर्जितः	१२।५ ९	१२।९ ।५।

अथाम गोचरफलज्ञानायचक्रम् ॥

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
३।६। १०।११।	१।२।३।५।६ ७।९।१०।११	३।६ १०।११	२।६ १०।११	२।५।७ ।९।११	१।२।३ ।९।११	३।६।१० ।११।	शोभनः
१।२।५ ७।९	[illegible]	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३।६ ।।१०।।	५।६। ७।१०	१।२।५ ।७।९।	पूज्याः
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्याः

मार्तण्डः ॥ यद्दशेन दशाकेन ग्रहः संचरते नृणाम् ॥ तादृशंफलमाप्नोतिशुभं वा यदिवाशुभम् । मांडव्यः ॥ गोचरपीडायामपि नाभिर्बलिभिः शुभग्रहैर्दृष्टः ॥ पीडांनकरोति तथाक्रूरैरेवं निर्यासः ॥

अत्रगोचराद्यैर्दशाकृताद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलस्यशमनार्थंप्रत्येकग्रहाणांदानपदार्थाः । सर्वेषांसुगमार्थंप्रायःहिन्दीभाषयाविलिखितानि ।

सूर्यदा.	चन्द्रदा.	भौमदा.	बुधदा.	गुरुदा.	शुक्रदा.	शनिदा	राहुदा.	केतुदा.	मुख्यदा.
माणिक्य १	वंशपात्र	विद्रुम पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीतधान्य	श्वेतचावल	माषान्न तैल	माषान्नहेमनाग	माषान्न	तन्दुलान
गोधूम गुड़	श्वेतचावल	मसूर छिदल	हरितवस्त्र	पीतवस्त्रसुवर्ण	श्वेतचन्दन	नीलम तिल	सप्तधान्य	कम्बलकस्तूरी	सुवर्ण
सवत्सागौ	श्वेतवस्त्र	गोधूमान्न	गजदन्त घृत	घृत पीतपुष्प	श्वेतचित्र.वस्त्र	कृष्णवस्त्र	नीलवस्त्रगोमेद	वैदूर्यमणि	[illegible]
कमलपुष्प	श्वेतचन्दन	रक्तवृषभ	मुद्गान्न, पन्ना	पीतफल	श्वेतपुष्प	कुरथी लोहा	कृष्णपुष्प	कृष्णपुष्प	श्वेतवस्त्र
नूतनगृह	श्वेतपुष्प	गुड़ रक्तचन्दन	सुवर्ण दासी	पुखराज	रजत हीरा	महिषी	खड्ग. तिल	तिल. तैल	वर्ण
रक्तचंदन	चीनी, रजत	रक्तवस्त्र	सर्वपुष्प.रत्न	हरिद्रा. अश्व	घृत. सुवर्ण	कृष्णधेनु	तैल लोहा	रत्न सुवर्ण	दक्षिणा
रक्तवस्त्र	वृषभ, घृत	रक्तपुष्प	कपूर. शस्त्र	पुस्तक. मधु	श्वेताश्वदधि	कृष्णपुष्प	शूर्प. कम्बल	लोहा बकरा	[illegible]
सुवर्ण, ताम्र	शंख, दधि	सुवर्णताम्र	अनेकफल	लवण. शर्करा	सुगंध द्रव्य	उपानह	सतिलताम्रपात्र	शस्त्र	[illegible]
केशर, मूंगा	मोती कपूर	केशर कस्तूरी	षटरसभोजन	भूमि. छत्र	शर्करागोधूम	कस्तूरी सुवर्ण	सुवर्ण रत्न	सप्तधान्य	१(०००
वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	वर्ण दक्षिणा	
ज. स. ७०००	ज.स. ११०००	ज.सं. १००००	ज. सं. ९०००	ज.सं. १९०००	ज.सं. १६०००	ज.सं. २३०००	ज.सं. १८०००	ज.सं. १७०००	

सहमानि ।

सहमानि	दिवा	रात्री	सहमानि	दिवा	रात्री	सहमानि	दिवा	रात्री
पुण्यम्	चं.–सू+ल	सू–चं+ल	रोगः	लग्न–चं+ल	लग्न–चं+ल	श्रद्धाः	[illegible]	[illegible]
गुरुः	सू.–चं+ल	चं–सू+ल	मन्मथः	चं–लप.+ल	ल.प.–चं+ल	प्रीतिः	[illegible]	[illegible]
ज्ञानम्	सू.–चं+ल	चं–सू+ल	कलिः	बृ–मं+ल	मं–बृ+ल	बलम्	[illegible]	[illegible]
यशः	गु–पु+ल	पु.–गु+ल	क्षमा	बृ–मं+ल	मं–बृ+ल	तनुः	[illegible]	[illegible]
मित्रम्	गु–पु.+शु	पु–गु.+शु	शास्त्रम्	बु–श+बु	श–बृ+बु	जाड्यम्	[illegible]	[illegible]
माहात्म्यम्	पु.–मं+ल	मं–पु.+ल	बन्धुः	बु–चं+ल	बु–चं+ल	व्यापारः	[illegible]	[illegible]
आशा	श–शु+ल	शु–श+ल	बन्दक	चं–बु+ल	बु–चं+ल	पानीयम्	[illegible]	[illegible]
सामर्थ्यम्	मं–लग्नेश+ल	ल.–मं+ल	मृत्युः	अष्ट–चं+श	अष्ट–चं+श	रिपुः	[illegible]	[illegible]
भ्राता	बृ–श+ल	ब–श+ल	परदेशः	धर्म–धप+ल	धर्म–धप+ल	शौर्यम्	[illegible]	[illegible]
गौरव	बृ–चं+सू	बृ–सू+चं	धनम्	द्वि–द्वि.प.+ल	द्वि–द्विप+ल	उपायः	[illegible]	[illegible]
राज	श–सू+ल	सू–श+ल	अन्यस्त्री	शु–सू+ल	शु–सू+ल	दारिद्र्यम्	[illegible]	[illegible]
तात	श–सू+ल	सू–श+ल	अन्यकर्म	चं–श+ल	श–चं+ल	गुरुता	[illegible]	[illegible]
माता	चं–शु+ल	शु–चं+ल	वणिक	चं–बु+ल	बु–चं+ल	जलपातः	[illegible]	[illegible]
सुतः	बृ–चं+ल	बृ–चं+ल	कार्यसिद्धिः	श–सू+सूप.	श–चं+चं.प	बन्धनः	[illegible]	[illegible]
जीवितम्	श–बृ+ल	बृ–श+ल	उद्वाहः	शु–श+ल	शु–श.+ल	दुहिता	[illegible]	[illegible]
अश्व	चं–शु+ल	शु–चं+ल	सूतिः	बृ–बु+ल	बु–बृ+ल	अश्वः	[illegible]	[illegible]
कर्म	म–चं+ल	चं–मं+ल	संतापः	श–चं+षष्ठ	श–चं+षष्ठ			

सामर्थ्यं लग्नपं भौमं सदा गुरोर्मध्ये शोधयेत् [illegible] ॥

अथ ग्रहाणां [illegible] ।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहा.
मा.१	दि.२	मा.२	मा.१	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	[illegible]
आदौ	आदौ	आदौ	मध्य	मध्य	आदौ	अन्त्ये	अन्त्ये	फल [illegible]
दि.५	[illegible]	दि.८	दि.	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	[illegible]

अथ ग्रहाणां [illegible] ।

सूर्य	मं.	ॐ [illegible] ॥
चन्द्र	मं.	ॐ [illegible] ॥
भौम	मं.	ॐ [illegible] ॥
बुध	मं.	ॐ [illegible] ॥
गुरु	मं.	ॐ [illegible] ॥
शुक्र	मं.	ॐ [illegible] ॥
शनि	मं.	ॐ [illegible] ॥
राहु	मं.	ॐ राहवेनमः ॥
केतु	मं.	ॐ केतवेनमः ॥

[illegible] ॥ [illegible] तथा ॥ ग्रहानुद्दिश्य होमो [illegible] ॥१॥ श्रीपति–देवब्राह्मणवन्दनाद् गुरुवचःसंपाद[illegible] श्रवणाच्छ्रुतिरवाच्छे[illegible]कथाकर्णनात् ॥ होमाध्वर [illegible] नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ॥२॥

अथ ग्रहानुसारेण धारणीय [illegible]

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	[illegible]	[illegible]	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम्	गोमेद	वैदूर्य
[illegible]	रौप्यम्	[illegible]	सुवर्णम्	सुवर्ण-[illegible]	रौप्यम्	लोहम्	[illegible]	[illegible]

पिण्डानयनप्रकारे रामः ।

एकोनितेष्टर्क्षहता द्विनिघ्नी रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः । युक्ता धनैश्चापियुता विभक्ता भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिण्डः॥

गृहेष्टनक्षत्रतो गणनाविचारः ।

तत्र राशिकूटादिकं सर्वं दम्पत्योरिवचिन्तयेत् । सेव्यसेवकयोश्चैव गृहतत्स्वामिनोरपि ॥ परस्परं मित्रयोश्च एकनाडीप्रशस्यत इति ॥

वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकारः ।

सायंकाले हस्तप्रमितायाविस्तृतिप्रमाणं गर्तं विधाय तज्जलपूर्णं कृत्वा प्रातःकाले विलोक्यं तत्सजलं शुभम् ॥ निर्जलं मध्यमं निर्जलस्फुटितमसदिति ॥ किन्तुदेशकालानुरोधेनायं विधिः ।

पिण्डतः आयाद्यानयनप्रकारः ।

पिण्डे नवस्थानस्थापिते क्रमात् १।२।६।८।३।८।८।४।८ एभिर्गुणिते ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० एतैर्विभक्तशेषक्रमात् आयः १ वारः २ अंशः ३ द्रव्यं ४ ऋणं ४ ऋक्षं ६ तिथिः ७ योगः ८ आयुश्च ९ भवति । बहुऋणमल्पद्रव्यं गृहमसत् ॥ गृहगृहेशनक्षत्रैक्यञ्च न सदिति । सर्वमादौ विचार्यम् । आयो ध्वजादिः वारोऽर्कादिः अंशको मेषादिः नवमांशाः अंशकशब्देन केचन जन्मादितारां गणयन्ति । तदनुचितं तस्याऽन्यथा गणनोक्तेरन्यत्प्रसिद्धम् ।

गृहारम्भमुहूर्तविचारः ॥

भानि	उत्तरा ३ मृग. पुष्य. अनु. ध. श. चि. ह. स्वा. रो. रे. अग्निपंचकं हित्वा द्वारशाखास्थापने शुभानि ।
मासाः	वै. श्राव. मार्ग. पौष. फाल्गुन सूर्ये. मे. क. सि. वृ. मकर कुम्भ स्थिते च श्रेष्ठः ।
वाराः	चं. बु. बृ. शु. शनयः ।
तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३।१५ शुभाः ।
लग्नानि	२।३।५।६।८।९।११।१२ स्वामिशुभदृष्टे ।
लग्नशुद्धिः	लग्नात् १।४।७।१०।५।९ शुभाः । पापाः ३।६।११ स्थानेषु ८।१२ शुभपापरहिते शुक्ले पक्षे, गुरुशुक्रयोरुदये बाल्यवार्द्धक्ये नीचराश्यादिस्थितिरहितसमये ।
त्याज्यम्	भद्राकुयोगोऽष्टमचन्द्रचक्रशुद्धिरहितं भं च न सत् ।

एतेष्वेव नक्षत्रवारतिथिसमयेषु श्रवणर्क्षयुक्तेषु मठदेवालयाद्यारम्भोऽपि शुभो भौमसूर्यवाररिक्तातिथिषु अमायां चरं लग्ने कदापि न गृहाद्यारम्भः कर्तव्यः ।

देवालये गेहविधौ जलाशये राहुमुखज्ञानम् । यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठकोणे खातंशुभं भवति ।

	ऐशान्यां	वायव्यां	नैरृत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे	मी. मे. वृ. स्थितेऽर्के	मि. क. सि. स्थितेऽर्के	क. तु. वृ. सूर्ये	ध. म. कुं. सूर्ये
जलाशयारम्भे	म. कु. मी. स्थितेऽर्के	मे. वृ. मि. सूर्ये	क. सि. क. सूर्ये	तु. वृ. ध. सूर्ये
गृहारम्भे	सि. क. तु. सूर्ये	वृ. ध. म. सूर्ये	कुं. मी. मे. सूर्ये	वृ. मि. क. सूर्ये

अथ चैत्रादिमासे गृहकरणे मासफलज्ञानम् ॥

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
शोकः	धान्यम्	पशुमृतिः	पशुहानिः	द्रव्यवृद्धिः	नाशः	युद्धम्	भृत्यक्षयः	धनम्	श्रीप्राप्तिः	वह्निभयं	लक्ष्मीप्रा.

अथायानां नामानि उपयोगस्थानकथनञ्च ॥

काकः	हस्ती	गर्दभः	वृषः	अश्वः	हरिः	धूम्रः	ध्वजः

वापीकूपतडागादौगजो देयो विचक्षणैः । आसनेयोजयेत्सिहं शयनेकाककुंजरौ ॥१॥ वृषं भोजनपात्रेषु दद्याच्छत्रादिषुध्वजम् । महानसेऽग्निशालायांगृहेवाग्न्युपजीविनाम् ॥२॥ धूम्रं दद्यात्तथाश्वानं यवनान्त्यजयोर्गृहे । खरोवेश्यागृहे योज्योध्वांक्षस्तु पक्षिणोगृहे ॥१॥ वृषं सिहं गजं दद्यात् प्रासादे पुरमन्दिरे इति शुभम् ।

आग्नेयकोणे धं कुर्यात्सिहाद्राशित्रयेरवौ ईशान्याञ्च प्रकुर्वीत वृश्चिकस्थे तथा खनिः ।

अथ गृहप्रवेशमुहूर्तस्याग्रविचारः ।

मासाः	वै. ज्ये. मा. फा. जीर्णे गृहे. श्राव. मार्ग. का. मासे अभिनवेऽग्न्यादिभय सत्वे ।
भानि	उत्तरा. ३ रो. मृग. चि. अनु. रे. कुम्भचक्र शुद्धौ ।
वाराः	चं. बु. गु. शु. श. । तिथयः २ | ३ | ५
तिथयः	६ | ७ | ८ | १० | ११ | १२ | १३ ॥
लग्नानि	शुभ. २ | ५ | ८ ११ | मध्य ३ | ६ | ९ | १२
लग्नशुद्धिः	जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचयराश्यंशयोः स्थिरराशौ लग्नात् १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः । पापाः ३।६।११। शुभपाप रहिते ४।८ स्थाने वामार्के स्थितिरिति ।

गृहारम्भे वृषभचक्रशुद्धिज्ञानम् रविभादस्य गणना ॥

स्थानम्	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अग्रपादे	४	शून्यमसत्
पृष्ठपादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
दक्षकुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	नैःस्वम्
मुखे	३	पीडाअसत्

गृहप्रवेशकाले कुंभचक्रम् रविभादस्यापि गणना

स्थानम्	न.	फलम्
मुखे	१	अग्निः
पूर्वे	४	उद्वसनम्
दक्षिणे	४	लाभः
पश्चिमे	४	लक्ष्मीलाभः
उत्तरे	४	कलहः
गर्भे	४	विनाशः
गुदे	३	स्थैर्यंशुभम्
कण्ठे	३	स्थिरत्वम्

अथ द्वारशाखाचक्रम् रविभावस्य गणना ॥

स्थानम्	नं.	फलम्
शिरसि	४	श्रीलाभः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखायां	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

कूपचक्रम् केचिदाहुः रविभाद्गणना ।

भागाः ९	न.	फलानि
मध्ये	३	स्वादुजल
पूर्वे	३	खंडितजलं
अग्नौ	३	स्वादुजल
दक्षिणे	३	जलहानिः
नैरृत्ये	३	स्वादुजलं
पश्चिमे	३	क्षारोदकम्
वायव्ये	३	मिश्रितोद.
उत्तरे	३	मिष्टोदकं
ईशाने	३	क्षारोदकं

अथ ग्रामवास चक्रम् अत्र ग्रामनक्षत्राद्वासकर्तृनक्षत्रावधि गणना ।

मस्तके	७	धनंमानश्च
पृष्ठे	७	हानिःनिधनं
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

अथ चुल्हीचक्रमिदम् । रविभाद्दिननक्षत्रावधि गणना

पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्
बाहौ	८	सुखम्
गर्भे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्तिः
चरणे	२	कलत्रमृतिः

अत्र वापीचक्रमिदम् धातृभावस्य गणना ॥

पृष्ठे	४	शुभं जलम्
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनाप्तिः
पादयोः	८	अनर्थः

सूर्यनक्षत्रात्तडागचक्रम् दिनभावधिगणना ॥

पूर्वदिशि	२	वारिक्षयम्
अग्निकोणे	३	बहुजलम्
दक्षिणे	२	जलनाशः
नैरृत्ये	२	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	स्वादुजलम्
वायव्ये	२	जलक्षयम्
उत्तरे	३	स्थिरजलम्
ईशाने	२	नष्टजलम्
मध्ये	५	पूर्णजलम्
बाह्ये	३	अमृतजलम्

शल्यानयनरीतिः

अ	क	च	ट	त	प	य	श	हयवर्णाः
पू	अ	द	नै	प	वा	उ	ई	मध्य दिश
मनुष्यस्य	खरस्य	मनुष्यस्य	शुनः	शिशोः	तुरंगास्य	द्विपशल्यं	गोशल्यं	नृकपालं	शल्यं
१॥	२	२	१॥	१॥	४	२	१	३	हस्त
मृत्युदा	राज्यभयम्	गृहेशमृत्युः	बालमृतिं	गृहविरोधः	दुःखसप्तोदयः	दरिद्रता	गोधननाशः	कुलनाशः	फलानि

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्यादिमक्षरम् । गृहस्थस्य ततः शल्याशल्ये पूर्वविचारयेत् ॥ खर्वोहस्तमितं खनेद्विजलैः पूर्णंनिशास्थेयसेत् प्रातर्दृष्टजलं शुभं स्थलजलं मध्यंत्वसत्स्फाटितम्

द्वारचक्रमर्कभत् ।

नं.	फलम्
४	राज्यलाभः
२	हानिः
४	धनप्राप्तिः
२	भयम्
४	मृत्युभयम्
२	मृत्युः
४	द्रव्यप्राप्तिः
२	शोकभयम्
३	धनलाभः

रोहिणीनक्षत्रात्कूपचक्रमिदम् ।

स्थान	नं.	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि.	३	आद्युजलम्
दक्षि.	३	निर्जलम्
नैरृ.	३	अमृतजलम्
पश्चि	३	निर्मलजलम्
वाय.	३	जलहानिः
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

जलाशयारम्भमुहूर्ताः

भानि ह. अनु. रे. उत्तरा ३ ध. श. म. रो. पुष्य. मृ. पू. पा. गुरुसितयारस्तादिदोषरहिते । चं. बु. बृ. शु. वारे च रिक्तोन तिथौ शुभः ।

लग्ने जीवे ज्ञेऽथवा दुर्बलैश्चक्रूरैः शुक्रे वाऽपिमेपूरणस्थे ॥ आप्येचंद्रे सर्वतो वाश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम् ।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्तविचारः ॥

समयः	उत्तरायणे न मीन संक्रान्तौ वृ. शु. चं. दृश्येबलवतिच
भानि	मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. ।
लग्नशुद्धिः	लग्नात् केन्द्रकोणे १।४।७।१०।५।९। स्थानेषु शुभः । ३।६।११। पापखेटाः शुभाः । पञ्चेष्ट, खेटोनलग्ने न कार्यम् । कर्तृजन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नं हेयम् ॥ पूर्वोक्तनक्षत्रेऽग्निशुद्धौ वास्त्वर्चनभूतबलिं च कृत्वा गृहप्रवेशः कार्यः ।

अथाङ्गस्फुरणफलानि ।

पक्षरंध्रतिथौ त्याज्यघटी	स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि
	मस्तकस्फुर.	पृथ्वीलाभः	[illegible]	विजयोत्सुखम्	कण्ठस्फुर.	[illegible]
ति. | घ.	ललाटस्फुर.	स्थानलाभः	हृदयस्फुर.	वांछितसिद्धि	[illegible]	[illegible]
४ | ८	स्कन्धस्फुर.	भोगसमृद्धिः	[illegible]	प्रमोदोदयम्	[illegible]	[illegible]
६ | ९	भ्रवोर्युग्मे	सुखप्राप्तिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ | १४	भ्रवोमध्य	महत्सौख्यम्	नाभिस्फुर	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ | २५	कपालस्फुर.	शुभावाप्तिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२ | १०	नेत्रस्फुर.	धनाप्तिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४ | ५	नेत्रकोणयोः	लक्ष्मीलाभः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पराः शुभाः	नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	नेत्रपक्ष	राज्यलाभः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	नेत्रपक्ष्मस्फुर.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्वामिप्राप्तिः
	नेत्रकोणयोः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पादोपरि	स्थानलाभः
	नाभिकोणः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पादांते.	नृपत्वमेति
	हस्तस्फुर.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धलाभः

अथाथ, अधोमुखनक्षत्राणि ॥ मूलाऽश्लेषामघापूर्वा ३ भरणी विशाखाकृत्तिका एषु वापीकूपतडागादिखननं निधिस्थापनं बिलप्रवेशनमिति ॥

अथमुहूर्त्तादौ लग्नादितिथ्यन्त गुणानाह—सहस्रगुणभृल्लग्नं चन्द्रः शतगुणावली । [illegible] । षष्टं करणं दद्याद् वारस्त्वष्टगुणः स्मृतः । नक्षत्रे चतुर्गुणो ज्ञेयस्तिथिरेकगुणः स्मृति इति ॥ कस्मिन् कार्ये [illegible] पंचमे चौमः सूर्यो भूपालदर्शने ॥ संग्रामे धरणीपुत्रो विद्याभ्यासे बुधोबली ॥१॥ यात्रायां भार्गवः प्रोक्तो दीक्षायाञ्च शनैश्चरः । [illegible] बुधैरिति ॥२॥ अथ द्वादशांगुलशंकुतो दिवेष्टकालज्ञानम्—सूचीमुखो द्वादशभिस्तथांगुलैरथः पृथ्[illegible] यो [illegible] । [illegible] गजदन्तनिर्मितः कीलः स शंकुर्नर इत्युदीरितः ॥१॥ परमदिनं दिनमानविहीनं सप्तभिराहतपञ्चविभक्तम् । [illegible] ॥२॥ या यत्काले भवतीह छाया मध्याह्नहीना स्फुटशंकुयुक्ता । तदा दिनं षड्गुणितं विभाज्यं पूर्वापरार्द्धं [illegible] ॥ अथ [illegible]—गजयत्रगुणाश्च महीगुणा द्विसहिता मघवादिदिशि क्रमात् । गृहपतेरभिधा पुरद्विधमिता वसुहृता भवनस्य दशाभवेत् । सूर्य[illegible] भौमाश्च केतुर्भृगुजाः क्रमेण । क्षुण्णं गतर्क्षं निजवर्षसंख्यया भक्तं भभोगेन गता समाद्विका ॥२॥ अथ चरणिविवेकः । स्वामि[illegible]ससंगुणम् । वष्टभिश्च हरेद्भागं शेषं चरणिरुच्यते ॥१॥ पशुहानिः पशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः । पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदः बहुः पशुः । अथशिलान्यासस्तत्र वाराहः—छत्रं सुगन्धसंयुक्तं कृतधूपविलेपनं । स्तम्भः स्थाप्यस्तथा कार्यो द्वारोच्छ्राय प्रयत्नतः ॥१॥ दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजा शिला[illegible]प्रथमाम् । शेषा प्रदक्षिणान्ताः स्तंभाश्चैव प्रतिष्ठाप्याः ॥२॥ शार्ङ्गधरः—प्रासादेषु च हर्म्येषु गृहेष्वन्येषु सर्वदा । आग्नेय्यांप्रथमं स्तम्भं स्थापये[illegible] ॥३॥ तथा च ब्रह्मशम्भुः—क्षेत्रभित्तिः शिलान्यास स्तम्भस्थारोपणं तथा । पर्वदक्षिणवामंश्चे कुर्यादित्याह कश्यपः ॥४॥

बीजोप्तिचक्रंराहुभाद्दिनावधि

८	३	३	३	३	३	३	३	४
[illegible]	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

अग्नेर्निवास ज्ञानमाह

[illegible] सैका । [illegible] भूमौवासः १ शेषे स्वर्गे २ शेषे पाताले वासः ।

[illegible]

३	३	३	३	३	३	३	३	३
पू.	[illegible]	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	म.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	असत्	असत्

अथाग्रगृहेद्वारनिर्णयः "वास्तुराजवल्लभे"— नवभागं गृहं कृत्वा पञ्चभागास्तु दक्षिणे । त्रिभाग[illegible] मुखे कार्यं शेषं द्वारं प्रकीर्तितम् । दक्षिणाङ्कः स वै प्रोक्तो मन्दिरादिसतोपरि । यो भूपादि[illegible] वामे भूपालो वामगः । वास्तुचक्रे पूर्वादिदिक्षु द्वाराद्देवस्थापनेषु पूर्वस्यांदिशि जयेन्द्रभागयोः—दक्षिणस्यां गृहक्षतगान्धर्वयोः—पश्चिमे पुष्पदन्तवरुणयोः—उत्तरस्यां भल्लाटसोमयोः [illegible] । पश्चिमायां [illegible] तेन नवधा विभक्तेषु दैर्घ्येषु पूर्वस्यां ईशानात् तृतीयचतुर्थयोः दक्षिणस्यां [illegible] द्वारं सर्वथा शुभागमम् । तत्र नैरृत्याच्चतुर्थपञ्चमयोः उत्तरस्यां वायव्यात्तथा पञ्चमयोः [illegible] वायव्ये पुष्पा [illegible] देवस्थापनक्रमः शिखी तु पर्जन्यजयेन्द्रसूर्यासत्योभृशाकाश[illegible] एव पूर्वे । [illegible] गृहक्षतेऽर्यमपितृक्रमेण । गन्धर्वभृङ्गी मृगपितृसंज्ञौ द्वारस्थसुग्रीवपुष्पदन्ताः । [illegible] सपापयक्ष्मापि च रोगनागौ । मुख्यश्च भल्लाटकुबेरशैलास्तथैव [illegible] कीर्तितास्त्वा [illegible] ।

अथ तिथिवारयोर्भवारयोर्योगादनेकयोगानांबोधकचक्रमिदम् ।

योगनामानि	सूर्यवार	चंद्रवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
चराख्ययोगः	पू. षा.	आर्द्रा	विशा.	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
क्रकचयोगः	१२ ति.	११ ति.	१० ति.	९ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
दग्धयोगः	१२ ति.	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
विषाख्ययोगः	४ ति.	६ ति.	७ ति.	२ ति.	८ ति.	९ ति.	७ ति.
हुताशनयोगः	१२ ति.	६ ति.	७ ति.	८ ति.	९ ति.	१० ति.	११ ति.
यमघंटयोगः	मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल.	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
दग्धयोगः	भरणी	चित्रा	उ. षा.	धनिष्ठा.	उत्तरा फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यमदंष्ट्रयोगः	म. ध.	वि. मू.	कृ. भ.	पू. षा. पुन.	उ.षा.अश्वि	रो. अनु.	श्र. श.
सर्वार्थसिद्धियोगः ॥ भवारयोर्योगात्	ह. मू. उ. ३ पुष्य अश्वि.	श्र. रो. मृ. अनु. पुष्य.	अश्वि उ. भा. कृ. आश्ले.	रो. अनु. ह. कृ. मृगशिरा	रेवती. अनु अश्विनी पुष्य पुन.	रे. अनु. अश्विनी पुन. श्र.	श्रवण रोहिणी स्वाती
अमृतसि. यो.	हस्त	म. श्र.	अश्वि.	अनुरा.	रेवती	रेवती	रोहिणी

अथदैर्घ्यविस्तारघातरूपपिण्डवशेनायादि बोधकचक्रम् ।

दैर्घ्यं	२१	२१	२३	२३	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२९	२९
विस्तार	१९	२१	१९	२१	२३	२१	२३	२५	२३	२५	२७	२५	२७
आय	७	१	५	३	१	५	७	१	५	३	१	१	७
वार	७	७	६	७	१	७	२	४	३	६	२	१	५
अंश	९	९	३	९	६	९	३	६	९	९	९	३	९
द्रव्य	१२	१२	४	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२	४	१२
ऋण	५	३	७	१	३	७	५	३	७	१	३	७	५
नक्षत्र	६	१८	१३	३	२०	१५	१०	५	२७	२७	२७	२२	२७
तिथिः	१२	३	१	९	२	१५	१०	५	३	१५	१२	१०	९
योगः	३	९	२०	१५	१०	२१	५	१६	२७	२७	२७	११	२७
आयुः	७२	४८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२	८०	२४

दैर्घ्यं	२९	३१	३१	३१	३१	३३	३३	३३	३३	३५	३५	३५	३५
विस्तार	२९	२५	२७	२९	३१	२७	२९	३१	३३	२९	३१	३३	३५
आय	१	७	५	३	१	३	५	७	१	७	५	३	१
वार	२	३	१	६	४	४	३	२	१	७	७	७	७
अंश	६	६	९	३	६	९	९	९	९	६	३	९	६
द्रव्य	८	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८
ऋण	३	५	७	१	३	१	७	५	३	५	७	१	३
नक्षत्र	५	१७	२७	१०	२०	२७	१५	३	१८	२०	१३	६	२६
तिथिः	८	५	६	७	८	३	६	९	१२	५	१०	१५	५
योगः	१६	२२	२७	५	१०	२७	२१	१५	९	१०	२०	३	२३
आयुः	८	८०	९६	११२	८	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०	८०

दैर्घ्यं	३७	३७	३७	३७	३९	३९	३९	३९	४१	४१	४१	४१	४१	४३
विस्तार	३१	३३	३५	३७	३३	३५	३७	३९	३३	३५	३७	३९	४१	३५
आय	३	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वार	५	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अंश	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
द्रव्य	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४
ऋण	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नक्षत्र	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तिथिः	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
योगः	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आयुः	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८०	९६	७२	८	४०

दैर्घ्यः	४३	४३	४३	४३	४५	४५	४५	४५	४५	४७	४७	४७	४७	४७
विस्तार	३७	३९	४१	४३	३७	३९	४१	४३	४५	३९	४१	४३	४५	४७
आय	७	५	३	१	१	३	५	७	१	१	७	५	३	१
वार	४	१	५	२	५	३	१	६	४	५	४	३	२	१
अंश	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६
द्रव्य	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८
ऋण	५	७	१	३	३	१	७	५	३	३	५	७	१	३
नक्षत्र	११	२४	१०	२३	९	२७	१८	९	२७	३	२६	२२	१८	१४
तिथिः	८	६	४	२	१५	१५	१५	१५	१५	९	११	१३	१५	२
योगः	१९	१२	५	२५	१८	२७	९	१८	२७	१५	१३	११	९	७
आयुः	८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	२४	५६	८८	१२०	३२

दैर्घ्यः	४९	४९	४९	४९	४९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५३	५३
विस्तार	४१	४३	४५	४७	४९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	४३	४५
आय	१	३	५	७	१	३	१	७	५	३	१	७	१
वार	७	७	७	७	७	३	४	५	६	७	१	१	३
अंश	३	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	३	९
द्रव्य	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२
ऋण	३	१	७	५	३	१	३	५	७	१	३	५	३
नक्षत्र	७	८	९	१०	११	१५	२१	२७	६	१२	१८	७	१८
तिथिः	७	११	१५	४	८	३	९	१५	६	१२	३	७	१५
योगः	१७	४	१८	५	१९	२१	२४	२७	३	६	९	१७	९
आयुः	११२	५६	१२०	६४	८	४८	२४	१२०	९६	७२	४८	११२	१२०

दैर्घ्यः	५३	५३	५३	५३	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५७	५७	५७
विस्तार	४७	४९	५१	५३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	४७	४९	५१
आय	३	५	७	१	३	१	७	५	३	१	७	१	३
वार	५	७	२	४	१	४	७	३	६	२	३	७	४
अंश	६	३	९	६	९	३	६	९	३	६	९	९	९
द्रव्य	८	४	१२	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२
ऋण	१	७	५	३	१	३	५	७	१	३	५	३	१
नक्षत्र	२	१३	२४	८	९	२५	२४	३	१९	८	२१	२५	९
तिथिः	८	१	९	२	१५	१०	५	१५	१०	५	१२	५	६
योगः	१	२०	१२	४	१८	२६	७	१५	२३	४	२८	२२	१८
आयुः	८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	१२०	४०	८०	७२	२४	९६

दैर्घ्यः	५७	५७	[illegible]	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६१	६१	६१	६१	६१
विस्तार	५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४९	५१	५३	५५	५७
आय	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	७	१	३	५
वार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	७	६	५	४	३
अंश	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	६	९	३	६	९
द्रव्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	८	१२	४	८	१२
ऋण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	७	५	३	१	७
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	[illegible]	२१	२५	२	६
तिथिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	२	३	४	५	६
योगः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	२२	२४	२६	१	३
आयुः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	३२	८८	६४	८०	९६

दैर्घ्यः	६१	६१	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६५	६५	६५	६५	६५
विस्तार	५९	६१	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	५३	५५	५७	५९	६१
आय	७	१	५	३	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५
वार	२	१	७	७	७	७	७	७	७	२	३	४	५	६
अंश	३	६	९	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३
द्रव्य	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४
ऋण	५	३	७	१	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७
नक्षत्र	१०	१४	२७	९	१८	२७	९	१८	२७	२०	७	७	८	२२
तिथिः	७	८	९	१२	१५	३	६	९	१२	५	१०	१५	५	१०
योगः	५	७	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	१०	१७	२४	४	११
आयुः	११२	८	२४	७२	१२०	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०	८०	४०

दैर्घ्यः	६५	६५	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६९	६९	६९	६९
विस्तार	६३	६५	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७	५७	५९	६१	६३
आय	७	१	५	३	१	७	५	३	१	५	७	१	३
वार	७	१	६	१	३	५	७	२	४	५	१	४	७
अंश	९	६	६	९	३	६	९	३	६	९	९	९	९
द्रव्य	१२	८	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२
ऋण	५	३	७	१	३	५	७	१	३	७	५	३	१
नक्षत्र	९	२३	२३	१५	७	२६	१८	१०	२	९	६	३	२७
तिथिः	१५	५	५	१२	४	११	३	१०	२	९	३	१२	६
योगः	१८	२५	२५	२१	१७	१३	९	५	१	१८	३	१५	२७
आयुः	१२०	८०	८०	७२	६४	५६	४८	४०	३२	२४	४८	७२	९६

दैर्घ्यः	६९	६९	६९	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७२	७३
विस्तार	६५	६७	६९	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	५९	६१
आय	५	७	१	७	५	३	१	७	५	३	१	३	१
वार	३	६	२	२	६	३	७	४	१	५	२	४	३
अंश	९	९	९	९	६	३	९	६	३	९	९	३	६
द्रव्य	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	८
ऋण	७	५	३	५	७	१	३	५	७	१	३	१	७
नक्षत्र	२४	२१	१८	३	५	७	९	११	२२	१५	१७	४	२२
तिथिः	१५	९	३	६	२	१३	९	५	१	१३	८	१	१४
योगः	१२	२४	९	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२	१९
आयुः	१२०	२४	४८	९६	३२	८८	२४	८०	१६	७२	८	१६	१०४

दैर्घ्यः	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५
विस्तार	६३	६५	६७	६९	७१	७३	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७५
आय	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	७	५	३	१	७	५	३	१
वार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	४	१	७	६	५	४	३	२	१
अंश	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	९	९	९	९	९	९	९	९
द्रव्य	[illegible]	[illegible]	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ऋण	[illegible]	[illegible]	१	७	५	३	५	७	१	३	५	७	१	३
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	१९	२६	१५	२७	१२	२४	९	२१	६	१८
तिथिः	[illegible]	[illegible]	८	६	४	२	१५	१५	१५	१५	१५	[illegible]	१५	१५
योगः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	२३	२३	२१	२७	६	१२	१८	२४	३	१९
आयुः	[illegible]	४०	८	२६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०

षोडशोपचार देवपूजनविधिः (यथोपलब्धपदार्थेन कामनापरत्वेन कर्त्तव्यम्)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः ॥ ॐ माधवाय नमः । संकल्पः—ॐ विष्णुः ३, ॐ तत्सदद्यश्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्यब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे ....बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे..............अमुक शालिवाहनशाके........................अमुक..............नाम्नि संवत्सरे अमुक अयने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकनामाहं मम कायिकवाचिकमानसिकज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं.........................अमुककर्म करिष्ये ॥ देवता पूजनं ॥ प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति हो तो केवल पुष्प छोड़ देवे । यदि प्रतिष्ठा की हुई न हो तो सुपारी के ऊपर नारा लपेट कर अक्षत के ऊपर स्थापित करके दाहिने हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र से छोड़े । आवाहन—आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव । यावत् पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ प्रतिष्ठा ॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायैमामहेति च कश्चन ॥ आसनम्—रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकर शुभम् । आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर । (आसनं समर्पयामि) ॥ पाद्यम्—उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् । पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् । पाद्यं स० । अर्घ्यम्—अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह । करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते । (अर्घ्यं स०) ॥ आचमनम्—सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् । आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर । (आचमनीयं स०) ॥ स्नानम्—गङ्गासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे । (स्नानं स०) ॥ दुग्ध स्नानम्—कामधनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् । (दुग्ध स्नानं स०) (पुनर्जलस्नानं स०) ॥ दधि स्नानम्—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । (दधि स्नानं स०) । घृत स्नानम्—नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । (घृत स्नानं स०) ॥ मधु स्नानम्—तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । (मधुस्नानं स०) ॥ शर्करा स्नानम्—इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । (शर्करा स्नानं स०) पञ्चामृत स्नानम्—पयोदधि घृतञ्चैव मधु शर्करयायुतम् । पञ्चामृतं मयानीत स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् (पञ्चामृत स्नानं स०) ॥ शुद्धोदक स्नानम्—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । (शुद्धोदक स्नानं स०) ॥ वस्त्रम्—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् । (वस्त्रोपवस्त्र स०) ॥ यज्ञोपवीत ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयं । उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर । (यज्ञोपवीतं स०) ॥ गंधम्—श्रीखण्डचंदनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपन सुरश्रेष्ठं चंदनं प्रतिगृह्यताम् । (गन्धं स०) ॥ कुंकुम (रोली) ॥ कुंकुमं कामनादिव्यं कामना कामसंभवम् । कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर । (कुंकुमं स०) ॥ अक्षतम्—अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिताभक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ (अक्षतान् स०) ॥ पुष्पम्—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाणपरमेश्वर । (पुष्पाणि स०) ॥ पुष्पमाला ॥ सुरभि पुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकां । ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वर । (पुष्पमाला स०) ॥ दूर्वा (अग्रभाग चढ़ावे) ॥ त्वंदूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासिसुरैरपि । सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव । (दूर्वा स०) ॥शमी पत्र॥ शमीशमयते पापं शमी लोहितकण्टकी । धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी । (शमीपत्रं स०) ॥ सिन्दूर ॥ सिन्दूरं शोभनं रक्त सौभाग्य सुखवर्धनम् । शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् । (सिन्दूरं स०) ॥ सौभाग्यद्रव्य ॥ हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् । सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर । (सौभाग्यद्रव्याणि स०) ॥ अबीर गुलाल ॥ अबीरं च गुलालं च चोवाचन्दनमेव च । अबीरेणार्चितो देव ततः शान्ति प्रयच्छ मे । (अबीरं गुलालं स०) ॥ आभूषणम्—अलङ्कारान् महादिव्यान्नानारत्नैर्विनिर्मितान् । गृहाणदेवदेवेश प्रसीद परमेश्वर । (आभूषणं स०) ॥ धूपम्—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । (धूपमाघ्रापयामि) ॥ दीपम्—साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् । (दीपं दर्शयामि) ॥ नैवेद्यम्—शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम् । उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । (नैवेद्यं निवेदयामि) ॥ आचमन ॥ गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् आचम्यतां सुरश्रेष्ठशुद्धमाचमनीयकम् । (आचमनीयं स०) ॥ ऋतुफलम्—नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम् । कूष्माण्डं पुरतो भक्त्याकल्पितं प्रतिगृह्यताम् । (ऋतुफलं स०) ॥ अखंड ऋतुफलम्—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । (अखण्ड ऋतु फल०) । ताम्बूल पूगीफलम्—पूगीफलं महाद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् । (ताम्बूलं पूगीफलं स०) ॥ दक्षिणा ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे । (दक्षिणां स०) ॥ आरती ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्त्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् । प्रार्थना—गजाननंभूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् । उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥ अनया पूजया गणपतिः प्रीयतां न मम ॥

काश्यामक्षांशाः (रामनगर किला) २५।१६ देशांतररेखातः १।९ रविवशेन वर्षादौ स्फुटायनांशाः २३।१८।१७

लग्नसारिणी

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मे. ०	५०	५७	५	१३	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३७	४६
	९	४७	२५	५	४४	२२	१८	६	०	४८	४२	३९	४७	३९	४१	४२	५७	९	२३	३९	१	२१	५८	३५	४६	२०	५८	३८	२२	९
	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृ. १	५४	३	१२	२१	३०	३९	४९	५८	७	१७	२६	३५	४५	५४	४	१४	२४	३३	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१५	२५	३६
	५९	५२	४९	४७	५२	५९	११	२८	४०	१	२५	४३	२४	५९	३७	११	४५	३	४६	४२	४३	४५	५१	०	१४	३०	४९	१३	३९	९
	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मि. २	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क. ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु. ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ. ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध. ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म. ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं. १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी. ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घटयादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत् । तत्तुल्यघटयादि भवेद्धि यत्र तत्सिंगपूर्वाङ्कमितं हि लग्नम् ॥

दशमलग्नसारिणी।

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
मे. ०	३२	४२	५१	१	१०	२०	२९	३९	४८	५८	७	१७	२७	३६	४६	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि. २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं. ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क. ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु. ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ. ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध. ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म. ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं. १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मी. ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सूर्यफल में इष्टकाल जोड़नेसे लग्नसारिणी द्वारा जो [illegible] निकलेगा, उसमें १५ दण्ड घटाकर जो घटयादि होगा वह दशम सारिणी में जिस राश्यंश का फल होगा, वही दशम लग्न होगा ।

प्रातः स्मरणम्

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैःस्तवै, वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः। ध्यानावस्थित तद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥ यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धाबुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः। अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं नो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः॥

सन्ध्या

भूल से हुए पाप की निवृत्ति के लिए प्रतिदिन सायंकाल और प्रातःकाल दिन रात्रि के सन्धि में जो कर्म किया जाता है उसका नाम सन्ध्या है।

नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर शरीर-शुद्धि के लिये जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

दाहिने हाथमें जल लेकर संन्ध्या के लिये संकल्प करे—

ॐतत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं प्रातः (सायं) सन्ध्योपासनकर्म करिष्ये।

निम्न विनियोग पढ़कर भूमिशुद्धि के लिये जल छोड़े।

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

नीचे के मन्त्रको पढ़कर शुद्धिके लिये आसन पर जल छिड़के।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शिखाबन्धनम्—गायत्री मन्त्रको पढ़कर शिखाबन्धन करना तथा ३ आचमन भी करने के पश्चात् नीचे मन्त्रको पढ़कर पुनः आचमन करे। मन्त्र से किसी कर्म को जब करना होता है तो पहिले विनियोग करना आवश्यक है—अतः विनियोगः—अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता आचमने विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवींञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।

आत्मरक्षा– हाथ में जल लेकर गायत्री मन्त्र पढ़े तथा अपन चारों ओर रक्षार्थ छिड़क देवे। प्राणायाम के निम्न चारोंविनियोगों के लिये चार बार जल पृथ्वीपर छोड़े।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः। सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवशिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः।

नीचे लिखे मन्त्रसे प्राणायाम करे। पद्मासन या सिद्धासनसे बैठकर पहिले एक दो बार श्वास खींचकर धीरे २ छोड़ देवे। पुनः अंगुष्ठा से नासिका के दक्षिण छिद्रको बन्दकर वाम छिद्रसे धीरे २ श्वास लेता जावे तथा प्राणायाम मन्त्र को तीन बार पढ़े और विष्णु का ध्यान नाभि में करे। इसके बाद नासिका के दोनों छिद्र बन्दकर तीन बार मन्त्र पढ़े तथा ब्रह्मा का ध्यान हृदय में करे। पुनः दक्षिण छिद्र से धीरे २ श्वास का परित्याग करे तथा मन्त्रों को पढ़ते समय भगवान शंकर का ध्यान ललाट में करे। इसी प्राणायाम को पूरक, कुम्भक, तथा रेचक क्रम से कहते हैं। इसको सफलता पूर्वक करने से समस्त सिद्धियां सम्भव है।

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐआपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

प्रातःकाल आचमन का विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

सूर्यश्चमेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

रात्रिकृत सब ज्ञाताज्ञात पापों के क्षयार्थ निम्न मन्त्र को पढ़कर आचमन करे।

ॐसूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहं मामसृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

निम्नलिखित विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

शरीर शुद्धि के लिये नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा सात वाक्य से शरीर पर जल छोड़ें, आठवें से भूमि पर और नवें से पुनः मार्जन करे।

(१) ॐआपो हि ष्ठा मयोभुवः। (२) ॐता न ऊर्जे दधात न। (३) ॐमहे रणाय चक्षसे (४) ॐ यो वः शिवतमो रसः। (५) ॐतस्य भाजयते ह नः। (६) ॐउशतीरिव मातरः। (७) ॐतस्मा अरङ्गमाम वः। (८) ॐयस्य क्षयाय जिन्वथ। (९) ॐआपो जनयथा च नः।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

हाथ में जल लेकर मन्त्र को तीन बार पढ़, फिर उस जल को सिर पर छिड़क दें।

ॐद्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता पापनिरसने विनियोगः

दाहिन हाथ में जल लेकर उसको नासिका से लगाकर मन्त्र को पढ़े तथा जल बाईं ओर फेंक कर उसको न देखें।

ॐऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः। निम्न विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दें।

ॐअन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। निम्न मन्त्र को पढ़कर आचमन करे

ॐअन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।

सूर्यार्घ—सूर्य भगवान की पूर्वाभिमुख हो गायत्री मन्त्र पढ़कर तीन बार अर्घ्य देवे।

सूर्योपस्थान—क्रमशः एक एक विनियोग को पढ़कर जल छोड़े तथा उसके साथ के मन्त्र को पढ़ते समय प्रातः तथा सायं सन्ध्या के लिये दोनों हाथ अञ्जली बनाकर उपस्थान करें तथा मध्याह्न सन्ध्या के लिये हाथ ऊपर उठाकर उपस्थान करें।

प्रथम विनियोग तथा मन्त्रः—

उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥ १॥ मन्त्रः—ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

द्वितीय विनियोग तथा मन्त्रः—

उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥२॥ मन्त्रः—ॐउदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ तृतीय विनियोग ॐचित्रमित्यस्य कौत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥३॥ मन्त्रः—ॐचित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

चतुर्थ विनियोग तथा मन्त्र—

तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दःसूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥४॥ ॐतच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

अंगन्यास तीन बार करना चाहिये। एक एक मन्त्र को पढ़ता जावे तथा शरीर के निम्नांकित अङ्गों का स्पर्श दाहिने हाथ से करे। छठे मन्त्र को पढ़ते समय ताली देकर सिर के चारों ओर चुटकी बजावे।

ॐ ॐहृदयाय नमः १ ॐभूः शिरसे स्वाहा २ ॐभुवः शिखायै वषट् ३ ॐस्वः कवचाय हुम् ४ ॐभूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट् ५ ॐभूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ६।

गायत्री जपका विनियोग पढ़ तीन बार जल छोड़ दे।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः। त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

मन्त्र को पढ़कर गायत्री देवी के स्वरूपका ध्यान करे।

ॐश्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता। आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगतायवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।

गायत्री आवाहन, मन्त्र का विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे।

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्री छन्दः शुक्रो देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

नीच के दो मन्त्रों के द्वारा गायत्रीदेवी का आवाहन करे।

ॐतेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोम्।

यथाशक्ति गायत्री जप करे। कम से कम दश बार अवश्य करे।

गायत्री मन्त्रः—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए प्रदक्षिणा करे। अथवा हाथ में जल लेकर अपने सिर के चारो ओर फेर कर छोड़े।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे।

गायत्री का विसर्जन निम्न मन्त्र से करे—

उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्॥

भगवद्देवि स्वस्थानं गच्छ।

मध्याह्नकाल की सन्ध्याके लिये विनियोग तथा आचमन मन्त्र—

आपः पुनन्त्विति विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः

मन्त्रः—ॐ आपः पुनन्तु पृथवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्॥ यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳ स्वाहा॥

सायंकाल सन्ध्याके लिये विनियोग तथा मन्त्र—

विनियोगः—अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृति[illegible] अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

मन्त्र—ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहं मामसृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा"॥ इति सन्ध्याविधिः समाप्तः॥

२—देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम्—(१) [illegible] एक प्रहर तक [illegible]

(२) [illegible] कुशा और [illegible]

(३) [illegible] जम्बूद्वीपे [illegible] अमुकतिथौ [illegible]

(४) [illegible] (५) [illegible] कायतीर्थ (प्रजापति) [illegible] होकर देवतीर्थ से पूर्वमुख बैठकर त्रिकुशा और [illegible]

ॐ [illegible] १ ॐ [illegible] २ ॐ [illegible] ३ ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् ४ ॐ [illegible] देवास्तृप्यन्ताम् ५ ॐ [illegible] ६ ॐ [illegible] ७ ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् ८ ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ९ ॐ [illegible] १० ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ११ ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम् १२ ॐ [illegible] १३ ॐ [illegible] १४ ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् १५ ॐ नागास्तृप्यन्ताम् १६ ॐ [illegible] १७ ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् १८ ॐ सरितस्तृप्यन्ताम १९ ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् २० ॐ [illegible] २१ ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम् २२ ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् २३ ॐ [illegible] २४ ॐ [illegible] २५ ॐ [illegible] २६ ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् २७ ॐ [illegible] २८ ॐ [illegible]स्तृप्यताम् २९।

अथ [illegible]—"निवीती" अर्थात् माला के समान यज्ञोपवीत और अंगोछे को धारण कर [illegible] त्रिकुशा और यव से दो दो अंजलि जल प्रत्येक को देवे।

ॐ [illegible] १ ॐ [illegible] २ ॐ सनातनस्तृप्यताम् ३ ॐ कपिलस्तृप्यताम् ४ ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ५ ॐ [illegible] ६ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ७।

अथ [illegible]—पुनः [illegible] होकर पूर्वाभिमुख देवतीर्थ से अक्षत सहित एक एक अञ्जलि जल नीचे के [illegible] देवताओं की तरह देवें।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् १ ॐ अत्रिस्तृप्यताम् २ ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् ३ ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम ४ ॐ पुलहस्तृप्यताम् ५ ॐ क्रतुस्तृप्यताम् ६ ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् ७ ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् ८ ॐ भृगुस्तृप्यताम् ९ ॐ नारदस्तृप्यताम् १०।

अथ पितृतर्पणम्—[illegible] दक्षिण कन्धे पर यज्ञोपवीत को करके दक्षिण मुख हो मोटक लेकर तीन तीन अञ्जलि जल तिल सहित [illegible] मोड़कर पितृतीर्थ द्वारा प्रत्येक को देवें।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा. १ ॐ सोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा २ ॐ यमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा. तस्मै स्वधा ३ ॐ अर्यमातृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, ४ ॐ अग्निष्वात्ता. पितरस्तृप्यन्तामिदं जल तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, ५ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदं जल तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, ६ ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा ७ ।

अथ यमतर्पणम् —पूर्वोक्त विधि से निम्न १४ यमों को भी तीन २ अञ्जलि जल देवे ।

ॐ यमाय नमः १ ॐ धर्मराजाय नमः २ ॐ मृत्यवे नमः ३ ॐ अन्तकाय नमः ४ ॐ वैवस्वताय नमः ५ ॐ कालाय नमः ६ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ७ ॐ औदुम्बराय नमः ८ ॐ दध्नाय नमः ९ ॐ नीलाय नमः १० ॐ परमेष्ठिने नमः ११ ॐ वृकोदराय नमः १२ ॐ चित्राय नमः १३ ॐ चित्रगुप्ताय नमः १४ ।

अथ पितृतर्पणम्—तीन कुश को एक में लपेट कर इकट्ठा कर लेने को मोटक कहते हैं और तीन कुशको त्रिकुशा कहते हैं । तिल और कुश सहित तीन-तीन अञ्जलि जल पितरों को देवे ।

ॐ वसुरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ॐ रुद्ररूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ॐ आदित्यरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

ॐ गायत्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ । ॐ सावित्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ॐ सरस्वतीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ।

ॐ अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः । ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

इसी क्रम से पितृव्य, तत्पत्नी, भ्राता, तत्पत्नी, भगिनी, मातुल, मातुलानी, पितृष्वसा (फूआ) पैतृष्वस्त्रीय (फूआ का पुत्र), मातृष्वसा (मौसी) मातृष्वस्त्रीय, मातुलेयादि तथा पिता माता के सपिण्ड को एक एक अञ्जलि दिया जावे । ससुर, सास, गुरु का भी तर्पण करे । इसके अतिरिक्त और भी जो पितृ देव मानव आदि जिनको जल देना अभीष्ट हो नीचे लिखे मंत्र से जल देवे ।

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥
नीचे के श्लोक को पढ़ते समय बराबर जल देता जावे ! —

येऽबान्धवाबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥१॥
इस श्लोक को पढ़ते समय अंगोछे के खूट से जल पृथ्वीपर निचोड़ कर तर्पण करें ।
ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥२॥

श्री भीष्म पितामह को अपसव्य होकर नीचे लिखे मन्त्र से अथवा केवल जल लेकर तीन अञ्जलि देवे । (ऐसा सौभाग्य बालब्रह्मचारी पितामह को ही प्राप्त है । जिसे सभी हिन्दू जनता अपना पितामह मान कर तर्पण करती है । यह हमारे देश का आदर्श है) ।

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृत्यप्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ।
सूर्यार्घः—सव्य होकर पूर्वाभिमुख निम्नलिखित मन्त्र से पुष्प गन्ध तुलसी आदि लेकर अर्घ्य देवे ।
ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराश जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥
अथ ब्रह्मादिदेवानांपूजनम् —निम्नलिखित मन्त्रों से पुष्प, गन्ध, तुलसी आदि लेकर निम्न देवताओं के लिये पात्र में जल गिरावे ।

ॐ ब्रह्म यज्ञान प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः । अबुध्न्या ऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥१॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़मस्य पाॅसुरे स्वाहा ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥२॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥३॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ सवित्रे नमः ॥४॥ ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि द्युम्नंश्चित्रश्रवस्तमम् ॥ ॐ मित्राय नमः ॥५॥ ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके । ॐ वरुणाय नमः ॥६॥

अथ दिशां देवतानां च नमस्काराः—ॐ प्राच्यै दिशे नमः । इन्द्राय नमः । ॐ आग्नेय्यै० अग्नये नमः । ॐ दक्षिणायै० यमाय नमः । ॐ नैर्ऋत्यै निर्ऋतये नमः । ॐ पश्चिमायै० वरुणाय नमः ॐ वायव्यै० वायवे नमः । ॐ उदीच्यै० कुबेराय नमः । ॐ ऐशान्यै० ईशानाय नमः ।

विसर्जन का मन्त्र ॐ देवागातुविदो गातुं व्वित्त्वा गातुमित मनसस्पतऽइमन्देव यज्ञ ॅ स्वाहा व्वातेधाः ॥

अर्पणम्—अनेन तर्पणाख्यकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम । ॥इतिदेवर्षिमनुष्यपितृतर्पणविधिः॥

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।

यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्र—

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

पार्थिवपूजनविधिः ।

जहाँ शंकर जी का पूजन अभीष्ट हो, पूजन कर्त्ता गङ्गा की मिट्टी या शुद्ध मिट्टी लेकर शिव जी को बनावे तदनन्तर शिवलिंग को बाएँ हाथ पर रखकर—ॐ शिवाय नमः इस मन्त्र से पूजनादि सब कार्य करे । किसी किसी आचार्य का मत है कि—

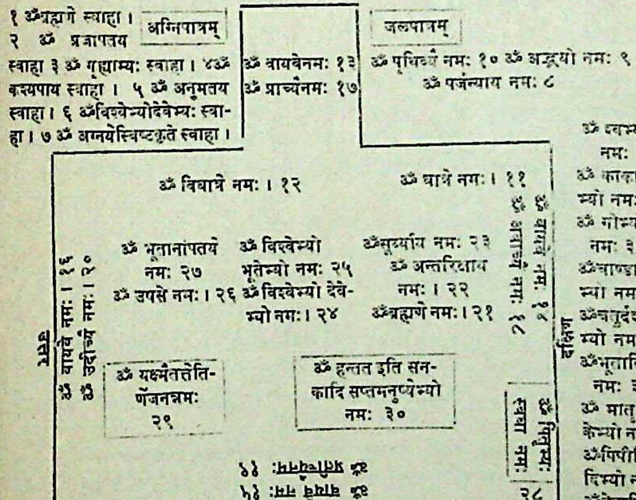
"मृदाहरण संघट्टे प्रतिष्ठाह्वानमेव च, स्नपनं पूजनं चैव विसर्जनमतः परम् । हरोमहेश्वरश्चैव शूलपाणि. पिनाकधृक् । रुद्रः पशुपतिश्चैव महादेव इति क्रमः । अर्थात्-ॐहरायनमः इस मन्त्र से मिट्टी लेकर ॐमहेश्वरायनमः इस मन्त्र से पानी डालकर साने और गोल बनावे, बाद में ॐशूलपाणये नमः इस मन्त्र से प्रतिष्ठा कर ॐपिनाक धृषे नमः इस मन्त्र से आवाहन कर ॐरुद्राय नमः से स्नान तथा ॐपशुपतये नमः से पूजन और ॐ महादेवायनमः से विसर्जन कर दूसरे दिन मूर्ति को बहते हुए जल में छोड़ देवे ।

अथ गोदान प्रयोगः कर्त्ता कृत्यनित्यकृत्यः । पुण्यकाले सवत्सां धेनुं द्विजं च यथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः सम्पूज्य गोशृङ्गमूलादिस्तनान्तस्थानादिषु देवताः पूजयत् । तद्यथा शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । ब्रह्मविष्णू पूजयामि शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः सर्वतीर्थानि पूजयामि एवं सर्वत्र शिरोमध्ये शिवाय । ललाटे देव्यै नमः । नासिकायां षण्मुखाय । नासापुटयोः कम्बलाश्वतरनागाभ्यां० कर्णयोः अश्विभ्यां० चक्षुषोः शशिभास्कराभ्याम् । दन्तेषु वायवे, जिह्वायां वरुणाय । हुंकारे सरस्वत्यै गंडयोः पक्षमासाभ्याम् । ओष्ठयोःसन्ध्याद्वयाय । ग्रीवायाम् इन्द्राय । कुक्षिदेशे रक्षोभ्यः उरसिसाध्येभ्यः । पादेषु धर्माय जंघासु अर्यम्णे खुरमध्ये गंधर्वेभ्यः खुराग्रे पन्नगेभ्यः खुरपश्चिमागे अप्सरोभ्यः । पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यः । सर्वसन्धिषु वसुभ्यः । श्रोणीतटे पितृभ्यः लाङ्गूले सोमाय गुह्ये आदित्यरश्मिभ्यः । गोमूत्रे गंगायै । गोमये यमुनायै । क्षीरे सरस्वत्यै । दध्नि नर्मदायै । घृते अग्नये । रोमसु अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यः । उत्तरे पृथिव्यै । पयोधरेषु चतुःसमुद्रेभ्यश्चतुरः समुद्रान्पूजयामि एता देवताः संपूसम्पूज्य अद्यैतदब्रह्मणो द्वितीय परार्धे इत्यादिना देशकाली संकीर्त्यगोत्रायशर्मणे सुपूजितां पृथ्वीदानसमफलकामः सर्वपापक्षयकामः विष्णुप्रीतिकामः इमां प्रत्यक्षधेनुं सुवर्णशृङ्गी रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठीं घंटा-ग्रैवेयकां मुक्तालाङ्गूलां कांस्योपदोहनीं सितवसनद्वयोपेतां सर्वाभरणभूषितां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे नमम तिलं-पात्रं घृताक्तं गोपुच्छं कृत्वा विप्रहस्ते सतिल कुशोदकं दद्यात्—

मन्त्रस्तु—यज्ञसाधनभूताय विश्वाघौघविनाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा । ततोदाता दान प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं सुवर्णदक्षिणां दद्यात्—प्रार्थयेत्—नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवच । नमोब्रह्मसुताभ्यश्चमविश्राम्बरेनमो नमः । पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता । सुरभी हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः गावो मे हृदये सन्तुगवां मध्ये वसाम्यहम् धेनुं.दत्वा प्रदक्षिणीकृत्य किञ्चिदनुव्रजेत् ॥ इति प्रयोगः ॥

॥ बलिवैश्वदेवचक्रम् ॥

भोजन तैयार होने पर बलि वैश्वदेव का प्रयोग करना चाहिए । निम्नाङ्कित चक्र को जल से बनाकर, तदनुसार चक्र के पास एक तरफ अग्नि और एक तरफ जल रखकर क्रमानुसार दिए गए मन्त्रों द्वारा उक्त देवों का आवाहन पूजन करे ।



पञ्चसूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः । कण्डनी चोदकुम्भस्तु बध्यते यास्तु वाहयन् ॥
तासां क्रमेण सर्वासाम् निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः । पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः, पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥
पञ्चैतान्यो महायज्ञान् न हापयतिशक्तितः । स गृहेऽपि वसन् नित्यं सूना दोषैर्न लिप्यते ॥

चूल्हा, चक्की, झाड़ू, ऊखल तथा पीने के लिये जहां पानी रखा जाता है । इन पाचों स्थानों में जीवों के मरने की सम्भावना रहती है । उन दोषों के निवृत्ति के लिए पञ्च महायज्ञ का विधान है । यदि पञ्च महायज्ञ न कर सके तो कम से कम प्रतिदिन भोजन बन जाने पर नमक रहित थोड़ा सा सामान निकाल कर पांच बार हवन के रूप में अग्नि में डाल देवे । धार्मिक घरों में जिसे प्रायः सभी स्त्रियां करती हैं ।

१—अध्यापन, (ब्रह्मयज्ञ कहा जाता है) ।
२—तर्पण (पितृयज्ञ) कहलाता है । ३—होम (देव यज्ञ) कहलाता है ।
४—बलि (भूत यज्ञ) कहलाता है । ५—अतिथिपूजन (नयज्ञ) कहलाता है

कार्तिक्यांधात्रीपूजा ।

तत्र मन्त्रः देशकालादि संकीर्तनानन्तरं नामगोत्रोच्चारणानन्तरं सर्वपापक्षयद्वारा श्रीदामोदर प्रीत्यर्थं धात्रीमूले श्रीदामोदरपूजां करिष्ये—पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः संपूज्य गन्धपुष्पफलयुतमर्घ्यं दद्यात् । अर्घ्यं गृहाण भगवन् सर्वकामप्रदो भव । अक्षया संततिर्मेऽस्तु दामोदर नमोऽस्तुते ॥ ततो धात्रीं कुङ्कुमगन्धादिनाऽभ्यर्च्य पुष्पैः पूजयेत्—धात्र्यै नमः । शान्त्यै नमः । मेधायै नमः । प्रकृत्यै नमः । विष्णुपत्न्यै नमः । महालक्ष्म्यै नमः । रमायै नमः । कमलायै नमः । इन्दिरायै नमः । लोकमात्रे नमः । कल्याण्यै नमः । कमनीयायै नमः । सावित्र्यै नमः । [illegible] कार्यम् [illegible] ।

[illegible] पिबन्तु मयादत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः ॥

धात्री का नाम आंवला है । इसके पूजन का विधान धार्मिक ग्रन्थों में विशेष रूप से लिखा है । [illegible] कार्तिक मास में आंवले का पूजन और वृक्ष के नीचे भोजन करने का अत्यधिक महत्व है । इसका आशय यह है कि नगर में बसने वाली जनता भी [illegible] किसी समय पर घर से बाहर जाकर स्वच्छ वायु मण्डल के सुख का अनुभव प्राप्त कर सकें ।

श्रीतुलसीपूजनविधिः ।

केशवाय नमः इत्यादिना, तीन बार आचमन करके प्राणायाम करे । संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य [illegible] [illegible]तुलसीपूजनमहं करिष्ये—

श्रीतुलस्यै नमः [illegible] कृत्वा गन्धपुष्पफलो नमस्कारः ।
तन्मन्त्रः । [illegible] परमं [illegible] प्रियम् [illegible] ॥
अथ प्रार्थना—

[illegible] मे माधवप्रिये ॥
[illegible] मे वंशमुत्तमम् ॥

[illegible] तुलसी का पेड़ लगाकर नित्य पूजा करती हैं । इसके पूजन का शास्त्रों में [illegible] है ।

[illegible]

[illegible] संकल्प—तत्र मूले आवाहनं, पूर्वाषाढासु पूजन, उत्तराषाढा [illegible] पूजन तदनन्तर श्रवणे विसर्जनाङ्गहोमं कृत्वा विसर्जयेत् ।

[illegible] को चाहिए कि आश्विन शुक्ल में जिस दिन मूल नक्षत्र हो उस दिन [illegible] करें और तीन दिन तक उक्त पूजनादि करें ।

गोवर्धन पूजा—(अन्नकूट)—कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन—ब्रजवासी लोग इन्द्र की पूजा किया करते थे, भगवान कृष्ण ने उक्त दिन इन्द्र का पूजन न कराकर गोवर्धन पूजा कराई और गोवर्धन के [illegible] भगवान जिसे ब्रजवासियों ने श्रद्धा पूर्वक गोवर्धन को चढ़ाया था, स्वयं भोग लगाया, [illegible] इन्द्र कुपित होकर प्रलय कालिक मेघों द्वारा भीषण वृष्टि कराने लगे । जिससे ब्रजवासी [illegible] हो गये । अन्त में उनके रक्षण के लिए भगवान् ने गोवर्धन को उठाया, यह कथा श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में विस्तृत है । इस दिन गोपूजन, और गोवर्धन पूजन का विशेष महत्व है ।

होली (होलिकादाह)—भक्त प्रह्लाद की बूआ ढुंढा नाम की राक्षसी थी । अपने भाई हिरण्यकशपु की आज्ञा से प्रह्लाद को जलाने के लिए तैयार हुई । वरदान के कारण अग्नि देव उसे नहीं जला सकते थे । उक्त तिथि के दिन भक्त प्रह्लाद को गोदी में लेकर जलती हुई अग्नि में उसने प्रवेश किया । किन्तु भगवान् की कृपा से भक्त प्रह्लाद बच गये और वह जल गई । अतः प्रह्लाद की प्रसन्नता में यह उत्सव मनाया जाता है ।

शुद्धदशवर्गचक्रम् ।

[illegible]

शुद्धहोराचक्रम् । शुद्धद्रेष्काणचक्रम् । शुद्धसप्तांशचक्रम् । शुद्धनवांशचक्रम् ।

[illegible]

नोट—शुद्ध दशवर्ग में द्वादशांश इसी राशिसे २।३० अंशसे गणना करना तथा नवमांश जाननेका प्रकार अन्यत्र पृष्ठ ६६ में दिया गया है इसी तरह दशवर्ग बनानेकी प्रथा प्राचीन महर्षियोंको अभिमत थी। प्राचीन क्रमसाध्यागिक है। विशेष विवरण जाननेके लिए गुरुवर ओझा जी की बनायी फलितविकास नामकी पुस्तक को देखिए। मैं आशा करता हूँ कि विद्वज्जन इन बातों पर विचार कर अपनी सम्मति देकर मुझे अनुग्रहीत करेंगे।

शुद्ध होराचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	अं.
तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	
मे.	मि.	सि.	तु.	ध.	कु.	१५
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	३०

सूर्यादि ग्रहोंके उच्च संवत् २०२५ मेषसंक्रमण काल के सू. उ. ०।१७।१७।३७ चं. उ. १।८।५।४।६ मं. उ. ९।१०।२।४६ बु. उ. ७।१०।२८।३२ बृ. उ. ५।२१।२२।४९ शु. उ. २।१३।५२।३४ श. उ. ७।२६।३७।३५ यही उच्च सूर्य सिद्धान्तानुसार उपलब्ध होता है।

सर्वघातचक्रम्

रोगार्ते गमने रणे नो मङ्गले ।

जन्म रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	११	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा. घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति. घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वार घात	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	मं.	शु.	[illegible]	[illegible]
न. घा.	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	[illegible]
यो. घा.	वि.	शु.	प.	पृ.	प्री.	शु.	शु.	व.	वै.	गं.	आ.	[illegible]
क. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	[illegible]	[illegible]
प्र. घा.	मं.	शु.	बु.	च.	सू.	बु.	गु.	मं.	गु.	च.	[illegible]	[illegible]
गा. घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	[illegible]	[illegible]
व. घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	[illegible]	[illegible]
स. घा.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री.	[illegible]	[illegible]
सं. घा	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	[illegible]	[illegible]
सं. घा.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	[illegible]	[illegible]
वर्ण घा.	र.	श्वेत.	हरि.	पाडु.	धूम्र.	चित्र.	कृष्ण.	कन.	पी.	कु.	[illegible]	[illegible]

अथ लोके प्रसिद्धिमत्त्वात्—गृहनिर्माणे [illegible]—[illegible] दीर्घविस्तार संयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं [illegible] उच्यते ॥ [illegible] कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च [illegible] प्रकीर्तिता [illegible] (दीर्घ - विस्तार) × [illegible] [illegible] फल स्मृतम्।

गणेशचतुर्थी कथा

श्रीगणेश उवाच ॥ [illegible] अनेककल्पा [illegible] सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥२॥ पूजा [illegible] कार्या [illegible]। विशेष तु प्रवक्ष्यामि [illegible] पार्वति ॥३॥ श्रीकृष्ण उवाच—एवं निर्दिते पुत्रे पुनः [illegible] ॥४॥ [illegible] उवाच [illegible] ॥५॥ [illegible] लम्बोदरी [illegible] ॥६॥ [illegible] ॥७॥ [illegible] ॥८॥ [illegible] ॥९॥ [illegible] ॥१०॥ [illegible] ॥११॥ श्रीकृष्ण उवाच—एवं निगदितः पार्थ [illegible] ॥१२॥ [illegible] उवाच—[illegible] ॥ [illegible] ॥१३॥ [illegible] ॥१४॥ [illegible] पीड़ितः ॥ [illegible] ॥१५॥ [illegible] राजा भृत्यभाव [illegible] ॥१६॥ [illegible] ॥१७॥ भिक्षाचिनस्तु [illegible] परस्परवियोगिनः ॥१८॥ [illegible] ॥१९॥ [illegible] पुत्रप्राप्तिः कथं भवेत्। [illegible] ॥२०॥ [illegible] मुने तद्वद निश्चि [illegible] ॥२१॥ [illegible] हितकारकम्। महासंकष्टशमनं सर्वकाम [illegible] ॥२२॥ [illegible] कृष्णचतुर्थी संकटा तु सा। तस्यां पूज्यो नरैः [illegible] ॥२३॥ पूर्वोक्तेन विधानेन भक्त्या प्रीता च श्रद्धया [illegible] भविष्यति ॥२४॥ मुनिश्रेष्ठैर्महाराजमिति मे-[illegible] संकष्टहरनुत्तमम्। [illegible] ॥२५॥ सप्तमासैः पति प्राप राज्यं पुत्रं तथैव च। [illegible] ॥२६॥ श्रीकृष्ण उवाच—तथा पार्थ [illegible] प्राप्स्यसि निश्चितम्। वैरिणस्ते पराभूता भविष्यन्ति विशेषतः ॥२७॥ इति ते कथितं भूप व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ करिष्यति महाभागं सर्वदुःखनिवारणम् ॥२८॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादे भाद्रपद-कृष्णचतुर्थीव्रतकथा समाप्ता ॥२॥

गणेश व्रत की संक्षिप्त कथा—गणेश व्रत की कथा स्कन्द पुराण में श्रीकृष्ण युधिष्ठिरसंवाद प्रकरण में लिखी गई है। जिस कथा को श्री गणेश जी ने श्री पार्वतीजी को सुनाया था, उसी को भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शत्रुओं के नाश के लिए उपदेश दिया।

श्री गणेशजी ने कहा है कि हे भद्रे! भाद्रपद मास में कृष्ण चतुर्थी के नाम से "संकष्टा चतुर्थी व्रत" है। सर्व सिद्धि दायिनी इस व्रत को करने से अनेकों फल प्राप्त होते हैं। सर्व प्रथम देवपूजन विधि के अनुसार पूजन करना चाहिए। पार्वती जी के पूछने पर श्री गणेश जी ने कहा कि गुरु उपदेशानुसार भक्ति पूर्वक व्रत को करे, और गणेश के इन बारह नामों (१ गणेश २ एकदन्त ३ कृष्णपिङ्ग ४ गजानन ५ लम्बोदर ६ भालचन्द्र ७ हेरम्ब ८ विकट ९ वक्रतुण्ड १० आखुरथ ११ विघ्नराज १२ गणाधिप) से पूजन करे और (तथा बारह मासों के कृष्ण चतुर्थी को भी प्रती क्रम से पूजन कर सकता है।) कथा सुनकर रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य देवे।

कथा प्रारम्भ सतयुग में नल नामक पुण्यश्लोक राजा थे, जिनकी परमरूपवती दमयन्ती नाम की स्त्री थी। दैववशात् उस राजा को अपनी स्त्री से वियोग हुआ। किन्तु स्त्री ने इसी व्रत द्वारा पति को प्राप्त किया। माता पार्वती ने, गणेश जी से पूछा, किस प्रकार दमयन्ती ने उस व्रत को करके तीसरे मास राजा को प्राप्त किया (श्रीकृष्ण जी अर्जुन से बोले कि हे पार्थ जिस प्रकार गणेश जी ने माता पार्वती को कथा सुनायी थी उसे सुनो)। गणेश जी ने कहा कि हे माता, राजा नल के ऊपर एक समय विपत्ति आ पड़ी। और एकाएक उनका सर्वस्व नष्ट हो गया। सर्व विनाश होने पर राजा स्त्री के साथ वन में चले गये और बहुत कष्ट झेले। एकाएक दम्पति के ऊपर वियोग दुःख भी आ पड़ा। राजा किसी नगर में भृत्य होकर जीवन बिताने लगे। उनकी स्त्री पुत्र भी पृथक् पृथक् रह कर भिक्षा वृत्ति से जीवन व्यतीत करने लगे। कुछ समय के बाद रानी दमयन्ती को शरभङ्ग मुनि का दर्शन मिला, मुनि के चरण पर गिर कर रानी ने पति और पुत्र की तथा धन-धान्य की प्राप्ति के लिए उपाय पूछा। श्री गणेश जी बोले कि दमयन्ती के इस प्रश्न पर शरभङ्ग मुनि ने कहा कि भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी के दिन गणेश व्रत है। उस दिन गणेश जी का पूजन करने से अपना मन वाञ्छित फल प्राप्त होगा। गणेश जी बोले कि इस प्रकार उस व्रत को करके दमयन्ती अपने पति, पुत्र और राज्य सम्पत्ति सभी को प्राप्त कर सकी। भगवान् श्री कृष्ण ने राज्य प्राप्ति और शत्रु विनाश के लिए अर्जुन को इस व्रत का उपदेश दिया।

हरतालिका व्रत विधिः— मिट्टी का शिव पार्वती बनाकर कदली स्तम्भ से मण्डित चौकी पीढा या वेदी पर स्थापित करे—और सायंकाल में स्नानादि से पवित्र होकर कौशेय वस्त्र पहन कर जल अक्षत हाथ में लेकर सङ्कल्प करे देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रा अमुकप्रवर अमुक नामाहम् सर्व पापक्षयपूर्वकसप्तजन्मसौभाग्यावैधव्यपुत्रपौत्रादिसकलसमृद्धिपूर्वकशिवलोकप्राप्तिकामनया गोष्ठ्यासहरितालिकाव्रतनिमित्तकं यथाशक्तिजागरणपूर्वकञ्च उमामहेश्वरपूजनं करिष्ये - हाथ में पुष्प लेकर बद्धाञ्जलि होकर ध्यान करे - मन्त्र—मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥ अथ आवाहनम्। आगच्छ देवि सर्वेशे सर्वदेवैश्च संस्तुते। अतस्त्वां पूजयिष्यामि प्रसन्ना भव पार्वती ॥२॥ अथ ध्यानम्—शिवे-शिवप्रियेदेवि मङ्गले च जगन्मयि। शिवे कल्याणदे देवि शिवरूपे नमोऽस्तुते ॥३॥ अथपाद्यम्। शिवरूपे नमस्तेऽस्तु शिवायै सततं नमः। शिवप्रीतियुता नित्यं पाद्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ अथार्घ्यम्। संसारतापविच्छेद कुरु मे सिंहवाहिनि। सर्वकामप्रदे देवि अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥५॥ अथाचमनम्। राज्यसौभाग्यदे देवि प्रसन्नाभव पार्वति। मन्त्रेणानेन देवि त्वं पूजितासिमहेश्वरि ॥६॥ लोकानां तुष्टिकर्त्रीत्वं मूर्तिस्तथा च सदा भुजाम्। वाञ्छितं देहि मे नित्यं दुरितं च विनाशय ॥७॥ ततः पञ्चामृतस्नानम्—पञ्चनद्यः सरस्वती सरितश्च समन्ततः। सरस्वतीतु पञ्चधा स देशेऽभवत्सरित् ॥८॥ अथ-वस्त्रम्—वस्त्र युग्मं गृहाणेदं देवि देवस्य वल्लभे। सर्वसिद्धिप्रदे देवि मङ्गलं कुरुमेसदा ॥९॥ अथचन्दनम्-चन्दनेन सुगन्धेन कर्पूरागुरुकुङ्कुमैः। लेपय सर्वगात्राणि प्रीयतां च हरप्रिये ॥१०॥ अथाक्षतान्-रञ्जितां कुङ्कुमेनैव अक्षतैश्च सुशोभनैः। पूजयेद् विधिना देवीं सप्रमत्ताऽच पार्वतीम ॥११॥ अथ-पुष्पम्—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयादत्तानि पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥१२॥ अथ धूपम—चन्दनागुरुकस्तूरीकुङ्कुमाढ्यो मनोहरः। भक्त्या दत्तो मयादेवि धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१३॥ अथदीपम्—त्वं ज्योतिः सर्वदेवानां तेजसा तेज उत्तमम्। आत्मज्योतिः परव्यानं दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१४॥ अथनैवेद्यम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे निश्चला कुरु। ईप्सितं च वरं देहि परत्र-च परागतिम् ॥१५॥ अथफलम्—इदं फलं मयादेवि स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥१६॥ अथताम्बूलम्—पूगीफलंमहादिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥१७॥ अथप्रार्थना—सौभाग्यञ्चाप्यवैधव्यं पुत्रपौत्रादिकं सुखम्। बहुपुण्यफलं सर्वं तत शान्तिं च देहिमे ॥१८॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वरि। पूजितासि महादेवि सम्पूर्णञ्च तदस्तुमे। इति पूजाविधि समाप्तः।

श्री गणेशायनमः ॥ अथ हरितालिकाव्रतकथा श्रवणंकुर्यात्। तद्यथा—मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥ कैलाशशिखरेरम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरंगुह्यं कथयस्व महेश्वरः ॥२॥ सर्वेषां सर्वधर्माणामल्पायासं महत्फलम्। प्रसन्नोऽसि यदानाथ तथ्यंब्रूहि ममाग्रतः ॥३॥ केनत्वं हि मयाप्राप्तस्तपोदानव्रतादिना। अनादिमध्यनिधनोभर्ताचैव जगत्प्रभुः ॥४॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेवि-प्रवक्ष्यामि तवाग्रे व्रतमुत्तमम्। यद्गोप्यं ममसर्वस्वं कथयामि तव प्रिये ॥५॥ यथा चोडुगणचन्द्रो-ग्रहाणां भानुरेव च। वर्णानां च यथा विप्रो देवानां विष्णुरेव च ॥६॥ नदीनां च यथा गंगा पुराणानां च भारतम्। वेदानां च यथा साम इन्द्रियाणांमनो यथा ॥७॥ पुराणवेदसर्वस्वं आगमे च यथोदितम्। एकाग्रेण शृणुष्वैतद्यथा दृष्ट पुराव्रतम् ॥८॥ येन व्रतप्रभावेण प्राप्तमर्द्धासनं मम। तत्सर्वं कथयिष्येऽहं त्व मम प्रेयसी यतः ॥९॥ भाद्रेमासि सितेपक्षे तृतीयाहस्तसंयुते। तदनुष्ठानमात्रेण सर्वपापात्प्रमुच्यते ॥१०॥ शृणुदेवि त्वया पूर्वं यद्व्रतं चरितं महत्। तत्सर्वं कथयिष्यामि यथावृत्तं हिमालये ॥११॥ पार्वत्युवाच—कथं कृतं मयानाथ व्रतानामुत्तमं व्रतम्। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्सकाशान्महेश्वर ॥१२॥ शिवउवाच—अस्तितत्र महान्दिव्यो हिमवान्वै नगेश्वरः। नाना भूमिसमाकीर्णो नानाद्रुमसमाकुलः ॥१३॥ नानापक्षिसमायुक्तो नानामृगविचित्रितः। यत्रदेवाः सगन्धर्वाः सिद्धचारणगुह्यकाः ॥१४॥ विचरन्ति सदा हृष्टा गन्धर्वाः गीततत्पराः। स्फटिकैः काञ्चन-शृंगं मणिवैदूर्यभूषितम् ॥१५॥ भुजैर्लिखन्निवाकाशं सुहृदो मंदिरं यथा। हिमेन पूरितं सर्वं गंगाध्वनि निनादितम् ॥१६॥ पार्वति त्वं यथाबाल्ये परमाचरता तपः। अब्दद्वादशकं देवि धूम्रपाना ह्यधोमुखी ॥१७॥ संवत्सरचतुःषष्टि पक्वपर्णाशनंकृतम्। माघमासे जले मग्ना वैशाखे चाग्निसेविनी ॥१८॥ श्रावणे च बहिर्वासा अन्नपानविवर्जिता। दृष्ट्वा तातेन तत्कष्टं चिन्तया दुःखितोऽभवत् ॥१९॥ कस्मै देया मया कन्या एवं चिन्तातुरोऽभवत्। तदैवावसरे प्राप्तो ब्रह्मपुत्रस्तु धर्मवित् ॥२०॥ नारदो मुनिशार्दूल. शैलपुत्रीदिदृक्षया। दत्त्वार्घ्यं विष्टरं पाद्यं नारदं प्रोक्तवान् गिरिः ॥२१॥ हिमवानुवाच ॥ किमर्थमागतः स्वामिन् वदस्व मुनिसत्तम। महाभाग्येन संप्राप्तः त्वदागमनमुत्तमम् ॥२२॥ नारदउवाच—शृणुशैलेन्द्र मद्वाक्यं विष्णुना प्रेषितोऽस्म्यहम्। योग्यं योग्याय दातव्यं कन्यारत्नमिदं त्वया ॥२३॥ वासुदेव समो नास्ति ब्रह्मशक्रशिवादिषु। तस्माद्देया त्वया कन्या अस्माकं सम्मतं मम ॥२४॥ हिमवानुवाच—वासुदेवः स्वयंदेवः कन्या प्रार्थयते यदि। तदा मया प्रदातव्या त्वदागमनगौरवात् ॥२५॥ इत्येवं कथितं श्रुत्वानभस्यन्तर्दधे मुनिः। ययौ पीताम्बरधरं शंखचक्रगदाभृतम् ॥२६॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा मनीन्द्रस्तमगागत ॥ नारदउवाच—शृणुदेवभवत्कार्यं विवाहो निश्चितस्तव ॥२७॥ हिमवांस्तु ततो गौरीमुवाच वचनं मुदा। दत्तासि त्वं मया पुत्रि देवाय गरुडध्वजे ॥२८॥ श्रुत्वा वाक्यं पितुर्देवि गता च सखिमन्दिरम्। भूमौ पतित्वा सा तत्र विललापाति दुःखिता ॥२९॥ विलपन्तीतदा दृष्ट्वा सखीवचनमब्रवीत् ॥ सख्युवाच—किमर्थं दुःखिता देवि कथयस्व ममाग्रतः ॥३०॥ यद्भवत्याभिलषितं करिष्येऽहं न संशयः। पार्वत्युवाच—सखि शृणु-ममप्रीत्यामनोऽभिलषितं मम ॥३१॥ महादेवं च भर्तारं करिष्येऽहं न संशयः। एतन्मे चिन्तितं कार्यं तातेन कृतमन्यथा ॥३२॥ तस्माद्देहपरित्यागं करिष्येऽहं न संशयः पार्वत्या वचनं श्रुत्वा सखीवचनमब्रवीत् ॥३३॥ सख्युवाच—पितायत्र न जानाति गमिष्यामि हि तद्वनम्। इत्येवं संमतं कृत्वा नीतासि त्वं महद्वनम् ॥३४॥ पिता निरीक्षयामास हिमवांस्तु गृहेगृहे। केन नीता च मे पुत्री देवदानव किन्नरः ॥३५॥ नारदाये कृतं सत्यं किं दास्ये गरुडध्वजे। इत्येवं चिन्तयाविष्टो मूर्छितो निपपात ह ॥३६॥ हा हा कृत्वा प्रधावन्तो लोकास्ते गिरिपुङ्गवम। उचुर्गिरिवरं सर्वे मूर्च्छहेतुं गिरे वद ॥३७॥ गिरिरुवाच—दुःखस्य हेतु शृणुत कन्यारत्नं हृतं मम। दष्टा वा कालसर्पेण सिंहव्याघ्रेण वा हता ॥३८॥ नजाने क्व गता पुत्री केन दुष्टेन वा हृता। चकम्पे शोकसंतप्तो वातेनेव महातरुः ॥३९॥ गिरिवनाद्वनं ततस्त्वदालोकनकारणात्। सिंहव्याघ्रैश्च भल्लैश्च रोहिभिश्च महावनम् ॥४०॥ त्वं चापि विपिने घोरे व्रजन्ती सखिभिः सह। तत्र दृष्ट्वा नदीं रम्यां तत्तीरे च महागुहाम् ॥४१॥ तां प्रविश्य सखीसार्धमन्नभोगविवर्जिता। संस्थाप्य वालुकालिङ्गं पार्वत्या सहितं मम ॥४२॥ भाद्रशुक्लतृतीयायां त्वमर्चन्ती तु हस्तभे। तत्र वाद्यगीतेन रात्रौ जागरणं कृतम् ॥४३॥ तेनाहं व्रतराजप्रभावेण आसनं चलितं मम ॥ सम्प्राप्तोऽहं तदा तत्र यत्र त्वं सखिभिः सह ॥४४॥ प्रसन्नोऽस्मि मया प्रोक्तं वरं ब्रूहि वरानने ॥ पार्वत्युवाच ॥ यदि देव प्रसन्नोऽसि भर्ता भव महेश्वर ॥४५॥ तथेत्युक्त्वा तु संप्राप्तः कैलासं पुनरेव च। ततः प्रभाते प्रतिमां नद्यां कृत्वा विसर्जनम् ॥४६॥ पारणं तु कृतं तत्र सख्या सार्द्धंत्वया शुभे। हिमवानपि तं देशमाजगाम वनाद्वनम् ॥४७॥ चतुर्दिशा निरीक्षंस्तु विकलो पतितो भुवि। दृष्ट्वा तत्र नदीतीरे प्रसुप्ते कन्यकाद्वयम् ॥४८॥ उत्थाप्यालिङ्गनं कृत्वा रोदनं कृतवान् गिरिः। सिंहव्याघ्रादिभिर्युक्तं किमर्थं वनमागता ॥४९॥ पार्वत्युवाच – शृणु तात मया पूर्वं दत्तास्यामीश्वराय वै ॥ तदन्यथाकृतं तात तेनाहं वनमागता ॥५०॥ तथेत्युक्त्वा हिमवता नीतासि त्वं गृहं प्रति। तथा प्रयुक्तवानस्मासु कृत्वा वैवाहिकीं क्रियाम् ॥५१॥ तेन व्रतप्रभावेण प्राप्तमर्धासनं प्रिये। तदादि व्रतराज तु कस्यापि न ख्यापितम ॥५२॥ व्रतराजस्य नामेदं शृणुदेवि यथाभवत्। आलिभिर्हरिता यस्मात्तस्मात्सा हरितालिका ॥५३॥ पार्वत्युवाच ॥ नामेदं कथितं नाथ विधिवद् च मे प्रभो। किं पुण्यं किं फलं चास्य केन व्रतमिदं चरेत् ॥५४॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेवि विधिं वक्ष्ये नारीणां व्रतमुत्तमम्। कर्तव्यं तु प्रयत्नेन यदि सौभाग्यमिच्छति ॥५५॥ तोरणादि प्रकर्तव्यं कदलीस्तम्भमण्डितम्। आच्छाद्य पट्टवस्त्रेण नानावर्णविचित्रितम् ॥५६॥ चन्दनेन सुगन्धेन लेपयेद् गृहमण्डपम्। शंखभेरीमृदंगांश्च वादयेद् बहुनिःस्वनैः ॥५७॥ नानामंगलसंचारं कर्तव्यं मम सद्मनि। स्थापयेत्प्रतिमां तत्र पार्वत्या सहितं मम ॥५८॥ पूजयेद्बहुभिः पुष्पैर्गन्धधूपैर्मनोहरैः। नाना प्रकारनैवेद्यैः कार्यं जागरणं निशि ॥५९॥ नारिकेलैः पूगफलैर्जम्बीरैः सबीजकैः। बीजपूरैस्तु नारंगैः फलैरन्यैरनेकशः ॥६०॥ ऋतुदेशोद्भवैश्चैव फलैश्च कुसुमैरपि। धूपदीपादिभिश्चैव मन्त्रेणानेन पूजयेत् ॥६१॥ शिवायै शिवरूपिण्यै मंगलायै महेश्वरि। शिवेसर्वार्थदे देवि शिवरूपे नमोऽस्तुते ॥६२॥ शिवरूपेनमस्तुभ्यं शिवायै सततं नमः। नमस्ते ब्रह्मरूपिण्यै जगद्धात्र्यै नमोनमः ॥६३॥ संसारभयसंतप्तात्त्राहि मां सिंहवाहिनि। येन कामेन भो देवि पूजितासि महेश्वरि ॥६४॥ राज्यं सौभाग्यमेदेहि प्रसन्ना भव पार्वति। मन्त्रेणानेन भो देवि पूजयेदुमया सह ॥६५॥ कथां श्रुत्वा विधानेन दद्याद्वस्त्रादिकं तथा। ब्राह्मणाय प्रदातव्यं वस्त्रधेनुहिरण्यकम् ॥६६॥ कुर्याद्वै भर्तृसहितेन दम्पतिभ्यां सहैव तु ॥ संकल्पस्तु ततः कुर्याद्वस्त्र रत्नादिकं च यत् ॥६७॥ एवं या कुरुते देवि सर्वपापैः प्रमुच्यते। सप्त जन्म भवेद्राज्यं सौभाग्यं सुखदायकम् ॥६८॥ तृतीयायां तु या नारी अन्नाहारं समाचरेत्। सप्तजन्म भवेद्वन्ध्या वैधव्यं च पुनः पुनः ॥६९॥ दारिद्र्यपुत्रशोकश्च कर्कशा दुःखभागिनी। सा पतिता नरके घोरे नोपवासं करोति या ॥७०॥ अन्नाहारात् तु शूकरीस्यात् फलभक्षेण मर्कटी ॥ जलपाने जलौका क्षीराहारेण सर्पिणी ॥७१॥ मांसाहाराद्भवेद्व्याघ्री मार्जारी दधिभक्षणात्। मिष्टाशाने पिपीलिका जन्म मक्षिका सर्वभक्षणात् ॥७२॥ निद्रावशेनाजगरी कुक्कुटी पतिवञ्चनात्। तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥७३॥ कांचनं राजतं ताम्रं तथा धनस्य भाजनम्। दापयेच्च विधाय पारणान्तरम् ॥७४॥ एवं विधिं या कुरुते च नारी मयासह सा लभते च स्वामिनम्। विलासकाले तदनन्तरम् सायुज्यमुक्तिलभते च भुक्तिम् ॥७५॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। तत्फलं प्राप्नोतिनरैः ॥७६॥ एतत्ते कथितं देवि व्रतानां व्रतमुत्तमम्। कथाश्रवणमात्रेण सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय ॥७७॥ इति लिङ्ग पुराणे हरितालिकाव्रतकथा समाप्ता ॥

हरितालिका व्रत की संक्षिप्त कथा हरितालिका व्रत की कथा लिङ्ग पुराण में वर्णित है। इस कथा को श्री शिवजी ने पार्वती जी के विशेष आग्रह पर उन्हें कैलाश पर्वत पर सुनाया था। एक बार कैलाश पर्वत के शिखर पर बैठे हुए शिव जी से पार्वती जी ने कहा कि हे नाथ? यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो अत्यन्त गोप्य से गोप्य व्रत को, जो अत्यन्त फलदायक हो उसे सुनाइये। भगवान् शङ्कर बोले मैं उस गोपनीय तथा फलदायक व्रत को बतलाता हूँ, मन को एकाग्र करके सुनो। भाद्रपद शुक्ल तृतीया के दिन हस्त नक्षत्र के होने पर इस व्रत को करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी व्रत को तुमने पहले किया था। उसी व्रत को बतलाता हूँ। श्री पार्वती जी ने पूछा कि किस व्रत को मैंने किया था? शिव जी बोले पर्वतों के राजा हिमवान है, जहां पर गन्धर्व, सिद्ध चारण, गुह्यक आदि का निवास है। वहां पर तुमने अपने बाल्यकाल में कठिन तप किया था। तुम्हारी कठिन तपस्या को देखकर तुम्हारे पिता हिमवान को यह चिन्ता हुई कि किसे इस कन्या को प्रदान करूँ। उसी समय श्री नारद जी वहां पधारे। उनके यथोचित सत्कार के पश्चात् हिमवान ने पूछा कि हे नाथ! आप किस लिये पधारे हैं? श्री नारद जी ने कहा कि मैं श्री वासुदेव द्वारा भेजा गया आपके पास आया हूँ। उनका कहना है कि योग्य वर को ही कन्या देना उचित है, अतः उनके अतिरिक्त दूसरा कौन योग्य है? [illegible] श्री हिमवान ने उत्तर दिया कि विष्णु भगवान् को अपनी कन्या देना मुझे स्वीकार है। इसके बाद नारद जी ने विष्णु लोक में जाकर विष्णु भगवान ने यह वृत्तान्त सुनाया। श्री हिमवान ने गौरी से कहा कि पुत्री! मैंने विष्णु को दान करना चाहता हूँ। पिता की बात सुनकर दुःखी हुई गौरी सखी के पास पहुँची और पृथ्वी पर गिर पड़ी। सखी ने पूछा कि इस प्रकार क्यों रो रही हो? पार्वती ने कहा कि श्री शिव जी ही हमारे अभीष्ट देव हैं और पिता जी ने मुझे श्री विष्णु भगवान को प्रदान करने का प्रयत्न किया है। [illegible] मैं इस शरीर को छोड़ देना चाहती हूँ। सखी ने पार्वती को उस वन में पहुँचा दिया जिस [illegible] हिमवान नहीं जानते थे। इस प्रकार सखी के [illegible] जाने पर हिमवान को [illegible] और वह मूर्छित हो गये। [illegible] लगता था। [illegible] शिवजी बोले कि [illegible] हे पार्वती [illegible] नदी तट पर पहुँची, और [illegible] करके बाद के दिन [illegible] उस व्रत के प्रभाव से मेरा [illegible] मैंने कहा कि वर मांगो, [illegible] और तुमने दूसरे दिन [illegible] हिमवान वहां पहुँच गये [illegible] कारण पूछा, तब तुमने [illegible] की बात बतलाया प्रसन्न [illegible] उस व्रत के प्रभाव से तुमने [illegible] व्रत के विधि विधान [illegible] व्रत के दिन तोरणादि से [illegible] मंगलमय गीत के साथ पार्वती सहित [illegible] पूजन विधि से पूजा करके शिव [illegible] जो स्त्री इस व्रत को करती है वह पापों से [illegible] करती है। तथा जो स्त्री उस दिन अन्न ग्रहण [illegible] पड़ता है। "हरितालिका व्रत" कथा को सुनने [illegible] "वाजपेय यज्ञ" करने का फल प्राप्त होता है। [illegible] इस उत्तमोत्तम व्रत को मैंने तुम्हें बतलाया। जो स्त्री इस व्रत को करेगी [illegible] पाकर इष्टफल को प्राप्त करेगी इसमें संशय नहीं है।

[illegible] सूत उवाच। पुरा तु जाह्नवीतीरे धर्मो धर्मपराक्रम। जरासन्धवधार्थाय राजसूय [illegible] ॥१॥ कृष्णेन सह धर्मोऽसौ भीमार्जुनसमन्वितः। यज्ञशालां प्रकुर्वीत नानारत्नोपशोभिताम् ॥२॥ मुक्ताफलसमाकीर्णां महेन्द्रालयसन्निभाम्। यज्ञार्थं भूपतीन्सर्वान् समानीय [illegible] ॥३॥ [illegible] राजा वैकदा नृपनन्दनः। दुर्योधन इति ख्यातः समागत्य मखालयम् ॥४॥ [illegible] अकस्मिकम्। ऊर्ध्वं कृत्वा तु वस्त्राणि तत्र गच्छन् शनैः शनैः ॥५॥ [illegible] तं दृष्ट्वा द्रौपद्यादिवराङ्गनाः। दुर्योधनस्ततो गच्छञ्जलमध्ये पपात ह ॥६॥ पुनः सर्वे [illegible] उपहासं च चक्रुस्ता द्रौपद्यादिसुलोचनाः ॥७॥ महाराजा-

धिराजोऽसौमहाक्रोध परायणः। विनिर्गतः स्वकं राष्ट्रं मातुलेनवृतो नृपः ॥८॥ तस्मिन्काले तु शकुनिः प्रोवाच मधुरं वचः। मुञ्च राजन्महारोषं पुरतः कार्यगौरवात् ॥९॥ गन्तुमुत्तिष्ठ राजेन्द्र सत्रात्स्वसदनं प्रति। तथेत्युक्त्वा महाराजः समागत्य मखालयात् ॥१०॥ निरागच्छन्नृपाः सर्वे त्यक्त्वा यज्ञं स्वराष्ट्रकम् ॥ दुर्योधनो राजभिश्च समागत्यगजाह्वयम् ॥११॥ आनीय पाण्डुपुत्रांस्तान्धर्मभीमार्जुनान् वरान्। द्यूतारम्भमकुरुत स्वं राज्यं प्राप्तवांस्ततः ॥१२॥ द्यूतेनैव जितास्सर्वे पाण्डवाः वीतकल्मषाः। ततोऽरण्यान्तरेगत्वा वर्तन्ते वनचारिणः ॥१३॥ ततोवृत्तान्तमापन्नो भ्रातृभिः सह पाण्डवम्। युधिष्ठिरं द्रष्टुमनाः कृष्णोऽगाज्जगदीश्वरः ॥१४॥ सूतउवाच ॥ अरण्येवर्तमानास्ते पाण्डवाः दुःखकर्षिताः। कृष्णं दृष्ट्वा महात्मानं प्रणिपत्य यथाक्रमम् ॥१५॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ अहं दुःखीह संजातो भ्रातृभिः परिवारितः। कथं मुक्तिर्भवेदस्माकमनन्ताद्दुःखसागरात् ॥१६॥ कं देवं पूजयिष्यामि राज्यंप्राप्स्याम्यनुत्तमम्। अधुना किं व्रतं कृत्वा त्वत्प्रसादाद्भवेद्धितम् ॥१७॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अनन्तव्रतमस्त्येकं तिथावस्यामनुत्तमम्। सर्वपापहरं नृणां स्त्रीणां चैव युधिष्ठिर ॥१८॥ शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां मासि भाद्रपदे भवेत्। तस्यानुष्ठानमात्रेण सर्वपापं व्यपोहति ॥१९॥ युधिष्ठिर उवाच—कृष्ण! कोऽयमनन्तेति प्रोच्यते यस्त्वयाविभो। किं शेषनाग आहोस्विदनन्तस्तक्षकः स्मृतः ॥२०॥ परमात्माऽथवाऽनन्त उताहो ब्रह्म गीयते ॥ एषोऽनन्त संज्ञोवै तथ्यं मे ब्रूहि केशव ॥२१॥ श्रीकृष्ण उवाच- अनन्त इत्यहं पार्थ मम रूपं निबोधय। आदित्यादिग्रहात्मासौ यः काल इति पठ्यते ॥२२॥ कलाकाष्ठामुहूर्तादि दिवारात्रिशरीरवान्। पक्षमासर्तुवर्षाणि युगकालव्यवस्थया ॥२३॥ योऽयं कालो मयाख्यातः सोऽनन्त इति कीर्त्यते। सोऽहं कृष्णोऽवतीर्णोऽत्र भूभारोत्तारणाय च ॥२४॥ दानवानां वधार्थाय वासुदेवकुलोद्भवम्। मां विद्धि सततं पार्थ साधूनां पालनाय च ॥२५॥ अनादि मध्यनिधनं कृष्णं विष्णुं हरिं शिवम्। वैकुण्ठं भास्करं सोमं सर्वव्यापिनमीश्वरम् ॥२६॥ विश्वरूपं महाबाहो योगिध्येयमनुत्तमम्। सर्वरूपमनन्तं च यस्मिन्निन्द्राश्चतुर्दश ॥२७॥ वसवो द्वादशादित्या रुद्रा एकादशस्मृताः। सप्तर्षयः समुद्राश्च पर्वताः सरितोद्रुमाः ॥२८॥ नक्षत्राणि दिशोभूमिः पातालं भूर्भुवादिकम्। माकुरुस्वात्रसन्देहं सोऽहं पार्थ न संशयः ॥२९॥ युधिष्ठिर उवाच। अनन्तव्रत माहात्म्यं विधिर्वेदविदाम्वर ; किं पुण्यं किं फलं चास्य किं दानं कस्य पूजनम् ॥३०॥ केन चादौपुराचीर्णं मर्त्ये केन प्रकाशितम्। एवं सविस्तरं .वं ब्रूह्यनन्तव्रतं मम ॥३१॥ श्रीकृष्ण उवाच। आसीत्पुराकृतयुगे सुमन्तुर्नामवैद्विजः। वशिष्ठगोत्रसम्भूतां सुरूपां च भृगोः सुताम् ॥३२॥ दीक्षानाम्नीं चोपयेमेवेदोक्तविधिनानृपः। तस्याः कालेन सञ्जातादुहिताऽनन्तलक्षणा ॥३३ शीलानाम्नी सुशीला सा वर्धते पितृवेश्मनि। माता च तस्याः कालेन ज्वरदाहेन पीड़िता ॥३४॥ विनष्टा या नदी तीये ययौ स्वर्गं पतिव्रता। सुमन्तुस्तु ततोऽन्यांवै धर्मपुंसः सुतां पुनः ॥३५॥ उपयेमे विधानेन दुःशीला नामनामतः। दुःशीलां कर्कशां चण्डीं नित्यं कलहकारिणीम् ॥३६॥ सापि शीला पितुर्गेहे गृहार्चन परावभौ। कुड्यस्तम्भ बहिर्द्वार देहलीतोरणादिषु ॥३७॥ वर्णकैश्चित्रमकरोन्नीलपीत सितासितैः। स्वस्तिकैः शंख पद्मैश्च भावयन्ती पुनः पुनः ॥३८॥ ततः काले बहुगते कौमारवशवर्तिनी। एवं सा वर्धतेशीला पितृवेश्मनि मङ्गला ॥३९॥ तां दृष्ट्वा चिन्तयामास वराननुगुणान्भुवि। कस्मै देया मया कन्या विचार्येति सुदुःखितः ॥४०॥ एतस्मिन्नेवकालेतु मुनिर्वेदविदांवरः। कन्यार्थी चागतः श्रीमान् कौण्डिन्योमुनि सत्तमः ॥४१॥ उवाचरूपसंपन्नां त्वदीयां तनयां वृणे। पिता ददौ द्विजेन्द्राय कौण्डिन्याय शुभेदिने ॥४२॥ गृह्योक्तविधिना पार्थ विवाहमकरोत्तदा। मङ्गलाचार निर्घोषं तत्र कुर्वन्ति योषितः ॥४३॥ ब्राह्मणाः स्वस्तिवचनं जयघोषं च वन्दिनः। निर्वर्त्योद्वाहिकं सर्वं प्रोक्तवान् कर्कशांद्विज ॥४४॥ सुमन्तुरुवाच – किञ्चिद्दायादिकं देयं जामातुः पारितोषिकम्। तच्छ्रुत्वा कर्कशा क्रुद्धा प्रोत्सार्या गृहमण्डनम् ॥४५॥ पेटकेसुस्थिरं बद्ध्वा स्वगृहे गम्यतामिति। उवाच विनं नैवास्ति.गृहे पश्य यदि स्थितम् ॥४६॥ तच्छ्रुत्वा विमनाः पार्थ संयतात्मा मुनिस्तदा। भोज्यावशिष्टचूर्णेन पाथेयं च चकार सा ॥४७॥ कौण्डिन्योऽपि विवाह्यैनां पथि गच्छन् शनैः शनैः। शीलां सुमन्तोरादाय नवोढां गोरथेन हि ॥४८॥ ददर्श यमुनां पुण्यां तामुत्तीर्यतटं स्वयम्। संस्थाप्याथ शकटं गतः शिष्यान्नियम्यवै ॥४९॥ मध्याह्ने भोज्यवेलायां यमुनीयंसरित्तटे। ददर्श शीला सा स्त्रीणां समूहं रक्तवाससाम् ॥५०॥ चतुर्दश्यामर्चयन्तं भक्त्यादेवं जनार्दनम्। उपगम्य शनैः शीला पप्रच्छ स्त्रीकदम्बकम् ॥५१॥ आर्याः किमेतन्मे ब्रूत किन्नाम व्रतमीदृशम्। ता ऊचुर्योषितस्तास्तु शीलां शीलविभूषणाम् ॥५२॥ अनन्तव्रत मेतद्धि अनन्तस्त्वत्र पूज्यते। सोऽब्रवीदहमप्येतत्करिष्ये व्रतमुत्तमम् ॥५३॥ विधानं कीदृशं तत्र किं दानं कोऽत्र पूज्यते ॥५४॥ स्त्रियः ऊचुः—शीले सदन्नप्रस्थस्य

पुन्नाम्ना संस्कृतस्य च। अर्धं विप्रायदातव्यमर्धमात्मनि भोजनम्। शक्त्या च दक्षिणां दद्याद्वित्त शाठ्यविवर्जितः। कर्तव्यं च सरित्तीरे कथां श्रुत्वा हरेरिमाम् ॥५६॥ शेषं कुशमयं कृत्वा वंशपात्रे निधाय च। स्नात्वाऽनन्तं समभ्यर्च्य मण्डले गन्ध दीपकैः ॥५७॥ पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैर्नानापक्वान्न संयुतैः। तस्याग्रतो दृढं सूत्रं कुङ्कुमाक्तं सुदोरकम्। चतुर्दशग्रन्थियुतं वामे करतलेन्यसेत् ॥५८॥ धारण मन्त्रः— अनन्त संसार महासमुद्रं मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोज यस्व ह्यनन्तसूत्राय नमोनमस्ते ॥५९॥ अनन्तं च करे बद्ध्वा भोक्तव्यं स्वस्थमानसैः ॥ ध्यात्वा नारायणं देवमनन्तं विश्वरूपिणम् ॥६०॥ भुक्त्वा चान्तेव्रजेद्वेश्म भद्रे प्रोक्तं व्रतं तव ॥ श्रीकृष्णउवाच एवमाकर्ण्यराजेन्द्र प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥६१॥ साप्यचक्रे व्रतं शीला करे बद्ध्वा सुदोरकम्। चतुर्दश ग्रन्थियुतं वामे बाहौ यथोदितम्। पाथेयमर्धं विप्रायदत्वा भुक्त्वा स्वयं ततः ॥६२॥ पुनर्जगाम संहृष्टा गोरथेन स्वकं गृहम्। भर्त्ता सहैव शकुनप्रत्ययस्तत्क्षणादभूत् ॥६३॥ तेनानन्तव्रतेनास्य वभौ गोधनसंकुलम्। गृहाश्रमं श्रियाजुष्ट धनधान्य समन्वितम् ॥६४॥ आकुलं व्याकुलं रम्यं सर्वदाऽतिथिपूजनैः। सापि माणिक्यकाञ्चिभिर्मुक्ताहारैर्विभूषिता ॥६५॥ दिव्याङ्गवस्त्रसच्छन्ना सावित्रीप्रतिमाऽभवत्। विचचार गृहेभर्तुः समीपे सुवरूपिणी ॥६६॥ कदाचिदुपविष्टाया दृष्टो बद्धः सुदोरकः। शीलाया हस्त मूलेतु भर्त्रा तस्या द्विजन्मना ॥६७॥ किमिदं दोरकं शीले ममवश्याय कल्पितम्। धृतं सुदोरकस्त्वेतत् किमर्थं ब्रूहि तत्वतः ॥६८॥ यस्य प्रसादात्सकला धनधान्यादि सम्पदः। लभ्यन्ते मानवैस्तापि सोऽनन्तोऽयं मयाधृतः ॥६९॥ शीलायास्तद्वचः श्रुत्वा भर्त्रातेन द्विजन्मना। श्रीमदान्धेन कौरव्यं साक्षेपं त्रोटितस्तदा ॥७०॥ कोऽनन्त इति मूढ़ेन जल्पता पापकारिणा। क्षिप्तोज्वालाकुले वह्नौ हाहाकृत्वा प्रधावती ॥७१॥ शीला गृहीत्वा तत्सूत्रं क्षीरमध्ये समाक्षिपत्। तेन कर्म विपाकेन सा श्रीस्तस्यक्षयंगता ॥७२॥ गोधनं तस्करैर्नीतं गृहं, दग्धं धनं गतम्। यद्यथैवागतं गेहे तत्तथैव पुनर्गतम् ॥७३॥ स्वजनैः कलहोनित्यं वन्धुभिस्ताडनंतथा। अनन्तक्षेपदोषेण दारिद्र्यं पतितं गृहे ॥७४॥ न कश्चिद्वदते लोकोतेन सार्द्धयुधिष्ठिर। शरीरेणातिसन्तप्तो मनसाऽप्यतिदुःखितः ॥७५॥ विपदं परमां प्राप्तः कौडिन्यः प्राह तां प्रियाम्। कौडिन्यउवाच—शीले ममेदमुत्पन्नं सहसा शोककारणम् ॥७६॥ येनातिदुःखमस्माकं जातः सर्वधनक्षयः ॥ स्वजनैः कलहो गेहे न कश्चिन्मां प्रभाषते ॥७७॥ शरीरे नित्य संतापः खेदश्चेतसि दारुणः। जानासि दुर्नयः कोऽत्र किं कृत्वा सुकृतं भवेत् ॥७८॥ प्रत्युवाचाथ तं शीला सुशीला शीलमण्डना। प्रायोऽनन्त कृताक्षेप पापसम्भवजं फलम् ॥७९॥ भविष्यति महाभाग तदर्थं यत्नमाचर। एवमुक्तः स विप्रर्षि जगाम मनसा हरिम् ॥८०॥ निर्वेदं निर्जगामाथकौण्डिन्यः प्रगतो वनम्। तपसेकृतसंकल्पो वायुभक्षो द्विजोत्तमः ॥८१॥ मनसाध्यायमानं तं क्व द्रक्ष्यामि च तं विभुम्। यस्य प्रसादात्तज्जातमोक्षणान्निधनं गतम् ॥८२॥ धनादिकं ममातीव सुख दुःखप्रदायकम्। एवं सञ्चिन्तयन् सोऽथ बभ्राम गहने वने ॥८३॥ तत्रापश्यन् महाचूतं पुष्पितं फलितं द्रुमम्। वर्जितं पक्षिसंघातैः कीटकोटिसमावृतम् ॥८४॥ तमपृच्छद्द्विजोऽनन्तः क्वचिद्दृष्टो महाद्रुम। ब्रूहि सौम्य ममातीव दुःखं चेतसि वर्तते ॥८५॥ सोऽब्रवीद्भगवानन्तः क्वचिद्दृष्टोमयादिवा। एव निराकृतस्तेन संजगामाथ दुःखितः ॥८६॥ क्व द्रक्ष्यामीतिगच्छन् स गां ददर्श सवत्सकाम्। वनमध्ये प्रधावन्तीमितश्चेतश्च पाण्डव ॥८७॥ सोऽब्रवीद्धेनुकेब्रूहि यद्यनन्तस्त्वयेक्षितः। गौरुवाचाथ कौण्डिन्यं नानन्तं वेद्म्यहं द्विज ॥८८॥ ततो व्रजन् ददर्शाग्रे वृषभं शाद्वलेस्थितम्। दृष्ट्वा पप्रच्छ गोस्वामिन्ननन्तोवीक्षितस्त्वया ॥८९॥ वृषभस्तमुवाचेद नानन्तो वीक्षितो मया। ततो व्रजन् ददर्शाग्रे रम्यं पुष्करिणीद्वयम् ॥९०॥ अन्योऽन्य जल कल्लोलैर्वीचिपर्यन्त सङ्गतम्। छन्न कमल कल्हारैः कुमुदोत्पलमण्डितम् ॥९१॥ सेवितं भ्रमरैर्हंसैश्चक्रकारण्डवैर्बकैः। तेषु पृच्छद्द्विजोऽनन्तो युवाभ्यांनापलक्षितः ॥९२॥ ऊचतुस्ते पुष्करिण्यौ नानन्तो वीक्षितो द्विज। ततो व्रजन् ददर्शाग्रेगर्दभं कुञ्जरं तथा ॥९३॥ तावपृच्छद् द्विजोऽनन्तो भवद्भ्यांनोपलक्षितः। एवं स पृच्छन्नष्टाशस्तत्रैव निपपातह ॥९४॥ कौण्डिन्यो विह्वलो भूतो निराशो जीविते नृप। दीर्घमुष्णं न निःश्वस्य पपात भुवि भारत ॥९५॥ प्राप्य संज्ञामनन्तेति जल्पन्नुत्थाय स द्विजः नूनं त्यक्ष्याम्यहं प्राणानीति संकल्प्य चेतसि ॥९६॥ यावदुद्बन्धनं वृक्षे चक्रे तावद् युधिष्ठिर। कृपयाऽनन्तदेवोऽपि प्रत्यक्षं समजायत ॥९७॥ वृद्धब्राह्मणरूपेण इत एहीत्युवाच तम्। प्रगृह्य दक्षिणेपाणौ गुहायां प्रविवेशत् ॥९८॥ तां पुरीं दर्शयामास दिव्यनारीनरैर्युताम् ॥ यस्यां निविष्टमात्मानं दिव्य सिंहासने नभे ॥ पार्श्वस्थं शंख चक्राब्जगदागरुड शोभितम्। दर्शयामास विप्राय विश्वरूपमनन्तकम् विभूतिभेदैश्चानन्तैरनन्तममितौजसम्। कौस्तुभेन विराजन्तं वनमालाविभूषितम् ॥१०१॥

तं दृष्ट्वा देवदेवेशमनन्तमपराजितम्। वन्दमानो जयादोच्चैर्जयशब्द पुरःसरम् ॥ १०२ ॥ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मापापसम्भवः। त्राहिमां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरोभव ॥ १०३ ॥ तच्छ्रुत्वाऽनन्तदेवेशः प्राह सुस्निग्धयागिरा। मा भैस्त्वं ब्रूहि विप्रेन्द्र यत्तेमनसि वर्तते ॥ १०४ ॥ कौण्डिन्य उवाच ॥ मया भूत्यवलिप्तेन त्रोटितोऽनन्तदोरकः। तेन पापविपाकेन भूतिर्मे प्रलयं गता ॥ १०५ ॥ स्वजनैः कलहो गेहे न कश्चिन्मां प्रभाषते। निर्वेदाद्गमितेऽरण्ये तव दर्शनकांक्षया ॥ १०६ ॥ कृपया देवदेवेन त्वयात्मा संप्रदर्शितः। तस्य पापस्य मे शान्तिं कारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ १०७ ॥ श्रीकृष्ण उवाच— तच्छ्रुत्वाऽनन्तदेवेश उवाच द्विजसत्तमम्। भक्त्या सन्तोषितो देवः किं न दद्याद्युधिष्ठिर ॥ १०८ ॥ अनन्त उवाच –स्वगृहंगच्छ कौण्डिन्य मा विलम्बं कुरु द्विज। चरानन्तव्रतं भक्त्या नववर्षाणिपञ्च च ॥ १०९ ॥ सर्वपाप विशुद्धात्मा प्राप्स्यते सिद्धिमुत्तमम्। पुत्र पौत्रान् समुत्पाद्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥ ११० ॥ अन्ते मत्स्मरणं प्राप्य मामुपैस्यप्यसंशयम्। अन्यच्च ते वरं ददमि सर्वलोकोपकारकम् ॥ १११ ॥ इदमाख्यानकवरं शीलानन्तव्रतादिकम्। करिष्यति नरो यस्तु कुर्वन् व्रतमिदं शुभम् ॥ ११२ ॥ सोऽचिरात् पापनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमाङ्गतिम्। गच्छ विप्रगृहं शीघ्रं मयाऽयेनागतोऽस्यसि ॥ ११३ ॥ कौडिन्यउवाच ॥ स्वामिन्पृच्छामि ते ब्रूहि किञ्चित् कौतूहलं मया। अरण्ये भ्रमता दृष्टस्तद् वदस्व जगद्गुरो ॥ ११४ ॥ कस्तूतवृक्षकस्तत्र का गौः को वृषभस्तथा। कमलोत्पलकल्हारैः शोभितं सुमनोहरम् ॥११५॥ मयादृष्ट महारण्ये किं तत् पुष्करिणीद्वयम्। कःखरः कुञ्जरः कोऽसौ कोऽसौ वृद्धो द्विजोत्तमः ॥ ११६ ॥ अनन्तउवाच - स चूतवृक्षो विप्रोऽसौ वेदविद्याविशारदः। विद्या न दत्ता शिष्येभ्यस्तेनासौ तरुतांगतः ॥११७॥ या गौर्वसुन्धरा दृष्टा पूर्वं सा बीज हारिणी। वृषो धर्मस्त्वयादृष्टः शाद्वले सत्वमास्थितः ॥ ११८ ॥ धर्माधर्मव्यवस्थानं तच्च पुष्करिणीद्वयम्। ब्राह्मण्यौ केचिदप्यास्तां भगिन्यौ तत्परस्परम् ॥ ११९ ॥ धर्माधर्मादि यत्किञ्चित्तन्निवेदयतो मिथः। विप्राय वेदविदुषे न दत्तं दुर्बलाय वै ॥ १२० ॥ भिक्षादत्ता न चार्थिभ्यस्तेन पापेन कर्मणा। वीचिकल्लोलमालाभिर्गच्छतस्तु परस्परम् ॥ १२१ ॥ खरः क्रोधस्तथादृष्टः कुञ्जरो मद उच्यते। धाम्नपोऽनन्तोऽहं गुहासंसार गह्वरम् ॥ १२२ ॥ इत्युक्त्वा देवदेवेशस्तत्रैवान्तरधीयत। स्वप्न प्रायं ततो दृष्ट्वा ततः स्वगृहमागतः ॥ १२३ ॥ कृत्वाऽनन्तव्रतं सम्यक् नववर्षाणि पञ्च च। भुक्त्वा सर्वमनन्तेन यथोक्तं पाण्डुनन्दन ॥ १२४ ॥ अन्ते मत्स्मरणं प्राप्य ततोऽनन्त पुरे द्विजः। तथा त्वमपि [illegible] कथा शृण्वन् व्रतं कुरु ॥१२५॥ प्राप्यसि चिन्तितं सर्वमनन्तस्यव चो यथा ॥ यद्वच्चतुर्दशेवर्षे फलं प्राप्तं द्विजन्मना ॥ १२६ ॥ वर्षैकेन तदाप्नोति कृत्वोपाख्यानकं व्रतम्। एतत्ते कथितं भूप व्रतानामुत्तमं व्रतं ॥ १२७ ॥ यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः। तेऽपि पापविनिर्मुक्ताः प्राप्स्यन्ति च हरेः पदम् ॥१२८॥ संसार गह्वर गुहासु सुखं विहर्तुर्वाञ्छन्ति ये कुरुकुलोद्भव शुद्ध सत्वः। संपूज्य च त्रिभुवनेशमनन्तदेवं बध्नन्ति दक्षिणकरे वरदोरकं ते ॥ १२९ ॥ इति श्रीमदनन्तव्रते पूजाकथा च समाप्ता। श्रीमदनन्तार्पणमस्तु ॥

अनन्तव्रत कथा—श्री सूतजी शौनक आदि ऋषियों को इस "अनन्तव्रत" कथा को सुनाया था। एक बार धर्मवीर महाराज युधिष्ठिर जरासन्ध को मारने के लिए राजसूय यज्ञ प्रारम्भ किये। उस यज्ञ में दुर्योधन शकुनी आदि भी पधारे थे। यज्ञशाला भूमि में घूमते समय दुर्योधन को स्थल के स्थान पर जल और जल के स्थान पर स्थल प्रतीत हो रहा था फल स्वरूप कई स्थानों पर गिर पड़ा, उसे गिरता हुआ देखकर सभी लोग हँसने लगे. हँसने वालों में द्रौपदी भी थी। दुर्योधन का अपना यह अपमान असह्य हो गया और वह अपने मामा शकुनी से घर लौट जाने के लिये आग्रह किया, अन्त में धूर्त शकुनी के समझाने पर यज्ञ में सम्मिलित हुआ। हस्तिनापुर लौटने पर पाण्डवों को जुआ खेलने का निमंत्रण देकर दुर्योधन ने शकुनी की सहायता से पाण्डवों की सभी राज्य सम्पत्ति जीत लिया और प्रतिज्ञा के अनुसार पाण्डव वन में चले गये। वहां पर श्रीकृष्णजी भेंट करने के लिये गये। यथोचित सत्कार के पश्चात् धर्मराज ने अपने इस दुःख से छुटकारा पाने के निमित्त भगवान् श्रीकृष्ण से उपाय पूछा। श्रीकृष्ण भगवान् ने 'अनन्तव्रत' करने के लिए उन्हें उपदेश दिया। और यह भी समझा दिया कि 'अनन्त' मैं ही हूँ और यह मेरा ही व्रत है। युधिष्ठिर ने अनन्त व्रत के माहात्म्य और विधि को श्रीकृष्ण से पूछा और यह भी पूछा कि पूर्व में इस व्रत को किसने किया था।

श्री कृष्ण भगवान् ने कहा कि सतयुग में सुमन्तु नामक ब्राह्मण था। उनकी पत्नी भृगु ऋषि की कन्या थी; दीक्षा उसका नाम था। उससे शीला नाम की एक कन्या पैदा हुई। [illegible] समय के बाद ऋषिपत्नी की मृत्यु हो गई और मृत्यु के बाद दुःशीला नामक दूसरी कन्या से ऋषि ने अपना विवाह कर लिया। शीला अपने पिता के घर में ही [illegible] करती थी। कन्या की अवस्था जब विवाह योग्य हुई तो सुमन्तु ने कौण्डिन्य नामक ऋषि से शीला का विवाह कर दिया। विवाह के पश्चात् सुमन्तु ने अपनी कर्कशा स्त्री से दामाद को [illegible] देने के लिये कहा। सुमन्तु की कर्कशा स्त्री ने दामाद से [illegible] कौण्डिन्य मुनि शीला को [illegible] हुए और रास्ते में मध्याह्नकाल होने पर [illegible] उसी समय शीला ने एक स्त्रियों के [illegible] चतुर्दशी के दिन [illegible] अनन्त भगवान् का पूजन करते हुए देखा और उनसे उस व्रत के विषय में पूछा। उन स्त्रियों ने शीला को अनन्त व्रत के विधान को समझाया कि [illegible] मण्डल में [illegible] चौदह गांठ वाला [illegible] इस प्रकार के उत्तम [illegible] के साथ घर [illegible] एक दिन कौण्डिन्य मुनि ने [illegible] उनके विषय में पूछा। शीला ने बतलाया कि [illegible] कौण्डिन्य ने उस डोरे को तोड़कर अग्नि में फेंक दिया। उसी समय [illegible] अनन्त भगवान् के कोप से कौण्डिन्य मुनि का धन धान्य [illegible] विपत्ति का कारण पूछा। शीला [illegible] बतलाया। [illegible] जंगलों में घूमने लगा। कुछ दूर [illegible] अनन्त के विषय में पूछा जाने पर उस [illegible] उत्तर दिया कि नहीं। इस प्रकार कौण्डिन्य [illegible] नकारात्मक उत्तर दिया। इसके बाद [illegible] अनन्त भगवान् के विषय में पूछा [illegible] एक गधा, तथा एक हाथी से पूछा, उन [illegible] पेड़ में फांसी लगाकर [illegible] अनन्त भगवान् प्रगट हुये और कौण्डिन्य को [illegible] देखा जिसमें विष्णु भगवान [illegible] कौण्डिन्य ने उनकी बहुत प्रशंसा की। कौण्डिन्य [illegible] आदेश दिया। कौण्डिन्य [illegible] डोरे को तोड़ा था तथा उसे जो जो कष्ट हुआ था [illegible] अनन्त व्रत करने को कहा। इसके [illegible] उसी से चले जाओ। कौण्डिन्य [illegible] कृपया उसे समझा दीजिये। भगवान् [illegible] पूर्व जन्म का ब्राह्मण था। विद्या दान न करने से उसकी [illegible] पुष्करिणी [illegible] एक दूसरे के जल का आदान [illegible] अभिमान था। ब्राह्मण (अनन्त भगवान्) मैं ही था। [illegible] अनन्त भगवान् उसी स्थल पर अन्तर्हित हो गये। यह सब [illegible] अनन्त व्रत करके सभी सुखों का भोग कर स्वर्ग [illegible] युधिष्ठिर से बोले कि हे राजर्षि! तुम एक ही अनन्त व्रत को [illegible] इस शीला के आख्यान को जो कहेंगे और सुनेंगे [illegible] यही कथा का सार है।

॥ संवत् २०२५ वर्षीय-दृश्यग्रहाः ॥

भारतीय स्टैन्डर्ड समयानुसारेण नित्य प्रातः ५।३० वादनकालिकाः स्पष्टग्रहाः तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं (स्थूल) गतिः।

(ता० २९ मार्च सन् १९६८ से १८ मार्च सन् १९६९ तक)

मार्च सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
२९	शुक्र	० ८ २२	० ८ ५५	१ ० ४५	११ १५ २४	११ १६ ३४
३०	शनि	० ९ २१	० २१ ३	१ १ २९	११ १६ ५५	११ १७ ४८
३१	सूर्य	० १० २१	१ ३ १	१ २ १३	११ १८ २७	११ १९ १

मार्च सन् १९६९

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	शनि	११ १० १४	४ ३ ५७	८ १ ४०	१० १४ ७	० २१ २६
२	सूर्य	११ ११ १४	४ १५ १६	८ २ ६	१० १५ २१	० २२ [illegible]
३	चन्द्र	११ १२ १४	४ २७ ४९	८ २ ३२	१० १६ ३६	० २२ [illegible]
४	मङ्गल	११ १३ १४	५ १० ३६	८ २ ५८	१० १७ ५३	० २३ [illegible]
५	बुध	११ १४ १४	५ २३ ३८	८ ३ २४	१० १९ १२	० २३ [illegible]
६–१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बाणपञ्चकम्
रोगः ८,१७,२६
अनलाख्य सप्ताल्यः २,११,२०,२९
नृपः ४,१३,२२
चौरः ६,१५,२४
मृत्युः १,१०,१९,२८

एप्रिल सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	चन्द्र	० ११ २०	१ १४ ५४	१ २ ५७	११ २० १	११ २० १५
२	मङ्गल	० १२ १९	१ २६ ४३	१ ३ ४१	११ २१ ३७	११ २१ २९
३	बुध	० १३ १८	२ ८ ३२	१ ४ २५	११ २३ १४	११ २२ ४३
४	गुरु	० १४ १७	२ २० २४	१ ५ ९	११ २४ ५२	११ २३ ५७
५	शुक्र	० १५ १६	३ २ २४	१ ५ ५३	११ २६ ३२	११ २५ ११
६	शनि	० १६ १५	३ १४ ३७	१ ६ ३७	११ २८ १३	११ २६ २५
७	सूर्य	० १७ १४	३ २७ ६	१ ७ २१	११ २९ ५६	११ २७ ३९
८	चन्द्र	० १८ १३	४ ९ ५६	१ ८ ५	० १ ४०	११ २८ ५३
९	मङ्गल	० १९ १२	४ २३ ११	१ ८ ४८	० ३ २५	० ० ७
१०	बुध	० २० ११	५ ६ ५१	१ ९ ३२	० ५ १२	० १ २१
११	गुरु	० २१ १०	५ २० ५८	१ १० १६	० ७ १	० २ ३४
१२	शुक्र	० २२ ९	६ ५ २८	१ १० ५९	० ८ ५१	० ३ ४८
१३	शनि	० २३ ८	६ २० १७	१ ११ ४३	० १० ४३	० ५ २
१४	सूर्य	० २४ ६	७ ५ १८	१ १२ २६	० १२ ३६	० ६ १६
१५	चन्द्र	० २५ ५	७ २० २३	१ १३ १०	० १४ ३१	० ७ ३०
१६	मङ्गल	० २६ ४	८ ५ २१	१ १३ ५३	० १६ २७	० ८ ४४
१७	बुध	० २७ २	८ २० ६	१ १४ ३६	० १८ २५	० ९ ५८
१८	गुरु	० २८ १	९ ४ ३२	१ १५ २०	० २० २४	० ११ ११
१९	शुक्र	० २९ ०	९ १८ ३६	१ १६ ३	० २२ २५	० १२ २५
२०	शनि	० २९ ५८	१० २ १७	१ १६ ४६	० २४ २७	० १३ ३९
२१	सूर्य	१ ० ५७	१० १५ ३४	१ १७ २९	० २६ ३०	० १४ ५३
२२	चन्द्र	१ १ ५५	१० २८ ३२	१ १८ १२	० २८ ३५	० १६ ७
२३	मङ्गल	१ २ ५४	११ ११ ११	१ १८ ५५	१ ० ४०	० १७ २१
२४	बुध	१ ३ ५२	११ २३ ३६	१ १९ ३८	१ २ ४७	० १८ ३४
२५	गुरु	१ ४ ५१	० ५ ४८	१ २० २१	१ ४ ५५	० १९ ४८
२६	शुक्र	१ ५ ४९	० १७ ५२	१ २१ ४	१ ७ ३	० २१ २
२७	शनि	१ ६ ४८	० २९ ४९	१ २१ ४७	१ ९ १२	० २२ १६
२८	सूर्य	१ ७ ४६	१ ११ ४१	१ २२ ३०	१ ११ २१	० २३ ३०
२९	चन्द्र	१ ८ ४४	१ २३ ३०	१ २३ १२	१ १३ ३०	० २४ ४३
३०	मङ्गल	१ ९ ४३	२ ५ १९	१ २३ ५५	१ १५ ३८	० २५ ५७

मई सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१–२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	सूर्य	२ ४ ४८	१ २० ३३	२ १२ ८	२ २७ १५	१ २७ ५४
२७	चन्द्र	२ ५ ४६	२ २ २२	२ १२ ५०	२ २८ ३	१ २९ ८
२८	मङ्गल	२ ६ ४३	२ १४ १३	२ १३ ३१	२ २८ ४७	२ ० २१
२९	बुध	२ ७ ४१	२ २६ ९	२ १४ १२	२ २९ २७	२ १ ३५
३०	गुरु	२ ८ ३८	३ ८ १०	२ १४ ५४	३ ० २	२ २ ४९
३१	शुक्र	२ ९ ३६	३ २० १९	२ १५ ३५	३ ० ३३	२ ४ २

जून सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	शनि	२ १० ३३	४ २ ३८	२ १६ १६	३ ० ५९	२ ५ १६
२	सूर्य	२ ११ ३१	४ १५ ९	२ १६ ५७	३ १ २१	२ ६ ३०
३	चन्द्र	२ १२ २८	४ २७ ५५	२ १७ ३९	३ १ ३८	२ ७ ४५
४	मङ्गल	२ १३ २६	५ १० ५९	२ १८ २०	३ १ ५०	२ ८ ५७
५	बुध	२ १४ २३	५ २४ २४	२ १९ १	३ १ ५८	२ १० ११
६	गुरु	२ १५ २१	६ ८ १२	२ १९ ४२	३ २ १	२ ११ २४
७	शुक्र	२ १६ १८	६ २२ २५	२ २० २३	३ २ ०	२ १२ ३८
८	शनि	२ १७ १६	७ ७ २	२ २१ ३	३ १ ५४	२ १३ ५२
९	सूर्य	२ १८ १३	७ २१ ५९	२ २१ ४४	३ १ ४४	२ १५ ५
१०	चन्द्र	२ १९ १०	८ ७ ९	२ २२ २५	३ १ ३०	२ १६ १९
११	मङ्गल	२ २० ८	८ २२ २२	२ २३ ६	३ १ १२	२ १७ ३३
१२	बुध	२ २१ ५	९ ७ २८	२ २३ ४७	३ ० ५१	२ १८ ४६
१३	गुरु	२ २२ २	९ २२ १६	२ २४ २७	३ ० २६	२ २० ०
१४	शुक्र	२ २२ ५९	१० ६ ४१	२ २५ ८	२ २९ ५८	२ २१ १४
१५	शनि	२ २३ ५७	१० २० ३६	२ २५ ४९	२ २९ २८	२ २२ २७
१६	सूर्य	२ २४ ५४	११ ४ २	२ २६ २९	२ २८ ५६	२ २३ ४१
१७	चन्द्र	२ २५ ५१	११ १७ ०	२ २७ १०	२ २८ २३	२ २४ ५५
१८	मङ्गल	२ २६ ४९	११ २९ ३४	२ २७ ५०	२ २७ ४९	२ २६ ९
१९	बुध	२ २७ ४६	० ११ ४९	२ २८ ३१	२ २७ १५	२ २७ २२
२०	गुरु	२ २८ ४३	० २३ ५०	२ २९ ११	२ २६ ४१	२ २८ ३६
२१	शुक्र	२ २९ ४०	१ ५ ४३	२ २९ ५१	२ २६ ८	२ २९ ५०
२२	शनि	३ ० ३८	१ १७ ३१	३ ० ३२	२ २५ ३६	३ १ ३
२३	सूर्य	३ १ ३५	१ २९ १९	३ १ १२	२ २५ ७	३ २ १७
२४	चन्द्र	३ २ ३२	२ ११ १०	३ १ ५२	२ २४ ४०	३ ३ ३१
२५	मङ्गल	३ ३ २९	२ २३ ७	३ २ ३३	२ २४ १६	३ ४ ४५
२६	बुध	३ ४ २७	३ ५ ११	३ ३ १३	२ २३ ५६	३ ५ ५८
२७	गुरु	३ ५ २४	३ १७ २३	३ ३ ५३	२ २३ ३९	३ ७ १२
२८	शुक्र	३ ६ २१	३ २९ ४४	३ ४ ३३	२ २३ २७	३ ८ २६
२९	शनि	३ ७ १८	४ १२ १५	३ ५ १३	२ २३ १९	३ ९ ४०
३०	सूर्य	३ ८ १६	४ २४ ५७	३ ५ ५३	२ २३ १५	३ १० ५३

जुलाई १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	चन्द्र	३ ९ १३	५ ७ ५१	३ ६ ३३	२ २३ १६	३ १२ ७
२	मङ्गल	३ १० १०	५ २१ ०	३ ७ १३	२ २३ २२	३ १३ २१
३	बुध	३ ११ ७	६ ४ २४	३ ७ ५३	२ २३ ३३	३ १४ ३५
४	गुरु	३ १२ ४	६ १८ ७	३ ८ ३३	२ २३ ४९	३ १५ ४८
५	शुक्र	३ १३ २	७ २ ९	३ ९ १३	२ २४ १०	३ १७ २
६	शनि	३ १३ ५९	७ १६ ३१	३ ९ ५३	२ २४ ३६	३ १८ १६
७	सूर्य	३ १४ ५६	८ १ ११	३ १० ३३	२ २५ ७	३ १९ ३०
८	चन्द्र	३ १५ ५३	८ १६ २	३ ११ १२	२ २५ ४३	३ २० ४३
९	मङ्गल	३ १६ ५०	९ १ ०	३ ११ ५२	२ २६ २४	३ २१ ५७
१०	बुध	३ १७ ४७	९ १५ ५३	३ १२ ३२	२ २७ १०	३ २३ ११
११	गुरु	३ १८ ४५	१० ० ३४	३ १३ ११	२ २८ ०	३ २४ २५
१२	शुक्र	३ १९ ४२	१० १४ ५५	३ १३ ५१	२ २८ ५६	३ २५ ३९
१३	शनि	३ २० ३९	१० २८ ५०	३ १४ ३१	२ २९ ५६	३ २६ ५२
१४	सूर्य	३ २१ ३६	११ १२ १७	३ १५ १०	३ १ १	३ २८ ६
१५	चन्द्र	३ २२ ३३	११ २५ १८	[illegible]	३ २ १०	३ २९ २०
१६–३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अगस्त १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	गुरु	४ ८ ४८	६ २८ ४[illegible]	३ २६ ५७	४ १ २२	४ २० १६
२	शुक्र	४ ९ ४५	७ १२ ४[illegible]	३ २७ ३६	४ ३ ३७	४ २१ ३०
३	शनि	४ १० ४३	७ २६ ५[illegible]	३ २८ १५	४ ५ ४२	४ २२ ४३
४–३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सितम्बर सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	सूर्य	५ ८ ३७	८ २२ ५	४ १६ ५२	५ २८ ५६	५ २८ २६
२–१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्तूबर सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१–१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ संवत् २०२५ वर्षीय-हृदयग्रहाः ॥

भारतीय स्टेन्डर्ड समयानुसारेण नित्य प्रातः ५।३० वादनकालिकाः स्पष्टग्रहाः तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं (स्थूल) गतिः।

(ता० २९ मार्च सन् १९६८ से १८ मार्च सन् १९६९ तक)

मार्च सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
२९	शुक्र	० ८ २[illegible]	० ८ ५५	[illegible] ० ४५	११ १५ २४	११ १६ ३४
३०	शनि	० ९ २१	० २१ ३	१ १ २९	११ १६ ५५	११ १७ ४८
३१	सूर्य	० १० २१	१ ३ १	१ २ १३	११ १८ २७	११ १९ १

एप्रिल सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	चन्द्र	० ११ २०	१ १४ ५४	१ २ ५७	११ २० १	११ २० १५
२	मङ्गल	० १२ १९	१ २६ ४३	१ ३ ४१	११ २१ ३७	११ २१ २९
३	बुध	० १३ १८	२ ८ ३२	१ ४ २५	११ २३ १४	११ २२ ४३
४	गुरु	० १४ १७	२ २० २४	१ ५ ९	११ २४ ५२	११ २३ ५७
५	शुक्र	० १५ १६	३ २ २४	१ ५ ५३	११ २६ ३२	११ २५ ११
६	शनि	० १६ १५	३ १४ ३७	१ ६ ३७	११ २८ १३	११ २६ २५
७	सूर्य	० १७ १४	३ २७ ६	१ ७ २१	११ २९ ५६	११ २७ ३९
८	चन्द्र	० १८ १३	४ ९ ५६	१ ८ ५	० १ ४०	११ २८ ५३
९	मङ्गल	० १९ १२	४ २३ ११	१ ८ ४८	० ३ २५	० ० ७
१०	बुध	० २० ११	५ ६ ५१	१ ९ ३२	० ५ १२	० १ २१
११	गुरु	० २१ १०	५ २० ५८	१ १० १६	० ७ १	० २ ३४
१२	शुक्र	० २२ ९	६ ५ २८	१ १० ५९	० ८ ५१	० ३ ४८
१३	शनि	० २३ ८	६ २० १७	१ ११ ४३	० १० ४३	० ५ २
१४	सूर्य	० २४ ६	७ ५ १८	१ १२ २६	० १२ ३६	० ६ १६
१५	चन्द्र	० २५ ५	७ २० २३	१ १३ १०	० १४ ३१	० ७ ३०
१६	मङ्गल	० २६ ४	८ ५ २१	१ १३ ५३	० १६ २७	० ८ ४४
१७	बुध	० २७ ३	८ २० ६	१ १४ ३६	० १८ २५	० ९ ५८
१८	गुरु	० २८ १	९ ४ ३३	१ १५ २०	० २० २४	० ११ ११
१९	शुक्र	० २९ ०	९ १८ ३६	१ १६ ३	० २२ २५	० १२ २५
२०	शनि	० २९ ५८	१० २ १७	१ १६ ४६	० २४ २७	० १३ ३९
२१	सूर्य	१ ० ५७	१० १५ ३४	१ १७ २९	० २६ ३०	० १४ ५३
२२	चन्द्र	१ १ ५५	१० २८ ३२	१ १८ १२	० २८ ३५	० १६ ७
२३	मङ्गल	१ २ ५४	११ ११ ११	१ १८ ५५	१ ० ४०	० १७ २१
२४	बुध	१ ३ ५२	११ २३ ३६	१ १९ ३८	१ २ ४७	० १८ ३४
२५	गुरु	१ ४ ५१	० ५ ४८	१ २० २१	१ ४ ५५	० १९ ४८
२६	शुक्र	१ ५ ४९	० १७ ५२	१ २१ ४	१ ७ ३	० २१ २
२७	शनि	१ ६ ४८	० २९ ४९	१ २१ ४७	१ ९ १२	० २२ १६
२८	सूर्य	१ ७ ४६	१ ११ ४१	१ २२ ३०	१ ११ २१	० २३ ३०
२९	चन्द्र	१ ८ ४४	१ २३ ३०	१ २३ १२	१ १३ ३०	० २४ ४३
३०	मङ्गल	१ ९ ४३	२ ५ १९	१ २३ ५५	१ १५ ३८	० २५ ५७

मार्च सन् १९६९

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	शनि	११ १० १४	४ [illegible] ५७	८ १ ४०	१० १४ ७	० २१ २६
२	सूर्य	११ ११ १४	४ १५ १६	८ २ ६	१० १५ २१	० २२ [illegible]
३	चन्द्र	११ १२ १४	४ २७ ४९	८ २ ३२	१० १६ ३६	० २२ [illegible]
४	मङ्गल	११ १३ १४	५ १० ३६	८ २ ५८	१० १७ ५३	० २३ [illegible]
५	बुध	११ १४ १४	५ २३ ३८	८ ३ २४	१० १९ १२	० २३ [illegible]
६	गुरु	११ १५ १४	६ ६ ५४	८ ३ ४९	१० २० ३२	० २३ [illegible]
७	शुक्र	११ १६ १४	६ २० २२	८ ४ १४	१० २१ १४	० २४ [illegible]
८	शनि	११ १७ १४	७ ४ २	८ ४ ३९	१० २३ १७	० २४ [illegible]
९	सूर्य	११ १८ १४	७ १७ ५३	८ ५ ३	१० २४ ४१	० २५ [illegible]
१०	चन्द्र	११ १९ १५	८ १ ५२	८ ५ २८	१० २६ ७	० २५ [illegible]
११	मङ्गल	११ २० १४	८ १५ ५९	८ ५ ५२	१० २७ ३४	० २५ [illegible]
१२	बुध	११ २१ १४	९ ० ११	८ ६ १५	१० २९ ३	० २६ [illegible]
१३	गुरु	११ २२ १४	९ १४ २७	८ ६ ३९	११ ० ३३	० २६ [illegible]
१४	शुक्र	११ २३ १४	९ २८ ४३	८ ७ २	११ २ ४	० २६ [illegible]
१५	शनि	११ २४ १४	१० १२ ५६	८ ७ २४	११ ३ ३६	० २६ [illegible]
१६	सूर्य	११ २५ १४	१० २७ २	८ ७ ४७	११ ५ [illegible]	० २६ [illegible]
१७	चन्द्र	११ २६ १३	११ १० ५८	८ ८ ९	११ ६ ४[illegible]	० २६ [illegible]
१८	मङ्गल	११ २७ १३	११ २४ ४०	८ ८ ३१	११ ८ २१	० २६ [illegible]

बाण-पञ्चकम्
रोगः ८,१७,२६
अनलाख्य शल्यः २,११,२०,२९
नृपः ४,१३,२२
चौरः ६,१५,२४
मृत्युः १,१०,१९,२८

मई सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	बुध	१ १० ४१	२ १७ १०	१ २४ ३८	१ १७ ४६	० २७ ११
२	गुरु	१ ११ ३९	२ २९ ५	१ २५ २०	१ १९ ५४	० २८ २५
३	शुक्र	१ १२ ३७	३ ११ ७	१ २६ ३	१ २१ ५९	० २९ ३९
४	शनि	१ १३ ३५	३ २३ २०	१ २६ ४५	१ २४ ४	१ ० ५२
५	सूर्य	१ १४ ३४	४ ५ ४७	१ २७ २८	१ २६ ६	१ २ ६
६	चन्द्र	१ १५ ३२	४ १८ ३३	१ २८ १०	१ २८ ७	१ ३ २०
७	मङ्गल	१ १६ ३०	५ १ ४०	१ २८ ५३	२ ० ५	१ ४ ३४
८	बुध	१ १७ २८	५ १५ १३	१ २९ ३५	२ २ १	१ ५ ४७
९	गुरु	१ १८ २६	५ २९ १२	२ ० १७	२ ३ ५४	१ ७ १
१०	शुक्र	१ १९ २४	६ १३ ३७	२ ० ५९	२ ५ ४४	१ ८ १५
११	शनि	१ २० २२	६ २८ २९	२ १ ४२	२ ७ ३१	१ ९ २९
१२	सूर्य	१ २१ २०	७ १३ ३२	२ २ २४	२ ९ १५	१ १० ४२
१३	चन्द्र	१ २२ १७	७ २८ ४८	२ ३ ६	२ १० ५५	१ ११ ५६
१४	मङ्गल	१ २३ १५	८ १४ १	२ ३ ४८	२ १२ ३२	१ १३ १०
१५	बुध	१ २४ १३	८ २९ ३	२ ४ ३०	२ १४ ६	१ १४ २३
१६	गुरु	१ २५ ११	९ १३ ४६	२ ५ १२	२ १५ ३७	१ १५ ३७
१७	शुक्र	१ २६ ९	९ २८ २	२ ५ ५३	२ १७ ३	१ १६ ५१
१८	शनि	१ २७ ७	१० ११ ५०	२ ६ ३५	२ १८ २६	१ १८ ४
१९	सूर्य	१ २८ ४	१० २५ १०	२ ७ १७	२ १९ ४६	१ १९ १८
२०	चन्द्र	१ २९ २	११ ८ ५	२ ७ ५९	२ २१ १	१ २० ३२
२१	मङ्गल	२ ० ०	११ २० ३९	२ ८ ४०	२ २२ १३	१ २१ ४६
२२	बुध	२ ० ५७	० २ ५५	२ ९ २२	२ २३ २२	१ २२ ५९
२३	गुरु	२ १ ५५	० १४ ५९	२ १० ४	२ २४ २६	१ २४ १३
२४	शुक्र	२ २ ५३	० २६ ५४	२ १० ४५	२ २५ २६	१ २५ २७
२५	शनि	२ ३ ५१	१ ८ ४४	२ ११ २७	२ २६ २३	१ २६ ४०
२६	सूर्य	२ ४ ४८	१ २० ३३	२ १२ ८	२ २७ १५	१ २७ ५४
२७	चन्द्र	२ ५ ४६	२ २ २२	२ १२ ५०	२ २८ ३	१ २९ ८
२८	मङ्गल	२ ६ ४३	२ १४ १३	२ १३ ३१	२ २८ ४७	२ ० २१
२९	बुध	२ ७ ४१	२ २६ ९	२ १४ १२	२ २९ २७	२ १ ३५
३०	गुरु	२ ८ ३८	३ ८ १०	२ १४ ५४	३ ० २	२ २ ४९
३१	शुक्र	२ ९ ३६	३ २० १९	२ १५ ३५	३ ० ३३	२ ४ २

जून सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	शनि	२ १० ३३	४ २ ३८	२ १६ १६	३ ० ५९	२ ५ १६
२	सूर्य	२ ११ ३१	४ १५ ९	२ १६ ५७	३ १ २१	२ ६ ३०
३	चन्द्र	२ १२ २८	४ २७ ५५	२ १७ ३९	३ १ ३८	२ ७ ४५
४	मङ्गल	२ १३ २६	५ १० ५९	२ १८ २०	३ १ ५०	२ ८ ५७
५	बुध	२ १४ २३	५ २४ २४	२ १९ १	३ १ ५८	२ १० ११
६	गुरु	२ १५ २१	६ ८ १२	२ १९ ४२	३ २ १	२ ११ २४
७	शुक्र	२ १६ १८	६ २२ २५	२ २० २३	३ २ ०	२ १२ ३८
८	शनि	२ १७ १६	७ ७ २	२ २१ ३	३ १ ५४	२ १३ ५२
९	सूर्य	२ १८ १३	७ २१ ५९	२ २१ ४४	३ १ ४४	२ १५ ५
१०	चन्द्र	२ १९ १०	८ ७ ९	२ २२ २५	३ १ ३०	२ १६ १९
११	मङ्गल	२ २० ८	८ २२ २२	२ २३ ६	३ १ १२	२ १७ ३३
१२	बुध	२ २१ ५	९ ७ २८	२ २३ ४७	३ ० ५१	२ १८ ४६
१३	गुरु	२ २२ २	९ २२ १६	२ २४ २७	३ ० २६	२ २० ०
१४	शुक्र	२ २२ ५९	१० ६ ४१	२ २५ ८	२ २९ ५८	२ २१ १४
१५	शनि	२ २३ ५७	१० २० ३६	२ २५ ४९	२ २९ २८	२ २२ २७
१६	सूर्य	२ २४ ५४	११ ४ २	२ २६ २९	२ २८ ५६	२ २३ ४१
१७	चन्द्र	२ २५ ५१	११ १७ ०	२ २७ १०	२ २८ २३	२ २४ ५५
१८	मङ्गल	२ २६ ४९	११ २९ ३४	२ २७ ५०	२ २७ ४९	२ २६ [illegible]
१९	बुध	२ २७ ४६	० ११ ४९	२ २८ ३१	२ २७ १५	२ २७ २२
२०	गुरु	२ २८ ४३	० २३ ५०	२ २९ ११	२ २६ ४१	२ २८ ३६
२१	शुक्र	२ २९ ४०	१ ५ ४३	२ २९ ५१	२ २६ ८	२ २९ ५०
२२	शनि	३ ० ३८	१ १७ ३१	३ ० ३२	२ २५ ३६	३ १ ३
२३	सूर्य	३ १ ३५	१ २९ १९	३ १ १२	२ २५ ७	३ २ १७
२४	चन्द्र	३ २ ३२	२ ११ १०	३ १ ५२	२ २४ ४०	३ ३ ३१
२५	मङ्गल	३ ३ २९	२ २३ ७	३ २ ३३	२ २४ १६	३ ४ ४५
२६	बुध	३ ४ २७	३ ५ ११	३ ३ १३	२ २३ ५६	३ ५ ५८
२७	गुरु	३ ५ २४	३ १७ २३	३ ३ ५३	२ २३ ३९	३ ७ १२
२८	शुक्र	३ ६ २१	३ २९ ४८	३ ४ ३३	२ २३ २७	३ ८ २६
२९	शनि	३ ७ १८	४ १२ १५	३ ५ १३	२ २३ १९	३ ९ ४०
३०	सूर्य	३ ८ १६	४ २४ ५७	३ ५ ५३	२ २३ १५	३ १० ५३

जुलाई १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	चन्द्र	३ ९ १३	५ ७ ५१	३ ६ ३३	२ २३ १६	३ १२ ७
२	मङ्गल	३ १० १०	५ २१ ०	३ ७ १३	२ २३ २[illegible]	३ १३ २१
३	बुध	३ ११ ७	६ ४ २४	३ ७ ५३	२ २३ ३३	३ १४ ३५
४	गुरु	३ १२ ४	६ १८ ७	३ ८ ३३	२ २३ ४९	३ १५ ४८
५	शुक्र	३ १३ २	७ २ ९	३ ९ १३	२ २४ १०	३ १७ २
६	शनि	३ १३ ५९	७ १६ ३१	३ ९ ५३	२ २४ ३६	३ १८ १६
७	सूर्य	३ १४ ५६	८ १ ११	३ १० ३३	२ २५ ७	३ १९ ३०
८	चन्द्र	३ १५ ५३	८ १६ २	३ ११ १२	२ २५ ४३	३ २० ४३
९	मङ्गल	३ १६ ५०	९ १ ०	३ ११ ५२	२ २६ २४	३ २१ ५७
१०	बुध	३ १७ ४७	९ १५ ५३	३ १२ ३२	२ २७ १०	३ २३ ११
११	गुरु	३ १८ ४५	१० ० ३४	३ १३ ११	२ २८ ०	३ २४ २५
१२	शुक्र	३ १९ ४२	१० १४ ५५	३ १३ ५१	२ २८ ५६	३ २५ ३९
१३	शनि	३ २० ३९	१० २८ ५०	३ १४ ३१	२ २९ ५६	३ २६ ५२
१४	सूर्य	३ २१ ३६	११ १२ १७	३ १५ १०	३ १ १	३ २८ ६
१५	चन्द्र	३ २२ ३३	११ २५ १८	३ १५ ५०	३ २ १०	३ २९ २०
१६	मङ्गल	३ २३ ३१	० ७ ५[illegible]	३ १६ [illegible]	३ ३ २४	४ ० ३४
१७	बुध	३ २४ २८	० २० १२	३ १७ ८	३ ४ ४३	४ १ ४८
१८	गुरु	३ २५ २५	[illegible]	[illegible]	३ ६ ६	४ ३ १
१९	शुक्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	शनि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	सूर्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	चन्द्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३	मङ्गल	४ ० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	बुध	४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	गुरु	४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	शुक्र	४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	शनि	४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	सूर्य	४ [illegible] ५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	चन्द्र	४ ५ ५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	मङ्गल	४ ६ ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३१	बुध	४ ७ ५०	६ १४ ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अगस्त १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	गुरु	४ ८ ४८	६ २८ ४[illegible]	३ २६ ५७	४ १ ३२	४ २० १६
२	शुक्र	४ ९ ४५	७ १२ ४[illegible]	३ २७ ३६	४ ३ ३७	४ २१ ३०
३	शनि	४ १० ४३	७ २६ ५[illegible]	३ २८ १५	४ ५ ४२	४ २२ ४३
४	सूर्य	४ ११ ४०	८ ११ १७	३ २८ ५३	४ ७ ४७	४ २३ ५७
५	चन्द्र	४ १२ ३८	८ २५ ४७	३ २९ ३२	४ ९ ५२	४ २५ ११
६	मङ्गल	४ १३ ३५	९ १० २०	४ ० ११	४ ११ ५७	४ २६ २५
७	बुध	४ १४ ३३	९ २४ ४९	४ ० ५०	४ १४ १	४ २७ ३९
८	गुरु	४ १५ ३०	१० ९ ९	४ १ २९	४ १६ ४	४ २८ ५३
९	शुक्र	४ १६ २८	१० २३ १३	४ २ ७	४ १८ ७	५ ० ७
१०	शनि	४ १७ २५	११ ६ ५७	४ २ ४६	४ २० ८	५ १ २१
११	सूर्य	४ १८ २३	११ २० १८	४ ३ २५	४ २२ ८	५ २ ३४
१२	चन्द्र	४ १९ २०	० ३ १६	४ ४ ४	४ २४ ७	५ ३ ४८
१३	मङ्गल	४ २० १८	० १५ ५२	४ ४ ४२	४ २६ ५	५ ५ २
१४	बुध	४ २१ १५	० २८ १०	४ ५ २१	४ २८ १	५ ६ १६
१५	गुरु	४ २२ १३	१ १० १५	४ ५ ५९	४ २९ ५६	५ ७ ३०
१६	शुक्र	४ २३ ११	१ २२ १०	४ ६ ३८	५ १ ४९	५ ८ ४४
१७	शनि	४ २४ ८	२ ४ १	४ ७ १७	५ ३ ४१	५ ९ ५८
१८	सूर्य	४ २५ ६	२ १५ ५३	४ ७ ५५	५ ५ ३२	५ ११ १२
१९	चन्द्र	४ २६ ४	२ २७ ५२	४ ८ ३४	५ ७ २१	५ १२ २५
२०	मङ्गल	४ २७ [illegible]	[illegible]	४ ९ १२	५ ९ ९	५ १३ ३९
२१	बुध	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५ १० ५५	५ १४ ५३
२२	गुरु	[illegible]	[illegible]	४ १० २९	५ १२ ४०	५ १६ ७
२३	शुक्र	४ २९ ५५	४ १७ ४०	४ ११ ७	५ १४ २४	५ १७ २१
२४	शनि	५ ० ५३	५ [illegible]	४ ११ ४६	५ १६ ६	५ १८ ३५
२५	सूर्य	५ १ ५१	५ १४ १६	४ १२ २४	५ १७ ४७	५ १९ ४९
२६	चन्द्र	५ २ ४९	५ २७ ५१	४ १३ २	५ १९ २६	५ २१ ३
२७	मङ्गल	५ ३ ४७	६ ११ ३८	४ १३ ४१	५ २१ ४	५ २२ १६
२८	बुध	५ ४ ४[illegible]	६ २५ ३[illegible]	४ १४ १९	५ २२ ४१	५ २३ ३०
२९	गुरु	५ ५ ४[illegible]	[illegible]	४ १४ ५७	५ २४ १७	५ २४ ४४
३०	शुक्र	५ ६ ४१	[illegible]	४ १५ ३६	५ २५ ५१	५ २५ ५८
३१	शनि	५ ७ [illegible]	८ ७ ५[illegible]	४ १६ १४	५ २७ २४	५ २७ १२

सितम्बर सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	सूर्य	५ ८ ३७	८ २२ ५	४ १६ ५२	५ २८ ५६	५ २८ २६
२	चन्द्र	५ ९ ३५	९ ६ १७	४ १७ ३०	६ ० २६	५ २९ ३९
३	मङ्गल	५ १० ३३	९ २० २६	४ १८ ८	६ १ ५५	६ ० ५३
४	बुध	५ ११ ३१	१० ४ २८	४ १८ ४६	६ ३ २३	६ २ ७
५	गुरु	५ १२ २९	१० १८ २१	४ १९ २४	६ ४ ५०	६ ३ २१
६	शुक्र	५ १३ २७	११ २ ०	४ २० २	६ ६ १५	६ ४ ३५
७	शनि	५ १४ २६	११ १५ २३	४ २० ४०	६ ७ ३८	६ ५ ४८
८	सूर्य	५ १५ २४	११ २८ २९	४ २१ १८	६ ९ १	६ ७ २
९	चन्द्र	५ १६ २२	० ११ १६	४ २१ ५६	६ १० २२	६ ८ १६
१०	मङ्गल	५ १७ २०	० २३ ४७	४ २२ ३४	६ ११ ४१	६ ९ ३०
११	बुध	५ १८ १९	१ ६ [illegible]	४ २३ १२	६ १२ ५९	६ १० ४३
१२	गुरु	५ १९ १७	१ १८ ७	४ २३ ५०	६ १४ १६	६ ११ ५७

अक्टूबर सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	मङ्गल	६ ७ ५२	१० १ २	५ ५ ४७	७ ० ५४	७ ५ १६
२	बुध	६ ८ ५१	१० १४ ४९	५ ६ २४	७ १ ८	७ ६ ३०
३	गुरु	६ ९ ५१	१० २८ ८	५ ७ २	७ १ १४	७ ७ ४५
४	शुक्र	६ १० ५०	११ ११ २१	५ ७ ३९	७ १ १४	७ ८ ५७
५	शनि	६ ११ ४९	११ २४ ०	५ ८ १६	७ १ ७	७ १० १०
६	सूर्य	६ १२ ४८	० ७ ६	५ ८ ५४	७ ० ५२	७ ११ २४
७	चन्द्र	६ १३ ४७	० १९ ३९	५ ९ ३१	७ ० २९	७ १२ ३७
८	मङ्गल	६ १४ ४६	१ १ ५९	५ १० ९	६ २९ ५८	७ १३ ५१
९	बुध	६ १५ ४५	१ १४ ९	५ १० ४६	६ २९ १९	७ १५ ४
१०	गुरु	६ १६ ४५	१ २६ ९	५ ११ २३	६ २८ ३३	७ १६ १८
११	शुक्र	६ १७ ४४	२ ८ ४	५ १२ ०	६ २७ ३८	७ १७ ३१
१२	शनि	६ १८ ४[illegible]	२ १९ ५५	५ १२ ३८	६ २६ ३८	७ १८ ४[illegible]

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१३	शुक्र	५ २० १५	२ ० ३	४ २४ २८	६ १५ ३१	६ १३ ११
१४	शनि	५ २१ १४	२ ११ ५४	४ २५ ६	६ १६ ४४	६ १४ २५
१५	सूर्य	५ २२ १२	२ २३ ४७	४ २५ ४४	६ १७ ५५	६ १५ ३८
१६	चन्द्र	५ २३ ११	३ ५ ४६	४ २६ २२	६ १९ ५	६ १६ ५२
१७	मङ्गल	५ २४ ९	३ १७ ५५	४ २७ ०	६ २० १३	६ १८ ६
१८	बुध	५ २५ ८	४ ० १८	४ २७ ३७	६ २१ १८	६ १९ १९
१९	गुरु	५ २६ ७	४ १२ ५९	४ २८ १५	६ २२ २१	६ २० ३३
२९	शुक्र	५ २७ ५	४ २५ ५९	४ २८ ५३	६ २३ २२	६ २१ ४७
२१	शनि	५ २८ ४	५ ९ २९	४ २९ ३१	६ २४ २१	६ २३ ०
२२	सूर्य	५ २९ ३	५ २३ २	५ ० ८	६ २५ १७	६ २४ १४
२३	चन्द्र	६ ० १	६ ७ १	५ ० ४६	६ २६ १०	६ २५ २८
२४	मङ्गल	६ १ ०	६ २१ १४	५ १ २४	६ २६ ५९	६ २६ ४१
२५	बुध	६ १ ५९	७ ५ २७	५ २ १	६ २७ ४६	६ २७ ५५
२६	गुरु	६ २ ५८	७ २० ३	५ २ ३९	६ २८ २८	६ २९ ९
२७	शुक्र	६ ३ ५७	८ ४ ३०	५ ३ १७	६ २९ ७	७ ० २२
२८	शनि	६ ४ ५६	८ १८ ५२	५ ३ ५४	६ २९ ४१	७ १ ३६
२९	सूर्य	६ ५ ५४	९ ३ ६	५ ४ ३२	७ ० ११	७ २ ४९
३०	चन्द्र	६ ६ ५३	९ १७ १०	५ ५ ९	७ ० ३५	७ ४ ३

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१३	सूर्य	६ १९ ४३	३ १ ४७	५ १३ १५	६ २५ ३१	७ १९ ५८
१४	चन्द्र	६ २० ४२	३ १३ ४४	५ १३ ५२	६ २४ २१	७ २१ ११
१५	मङ्गल	६ २१ ४२	३ २५ ५०	५ १४ २९	६ २३ ८	७ २२ २४
१६	बुध	६ २२ ४१	४ ८ ११	५ १५ ६	६ २१ ५५	७ २३ ३८
१७	गुरु	६ २३ ४१	४ २० ५०	५ १५ ४४	६ २० ४४	७ २४ ५१
१८	शुक्र	६ २४ ४०	५ ३ ११	५ १६ २१	६ १९ ३६	७ २६ ४
१९	शनि	६ २५ ४०	५ १७ १६	५ १६ ५८	६ १८ ३५	७ २७ १७
२०	सूर्य	६ २६ ४०	६ १ ७	५ १७ ३५	६ १७ ४०	७ २८ ३१
२१	चन्द्र	६ २७ ३९	६ १५ २२	५ १८ १२	६ १६ ५५	७ २९ ४४
२२	मङ्गल	६ २८ ३९	६ २९ ५६	५ १८ ४९	६ १६ २१	८ ० ५७
२३	बुध	६ २९ ३९	७ १४ ४५	५ १९ २६	६ १५ ५७	८ २ १०
२४	गुरु	७ ० ३९	७ २९ ४०	५ २० ३	६ १५ ४५	८ ३ २३
२५	शुक्र	७ १ ३८	८ १४ ३२	५ २० ४०	६ १५ ४३	८ ४ ३७
२६	शनि	७ २ ३८	८ २९ १५	५ २१ १७	६ १५ ५३	८ ५ ५०
२७	सूर्य	७ ३ ३८	९ १३ ४२	५ २१ ५४	६ १६ १४	८ ७ ३
२८	चन्द्र	७ ४ ३८	९ २७ ५०	५ २२ ३०	६ १६ ४४	८ ८ १६
२९	मङ्गल	७ ५ ३८	१० ११ ३८	५ २३ ७	६ १७ २४	८ ९ २९
३०	बुध	७ ६ ३८	१० २५ ५	५ २३ ४४	६ १८ ११	८ १० ४२
३१	गुरु	७ ७ ३८	११ ८ १४	५ २४ २१	६ १९ ६	८ ११ ५५

नवम्बर सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	शुक्र	७ ८ ३८	११ २१ ६	५ २४ ५८	६ २० ८	८ १३ ८
२	शनि	७ ९ ३८	० ३ ४४	५ २५ ३४	६ २१ १५	८ १४ २१
३	सूर्य	७ १० ३८	० १६ ११	५ २६ ११	६ २२ २७	८ १५ ३४
४	चन्द्र	७ ११ ३८	० २८ २८	५ २६ ४८	६ २३ ४३	८ १६ ४७
५	मङ्गल	७ १२ ३८	१ १० ३६	५ २७ २४	६ २५ ३	८ १८ ०
६	बुध	७ १३ ३८	१ २२ ३८	५ २८ १	६ २६ २६	८ १९ १३
७	गुरु	७ १४ ३९	२ ४ ३४	५ २८ ३८	६ २७ ५२	८ २० २५
८	शुक्र	७ १५ ३९	२ १६ २७	५ २९ १४	६ २९ १९	८ २१ ३८
९	शनि	७ १६ ३९	२ २८ १८	५ २९ ५१	७ ० ४९	८ २२ ५१
१०	सूर्य	७ १७ ३९	३ १० १०	६ ० २७	७ २ १९	८ २४ ४
११	चन्द्र	७ १८ ४०	३ २२ ६	६ १ ४	७ ३ ५१	८ २५ १६
१२	मङ्गल	७ १९ ४०	४ ४ १०	६ १ ४०	७ ५ २४	८ २६ २९
१३	बुध	७ २० ४०	४ १६ २६	६ २ १६	७ ६ ५८	८ २७ ४२
१४	गुरु	७ २१ ४१	४ २८ ५९	६ २ ५३	७ ८ ३२	८ २८ ५४
१५	शुक्र	७ २२ ४१	५ ११ ५३	६ ३ २९	७ १० ७	९ ० ७
१६	शनि	७ २३ ४२	५ २५ १२	६ ४ ५	७ ११ ४२	९ १ १९
१७	सूर्य	७ २४ ४२	६ ८ ५९	६ ४ ४२	७ १३ १७	९ २ ३२
१८	चन्द्र	७ २५ ४३	६ २३ १५	६ ५ १८	७ १४ ५२	९ ३ ४४
१९	मङ्गल	७ २६ ४३	७ ७ ५७	६ ५ ५४	७ १६ २८	९ ४ ५६
२०	बुध	७ २७ ४४	७ २२ ५९	६ ६ ३०	७ १८ ३	९ ६ ९
२१	गुरु	७ २८ ४५	८ ८ १३	६ ७ ७	७ १९ ३९	९ ७ २१
२२	शुक्र	७ २९ ४५	८ २३ २८	६ ७ ४३	७ २१ १४	९ ८ ३३
२३	शनि	८ ० ४६	९ ८ ३४	६ ८ १९	७ २२ ४९	९ ९ ४६
२४	सूर्य	८ १ ४७	९ २३ २०	६ ८ ५५	७ २४ २५	९ १० ५८
२५	चन्द्र	८ २ ४७	१० ७ ४२	६ ९ ३१	७ २६ ०	९ १२ १०
२६	मङ्गल	८ ३ ४८	१० २१ ३६	६ १० ७	७ २७ ३५	९ १३ २२
२७	बुध	८ ४ ४९	११ ५ ४	६ १० ४३	७ २९ ९	९ १४ ३४
२८	गुरु	८ ५ ५०	११ १८ ७	६ ११ १९	८ ० ४४	९ १५ ४६
२९	शुक्र	८ ६ ५०	० ० ४९	६ ११ ५४	८ २ १९	९ १६ ५८
३०	शनि	८ ७ ५१	० १३ १५	६ १२ ३०	८ ३ ५३	९ १८ १०

दिसम्बर सन् १९६८

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	सूर्य	८ ८ ५२	० २५ २८	६ १३ ६	८ ५ २८	९ १९ २१
२	चन्द्र	८ ९ ५३	१ ७ ३३	६ १३ ४२	८ ७ २	९ २० ३३
३	मङ्गल	८ १० ५४	१ १९ ३१	६ १४ १७	८ ८ ३७	९ २१ ४५
४	बुध	८ ११ ५४	२ १ २६	६ १४ ५३	८ १० ११	९ २२ ५६
५	गुरु	८ १२ ५५	२ १३ १९	६ १५ २९	८ ११ ४५	९ २४ ८
६	शुक्र	८ १३ ५६	२ २५ ११	६ १६ ४	८ १३ १९	९ २५ १९
७	शनि	८ १४ ५७	३ ७ ४	६ १६ ४०	८ १४ ५४	९ २६ ३०
८	सूर्य	८ १५ ५८	३ १८ ५९	६ १७ १५	८ १६ २८	९ २७ ४२
९	चन्द्र	८ १६ ५९	४ ० ५९	६ १७ ५१	८ १८ २	९ २८ ५३
१०	मङ्गल	८ १८ ०	४ १३ ५	६ १८ २६	८ १९ ३६	१० ० ४
११	बुध	८ १९ १	४ २५ २१	६ १९ १	८ २१ ११	१० १ १५
१२	गुरु	८ २० २	५ ७ ५०	६ १९ ३७	८ २२ ४५	१० २ २६
१३	शुक्र	८ २१ ३	५ २० ३८	६ २० १२	८ २४ २०	१० ३ ३७
१४	शनि	८ २२ ४	६ ३ ४८	६ २० ४७	८ २५ ५४	१० ४ ४७
१५	सूर्य	८ २३ ५	६ १७ २४	६ २१ २२	८ २७ २९	१० ५ ५८
१६	चन्द्र	८ २४ ६	७ १ २८	६ २१ ५७	८ २९ ४	१० ७ ८
१७	मङ्गल	८ २५ ७	७ १६ १	६ २२ ३२	९ ० ३९	१० ८ १९
१८	बुध	८ २६ ८	८ ० ५८	६ २३ ७	९ २ १४	१० ९ २९
१९	गुरु	८ २७ ९	८ १६ १२	६ २३ ४२	९ ३ ४९	१० १० ३९
२०	शुक्र	८ २८ १०	९ १ ३४	६ २४ १७	९ ५ २५	१० ११ ४९
२१	शनि	८ २९ १२	९ १६ ५१	६ २४ ५२	९ ७ ०	१० १२ ५९
२२	सूर्य	९ ० १३	१० १ ५१	६ २५ २७	९ ८ ३६	१० १४ ९
२३	चन्द्र	९ १ १४	१० १६ २७	६ २६ १	९ १० ११	१० १५ १९
२४	मङ्गल	९ २ १५	११ ० ३४	६ २६ ३६	९ ११ ४७	१० १६ २८
२५	बुध	९ ३ १६	११ १४ १०	६ २७ ११	९ १३ २३	१० १७ ३८
२६	गुरु	९ ४ १७	११ २७ १८	६ २७ ४५	९ १४ ५९	१० १८ ४७
२७	शुक्र	९ ५ १८	० १० १	६ २८ २०	९ १६ ३५	१० १९ ५६
२८	शनि	९ ६ २०	० २२ २४	६ २८ ५४	९ १८ ११	१० २१ ५
२९	सूर्य	९ ७ २१	१ ४ ३३	६ २९ २८	९ १९ ४७	१० २२ १४
३०	चन्द्र	९ ८ २२	१ १६ ३२	७ ० ३	९ २१ २२	१० २३ २३
३१	मङ्गल	९ ९ २३	१ २८ २५	७ ० ३७	९ २२ ५८	१० २४ ३१

जनवरी सन् १९६९

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	बुध	९ १० २४	२ १० १६	७ १ ११	९ २४ ३२	१० २५ ४०
२	गुरु	९ ११ २५	२ २२ ८	७ १ ४५	९ २६ ७	१० २६ ४८
३	शुक्र	९ १२ २६	३ ४ २	७ २ १९	९ २७ ४०	१० २७ ५६
४	शनि	९ १३ २८	३ १५ ५९	७ २ ५३	९ २९ १३	१० २९ ३
५	सूर्य	९ १४ २९	३ २८ २	७ ३ २७	१० ० ४८	११ ० ११
६	चन्द्र	९ १५ ३०	४ १० १०	७ ४ १	१० २ १४	११ १ १८
७	मङ्गल	९ १६ ३१	४ २२ २५	७ ४ ३४	१० ३ ४३	११ २ २५
८	बुध	९ १७ ३२	५ ४ ४९	७ ५ ८	१० ५ ९	११ ३ ३२
९	गुरु	९ १८ ३३	५ १७ २५	७ ५ ४१	१० ६ ३३	११ ४ ३९
१०	शुक्र	९ १९ ३४	६ ० १५	७ ६ १५	१० ७ ५३	११ ५ ४५
११	शनि	९ २० ३६	६ १३ २२	७ ६ ४८	१० ९ १०	११ ६ ५२
१२	सूर्य	९ २१ ३७	६ २६ ५०	७ ७ २२	१० १० २३	११ ७ ५७
१३	चन्द्र	९ २२ ३८	७ १० ४२	७ ७ ५५	१० ११ ३१	११ ९ ३
१४	मङ्गल	९ २३ ३९	७ २४ ५८	७ ८ २८	१० १२ ३३	११ १० ९
१५	बुध	९ २४ ४०	८ ९ ३६	७ ९ १	१० १३ २९	११ ११ १४
१६	गुरु	९ २५ ४१	८ २४ ३३	७ ९ ३४	१० १४ १८	११ १२ १९
१७	शुक्र	९ २६ ४२	९ ९ ४१	७ १० ७	१० १४ ५८	११ १३ २३
१८	शनि	९ २७ ४३	९ २४ ४८	७ १० ४०	१० १५ २९	११ १४ २८
१९	सूर्य	९ २८ ४५	१० ९ ४६	७ ११ १२	१० १५ ५१	११ १५ ३२
२०	चन्द्र	९ २९ ४६	१० २४ २४	७ ११ ४५	१० १६ १	११ १६ ३५
२१	मङ्गल	१० ० ४७	११ ८ ३७	७ १२ १७	१० १६ १	११ १७ ३९
२२	बुध	१० १ ४८	११ २२ २१	७ १२ ५०	१० १५ ४९	११ १८ ४२
२३	गुरु	१० २ ४९	० ५ ३७	७ १३ २२	१० १५ २५	११ १९ ४४
२४	शुक्र	१० ३ ५०	० १८ २७	७ १३ ५४	१० १४ ५०	११ २० ४७
२५	शनि	१० ४ ५१	१ ० ५५	७ १४ २६	१० १४ ५	११ २१ ४९
२६	सूर्य	१० ५ ५२	१ १३ ६	७ १४ ५८	१० १३ १०	११ २२ ५०
२७	चन्द्र	१० ६ ५३	१ २५ ६	७ १५ ३०	१० १२ ७	११ २३ ५१
२८	मङ्गल	१० ७ ५४	२ ६ ५८	७ १६ २	१० १० ५८	११ २४ ५२
२९	बुध	१० ८ ५५	२ १८ ४९	७ १६ ३३	१० ९ ४४	११ २५ ५२
३०	गुरु	१० ९ ५६	३ [illegible] ४१	७ १७ [illegible]	१० ८ २९	११ २६ ५२
३१	शुक्र	१० १० [illegible]	३ [illegible]	७ [illegible]	१० [illegible]	११ [illegible] ५१

फरवरी सन् १९६९

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट रा. अं. क.	चन्द्र स्पष्ट रा. अं. क.	भौम स्पष्ट रा. अं. क.	बुध स्पष्ट रा. अं. क.	शुक्र स्पष्ट रा. अं. क.
१	शनि	१० ११ ५७	३ २४ ४१	७ १८ ७	१० ६ ३	११ २८ ५०
२	सूर्य	१० १२ ५८	४ ६ ५३	७ १८ ३९	१० ४ ५५	११ २९ ४९
३	चन्द्र	१० १३ ५९	४ १९ १४	७ १९ १०	१० ३ ५३	० ० ४६
४	मङ्गल	१० १५ ०	५ १ ४४	७ १९ ४०	१० २ ५८	० १ ४४
५	बुध	१० १६ १	५ १४ २५	७ २० ११	१० २ १०	० २ ४०
६	गुरु	१० १७ २	५ २७ १७	७ २० ४२	१० १ ३१	० ३ ३६
७	शुक्र	१० १८ २	६ १० २१	७ २१ १२	१० १ ०	० ४ ३२
८	शनि	१० १९ ३	६ २३ ३९	७ २१ ४३	१० ० ३७	० ५ २७
९	सूर्य	१० २० ४	७ ७ ११	७ २२ १३	१० ० २२	० ६ २१
१०	चन्द्र	१० २१ ५	७ २१ ०	७ २२ ४३	१० ० १५	० ७ १५
११	मङ्गल	१० २२ ५	८ ५ ५	७ २३ १३	१० ० १६	० ८ ८
१२	बुध	१० २३ ६	८ १९ २५	७ २३ ४२	१० ० २४	० ९ ०
१३	गुरु	१० २४ ७	९ ३ ५८	७ २४ १२	१० ० ३८	० ९ ५१
१४	शुक्र	१० २५ ७	९ १८ ३३	७ २४ ४१	१० ० ५८	० १० ४२
१५	शनि	१० २६ ८	१० ३ २१	७ २५ ११	१० १ २४	० ११ ३२
१६	सूर्य	१० २७ ९	१० १७ ५७	७ २५ ४०	१० १ ५६	० १२ २१
१७	चन्द्र	१० २८ ९	११ २ २१	७ २६ ९	१० २ ३२	० १३ ९
१८	मङ्गल	१० २९ १०	११ १६ २५	७ २६ ३७	१० ३ १२	० १३ ५६
१९	बुध	११ ० १०	० ० ६	७ २७ ६	१० ३ ५६	० १४ ४३
२०	गुरु	११ १ ११	० १३ २३	७ २७ ३४	१० ४ ४५	० १५ २८
२१	शुक्र	११ २ ११	० २६ १७	७ २८ २	१० ५ ३६	० १६ १३
२२	शनि	११ ३ १२	१ ८ ५०	७ २८ ३०	१० ६ ३१	० १६ ५६
२३	सूर्य	११ ४ १२	१ २१ ६	७ २८ ५८	१० ७ २९	० १७ ३८
२४	चन्द्र	११ ५ १३	२ ३ ९	७ २९ २५	१० ८ २९	० १८ १९
२५	मङ्गल	११ ६ १३	२ १५ ४	७ २९ ५३	१० ९ ३३	० १८ ५९
२६	बुध	११ ७ १३	२ २६ ५६	८ ० २०	१० १० ३८	० १९ ३८
२७	गुरु	११ ८ १३	३ ८ ५०	८ ० ४७	१० ११ ४६	० २० १६
२८	शुक्र	११ ९ १४	३ २० ४९	८ १ १४	१० १२ ५५	० २० ५२

॥ तात्कालिक गुरु, शनि, राहु ॥

तारीख	गुरु स्पष्ट रा. अं. क.	शनि स्पष्ट रा. अं. क.	राहु स्पष्ट रा. अं. क.	तारीख	गुरु स्पष्ट रा. अं. क.	शनि स्पष्ट रा. अं. क.	राहु स्पष्ट रा. अं. क.
१सि.	४ २६ ३०	० १६ ५१	० १९ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	४ २६ ८	० १५ ४३	० १८ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५	४ २५ ५८	० १६ ३६	० १८ ३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	४ २५ ५०	० १७ २९	० १८ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६अ.	४ २६ ८	० १९ १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	४ २६ ३०	० १९ ५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	४ २७ ०	० २० ४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	४ २७ ३८	० २१ २९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३नु.	४ २८ २३	० २२ ११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	४ २९ १४	० २२ ४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	५ ० १२	० २३ २५	० १५ ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	५ १ १५	० २३ ५६	० १४ ४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१दि.	५ २ २२	० २४ २८	० १४ २२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	५ ३ ३४	० २४ ४७	० १३ ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५	५ ४ ५०	० २५ ६	० १३ ३७	१३	६ ५ ५८	[illegible]	[illegible]
२२	५ ६ १०	० २५ २०	० १३ १५	२०	६ ६ ३	[illegible]	[illegible]
२९	५ ७ ३२	० २५ २९	० १२ ५२	२७	६ ५ ५९	[illegible]	[illegible]
५ज.	५ ८ ५७	० २५ ३३	० १२ ३०	३फ़ि०	६ ५ ४६	० २० २३	[illegible]
१२	५ १० २३	० २५ ३२	० १२ ८	१०	६ ५ २४	० २० ५६	० २ २२
१९	५ ११ ५२	० २५ २६	० ११ ४६	१७	६ ४ ५३	० २१ ३३	० १ ५९
२६	५ १३ २१	० २५ १५	० ११ २३	२४	६ ४ १५	० २२ १३	० १ ३७
२फ़ि.	५ १४ ५२	० २४ ५९	० ११ १	३मा	६ ३ ३०	० २२ ५७	० १ १५
९	५ १६ २३	० २४ ३९	० १० ३९	१०	६ २ ४०	० २३ ४३	० ० ५३
१६	५ १७ ५४	० २४ १५	० १० १७	१७	६ १ ४७	० २४ ३१	० ० ३०
२३	५ १९ २४	० २३ ४७	० ९ ५५				

सिंहस्थ गुरु व्यवस्था

सामान्यरूप से गुरु की राशि पर सूर्य और सूर्य की राशि में गुरु के आने पर गुर्वादित्य नामक दोष होता है। "गुरुक्षेत्रगते भानौ भानुक्षेत्रगते गुरौ। गुर्वादित्यः स विज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु ॥" उक्त वचन के अनुसार सिंह राशि पर गुरु के आगमन से सामान्य गुर्वादित्यदोष लगता है। प्रति वर्ष जब सूर्य धनु और मीन राशियों में प्रवेश करता है तब शुभकृत्य नहीं होते। इसी प्रकार सामान्यरूप से लगभग १२ वर्षों बाद सिंह [illegible] गुरु के आने से गुर्वादित्यदोष विवाहादि शुभकार्य में वर्जित है।

गुर्वादित्ये [illegible] [illegible] ॥१॥
सिंहे गुरौ [illegible] विवाहो [illegible] यावत् ।
[illegible] ॥२॥
[illegible] निन्दितः ।
[illegible] ॥३॥
[illegible]
[illegible] ॥४॥ मु. चि. शु. प्र.

[illegible] कि जो कार्य बृहस्पति के अस्त में वर्जित हैं वे ही सिंह और मकर के बृहस्पति में भी वर्जित हैं। कुछ आचार्यों के मत में बृहस्पति के [illegible] और गुर्वादित्य एवं १५ दिन के [illegible] शुभकार्य वर्जित हैं।

"सिंह राशौ तु [illegible] सर्वान्ते [illegible] ।
[illegible] इति ॥"—राज मा.

श्रीलल्ल के वचनानुसार सिंह राशि के गुरु में गोदावरी के उत्तर तट से भागीरथी के दक्षिण के स्थलों में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित हैं। यथा—"[illegible] विवाहो नेष्टः सिंहस्थे देवपतिगुरौ" इति। भागीरथ्युत्तरे कूले गौतम्याः दक्षिणे तथा। विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति (मु. सं.)। सबका सारांश अधोलिखित है। (१) सिंहराशि का गुरु कलिङ्ग, गौड़ और गुर्जर देशों में शुभकार्य के लिये वर्जित है। (२) सिंह राशि में सिंह नवांश का गुरु होने पर सर्वत्र शुभकार्य वर्जित हैं। (३) भागीरथी के उत्तर तट और गौतमी के दक्षिण तटवासी नगरों में सिंहस्थ गुरु होने पर अवश्य विवाहादि वर्जित नहीं है। (४) मेषराशि के सूर्य विद्यमान होने पर सिंहस्थ गुरु में भी विवाह शुभ होता है। अतः मेष के सूर्य में समस्त देश में विवाहादि शुभकार्य होंगे। विशेषरूप से सिंह के नवमांश में गुरु के विद्यमान होने पर गंगा गोदावरी के मध्यवर्ती नगरों में विवाहादि शुभकार्य नहीं किये जा सकेंगे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए, स्वर्गीय महामना [illegible]य जी की श्रद्धालु धार्मिक सज्जनों से अपील ।

विद्यागुरु विश्वनाथजी के असीम अनुग्रह से हिन्दू राज्यों के अधिपतियों में त[illegible]धार्मिक धनवान श्रद्धावान हिन्दुओं ने मिलकर पवित्र काशीधाम में लोकपावनी गङ्गा जी के तट पर एक ऐसा [illegible]द्यालय स्थापित किया है जो हिन्दुओं का नाम बढ़ाने वाला है। इस विश्वविद्यालय में चारों वेद और वेदांग, व्या[illegible]स्कन्ध ज्योतिष, धर्मशास्त्र इतिहास, पुराण, मीमांसा, न्याय, सांख्ययोग, वेदान्त और मनुष्यों को सुख देने वा[illegible]युर्वेद, गन्धर्ववेद एवं नूतन धनुर्वेद (बन्दूक चलाना) (तथा दावभागादिक के विधान आदि पढ़ाये और सिखाये ज[illegible] इसमें पश्चिम के देशों की अनेक विद्या तथा लोकयात्रा में उपकारी अनेक कला तथा इञ्जिनियरिंग और व्याप[illegible]लायन तथा अनेक प्रकार के विज्ञान अच्छी रीति से पढ़ाये जाते हैं। विद्यार्थियों की सहायता के लिये बहुत सी[illegible]त्तियाँ दी जाती हैं। सब प्रान्तों से आये हुए विद्यार्थी यहाँ छात्रावास में रहकर पढ़ते हैं। जैसे प्राचीन समय [illegible]कुल में रहते थे। यहाँ विद्यार्थियों के शारीरिक बल की वृद्धि के लिए व्यायाम करना आवश्यक रक्खा गया है, और [illegible]नों और कथाओं से धर्म का उपदेश दिया जाता है। जिन सज्जनों को और देवियों को हिन्दू नाम का अभिमान हो, [illegible] उचित है कि प्रेम से, दान से और प्रिय वचनों से इसकी सहायता करें। (३१।३।४६) तक एक करोड़ इक्यासी [illegible]तीस हजार दो सौ बत्तीस रुपये सात आने छः पाई इस विश्वविद्यालय को सर्वसाधारण से संग्रहीत है। एक करोड़ [illegible] इसको बड़ी आवश्यकता है जो सज्जन विश्वविद्यालय की सहायता देना चाहें, वे मंत्री हिन्दूविश्वविद्यालय क[illegible] नाम अपना दान भेजें। जो दो सहस्र रुपया दान करेंगे उनके नाम से एक विद्यार्थी रहने योग्य स्थान बना दिया जा[illegible]र उसपर देनेवालों के नाम का एक स्मारक लगा दिया जायगा। जो सज्जन अपने या अपने माता पिता या किसी सम्बन्धी के नाम से किसी विद्यार्थी को वृत्ति के देने के लिये पाँच हजार रुपया एक ही बार देंगे तो उसके ब्याज से स[illegible] नाम से १५) रु० मासिक वृत्ति किसी विद्यार्थी को दी जाया करेगी। देनेवाले को अधिकार है कि वह यह लिख [illegible] संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थी को, या अंग्रेजी पढ़नेवाले विद्यार्थी को या किसी विशेष जाति के विद्यार्थी को छात्रवृत्ति दी [illegible]। विश्वविद्यालय का कार्य कानून के अनुसार स्थापित सभा और समिति के द्वारा होता है और उसका विवरण व[illegible] नियम के अनुसार प्रकाशित होता रहता है। विश्वविद्यालय के आय-व्यय का हिसाब प्रतिवर्ष जांचा जाता है और उ[illegible] सरकारी गजट में छाप दिया जाता है और सब विवरण ५००) तथा उससे अधिक दान देनेवालों के पास भेजा जाता [illegible] सज्जन या देवी यह चाहें कि उनके जीवन के उपरांत उनका धन या सम्पत्ति हिन्दू-विश्वविद्यालय को मिले उन[illegible]हिये कि नीचे लिखे अनुसार एक लिखित वक्तव्य लिख दें और उस पर साक्षी करा दें; यदि सम्भव हो तो उसकी [illegible]ट्री भी करा देनी चाहिये। "इस लेख के द्वारा मैं सूचित करता हूँ या करती हूँ कि मेरे मरने के समय जो कुछ मेरा [illegible]म्पत्ति है वह अथवा इसका इतना भाग हिन्दू विश्वविद्यालय काशी को मि[illegible] और अमुक काम में लगाया जाय"। [illegible] को उचित है कि ऐसा लेख लिख कर मंत्री हिन्दू विश्वविद्यालय काशी के नाम भेज दें अथवा भिजवा दें।

[illegible]मदन मोहन मालवीय।

हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माता प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद स्वर्गीय पं० मदनमोह[illegible]लवीय जी की उपरिलिखित अपील के फलस्वरूप विश्वविद्यालय कोष में (३१-३-६३) तक कुल पांच करोड़ चौ[illegible] लाख सोलह हजार पांच सौ बत्तीस रुपये सत्तर नये पैसे संग्रहीत हो चुके हैं। विश्वविद्यालय की उन्नति अनुदिन हो [illegible] है। आरम्भ में विद्यार्थियों की संख्या ढाई हजार थी, आज९ हजार से अधिक छात्र है। प्रायः २ हजार इसके पाठशा[illegible]ओं (स्कूल) में हैं। इस प्रकार सब मिलकर ११ हजार से अधिक छात्र छात्राएं इसमें विद्याध्ययन कर रहे हैं। भारत के [illegible] प्रदेशों के अतिरिक्त १६ अन्य देशों से आगत अध्येता भी यहाँ विद्यार्जन कर रहे हैं। विश्वविद्यालय का वार्षि[illegible]य १ करोड़ से अधिक है। भारत सरकार के आयव्यय परीक्षक से परीक्षित लेखा प्रत्येक (रजिस्टर्ड) दाता के पास [illegible] जाता है। तथा भारत के सरकारी गजट में छप जाता है। इसके विभिन्न महाविद्यालयों तथा विभागों को समय[illegible]र परिपूर्ण रखने के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय में भगवान् विश्वनाथ के विशालम[illegible] का निर्माण हो रहा है। जिसमें ३२ लाख रुपये से अधिक व्यय हो चुका है। तथा उसे पूर्ण करने के लिए द्रव्य [illegible] आवश्यकता है। धर्मप्राण विद्यानुरागी तथा जनहितैषि सज्जनों तथा देवियों से मेरा विनीत अनुरोध है कि पुण्यश[illegible] संस्थापक की अपील पर ध्यान देते हुए राष्ट्रीय मानवधर्म आर्य संस्कृतिपोषक भारत के [illegible]स प्रमुख विद्याकेन्द्र [illegible] सहायता करें। तथा नव निर्माण किए जाने वाले मन्दिर के लिए दान देकर समाज का कल्याण कर परम पुण्य के [illegible]गी बनें।

कुलपति, (वाइस-चान्सलर) हिन्[illegible]विश्वविद्यालय, वाराणसी।

संवत् २०२५ वर्षीय वर्षफल

इस वर्ष का राजा शुक्र तथा मन्त्री शनि हैं। और दोनों में परस्पर मैत्रीभाव है। अतः संसार के लिय यह वर्ष विगत वर्षों की अपेक्षा उत्तम रहेगा। जगल्लग्न एवं वर्षलग्न से केन्द्र में पापयोग होने के कारण अधिकांश देशों में गृहयुद्ध की स्थिति प्रायः बनी रहेगी। एक दूसरे देशों के परस्पर संघर्ष के कारण धनजन की क्षति भी विशेष होगी। साथ ही आकस्मिक दुर्घटनायें तथा महामारी आदि से धनजन की क्षति अधिक होगी। [illegible] चक्रानुसार अनेक देशों के लिये ग्रहयोग नेष्ट है। इस वर्ष मेघेश के अनुसार वृष्टि का योग उत्तम है किन्तु अन्य योगों के अनुसार यत्रतत्र अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि के कारण अकाल की स्थिति बनी रहेगी। वर्षलग्न से बृहस्पति अष्टम तथा जगल्लग्न से चन्द्रमा चतुर्थ होने के कारण संसार में परस्पर सौहार्द्र की भावना का ह्रास होगा। साथ ही वर्षलग्न से चतुर्थ भवन [illegible] होने के कारण अग्निभय, चौरभय, अनाचार, मिथ्याचार, गृहयुद्ध की स्थिति प्रायः सर्वत्र बनी रहेगी। विश्वयुद्ध की स्थिति उत्पन्न होकर भी टल जायगी। विवाद की परिस्थिति होते हुये भी भारतवर्ष के लिये यह वर्ष उत्तम रहेगा। चीन और अमेरिका के लिय ग्रहयोग मन्द रहेगा। स्वेजनहर का विवाद क्रमशः उलझता जायगा। और विश्वयुद्ध की स्थिति उत्पन्न होने की आशङ्का बनी रहेगी। सारांश यह है कि यह वर्ष विभिन्न समस्याओं के रहते हुये भी उत्तम है। वर्ष का १, ३, ४, ७, ९, १० माह नेष्ट और शेष उत्तम रहेंगे। भारत में महर्घता [illegible] भी बनी रहेगी। किन्तु विगत वर्ष की अपेक्षा खाद्यपदार्थों में मन्दी रहेगी।

मासफल

चैत्र—इस मास की ग्रहस्थिति संघर्ष सूचक है। साथ ही विविध प्रकार की दुर्घटनायें एवं महामारी से जनवर्ग पीड़ित रहेगा। वस्तुओं का भाव सामान्य रहेगा। दिनांक ४ अप्रैल से ११ अप्रल तक यत्र-तत्र बादल वृष्टि का योग है।

वैशाख—इस मास में ५ रविवार है। साथ ही कालचक्रानुसार मंगल, शनि का प्रकोप चल रहा है। साथ ही वाताधिक्य के कारण लू अधिक चलेगी। वस्तुओं का भाव मन्दी की ओर रहेगा। किन्तु रस एवं फलों में तेजी रहेगी। साथ ही सोने चांदी में अकस्मात् तेजी लक्षित होगी। संसार के लिये यह मास मन्द है। दिनांक १९ अप्रैल से २६ तक और १ मई से ९ मई तक खण्डवृष्टि का योग है।

ज्येष्ठ—इस मास में ५ सोमवार पड़े हैं। साथ ही कालचक्र के आदिम स्थान पर शुभ योग है। अतः संसार के विवादास्पद विषयों में नमी आयेगी। साथ ही शान्ति वार्ता की ओर प्रमुख लोगों का झुकाव रहेगा। गतमास की अपेक्षा खाद्यपदार्थों में कुछ तेजी आयेगी। निष्कर्ष रूप में यह मास सामान्य रहेगा। दिनांक १६ मई से २३ मई एवं २९ मई से ५ जून तक विभिन्न स्थलों में वृष्टि का योग है।

आषाढ़—इस मास में ५ मंगलवार पड़े हैं, तथा ग्रहस्थिति भी मन्द है। अतः शान्तिवार्तायें क्रमिकरूप से भंग होती जायेंगी एवं सर्वत्र अशान्ति का ही साम्राज्य रहेगा। मासान्त में मोटे अन्न का भाव कुछ मन्द होगा। साथ ही फल के पदार्थों में भी मन्दी पायी जायगी। दिनांक १२ से १८ जून तथा २५ जून से ३० जून और ८ जुलाई से १० जुलाई तक छिटपुट बादलवृष्टि का योग है।

श्रावण—इस मास में ५ गुरुवार पड़े हैं। किन्तु मीनराशि के मंगल के आगमन के कारण यत्र-तत्र गृहयुद्ध की स्थिति बनी रहेगी। मास के पूर्वार्द्ध में वस्तुओं का भाव कुछ मन्द होकर उत्तरार्द्ध में तेज हो जायगा। शान्ति की दिशा में किये गये सभी प्रयास विफल होंगे। साथ ही संसार के किसी महान सुयोग्य शासक का अभाव होगा। दिनांक ११ जुलाई से १७ तथा २१ से २९ जुलाई तथा ६ अगस्त से ८ अगस्त तक बादलवृष्टि का योग है।

भाद्रपद—इस मास में ५ शुक्रवार पड़े हैं। साथ ही मास के मध्य में ५ ग्रहों का योग होने जा रहा है। अतः कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि के कारण कृषक-वर्ग त्रस्त रहेगा। राजनीतिज्ञ लोग परस्पर विशेष उलझेंगे। वस्तुओं का भाव सामान्य रहेगा। मास के उत्तरार्द्ध में गुरु अस्त हो रहे हैं। अतः मेधावियों के लिये समय मन्द रहेगा। दिनांक ९ अगस्त से १२ एवं १७ से २४ अगस्त और २ सितम्बर से ६ सितम्बर तक बादलवृष्टि के योग हैं।

आश्विन—इसमें शनि और रवि की प्रबलता है। अतः कृषकवर्ग के लिये समय मन्द रहेगा। साथ ही पारस्परिक मतभेद सर्वत्र बढ़ता हुआ दृष्टिगोचर होगा। वस्तुओं का भाव सामान्य रहेगा। दिनांक ७ सितम्बर से ९ सितम्बर और १४ से २० तथा १ अक्टूबर से ६ अक्टूबर तक बादलवृष्टि के योग हैं।

कार्तिक—इस मास में चन्द्र और मंगल की प्रबलता है। अतः ह्रास-वृद्धि के साथ संसार की परिस्थितियां चलेंगी। वस्तुओं का भाव मास के उत्तरार्द्ध में समर्घ होगा। असामयिक बादल-वृष्टि के कारण कृषिकार्य में बाधा पड़ेगी। दिनांक ११ से १९ और २६ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक यत्र-तत्र बादलवृष्टि के योग हैं।

मार्गशीर्ष—इस मास में ५ बुधवार पड़े हैं। साथ ही मंगल गुरु का योग हो रहा है। अतः सर्वत्र सुखशान्ति का आसार दृष्टिगोचर होगा। वस्तुओं का भाव कुछ महर्घ ही रहेगा किन्तु धातुपदार्थों में नमी आयेगी। दिनांक ९ नवम्बर से १५ तक और २४ से ३० तक यत्र-तत्र बादलवृष्टि का योग है।

पौष—इस मास में बुध और बृहस्पति का साम्राज्य है। साथ ही कालचक्र के अनुसार ग्रह-स्थिति उत्तम है। अतः कूर्मचक्रानुसार कुछ देशों की परिस्थिति मन्द होने पर भी सामान्य दृष्टि से लोककल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण राष्ट्र प्रवृत्त रहेंगे। वस्तुओं का भाव मन्द रहेगा। दिनाङ्क ६ से १२ तक और २१ से २६ दिसम्बर तक तथा २, ३ जनवरी को बादलवृष्टि के योग हैं।

माघ—इस माह में शनि रवि की प्रधानता है। साथ ही काल चक्रानुसार मंगल युद्धाग्नि भड़काने वाला है। अतएव कूर्मचक्र के अनुसार पश्चिमोत्तर देशों में अशान्ति का वातावरण रहेगा। वस्तुओं का भाव प्रायः सामान्य रहेगा। दिनाङ्क ४ जनवरी से १० एवं १७ से २३ और २९ से २ फरवरी तक बादलवृष्टि के योग हैं।

फाल्गुन तथा चैत्रकृष्णपक्ष—इस मास में सौम्यग्रहों का प्रभाव होते हुए भी मंगल गृहयुद्ध की दिशा में प्रेरित करने वाला है। अतः अधिकांश राष्ट्रों में गृहयुद्ध की स्थिति रहेगी। वस्तुओं का भाव सामान्य रहेगा। दिनाङ्क ३ से ७ फरवरी १४ से २० एवं २६ से ४ मार्च तथा १३ से [illegible] मार्च तक दुर्दिन एवं वायुवृष्टि के योग हैं।

राशिफल

मेष—राशिलग्न वालों के लिए शनि एवं राहु मन्द रहेंगे। किन्तु राशि से पंचम गुरु और एकादश बुध शुक्र विविध प्रकार के विघ्नबाधाओं को दूर करते हुये अभीष्टसिद्धिदायक रहेंगे। लाभ मान-पद-प्रतिष्ठा की दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा। किन्तु शारीरिक एवं पारिवारिक बाधाएं बीच-बीच में आती रहेंगी। कष्ट प्रतीत होने पर शनि राहु का जप दान कराना श्रेयस्कर होगा। वर्ष का १, ७ और १२ वां माह नेष्ट और शेष प्रायः श्रेष्ठ रहेंगे।

वृष—राशि लग्नवालों के लिये पूरे वर्ष गुरु मन्द चलेंगे। अतः बृहस्पतिवार के दिन [illegible] भोजन करने से बृहस्पति का प्रभाव शुभ रहेगा। अन्य सभी ग्रह अनुकूल स्थिति में हैं। इसलिये [illegible] मान-पद-प्रतिष्ठा व्यापारादि की अभिवृद्धि होगी। व्यवसायियों के लिये यह वर्ष उत्तम है। वर्ष का ५, ११ और १२ माह नेष्ट और शेष उत्तम हैं।

मिथुन—राशिलग्न वालों के लिये केतु के अतिरिक्त सभी ग्रह उत्तम फलदायक हैं। अतः केतु की शान्ति व जपदान करने से पारिवारिक बाधायें शान्त रहेंगी। परीक्षार्थी व्यापारियों आदि के लिय वर्ष उत्तम है। वर्ष का ४, १० ११ माह नेष्ट, शेष उत्तम है।

कर्क—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष प्रायः उत्तम है। यद्यपि शारीरिक एवं पारिवारिक कष्ट वर्ष में दुःखदायी बने रहेंगे किन्तु लाभ-मान-पद-प्रतिष्ठा के लिये वर्ष उत्तम है। वर्ष का १, ३, ८, ९ और १० वां माह नेष्ट, शेष श्रेष्ठ रहेंगे।

सिंह—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष सामान्य रहेगा। [illegible] बुध, शुक्र सभी स्थितियों से शुभदायक रहेंगे। किन्तु शनि राहु अष्टम होने के कारण आपका अधिक [illegible]। साथ ही शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ता एवं स्नेहीजनों से कष्ट होगा। [illegible] होने पर शनि राहु का पुरश्चरण कराना चाहिये। विद्या-व्यवसायियों के लिये वर्ष शुभ रहेगा। वर्ष का २, ८ और ९ माह नेष्ट शेष प्रायः उत्तम रहेंगे।

कन्या—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष [illegible] रहेगा। शारीरिक, पारिवारिक एवं आर्थिक [illegible] होगा। [illegible] आत्मीयजनों से विशेष आघात पहुँचने का योग है। [illegible] केतु, शनि, राहु, मंगल एवं गुरु का [illegible]। वर्ष का [illegible] और १२वां माह नेष्ट और शेष [illegible] रहेगा।

तुला—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष [illegible] श्रेष्ठ रहेगा। केतु, मंगल के अतिरिक्त सभी ग्रह [illegible]। [illegible] केतु, मंगल का जप, दान कराने से विशेष लाभ होगा। विद्या-व्यवसायियों के लिये यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष का ५, ७ और १२वां माह नेष्ट तथा शेष श्रेष्ठ रहेंगे।

वृश्चिक—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष बहुत ही उत्तम है। इसमें सभी अभीप्सित कार्यों की सिद्धि होगी। साथ ही शारीरिक, पारिवारिक एवं आर्थिक सुख उत्तम रहेगा। वर्ष का ५, [illegible] और ११वां माह नष्ट शेष श्रेष्ठ रहेंगे।

धनु—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष [illegible] भी परिणामतः शुभ है। शनि एवं राहु [illegible] रहेगी। गृह-कलह से विशेष बचना चाहिये। [illegible] और १२वां माह नेष्ट तथा शेष श्रेष्ठ रहेंगे।

मकर—राशिलग्न वालों के लिये वर्ष प्रायः उत्तम है किन्तु मंगल और बृहस्पति का जप [illegible]। [illegible] से कठिन कार्यों में भी प्रयास से सफलता प्राप्ति के [illegible]। वर्ष का [illegible] माह नेष्ट, शेष श्रेष्ठ रहेंगे।

कुम्भ—राशिलग्न वालों के लिये ग्रह स्थिति प्रायः उत्तम होने पर भी शनि की [illegible] रहेगा। शनि का जप, दान एवं व्रत करने [illegible]। वर्ष का [illegible], ३ और ८ माह नष्ट शेष श्रेष्ठ रहेंगे।

मीन—राशिलग्न वालों के लिय वर्ष मन्द रहेगा। इसमें शारीरिक, पारिवारिक, आर्थिक [illegible] सभी प्रकार की कठिनाइयों का आवर्तन होता रहेगा शनि, राहु और केतु का [illegible] कराने से वर्ष में आने वाली कठिनाइयां दूर होंगी और परिणाम शुभ होगा। वर्ष का १, २, ६ [illegible] माह नेष्ट और शेष उत्तम रहेंगे।

[illegible] तथा ज्योतिष सम्बन्धी विशेष जानकारी के लिए नीचे लिखे पते से पत्र व्यवहार करें—

ज्योतिषशास्त्राचार्य

श्री पं० राजमोहन उपाध्याय एम० ए०

अध्यक्ष—ज्योतिष, विश्वपञ्चाङ्ग विभाग,

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी।